दिनांक 3 नवम्बर, 1979 को मांड्या की जनसभा में प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह का भाषण

..... (शोर)..... देखिये आप लोग निश्चिन्त बैठे रहें, कुछ कांग्रेस के लोग हैं, जो विघ्न डालना चाहते हैं सभा में।

फ्रेंड्स,

आई कैन स्पीक आइदर इन इंगलिश आर इन हिन्दी, बट नेचुरली आई विल स्पीक मोर फ्रिक्वेंट्ली इन माई ऑन लैंग्वेज हिन्दी। सो, आई विल स्पीक इन हिन्दी।

अभी कुछ लोगों ने यह नारा उठाया कि मैं हरिजन–विरोधी हूं। मैं यह चाहता हूं कि वो शांति से मेरी बात सुनें और उसके बाद वो मुझसे पूंछे कि मैं किस प्रकार हरिजन–विरोधी हूं? मैंने जितना हरिजनों के लिए काम किया है, उतना शायद किसी मंत्राी या मुख्यमंत्री ने किया हो। हरिजन–विरोधी होने का जवाब देने से पहले मैं मेरे मित्र देवराज जी अर्स ने जो सवाल उठाये हैं, जो–जो प्रचार मेरे खिलाफ किया जा रहा है, पहले मैं उनका जवाब देना चाहता हूं।

कहा जाता है कि मैं कुलक हूं। कुलक के मायने, जैसा शायद अर्स साहब ने आपको बतलाया, रूसी भाषा का एक शब्द है और आम तौर पर बड़े जमींदारों के लिए इस्तेमाल किया जाता था। 1917 की रूसी क्रांति से पहले वो बनियों के लिए या जो लोग शोषण करते थे व्यापार के जरिये, उनके लिए यह लफ्ज इस्तेमाल होता था।

सन् 30 में स्टेलिन ने जब किसानों को, सब को सामूहिक खेती में ठूंसना चाहा, तो सब किसानों ने विरोध किया, तो किसान के लीडरों को उन्होंने कुलक कहना शुरू कर दिया।

मैं सन् 48 से लेकर 59 तक जो अपने देश का सबसे बड़ा प्रदेश है–– उत्तर प्रदेश, उसका रेवेन्यू डिपार्टमेंट का या तो पार्लियामेंटरी सैक्रेट्री रहा हूं, लगभग चार वर्ष और आठ वर्ष में उसका रेवेन्यू मिनिस्टर रहा हूं। इससे भी दस साल पहले, जब सन् 37 में, मैं मेम्बर असेम्बली हुआ, तो मेरे दो लेख उस वक्त के भी मौजूद हैं लिखे हुए, नेशनल हैराल्ड में, कि जमीन का मालिक जो वाकई जमीन को जोतता हो, वो होना चाहिए, न कि जमींदार। (तालियां ... शोर)

इनसे कहो बैठे रहें .... (शोर)

मेरी हमेशा यह राय रही है, जबकि उस वक्त के कांग्रेस के बड़े–बड़े लीडरों की राय यह थी कि बड़ी–बड़ी जोत या बड़े–बड़े खेतों से देश को फायदा होगा, बड़े होल्डिंग्स से। मेरी राय थी हमेशा कि छोटी होल्डिंग्स में पैदावार ज्यादा होगी।

जमींदारी खात्मे का जो कानून उत्तर प्रदेश में बनाया गया है, विशेषज्ञों की राय यह है कि हिन्दुस्तान में जमींदारी कहीं खत्म हुई है, तो उत्तर प्रदेश में खत्म हुई है, सही मायने में किसी और सूबे में जमींदारी खत्म नहीं हुई है। वुल्फ लैंडजिंस्की एक अमेरिकन विशेषज्ञ था, जो कि फोर्ड फाउन्डेशन टीम में, सन् 62 में उनके जिम्मे यह काम सुपुर्द किया कि भूमि की व्यवस्था का क्या असर खेती की पैदावार पर पड़ता है हिन्दुस्तान में, यह अध्ययन करके उस फोर्ड फाउंडेशन टीम को एक रिपोर्ट प्रस्तुत करें। उस विश्व प्रसिद्ध विशेषज्ञ ने यह बात कही है, जो मैं अभी कह चुका हूं कि सब सूबों का अध्ययन करने के बाद वो इस नतीजे पर पहुंचा

कि हर प्रकार के काश्तकार को, चाहे वो गैर–दखलकार हो, नान–ऑकूपेंसी हो और चाहे तो सीर का काश्तकार हो या सब–टेनेंट हो, उसको अगर अधिकार मिला है, तो केवल उत्तर प्रदेश में मिला है, और कहीं नहीं मिला।

अभी थोड़े दिन पहले की बात है, जबकि माननीय देसाई जी हमारे प्रधानमंत्री थे, तो किसी जिकर में यह बात मैंने कही कि उत्तर प्रदेश में ही सबटेनेंट्स को अधिकार मिला है और किसी स्टेट में नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि नहीं, हमने गुजरात में भी दिया है। तो, तभी मैंने एग्रीकल्चरल सेक्रेटरी को एक पत्र लिखा कि मैं जानना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान में सबटेनेंट को कहां अधिकार मिला है? तो उनका लेटर मेरे पास मौजूद है ... कि सिवाय हिन्दुस्तान के सबटेनेंट को शिक्षित अधिकार देने के और हिन्दुस्तान के किसी सूबे में नहीं मिला। यही नहीं कि टेनेंट्स और सबटेंनेंट्स सबको अधिकार दिया गया, बल्कि जो लोग ट्रेसपासर्स थे, विदआउट पेमेंट ऑफ रेंट, जिनका नाम दर्ज था कागजात में ट्रेसपासर्स, उनको भी सिवाय उत्तर प्रदेश के हिन्दुस्तान में कहीं अधिकार नहीं मिला।

यहीं नहीं, जो लोग जमीन पर काबिज थे काश्तकार की हैसियत से, लेकिन पटवारी के या सरकार के कागजात में उनका नाम किसी भी हैसियत से दर्ज नहीं था, हमने डिप्टी कलैक्टर को अधिकार दिया कि मौके पर जाकर तहकीकात करें और अगर उसकी समझ में आता है कि फलॉ आदमी का कब्जा है, तो उसका कब्जा दर्ज कर दें और उसको भी हमने परमानेंट राइट्स कन्फर कर दिये, ग्रांट कर दिये।

इस तरह के कमजोर काश्तकारों की तादाद उत्तर प्रदेश के कुल किसानों की चौथाई पड़ती थी तादाद में और उनके पास सारे रकबे का, सारे क्षेत्रफल का एक बटा सात जमीन उनके पास थी (शोर) उन सबको हमने मालिक बना दिया अपनी जमीन का। (तालियां ... शोर)

यहीं नहीं, सेकिंड फाइव इयर प्लान और थर्ड फाइव ईयर प्लान में ... इन योजनाओं में यह अधिकार दिया गया था जमींदार को कि वो 30 एकड़ से 60 एकड़ तक जमीन खुद काश्त के लिए अपने काश्तकारों से बेदखल करा सकता है। सारे सूबों की गौरमेंट ने उनके मशविरों को माना, उस सिफारिश को माना जो कि सैंकिंड फाइव ईयर प्लान और थर्ड फाइव ईयर प्लान में दी, सिवाय उत्तर प्रदेश के। मैं इस बात के लिए राजी नहीं हुआ कि किसी भी काश्तकार को जमींदार खुद काश्त के नाम से बेदखल कर सके। दूसरे सूबों में बहुत से काश्तकार बेदखल किए गए और बड़े काश्तकारों की तादाद बढ़ी और उनका रकबा भी बढ़ा। हमारे यहां .....

अच्छा, और सारे हिन्दुस्तान की बात आपको बताना चाहता हूं कि 51 फीसदी किसान था 1961 में, 71 में उनकी तादाद 45 हो गयी और एग्रीकल्चरल लेबरर की तादाद 17 से बढ़कर 26 हो गयी। जमीन उनसे, काश्तकारों से, बेदखल की तो बेचारे लेबरर हो गये वो।

अभी कुछ दिनों से मैं एक किताब लिख रहा था। उस किताब का नाम बोलूँ, हस्तलिपि है अभी, मेनुस्क्रिप्ट है, उसका नाम है ...टुवर्ड्स गांधी। उसमें एक हमारा चैप्टर है, अध्याय है और उसका एक उप–अध्याय है, जो अभी मैंने फेयर आउट कर दिया है और उसमें मालूम हो जाएगा कि कौन वो आपका क्या कहते हैं कि कौन कुलक है और कौन गरीबों का दोस्त हैं ? वो अभी छपाकर किताब में आपके चीफ मिनिस्टर के पास भेज दूंगा और अपनी भाषा में

तर्जुमा कराकर गांव–गांव में तकसीम कीजिये, तब आपको अंदाज लगेगा कि कौन कुलक है और कौन कुलक नहीं!

अब रही यह बात कि मैंने दल छोड़ा है या दल बदला है। यह भी झूठा आरोप मेरे ऊपर है। जनता पार्टी को बनाने में 90 परसेंट मेरा हाथ था, मेन आर्किटेक्ट जनता पार्टी का मैं था और उसको तोड़ा है जनसंघ के लोगों ने, मोरारजी भाई ने, दोनों ने तोड़ा है (तालियां)। श्रीमती इंदिरागांधी के विश्वासघात के कारण मुझको मजबूर होकर सन् 66 में कांग्रेस छोड़नी पड़ी थी। उसके बाद सन् 67 में एक संविद गौरमिंट बनी। बहुत–सी छोटी–छोटी अपोजीशन की पार्टीज थीं जिनकी कुल तादाद मिलकर कांग्रेस से ज्यादा होती थी, मैं उसका चीफ मिनिस्टर बना। मुझको सात–आठ पार्टियों को लेकर चलना पड़ रहा था, जो एक बहुत मुश्किल काम था। तो बावजूद मेजोरिटी होते हुए भी, मैंने फरवरी, 68 में चीफ मिनिस्टरी से इस्तीफा दे दिया था।

इसके बाद, मेरी कोशिश यह रही कि कांग्रेस के मुकाबले में एक जबर्दस्त पार्टी बने, ताकि अगर कांग्रेस से लोग नाराज हों, तो दूसरी पार्टी को वोट दे सकें। अगर एक ही पार्टी का बराबर राज चलता रहेगा, तो पंचायती राज या डेमोक्रेसी या जम्हूरियत सफल नहीं होगी। स्वर्गीय राजाजी उस वक्त जिंदा थे, जो कि स्वतंत्र पार्टी के फाउंडर थे और प्रेसिडेंट भी थे। उनसे भी हमारी बात हुई, जनसंघ के नेताओं से भी बात हुई, पीएसपी के नेताओं से बात हुई कि हम सब को मिलकर एक पार्टी बनानी चाहिए। लेकिन अफसोस की बात है कि वो उस वक्त की बातें नाकामयाब रहीं।

यहां एक बात ऐसी कहना चाहता हूं जो कि आम तौर पर किसी वक्ता को अपने बाबत नहीं कहनी चाहिए। लेकिन प्रसंगवश मैं आपको बतलाना चाहता हूं। मैने जो पार्टी बनायी थी तो 69 में चुनाव हुआ, तो पहली बार ही 99 सीट हमको मिली 425 में, जबकि मैंने किसी सेठ से रुपया नहीं लिया। सेठ लोग रुपया देने के लिए मेरे पास एक साहब, मोदी नाम बताते थे वो, 10 लाख रुपए लेकर तीन बार आये। लेकिन मैंने कहा कि मैं सेठों से रुपया नहीं लूंगा, जो मुझको किसान रुपया देगा, तब रुपया लूंगा।

अभी 74 में जो असेम्बली का चुनाव हुआ था, तो मेरे पास कुल पांच लाख रुपये भी नहीं थे, 425 सीटों को लड़ने के लिए और हमारे मित्र जो यहां बैठे हैं देवराजजी अर्स, और आपके चीफ मिनिस्टर और आपके नेता, वो बुरा नहीं मानेंगे, क्योंकि उस वक्त वो भी शायद कांग्रेस में थे, जैसे कि मैं कांग्रेस में था, तो कांग्रेस वालों ने सन् 74 में हर सीट पर पांच लाख रुपया, उत्तर प्रदेश में खर्च किया। 21 करोड़ रुपये से 30 करोड़। जबकि 425 सीट लड़ने के लिए मेरे पास पांच लाख रुपये से कम था। कांग्रेस ने हर सीट पर पांच लाख रुपये से ज्यादा खर्च किया है, जैसा बता चुका हूं कि सारे सूबे में खर्च करने के लिए मेरे पास पांच लाख रुपये से भी कम था।

तो वोट देने वाले कौन थे, वो छोटे किसान, गरीब किसान.. एक–एक एकड़ के किसान, जो कि त्रस्त थे जमींदारों से और बड़े–बड़े काश्तकारों से, जिनकों मैंने पूरा अधिकार दे दिया था, वो वोट मुझे देने वाले थे, न कि जमींदार या सेठ या पूंजीपति या दुकानदार।

खैर, 74 के इलेक्शन के बाद असेम्बली के, मैने और मेरे दोस्तों ने, राजनारायण जी ने और दूसरे लोगों ने फिर कोशिश की कि एक पार्टी बननी चाहिए। संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, उत्कल कांग्रेस और स्वराज पार्टी स्वतंत्र पार्टी, और एक–दो पार्टियां और हमारी पार्टी

बी0के0डी0 .. इन सब ने मिलकर एक पार्टी बनायी। हम सब की कोशिश थी एक पार्टी बनाएं। हम सब लोग सहमत हो गये। पांच पार्टियों के लीडर, केवल तीन पार्टी बाकी रह गयीं .. कांग्रेस–ओ, कांग्रेस–संगठन और सोशलिस्ट पार्टी, एक छोटी–सी पार्टी और जनसंघ। मैं और मेरे साथी इनके लीडरों के पास कई–बई बार गये और हमने उनसे यह कहा कि जनतंत्र सफल नहीं होगा, जब तक दो बराबर की पार्टी हिन्दुस्तान में न बनें। मेरी कोई मंशा नहीं है, आप पार्टी का नाम चाहे कुछ रखें, उसका निशान कुछ हो, उसका झंडा कुछ हो, उसका लीडर कोई हो, सिर्फ मैं यह चाहता हूं कि गांधी जी द्वारा प्रेरित प्रोग्राम उस पार्टी का प्रोग्राम हो, तब जाकर देश का भला होगा (तालियां)। ज्यादा तफसील में न जाकर यह आपको बताना चाहता हूं कि 29 अगस्त सन् 74 को हमने एक पार्टी बनायी, जिसका नाम था .. भारतीय लोकदल।

इसके बाद इंदिरा जी ने आपात्कालीन स्थिति की घोषणा कर दी, इमरजेंसी की, जून सन् 75 में। जब हम सब लोग जेल में पड़े हुए थे, तो जनसंघ के अपने दोस्त और सोशलिस्ट पार्टी के लीडर इस बात के लिए राजी हो गये कि हम जेल से निकालकर एक पार्टी बनायेंगे। लेकिन कांग्रेस–संगठन के लीडरान, खास तौर से श्री मोरारजी देसाई इसके लिए राजी नहीं हुए। वो 18 जनवरी को छूटे और उसी वक्त इंदिराजी घोषणा कर चुकी थीं इलेक्शन्स की, जब उनको यह आशा हुई कि शायद वो लीडर बन सकते हैं, तब पार्टी, नयी पार्टी, जिसका नाम हमने जनता पार्टी रखा था, तब उसमें जाकर शामिल हुए थे 19 या 20 जनवरी सन् 77 को।

अगरचे वो एक पार्टी बनाने के विरूद्ध थे और मैं यह भी जानता था कि मेरी और उनकी राय या जो मेरा दृष्टिकोण गांववालों और गरीबों की ओर है, वो उनका दृष्टिकोण नहीं होगा। लेकिन फिर भी मैं इस बात के लिए राजी हो गया कि वो पार्टी के चेयरमैन होंगे और दक्षिण के सारे प्रदेश उनके सुपुर्द होंगे प्रचार करने के लिए और इलेक्शन लड़ाने के लिए। उत्तर के प्रदेश, पंजाब से लेकर बंगाल तक मेरे सुपुर्द किए गए। जब हम तीन बार – मैं, पीलू मोदी, राजनारायण उनके पास गए थे कि एक पार्टी में शामिल हो जाइये, और मैंने यह भी कहा था कि आप उम्र में हमसे बड़े हैं, आयु में, आप उसके लीडर रहेंगे। तो उन्होंने यह कहा हमसे कि कर्नाटक में, तमिलनाडु में और गुजरात में हमारा भारी संगठन हैं, अगर मैं आपमें शामिल हो जाता हूं, मेरी पार्टी अगर आप में सम्मिलित हो जाती है, तो इन तीनों संगठनों का क्या होगा ? लेकिन कितने प्रबल थे और कितना उनका प्रभाव था, यह इससे साबित हो गया कि 26 में से 15 सीटें तो गुजरात में लाये, कर्नाटक में दो सीट लाये और तमिलनाडु से केवल एक सीट लाये, जबकि हमने उत्तरी भारत में – अमृसर से लेकर कलकत्ते तक – इंदिरा कांग्रेस का सफाया कर दिया था। (तालियां)

इसके बाद, खैर चुनाव हुआ। लम्बी बात हो जाएगी, छोटी करना चाहता हूं। 20 मार्च को चुनाव खत्म हुआ और मैं फौरन अस्पताल में पहुंचा दिया गया बीमार होने के कारण। मेरे पास अटल बिहारी बाजपेयी साहब, जो कि जनसंघ के लीडर हैं और एन0जी0 गोरे, जो सोशलिस्ट पार्टी के लीडर हैं, वो दोनो मेरे पास आये अस्पताल में और उन्होंने कहा कि हम जगजीवनराम को प्रधानमंत्री बनाना चाहते हैं।

मैंने कहा कि जो कुछ भी उनके ढंग और तरीके रहे हैं, उनको मैं ज्यादा नहीं कहना चाहता हूं, लेकिन शायद क्योंकि उन्होंने इमरजेंसी के प्रस्ताव को पेश किया था, 21 जुलाई,

सन् 75 को लोकसभा में, उसके लिए आप उनको प्रधानमंत्री बनाना चाहते हैं। मैंने उनसे यह कहा कि दुनिया आपको क्या कहेगी ? अगर इंदिरा जी की आप आलोचना करेंगे और इमरजेंसी लगायी, उनको कहेंगे कि आपने गलती की, तो हमारे कांग्रेस के दोस्त और दुनिया आपसे यह बात कहेगी कि आपको यह कहने का हक नहीं है, क्योंकि जिस आदमी ने प्रस्ताव पेश किया था, उसे आपने अपना प्राइम मिनिस्टर बनाया हुआ है।

इस लिए मैंने उनसे यह कहा कि मुझको ऐसा लगता है कि अगरचे मोरारजी देसाई से मेरे विचार मिलने वाले नहीं हैं, लेकिन फिर भी उन्होंने 19 महीने जे काटी है इस इमरजेंसी में और उम्र में मुझसे सात बरस बड़े हैं, इसलिए मैं जगजीवनराम के मुकाबले में मोरारजी भाई को पसन्द करूंगा प्राइम मिनिस्टर बनाना।

इसके बाद जब देखा कि जगजीवनराम जी के प्रधानमंत्री बनने में मैं बाधक हो गया, तो अगले दिन से मैं हरिजन–विरोधी करार दे दिया गया। हरिजनों की दो समस्याएं हैं– एक सामाजिक, एक आर्थिक। सामाजिक का मतलब यह है कि हमारा समाज जो बिरादरियों में बंटा हुआ है, वो हमारे हरिजन या इन गरीब भाइयों को सबसे छोटा समझता है। दोस्तों, यही नहीं कि हमारे समाज के कुछ लोगों के साथ अन्याय होता है, इस जाति की प्रथा से, बल्कि मैं तफसील में जा नहीं सकता हूं, अगर हिन्दुस्तान की और हिंदुओं की सबसे बड़ी कमजोरी रही है, तो यह कास्ट–सिस्टम बेस्ड ऑन बर्थ, हमारा जो सोशल सिस्टम है बेस्ड ऑन बर्थ–– यह सबसे बड़ी कमजोरी हिन्दुतान के राष्ट्र की रही है। (तालियां)

अगर आप इतिहास में जाएंगे तो मालूम यह होगा कि हमारे पुरखे, जब आक्रमणकारी बाहर से आये, तो उनसे किसी तरह कमजोर नहीं थे, तादाद में कम नहीं थे, बहादुरी में कम नहीं थे, विद्या में कम नहीं थे, लेकिन इकट्ठे होकर वो दुश्मन का कभी मुकाबला नहीं कर सके और हमेशा हारे– केवल इस कास्ट–सिस्टम की वजह से।

जब अफगान और मुगलों का हमला हमारे देश में हुआ, तो राजस्थान में जितने राजे थे, सब हमारे राजपूत बिरादरी के थे, उन्होंने कहा हम अकेले मुकाबला करेंगे और वहां के और बहादुर लोग थे– जैसे मेरी बिरादरी के, जिसकी सबसे बड़ी तादाद है राजस्थान में, उनको अधिकार लड़ने का नहीं दिया, यादवों को अधिकार लड़ने का नहीं दिया, गूजर एक बिरादरी थी, इनको लड़ने का अधिकार नहीं दिया, मीणा और भीलों को लड़ने का अधिकार नहीं दिया। अकेले लड़ेंगे, और यही नहीं, अगर अकेले भी लड़ते तो भी ठीक हो जाता। राजपूत, फिर गोत्रवार चार हिस्सों में बंट गए और इसलिए हारते चले गए, हारते चले गए।

मुगल साम्राज्य के आखिरी बादशाह औरंगजेब की गलत नीतियों के कारण छत्रपति शिवाजी महाराज ने यहां विद्रोह किया। उधर पंजाब में विद्रोह हुआ और मुगल एम्पायर खतम हो गया। लेकिन उसके बजाय एक हिन्दुस्तानी एम्पायर कायम करने की बात तो दूर की रही, हिन्दू राज भी कायम नहीं कर सके आपस के डिफरेंसेज की वजह से, कास्ट के बेसिज पर। हिंदुस्तानी या हिन्दू राजा की बजाय मराठा राज कायम हुआ। अगर मराठा राज कायम होता तब भी अंग्रेज नहीं आते। हमारे मराठा लोग भी पांच हिस्सों में तकसीम हो गए। नागपुर में भोंसले, पूना में पेशवा और बड़ौदा में सिन्धिया वो क्या नाम गायकवाड़ और होल्कर साहब इन्दौर में और सिंधिया ग्वालियर में। और अंग्रेजों ने सब को अलग–अलग पीट लिया। अगर ये ही पांचों लोग अपने गोत्र की भावना को छोड़कर इकट्ठे होकर लड़ते तो 1818 में अंग्रेजों को समुंदर में वापस कर सकते थे, भेज सकते थे।

और जो बहुत–सी खराबियां हैं बिरादरी की, गिनाना नहीं चाहता, केवल आपको यह बताना चाहता हूं कि मई, सन् 54 में, अब से पच्चीस वर्ष पहले, मैंने माननीय जवाहरलालजी को एक खत लिखा– अगर हिन्दुस्तान को स्ट्रांग, मजबूत बनाना चाहते हो तो इसकी जो सामाजिक कमजोरी है, वो दूर करनी होगी और वो दूर केवल तन हो सकती है, जबकि जन्मगत जात–पांत टूटे। तो मैंने उनको यह सुझाव दिया कि आप छोटी नौकरियों के लिए नहीं, बड़ी नौकरियों के लिए लाजमी कर दीजिये, गजेटेड सर्विसेज के लिए वही लड़का गजेटेड सर्विसेज में आ सकेगा, जो अन्तर्जातीय विवाह करने को तैयार हो। लेकिन पंडितजी राजी नहीं हुए। उनके बाद मैंने इंदिराजी से भी कहा कि अगर कास्ट–सिस्टम को मिटाना है, तो लड़के पढ़े–लिखे जो कि गजटेड सिर्विस में आने को तैयार हैं, हमारी बेटियां भी इस बात के लिए तैयार हैं, आप इन्टरकास्ट मैरिज के लिए तैयार हो जाइए। वो तैयार नहीं हुई।

हरिजन समस्या की जड़ है – जन्मगत जातपांत। मैं इस बात के लिए तैयार हूं कि अगर आज इंदिराजी यह कानून बनाने के लिए तैयार हो जाएं कि इन्टरकास्ट मैरिज जो लड़के करेंगे, वो ही सर्विस में आ सकेंगे, और अटल बिहारी बाजपेयी, दोनों इस बात के लिए तैयार हो जाएं तो मैं रिटायर होने को तैयार हूं पब्लिक लाइफ से। (तालियां)

आज दूसरी समस्या उनकी गरीबी की है, हमारे हरिजन भाइयों की। तो गरीबी का यह हाल है कि 48 फीसदी आदमी, अभी प्लानिंग कमीशन के अनुसार, पावर्टी–लाइन से नीचे रह रहा है, जबकि हमारे हरिजन भाइयों की तादाद केवल 15 है। इसका मतलब यह है कि 34 फीसदी आदमी और उतने ही गरीब हैं, जितने कि हमारे हरिजन भाई हैं। तो, देश की गरीबी जब मिटेगी तो हमारे हरिजन भाइयों की भी मिटेगी।

लेकिन इस सिलसिले में मैंने –– क्या किया है हरिजनों के लिए, केवल एक बात कहकर दूसरे मजमून पर मैं आऊंगा। वह यह कि जितना कि हमने कहा कि चौथाई हमारे सारे सूबे का किसान, काश्तकार, बेदखल वो बेदखलकार, नान–आकूपेंसी टेनेंट, टेनेंट आफ सील या होम सील जमीदार्स या सब–टेनेंट था, तो उनमें से साढे सत्ताईस फीसदी हरिजन थे और जब उनकी तादाद हमारे सूबे में 18 फीसदी थी, उन सब को मैंने मालिक बना दिया अपनी जमीनों का। (तालियां) यह हरिजनों की बावत जवाब हो गया।

मैं आपसे यह कह रहा था कि गौरमेंट बनी, जबकि हमने मोरारजी देसाई को प्राइम मिनिस्टर बनाया लेकिन उन्होंने जो गौरमेंट का निर्माण किया, उसमें भी मुझसे मशविरा नहीं लिया। अपने आदमी उसमें बहुत भरे गये। इस बात को भी छोड़िये आप। धीरे–धीरे उनका दृष्टिकोण यह साबित होता चला गया। मैंने पार्टी बनाने के लिए यह कह दिया था और गांधी जी के नाम को इसलिए कहता था कि गांवों की उपेक्षा हुई है, बेरोजगार लड़के बहुत घूम रहे हैं, वगैरा–वगैरा, तो उनकी यह हालत सुधरनी चाहिए। लेकिन उनका दृष्टिकोण मेरे से बिल्कुल मुख्तलिफ था। 77 से 79 तक, अगर आंकड़ों का आप अध्ययन करेंगे तो आप यह पायेंगे कि गांव वालों की और किसानों की हालत जनता पार्टी के अहद में ज्यादा कमजोर हुई, बामुकाबले पहले के।

जब कोई किसान और मजदूर रोता हुआ उनके पास गया, तो हमेशा रोता हुआ निकला या अफसोस करके निकला कि वो क्यों प्रधानमंत्री के पास गया था? उन्होंने उनके जखम पर कभी मरहम नहीं रखा। एक दफे एक किसान उनके पास जाता है कि आलू की कीमत बहुत कम हो गयी है, इतनी कम हो गयी है कि हम लोगों को खेत में जोतना पड़ रहा

है, उसको खोदने के लिए जो खर्च होगा, उतनी कीमत भी आलू की नहीं मिल रही है, तो क्या किया जाए? यह रोता हुआ उनके पास गया, मोरारजी भाई के पास गया। उससे, हमारे प्रधानमंत्री ने उस गरीब किसान से यह कहा कि तुम बेवकूफ हो, तुमने इतना आलू बोया क्यों था?।

इसके बाद, एक बात और, मैं ज्यादा तफसील में जाना नहीं चाहता हूं, कि 23 दिसम्बर सन् 77 को गौरमेंट बनने के एक साल बाद मेरा जन्मदिन मनाने के लिए ये, जैसे मेरे साथी नरेन्द्र सिंह बैठे हैं, राजनारायणजी वगैरा, इन्होंने जिद की कि हम किसानों को बुलायेंगे आपका जन्म दिन मनाने के लिए। मैंने इनको मना किया। मैंने कहा, ये दिल्ली के शहरवाले लोग हैं, ये समझेंगे कि केवल किसानों का ही दर्द है मेरे दिल में और मैं गैर–किसानों के खिलाफ हूं, जबकि यह बात नहीं है। मैं कभी आपको थोड़ा सा वक्त मिला, तो बताऊंगा। मैं बराबर अपने सूबे में भी यह कहता रहा और यू0पी0 के बड़े–बड़े शहरों में सब लोगों को मालूम हो गया। मेरा कहना यह था और है और यह आर्थिक सचाई है कि जब तक किसानों की हालत अच्छी नहीं होगी, तब तक शहरवालों की हालत अच्छी नहीं हो सकती। (तालियां)

मेरे मना करने के बावजूद, मेरे साथियों ने मेरा वो जनमदिवस मनाया। यह 77 की बात कह रहा हूं, 78 की नहीं, 77 में जब भी पच्चीस लाख किसान इकट्ठे हुए। मोरारजी भाई ने उस पर आकर मुझको शुभकामनाएं देने का बचन दिया था, उनके नाम से इश्तहार छप चुके थे, लेकिन इतनी बड़ी मीटिंग को देखकर वो आये नहीं और उनके हृदय में ईर्ष्या की एक लहर दौड़ गयी।

लिहाजा, जनसंघ के दोस्तों ने और मोरारजी ने यह तय किया कि चरण सिंह को, राजनारायण को कैबिनेट से निकाला जाए और फरवरी, 78 में मेरे पास एक खत बम्बई से आया कि आपको कैबिनेट से निकाला जाएगा, और नहीं तो गृहमंत्री–पद से हटाया जाएगा।

इसके बाद उन्होंने हमारी पार्टी के जो तीन चीफ मिनिस्टर थे, सब बैकवर्ड क्लासेज के थे– बिहार, यू0पी0 और हरियाणा– सब को हटा दिया और राजनारायण को भी पार्टी से निकाल दिया। मैंने उनसे कई बार कहा और कई बार बयान भी दिया कि जब तक निष्पक्ष होकर आप एक पार्टी नहीं बनायेंगे, यह जनता पार्टी चलने वाली नहीं है। उनका एटिट्यूड, उनका दृष्टिकोण इस बात से साबित होगा कि 26 जून, सन् 78 को जब कि वो यूरोप से वापस आये, तो पत्रकार सम्मेलन में पत्रकारों ने उनसे पूछा कि राजनारायणजी को आपने निकाल दिया। उन्होंने पार्टी छोड़ दी है, और अगर लोकदल के आदमी छोड़ दें तो क्या होगा? इस पर उन्होंने कहा कि अगर लोकदल के सारे आदमी भी जनता पार्टी को छोड़कर चले जाएं, तो जनता पार्टी मजबूत हो जाएगी।

इससे जो मेरे साथियों को वेदना हुई कि जिन्होंने मिलकर पार्टी बनायी थी, जिनकी सबसे बड़ी कुर्बानी थी, उसका अंदाज नहीं लगा सकते, उन्होंने मुझसे कहा कि चौधरी साहब, अब वक्त आ गया है कि जनता पार्टी को मजबूत किया जाए, जनता पार्टी को छोड़के। और, पक्षान्तर या दल–बदल जब कहा जाता है – जबकि जो जनता पार्टी की गौरमेंट ने एक विधेयक पेश किया हुआ है, बिल पेश किया हुआ है, मई सन् 79 में, जो पार्लियामेन्ट में पेश है कि अगर एक–चौथाई से ज्यादा छोड़ें तो पार्टी का विभाजन है, दल–बदल नहीं है, स्प्लिट है। हम लोगों ने एक–तिहाई ने पार्टी छोड़ी थी, जिन्होंने छोड़ी थी उस तारीख में भी नहीं आते दल–बदल के तहत।

अब एक चौथा आरोप और, जिसका जिक्र मेरे मित्र ने किया था, देवराजजी अर्स ने– वह यह था कि मैं नेहरूजी का विरोधी हूं। नहीं! नेहरू जी का विरोधी नहीं था। लेकिन इतनी बात जरूर है कि मैं अपनी स्वतंत्रता, विचार की स्वतंत्रता रखना चाहता हूं, चाहे नेहरू जी हों और चाहे महात्मा गांधी हों। मैंन इज लायेबल टु अर– हर मनुष्य से भूल होती है और पंडितजी की बात छोड़ दीजिये। मैं तो यह समझता हूं कि महात्माजी से भी अपने जीवन में दो गलतियां हुई हैं, जो मैंने खुलकर पब्लिक मीटिंग्स में कहीं।

महात्मा के बाद जवाहरलाल जी हमारे सबसे बड़े नेता थे। उनकी कुर्बानी असीम थी। इसमें दो राय नहीं। और वो देश को ऊंचा उठाना चाहते थे, देश को गरीबी से उठाकर मालदार बनाना चाहते थे, इसमें भी किसी को न शक था और न मुझको कभी शक था। मनुष्य, हर मनुष्य गलती कर सकता है, चाहे नेहरूजी हों, चाहे गांधीजी हों – इसी बात से साबित है कि पंडितजी ने कहा कि सारे गांवों को मिलाकर खेती करें, तब पैदावार बढ़ेगी 1959 के नागपुर अधिवेशन में। मैंने विरोध किया था, मुझसे इस बात पर नाराज हो गये। लेकिन बाद में उन्होंने खुद माना कि कोऑपरेटिव फार्मिंग नहीं चल सकता, नहीं चल सकता।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्होंने देश में इन्फ्रास्ट्रक्चर कायम किया, अर्थात, हमारी इकोनोमी की, अर्थ–व्यवस्था की एक बुनियाद रखी, जिसकी वजह से आज दुनिया के औद्योगीकृत देशों में हमारा नम्बर आठवां–नौवां आता है, इसमें कोई शक नहीं है, जिसको मैं स्वीकार करता हूं। परन्तु मेरा साथ ही साथ यह खयाल रहा है कि खेती की तरफ भी बराबर ध्यान देना चाहिए था और छोटे रोजगार, हस्तकला और दस्तकारियों को प्रोत्साहन देना चाहिए था, वरना देश की गरीबी कभी नहीं मिटेगी और बेरोजगारी बढ़ती जाएगी।

अच्छा तो खैर, पंडितजी ने सन् 63 में 8 नवम्बर सन् 63 को नेशनल डेवलपमेंट कौंसिल, राष्ट्रीय विकास परिषद के सामने जो भाषण दिया, उसको पढ़ने के बाद अगर कोई यह कहे कि मैं उनको क्रिटिसाइज करता था या उनकी नीतियों से सहमत नहीं था या वो मेरे से अलग राय रखते थे, तो उसका भ्रम दूर हो जाएगा। उसमें उन्होंने यह कहा है, फिर कहता हूं, 8 नवम्बर, सन् 63, प्रोसिडिंग्स मौजूद है कि देश की तरक्की बड़े कारखानों से और छोटों से नहीं होगी, खेत की पैदावार बढ़ाने से होगी। 11 दिसम्बर सन् 63 को, 32 दिन बाद, उन्होंने लोकसभा में यह कहा, जिसकी प्रोसिडिंग्स मौजूद है, कि आज भी रह–रह कर गांधी की बात याद आती है, गांधी याद आते हैं, मैं मॉडर्न इंडस्ट्री का बड़ा प्रशंसक रहा हूं, लेकिन इससे देश की बेरोजगारी की समस्या का समाधान नहीं हुआ।

उसी भाषण में उन्होंने यह स्वीकार किया कि मेरी और प्लानिंग कमीशन की गलती के कारण, ये वर्ड्स हैं उनके, आज चंद आदमियों के हाथ में आर्थिक सत्ता का केन्द्रीयकरण हो गया है, एंड आई प्रोमिज दिस शैल नाट बी अलाउड टू हैप्पन इन दि फ्यूचर। परन्तु हमारी बदकिस्मती कि उस वक्त वो स्वस्थ नहीं थे, बीमार थे और छह महीने बाद हमसे बिदा हो गये। अगर वो जिंदा रहते तो अपनी पुरानी पॉलिसी जो, ज्यादा जोर देने का फैक्टरीफिकेशन सिलसिले पे था, उसको शायद चेंज कर देते। चेंज करते ना करते, लेकिन खेती और चरखे पर और दस्तकारी पर उनका इम्फेसिस बढ़ जाता।

अब लम्बी बात छोटी करके कहना चाहता हूं कि अपने कांग्रेस के वो हमारे पुराने दोस्त, क्योंकि मेरी उम्र भी लगभग सारी कांग्रेस में बीती थी, वो इंदिराजी से उनका मतभेद था, इंदिराजी इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं थीं कि इमरजेंसी की घोषणा करके

उन्होंने कोई पाप किया है देश के साथ, तो वो कांग्रेस वाले, उनकी तादाद ज्यादा थी, इंदिरा उनको छोड़कर चली गयीं। तो उनके जो लीडर आज देवराजजी अर्स और चांदराम वगैरा हैं, तो ये कांग्रेस और भारतीय लोकदल ने मिलकर एक संगठन बनाया है, जो आपके सामने इलेक्शन के लिए मौजूद हैं वोटों के लिए। लोकदल और कांग्रेस इस बात पर सहमत हैं कि जहां हम बड़े कारखानों की उपेक्षा नहीं करना चाहते, लेकिन आगे के लिए हम खेती पर ज्यादा रूपया खर्च करेंगे, तभी देश की गरीबी मिटेगी।

आज देश की गरीबी का यह हाल है दोस्तों कि 125 मुल्कों में –– और मुल्क उसको माना गया है कि जिसकी दस लाख से ज्यादा आबादी हो, तो उनमें आज हमारा नम्बर 111वां है। अब से दस साल पहले, पन्द्रह साल पहले हमारा नम्बर 85वां था, 84 हमसे मालदार और 40 हमसे गरीब। और सन् 73 में 85 के बजाय हमारी पोजीशन हुई 104, 103 हमसे मालदार और 22 हमसे गरीब। और 76 में, इंदिरा जी के सामने तीन साल में ही, हमारी पोजीशिन 104 से गिरकर 111 आ गयी, आज 110 मुल्क हमसे मालदार हैं और केवल 14 छोटे–छोटे मुल्क जिनके नाम आपने नहीं सुने, वो ही हम से गरीब हैं। यह है हमारी गरीबी का हाल और देश का।

बेरोजगारी का यह हाल है कि हमारे पढ़े–लिखे लड़के, बी0ए0 पास, एम0ए0 पास, इंजीनियरिंग पास, इलेक्ट्रीसिटी की विद्या जानने वाले, डाक्टर और इंजीनियर, आज वो मारे–मारे फिरते हैं। और जब हमने चार्ज लिया था सन् 79 में, वो सन् 77 में, तो 1 करोड़ 2 लाख लड़कों का नाम कामदिलाऊ दफ्तर के रजिस्टरों में दर्ज था कि हम रोजगार चाहते हैं, 1 करोड़ 2 लाख। ढाई साल बाद वो 1 करोड़ 2 लाख से कम होने के बजाय 1 करोड़ 40 लाख लड़कों का नाम दर्ज है, जो कि रोजगार के लिए मारे–मारे फिरते हैं और ये सिर्फ शहरों के लड़के हैं।

मैंने यह कहा था और जनता पार्टी के लीडरों ने मान लिया था कि आगे को हम गैर–जरूरी तौर पर जब तक बहुत जरूरी न हों, बड़े कारखाने नहीं लगायेंगे। दस्तकारी और छोटे रोजगारों पर जोर देंगे, तभी ज्यादा लड़कों को काम मिलेगा, वरना नहीं। लेकिन मेरी इस नीति को माना नहीं गया। नतीजा हुआ कि ढाई साल में 36 लाख लड़के और बेरोजगार हो गए।

अंग्रजों के जमाने से गरीब और अमीर का अन्तर बढ़ता जाता था। हमारी उम्मीद यह थी, हमारी कोशिश यह थी गरीब और अमीर का अन्तर कम हो, शहर के रहने वाले और गांव के रहने वाले का अन्तर हो, लेकिन ठीक उल्टा हुआ। सन् 50–51 में अगर एक किसान की और मजदूर की जो खेत में काम करने वाले हैं, उस वक्त आमदनी 100 रू0 थी, तो गैर–किसान की या शहर में रहने वाले की औसत आमदनी पौने दो सौ थी। तो बजाय यह कम होने के 76–77 में यह हो गया कि अगर किसान की आमदनी 100 रू0 है तो शहर की या गैर–किसान की आमदनी साढ़े तीन सौ रूपये है। मतलब यह हुआ कि गांव और किसान के एक औसत नागरिक की आमदनी में जितनी चौड़ाई या गैप था अंग्रेजों के जमाने में, वो बजाय कम होने के दूना हो गया – एक और पौने दो की बजाय एक और साढ़े तीन हो गया।

अब हम यह चाहते हैं और बड़े–बड़े सेठ पैदा हो गए। मसलन, पचासों आदमी हैं जिनके पास आज कई सौ, कई सौ करोड़ की सम्पत्ति है। केवल एक मिसाल दूंगा जिनका

नाम आपने सुना है– बिरला। सन् 51 में 53 करोड़ रू0 की सम्पत्ति थी, सन् 76 में 1100 करोड़ रू0 की सम्पत्ति थी। 1100 करोड़, 53 की बजाय बीस गुना।

तो, इसलिए हमारी पार्टियों ने, दोनों ने, यह तय किया है कि खेत की पैदावार पर जोर देंगे। जब खेत की पैदावार बढ़ेगी और इतनी बढ़ जाएगी कि हम बाहर को भेजेंगे, तो हमारे पास फॉरन एक्सचेंज भी आयेगा और फॉरन एक्सचेंज की सारी जरूरत हम अपने खेत की पैदावार बढ़ाकर पूरी करेंगे।

दोस्तों, एक बात पूछकर आपसे खतम करे देता हूं। आपको याद है, गांधीजी चरखा–करघा लेकर बैठक गए थे। क्यों? वो, बुनकर या जुलाहे के घर नहीं पैदा हुए थे? उनका कहना यह था कि हमारे देश में जनसंख्या बहुत है, प्राकृतिक साधन कम हैं, जमीन कम है, लोहा कम है, लकड़ी कम है, तेल कम है, और कोयला कम है, तो हमारा छोटी–छोटी जमीनों की, छोटे–छोटे किसानों के पास और बड़े कारखाने जरूरी होंगे अनिवार्य रूप में जो हमको लगाने पड़ेंगे, हवाई जहाज बनाने को, रेल का इंजन बनाने को, बिजली पैदा करने को, फौलाद बनाने को, लेकिन अधिकतर दस्तकारी होनी चाहिए, छोटे–छोटे रोजगार होने चाहिए। और अमरीका की नकल न करो, अमरीका में आदमी कम हैं, जमीन ज्यादा। आज अमरीका में, 100 के पीछे चार आदमी खेती करता है। आपके 72 आदमी करते हैं। आपके पास जमीन 12 लाख मुरब्बा मील है, उनके पास 36 लाख मुरब्बा मील। तो उनके कई–कई सौ एकड़ के फार्म हैं। उनका कहना यह था कि वहां जमीन बहुत ज्यादा है, आदमी कम, वहां बड़े फार्म होंगे, वहां ट्रैक्टर चलेंगे, वहां बड़ी मशीन होगी और कम आदमी लगेंगे। लेकिन हमारे यहां छोटे रोजगारों पर जोर होना चाहिए और थोड़ी–थोड़ी जमीन लोगों के हिस्से में आएगी, ज्यादा बड़े–बड़े फार्म और ट्रैक्टर से काम नहीं होगा। यह था गांधीजी का संदेश।

अभी अगरचे हमारी गौरमेंट को दो या तीन महीने हुए हैं चार्ज लिए हुए, हमने किसानों की हालत सुधारने के लिए 10 रुपए फी क्विंटल जो गन्ने के दाम मोरारजी ने रखे थे वो हमने साढ़े 12 रूपये कर दिया है। (तालियां) और धान के दाम हमने 85 रू0 क्विंटल की बजाय 95 रू0 क्विंटल निश्चित किया, दस रुपए उसकी भी कीमत हमने बढ़ा दी, धान की और चावल की और कपास की कीमत 255 रू0 फी गांठ थी, हमने उसको 275 कर दिया, 20 रू0 बढ़ा दिए, ताकि किसान जो कि कपास को या कॉटन को बोने वाले हैं, उनकी आमदनी बढ़े।

चीजों के दाम बढ़ रहे थे पुरानी गौरमेंटों की गलतियों के कारण। मैं उस तफसील में जाऊंगा नहीं, तो उसको हमने रोकने की कोशिश की है। बहुत लोगों के यहां छापा पड़ा है और एक हमने अध्यादेश भी जारी किया कि अगर अफसरान को यह इतमीनान हो जाए कि इसके यहां सामान भरा हुआ है या इसने सामान को दस जगह तकसीम किया हुआ है, तो वो जेल भेजा जा सकता है। अब नतीजा यह है कि भाव का बढ़ना रूक गया है। लेकिन यहां की ऐसी राजनीति है। इंदिराजी ने यह बयान दिया है कि यह अध्यादेश मुझको गिरफ्तार करने के लिए जारी किया गया। सोचो, इस देवी को, जरा यह क्या कहती हैं ?

और, अटलबिहारी बाजपेयी, जो कि जनसंघ के लीडर हैं, वो यह कहते हैं कि दुकानदारों के साथ बहुत अन्याय है, जबकि उनकी गोरमेंट जो मध्य प्रदेश में है, उसमें फरवरी 78 में एक अध्यादेश पास किया था, क्योंकि बिजली के कर्मचारी ठीक काम नहीं कर रहे थे। . . मैंने गृह मंत्री की हैसियत से दिल्ली की लोकसभा मैं उनका समर्थन किया था। उसको भूल

गए, बल्कि बड़े–बड़े जमाखोर, मुनाफाखोर, ब्लैक मार्केटियर्स, प्रोफेटियर्स और स्मगलर्स की हिमायत कर रहे हैं, केवल हमारा विरोध करने के लिए।

अब तक लोगों का, बहुत–सों का ख्याल था कि शहर के चंद दुकानदारों की पार्टी है जनसंघ, अब अटल बिहारी बाजपेयी ने यह बयान देकर साबित कर दिया कि वो किसके दोस्त हैं दुकानदारों के, स्मगलर्स के और मुनाफाखोरों के हैं या गरीब जनता के हैं। उन्होंने कहा है कि मैं इस अध्यादेश के खिलाफ सत्याग्रह करूंगा, महीना भर हुआ, अभी किया नहीं है। लेकिन वो अगर करें दिल्ली में, मैं देवराजजी अर्स से एक दरख्वास्त करूंगा कि एक दर्जन लड़के भेज दें, ताकि उनको माला डाल दें कि तुम स्वर्ग को जाओगे। (तालियां)

और रही हमारी बहन इंदिरा की बात, बहन तो उन्हें कहना पड़ता है, हमारे लीडर की बेटी हैं, लेकिन उसने सच बोलना बचपन से नहीं सीखा है, झूठा ही प्रचार रोज करती रहती हैं, झूठा। (तालियां) कल ही एक अखबार में उनका बयान है –– इलस्ट्रेटेड वीकली, जो कि बॉम्बे से निकलता है– उसमें उन्होंने कहा है कि इमरजेंसी लगाकर मैंने कोई गलती नहीं की थी। तो दोस्तों, इतनी जल्दी मत भूल जाना। अगर उसको राय दे दी और दिल्ली में वो फिर मालिक हो गयी तो अबके वो हटने वाली नहीं है। अब तो कोड़े पड़ेंगे, जैसे पाकिस्तान में पड़ रहे हैं लोगों पर। नम्बर पहला हमारा आयेगा, लेकिन बाद में आपका भी आयेगा। (हंसी)

और, उनको यह भी लज्जा नहीं आयी कहते हुए कि हमारे वैदेशिक मंत्री श्री श्यामनन्दन मिश्र की बातचीत हुई हवाना में, हवाना में जहां कांफ्रेंस थी प्रेसिडेंट जिया उल हक, जो पाकिस्तान के राष्ट्रपति हैं, डेढ़ घंटे बात हुई वो कहती हैं, बात जरूर हुई, लेकिन वह कहती हैं कि बात इसलिए हुई कि पाकिस्तान हिन्दुस्तान पर हमला कर दे, ताकि इस गौरमेंट को मौका मिल जाए चुनाव को मुलतवी कराने का। राजनीति में मुकाबला होता है इलेक्शनों का, लेकिन कोई लीडर इस नीचे दरजे तक आज तक उतरा नहीं है। लेकिन उनका दोष नहीं है इंदिराजी का। आम तौर पर आदमी जब दूसरे की बाबत कुछ कहता है या आलोचना करता है, तो अपने पैमानों से करता हैं, अपने स्टैंडर्ड से करता हैं। अगर इंदिराजी को यह मौका मिलता है, तो बेशक यही करतीं, जो वो हम पर आरोप लगा रही हैं। (तालियां)

इंदिराजी ने यह भी कहा है कि मैं प्रेस पर फिर भी सेंसर लगा सकती हूं, पाबंदी लगा सकती हूं, अगर मैंने जरूरी समझा। लेकिन बहुत से अखबार अब भी इंदिरा को सपोर्ट कर रहे हैं और हमारी बाबत तो गलत सीमिंग फैलाते हैं और पूरी रिपोर्ट भी अखबारों में नहीं देते। इसमें पत्रकारों का दोष मैं नहीं मानता हूं, पत्रकारों के मालिकों का मानता हूं। यह बिरला एक दर्जन पूंजीपतियों को लेकर 27 जून को जब 25 को हम सब गिरफ्तार हो चुके थे, इंदिराजी के पास गया था और इसने यह कहा कि कि आपने आपालकाल की घोषणा की है, इमरजेंसी लगाई है, हम आपके साथ हैं, हम आपके समर्थक हैं।

दोस्तों, मैं समझ सकता हूं, मैं उनका कोई दोष नहीं मानता, पूंजीपतियों का और बड़े–बड़े कारखानेदारों का और उद्योगपतियों का, वो ये जानते हैं कि ये शख्स बड़े कारखानों को ज्यादा नहीं चाहता है, थोड़ा ही चाहता है। वो सरकारी कारखानें होंगे, तो बड़े कारखानों के खिलाफ हैं, आम तौर पर यह उनका ख्याल है। इस ख्याल में भी ये उनकी गलती है। लेकिन दस्तकारों का, छोटे रोजगारों का हामी है, इसलिए वो हमारा विरोध कर रहा है।

हमारे दिल्ली और बम्बई जैसे बड़े–बड़े शहर के लोगों, रहने वाले लोगों की यह भी समझ में नहीं आता कि किसान का, छोटे किसान का लड़का आके दिल्ली में एक राजनैतिक नेता कैसे बन सकता है? और कुलक के सिलसिले में, एक बात याद आ गयी। मेरे पिताजी और मेरे अंकिल्स, मेरे ताऊ वगैरा, एक जमींदार के काश्तकार थे, जमीन के मालिक नहीं थे। मेरा जनम एक छप्पर के नीचे हुआ है, कच्ची दीवारों के मकान के अन्दर। जो आदमी महलों में पैदा होगा, वो ईमानदार होते हुए नेकनीयत होते हुए भी, चंद अपवादों को छोड़कर, गरीब आदमी की तकलीफों को पहचान नहीं सकता है। गरीब आदमी के दर्द को वही जानेगा जो गरीब आदमी के घर पैदा हुआ होगा।

इसलिए उत्तर भारत के सब किसान जानते हैं और मैंने उनसे कह रखा है कि यह सब बड़े–बड़े अखबार हमारा विरोध करेंगे। अगर किसी रोज तारीफ करने लगें, तो यह समझना कि मैं तुम्हारी सेवा कुछ नहीं कर रहा हूं और जब तक विरोध करते रहें तो समझ लेना कि मेरी कोई सेवा आपके लिए बन रही है।

मैंने आपका बहुत समय लिया। अब मैं आपसे इजाजत चहूंगा। मेरे साथ तीन नारे लगा दीजिए ....

भारत माता की जय, भारत माता की जय।

महात्मा गांधी की जय, महात्मा गांधी की जय।।

लोकदल–कांग्रेस की जय, लोकदल – कांग्रेस की जय।।।

दिनांक 3 नवम्बर, 1979 को
हासन, कर्नाटक की सभा में
प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण।

————————————————————

भाइयों, बहनों और बेटियों,

आज मुझको बहुत प्रसन्नता है आपके इस इलाके में आने पर।

(दुभाषिये द्वारा स्थानीय भाषा में अनुवाद)

(हंसी के साथ श्री चरण सिंह) जरा लम्बे सेन्टेन्स कहूं––

पुराने जमाने में हमारा देश एक बहुत गौरवशाली देश था। संयुक्त दृष्टि से शक्तिशाली था और आर्थिक दृष्टि से समृद्धिशाली था। यहां से संसार में बहुत प्रकाश फैला था। दूसरे देशों के लोग हमारे पूर्वजों के कदमों में बैठकर विद्या सीखने के लिए आते थे।

मेरी पीढ़ी के लोग जब अंग्रेजों से महात्मा गांधी के नेतृत्व में जूझ रहे थे, तो हम तरह–तरह के स्वप्न अपने देश के लिए देखा करते थे। हमारे अरमान ये थे कि देश को आजाद होते ही फौरन हम इसको फिर उन्नत बना देंगे, और हर अर्थ में, हर मायने में हम इसको हिमालय की चोटी पर आसीन कर देंगे। जब अंग्रेजों का हिटलर से युद्ध चल रहा था और इटली हार गया, तो अंग्रेजों की तरफ से फौज ने, उनकी फौज ने इटली पर कब्जा किया। ब्रिटिश लोगों की फौज में हिन्दुस्तान सिपाही भी थे। उन्होंने वापिस आकर हमको 47–48 में ये बतलाया था– शहर के किसी भी घर में जाते, किसी भी गांव में जाते, तो उन्होंने सब जगह महात्मा गांधी के फोटो को लगा हुआ देखा। तो, दुनिया ये समझती थी कि गुलामी के जमाने में जिस देश ने महात्मा गांधी जैसा आदमी पैदा किया है, तो वो आजाद होने पर दुनिया को फिर कोई नया सन्देश देगा। परन्तु दोस्तों, अब अफसोस के साथ अब यह मानना पड़ता है कि हमारे सारे स्वप्न भंग हो गए, हमारे सारे अरमान खत्म हो गए।

आज हमारा देश लगभग सभी देशों से ज्यादा गरीब है। दुनिया में 125 देश हैं जिनकी आबादी 10 लाख से ज्यादा है, उनमें हमारा नम्बर 11वां है। अर्थ ये हुआ कि 110 देश हमसे मालदार हैं और केवल 14 देश हमसे गरीब हैं। सन् 65–66 में हमारा नम्बर 85वां था, अर्थात 84 देश मालदार थे और 40 देश गरीब थे। दस साल के बाद, हम 85वीं पोजीशन से खिसक कर 111 पर आ गए। मतलब यह हुआ कि हमारा देश गरीब ही नहीं है, बल्कि समय बीतते जाने पर और गरीब हो रहा है, गरीबतर हो रहा है, शायद गरीबतम हो जाएगा।

आज हमारे यहां देश में, देश की पूरी आबादी लगायें तो 84 फीसदी आदमी ऐसे हैं जिन्हें स्वस्थ रहने के लिए सूखा अन्न भी नहीं मिलता है, बड़ी–बड़ी गगनचुम्बी इमारतों और आलीशान मकानों के पीछे रहते हैं, सड़क पर चलने वालों को वो गरीब दिखाई नहीं देते हैं।

आज, यह तो ठीक है कि महामारियॉ, मसलन – प्लेग, कॉलरा वगैरा कम हो गए हैं, लेकिन खाना अच्छा न मिलने के कारण, भोजन अच्छा न मिलने के कारण, हम लोगों की ऊंचाई कम होती जा रही है, छाती तंग होती जा रही है, हमारे नौजवानों का वजन कम होता जा रहा है। दूध अंग्रेजों के जमाने में भी हमारे सब बच्चों को नहीं मिलता था, लेकिन तब जितना मिलता था, आज उतना भी नहीं मिलता है, फी–सद।

फिर, दूसरी जो बड़ी बीमारी, यहां दूसरा बड़ा जो दोष है, आज हमारी अर्थ–व्यवस्था का, वो है – अनएम्प्लायमेंट, बेरोजगारी, जो कि बढ़ती जा रही है। केवल मैं आपको शहर के

आंकड़े बता देना चाहता हूं– सन् 1977 में 1 करोड़ 2 लाख 40 हजार आदमियों के नाम दर्ज थे कामदिलाऊ दफ्तरों में, हम लोग काम चाहते हैं, पढ़े–लिखे लड़के और कुछ बेपढ़े भी। अब सितम्बर 79 में, अर्थात् ढाई वर्ष जनता पार्टी के रूल के बाद, हुकूमत के बाद, इन बेरोजगार लोगों की तादाद 1 करोड़ 2 लाख से बढ़कर 1 करोड़ 40 लाख हो गई है।

तीसरी बात यह है, गरीब–अमीर का अंतर बजाय कम होने के बढ़ता जा रहा है। मसलन, अंग्रेजों के जमाने में एक किसान कीए गांव वाले की आमदनी अगर 100 रू0 थी तो शहर वाले की आमदनी 178 थी। लेकिन आज अगर गांव वाले की आमदनी 100 रू0 है तो शहर वाले की आमदनी 346 रू0 है।

गांधीजी सारी उमर हमको यह उपदेश देते रहे कि असली भारत गांवों में रहता है, खेती करता है, इसलिए खेती की तरफ अधिक ध्यान दो। जितनी खेत की पैदावार बढ़ेगी, उतना देश मालदार होगा। उनका दूसरा उपदेश ये था कि अगरचे बड़े–बड़े कारखाने हमको जरूर चाहिये, लेकिन अधिक जोर हमको दस्तकारियों पर, हस्तकलाओं के बढ़ाने पर देना चाहिए –– (शोर).. बड़े कारखानों में अगरचे रूपया बहुत लगता है और कारखानेदारों को मुनाफा बहुत होता है, लेकिन कम लोगों को रोजगार मिलता है।

दूसरी बात मैं आपको किसानों, ये बताना चाहता हूं ... (गुस्से में) कि जिस ये क्या बात हुई है ? ... शोर ...

दूसरी बात, मैं आपको ये बताना चाहता हूं दोस्तों, कि जिस देश में किसानों की तादाद ज्यादा होती है और दूसरा पेशा करने वालों की कम होती है, वो देश गरीब होता है। आज हमारे देश में 72 फीसदी आदमी खेती करता है और 28 फीसदी दूसरा पेशा करता है। इसलिए हमारा देश गरीब है। अमरीका में 100 में 4 आदमी खेती करते हैं, 96 आदमी दूसरा पेशा करते हैं, इसलिए अमरीका के लोग मालदार हैं।

जब अंग्रेज हमारे यहां पर आये थे, तो 60 फीसदी आदमी खेती करता था, 25 फीसदी उद्योग–धंधों में लगा हुआ था, 15 फीसदी तिजारत, और सामान के ढोने में, ट्रांसपोर्ट में लगा हुआ था। लेकिन आज खेती करने वालों की तादाद 60 की बजाय 72 हो गई है। उद्योग–धंधों में लगे हुए लोगों की तादाद 25 से घटकर 10 हो गई, लिहाजा देश आज गरीब हो गया है।

इसलिए खेती के अलावा, हमको दूसरे पेशों में लोगों की तादाद बढ़ानी चाहिए, अगर देश को मालदार बनाना है। लेकिन दूसरे पेशे तब बढ़ते हैं, जब खेत की पैदावार फी–बीघे बढ़ती जाती है। जब खेत की पैदावार बढ़े और किसान बाजार में अपनी पैदावार को बेचे, जितना रुपया उसके पास आएगा, उस रुपये के एवज में वो कोई सामान खरीदना चाहेगा और सामान को पैदा करने के लिए उद्योग–घंधे लगाये जाएंगे।

इसलिए लोकदल और कांग्रेस का जो गठबंधन हुआ है, वो हमारी इस पार्टी की ओर से खेती की पैदावार बढ़ाने पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाएगा। आज केवल 24 प्रतिशत भूमि में सिंचित क्षेत्र है और 76 परसेंट भूमि, 76 प्रतिशत भूमि में कोई सिंचाई का प्रबंध नही है। आप लोगों को इस बात का एहसास नहीं है कि उत्तरी भारत में मध्य प्रदेश, बिहार, उड़ीसा का भी बहुत बड़ा हिस्सा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और हरियाणा वगैरा में आज अनावृष्टि के कारण बिल्कुल सूखा पड़ा हुआ है। अगर हमारे 50 फीसदी रकबे में सिंचाई का प्रबंध होता, तो चाहे सारे देश में एक साल बारिश न हो, तब भी कोई कष्ट हमारे लोगों को नहीं होता।

इसलिए हम बाहर से अन्न मंगाने की बजाय अपने खेतों की पैदावार बढ़ाने के लिए सबसे ज्यादा रुपया सिंचाई के क्षेत्र में लगाएंगे।

आज गांवों में न सड़के हैं, न स्कूल हैं, न अस्पताल हैं और केवल 39 फीसदी गांवों में बिजली की रोशनी है और बाकी 61 गांव, 61 फीसदी गांव रोशनी जानते नहीं हैं कि बिजली की रोशनी भी किसको कहते हैं। लेकिन ये सब तभी होगा, जबकि गांव के लड़के उठकर, गरीब घरों में पैदा हुए, पढ़े–लिखे लड़के, बढ़कर आगे राजनैतिक संगठन करके दिल्ली के तख्त पर कब्जा कर लेंगे, तभी जाके गरीबी मिटेगी, वरना मिटने वाली नहीं है। जो शहरों में हमारे लीडर पैदा हुए हैं वो नेकनीयत हैं, देश के लिए उन्होंने कुरबानी दी है, वो देश को बड़ा बनाना चाहते हैं, लेकिन देश गांवों मे रहता है और उन्हें गांवों की समस्याओं का कोई ज्ञान नहीं है।

अगर आज हम गांव के लिए कोई भी कदम उठाते हैं –– जैसे, वित्त मंत्री की हैसियत से हमने कुछ सहूलियत किसानों को पहुंचाई थी, तो जितने अखबार हैं वो करीब–करीब सब सेठों की मिलकियत के अखबार हैं। उन सबने हमारे खिलाफ बहुत जबरदस्त प्रोपेगेंडा किया, झूठा। बस, एक बात तो है, वो मुझको में, छिपा हुआ नहीं है, आपके सामने आता होगा। अदालतों में जो वो कर रहा है। झूठ बोलने में उनको कोई हिचकिचाहट नहीं है। वो यह कह रही हैं कि मुसलमानों का कत्ले–आम हुआ है अभी दो साल के अन्दर, जबकि वाकया यह है कि उनके जमाने में कहीं ज्यादा बलबे हुए थे, बनिस्बत जनता पार्टी या हमारे जमाने के।

और, जो उनके दिल में आग लगी हुई है फिर प्राइम मिनिस्टर बनने की, अगरचे 11 साल रह चुकी हैं, तो हर हद तक उस आग को बुझाने के लिए सब–कुछ करने को तैयार हैं, यहां तक कि उन्होंने अपने देश पर ये झूठा इल्जाम लगा दिया कि हमारे वैदेशिक मंत्री ने पाक के राष्ट्रपति से, पाकिस्तान के राष्ट्रपति से ये बात तय कर ली है कि वो हमारे मुल्क पर हमला करेगा और हम अपने इलेक्शन को टाल देंगे दो महीने के लिए। हमारे डिफेंस मिनिस्टर श्री सुब्रहमण्यम ने मुझको परसों सबेरे ये बतलाया था कि एक विदेश का कोरॅसपोंडेंट, पत्रकार उनके पास आया और उनसे ये पूंछा क्या आपने फौज वाले लोगों की छुट्टियां कैंसिल कर दी हैं? और रिजर्विस्ट लोगों को बुला लिया है? रक्षा मंत्री जी ने उस कोरॅसपोंडेंट से ये पूछा कि ये बिल्कुल बेसिर–पैर की बात है, आपको किसने ये झूठी बात बतलाई है? तो उस कोरॅसपोंडेंट ने कहा कि मुझको पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा ने यह कहा है।

एक बात आप और नोट करेंगे दोस्तों, कि आज तक इंदिरा गांधी ने कोई अफसोस जाहिर नहीं किया है कि उसने इमरजेंसी लगाई थी और पाप किया था, देश के साथ। वो ये कहती हैं कि उन्होंने बिल्कुल सही किया था। और दोस्तों, अगर आपने गलती से फिर उनको प्राइम मिनिस्टर बना दिया, तो फिर वही करेंगी जो कि उन्होंने पहले किया था, याद रखो।

मैं अपने बयान में यह कह चुका हूं, श्री जगजीवन राम को कि वह 'हिन्दुस्तान के सबसे मालदार राजनैतिक नेता' हैं। इससे ज्यादा मैंने नहीं कहा। लेकिन इसकी उन्होंने तरदीद नहीं की है। क्यों नहीं की है? उनके जाके झुग्गी, झोपड़ी के आगे जाके देखो कितने महल बने हुए हैं दुमंजिले और कितने और महल बने हुए हैं।

जहां तक उनके नेता, जो हमारे प्रधानमंत्री रहे हैं, मैंने यह सारी कहानी आपको बतलाई नहीं है, केवल मैंने उनको प्रधानमंत्री बनवाया था। अब प्रधानमंत्री बनने के बाद उनको

नशा हो गया और जो उनके लड़के के खिलाफ शिकायत थी, मैंने केवल ये कहा था उसको कमीशन आफ इंक्वायरी बैठाओ, जिससे कि वो मुझसे नाराज हो गए थे। 15 जनवरी, सन् 78 को गुजरात के प्रदेश में भावनगर शहर में मीटिंग में उन्होंने खुद ये कहा था कि मेरे लड़के के खिलाफ तरह–तरह के आरोप अखबारों में छप रहे हैं, मैं इस बात के लिए तैयार हूं कि कमीशन बैठाया जाए। लेकिन दो महीने तक जब कमीशन नहीं बठाया तो मैंने उनको चिट्ठी लिखी 11 मार्च को कि आप कमीशन बैठाइए। लेकिन उन्होंने मुझको ये जवाब दिया कि आरोप तो ऐसे लगते ही रहते हैं बेबुनियाद। मेरे पास तो तुम्हारी घरवाली की भी शिकायत आई है। मैंने ये कहा कि अपने लड़के पर कमीशन बाद में बैठाना तुम, मैं इस बात के लिए तैयार हूं कि मेरी वाइफ के और मेरे रिश्तेदारों के खिलाफ कमीशन बैठाओ, अगर कोई बेईमानी की बात उनकी साबित हो जाए और मेरे जरिये कोई बेईमानी उन्होंने की हो।

अभी कुछ दिन हुए बालासुब्रहमण्यम् नाम के एक बिजनेसमैन के यहां, जबकि मैं फाइनेंस मिनिस्टर था, तो मेरे बिना इल्म के और अधिकार था अफसरों को ऐसा करने का, उन्होंने बालासुब्रहमण्यम के घर पर छापा डाला था। बालासुब्रहमण्य ने अदालत में ये एफिडेविट दिया, बयान–हल्फी दिया है कि मैं कांति देसाई के, मोरारजी देसाई के यहां जाता था और कांति देसाई के साथ मैं बिजनेस करता हूं। और, जब मोरारजी बाहर जाते हैं तो उनके साथ मैं विदेशों में जाता हूं।

कर्नाटक के दोस्तों, एक बात कहकर खत्म करना चाहता हूं। मेरा ये विश्वास है, गांधीजी का यह मत था कि आदमी की जिंदगी के दो हिस्से नहीं होते– एक प्राइवेट जीवन और एक पब्लिक जीवन। अगर प्राइवेट जीवन किसी आदमी का अच्छा नहीं होगा और वह लीडर हो जाएगा, कोई पब्लिक की जिम्मेदारी उस पर आएगी तो वो उसमें भी ईमानदार नहीं रहेगा।

दिनांक 11 नवम्बर, 1979 को
चिमनबाग, इन्दौर, मध्य प्रदेश की जनसभा में
प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण

.....

बहनो और दोस्तों,

मुझको याद पड़ता है कि सन् सड़सठ में, मैं एक बार आपके यहां एक आम सभा में बोल चुका हूं। जब बहुत से सूबों में, हम बहुत से कांग्रेसियों ने कांग्रेस को छोड़ा था और भारतीय क्रांति दल की स्थापना हुई थी, तो उनके प्रतिनिधियों की एक मीटिंग इन्दौर में हुई थी। उस सिलसिले में, मैं भी हाजिर हुआ था यू0पी0 की तरफ से, तब मुझको याद पड़ता है कि यहां सार्वजनिक सभा हुई थी।

अब देश के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि आने वाली गवर्नमेंट, जो कि जनवरी में आप लोग चुनेंगे, वो कौन से दल की हो, किसकी हो ? आज तीन बड़े दल कहे जा सकते हैं जो कि वोट के लिए आपके पास आयेंगे। एक तो जनता पार्टी, जनता पार्टी कहने के लिए है, जनता पार्टी बन नहीं पायी थी। जनता पार्टी बनाने की हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी थी। हम सब ने उसके लिए काम किया था। लेकिन वो अलग–अलग गुटबाद उसमें बना रहा, घटकवाद बना रहा। तो जो जनता पार्टी है, इसमें कांग्रेस को, हमारे जनसंघ के दोस्त और कुछ थोड़े–से सोशलिस्ट और कुछ कांग्रेस फॉर डेमोक्रेसी अर्थात् 15–16 आदमी जगजीवनरामजी के साथ हैं। जगजीवन रामजी उनके लीडर हैं।

एक जनता पार्टी है, दूसरी इंदिराजी की कांग्रेस और तीसरा ये भारतीय लोकदल या लोकदल और जो लोग कांग्रेस के साथ बहुत दिनों से काम करते रहे हैं, लीडरान थे, लेकिन इंदिराजी से नाखुश थे और इंदिराजी इस बात के लिए तैयार नहीं थी कि अपनी गलती को स्वीकार करें, वो कांग्रेस को छोड़ के चले आये थे–– उनका और हमारा गठबंधन है। ये तीसरी पार्टी है।

तो, इस तीसरी पार्टी की तरफ से यह सभा आयोजित की गयी है और मैं आपको यह सलाह देना चाहता हूं कि इस लोकदल के गठन को आप लोग वोट दें। सवाल उठता है कि क्यों? मेरा जवाब यह है, जैसा कि अभी उसकी वैध जानकारी हो जाएगी कि देश की जो चार बड़ी समस्याएं हैं, उनका समाधान लोकदल और कांग्रेस के अलावा और किसी पार्टी के पास नहीं।

चार बड़ी समस्याएं हैं देश के सामने–गरीबी, बल्कि गरीबी नहीं, बढ़ती हुई गरीबी, अफसोस के साथ कहना पड़ता है। बेरोजगारी, वो भी दिन–ब–दिन बढ़ती हुई बेरोजगारी। गरीब और अमीर के बीच की जो खाई, उसका बढ़ते जाना। चौथा, यह कि भ्रष्टाचार, अनाचरण, दुराचरण–– प्रशासन में भी और राजनीतिक नेताओं में भी। ये चार बड़ी समस्याएं हैं।

जहां तक गरीबी का ताल्लुक है दोस्तों, 125 देश हैं जिनकी दस लाख से अधिक आबादी है और जिनके आंकड़े यूएनओ की, संयुक्त राष्ट्र संगठन की तरफ से या बर्ल्ड बैंक की तरफ से प्रकाशित होते हैं। आमदनी के मामले में 65–66 में हमारे देश का नम्बर 85वां था 125 में, 84 देश हमसे मालदार, 40 देश हमसे गरीब। आठ साल के बाद, सन् 73 में हमारा

नम्बर 104 हुआ, 103 देश हमसे मालदार, 21 देश हमसे गरीब। उसके ठीक तीन साल बाद, सन् 76 में, जिसके आंकड़े मिलते है, उसके बाद के आंकड़े नहीं मिलते है। हमारा नम्बर 111 हुआ। आठ पोजीशन नीचे हिन्दुस्तान गिरा। आज केवल 14 देश आपसे गरीब हैं और 110 देश आपसे मालदार हैं। उन 14 देशों में तीन या चार छोटे–छोटे देश हैं, जिनका आपने नाम सुना होगा! बाकी दस देश ऐसे हैं, जिनका इतिहास में जिकर नहीं है। जिनका दुनिया ... हिन्दुस्तान .. उसके संसार के मानचित्र पर भी शायद नाम नहीं पायेगा, मुश्किल से ढूंढे पायेगा। भूटान एक मुल्क आपसे गरीब, नेपाल आपसे गरीब, वर्मा आपसे गरीब और बंगलादेश आपसे गरीब और दस छोटे'–छोटे और देश जिनकी आबादी दस लाख से ज्यादा है, तो लगभग सभी देशों से गरीब, कोई हरज नहीं गरीब थे, गरीब हैं। लेकिन तीस साल की आजादी के बाद, दूसरे देशों की अपेक्षा गरीबी घटी नहीं, बल्कि बढ़ती चली गयी, बढ़ती चली गयी, तो अब हम नीचे कम से कम लास्ट, लोएस्ट रन पर पहुंच गए हैं, बाटम पर पहुंच गये हैं।

इतनी गरीबी? प्लानिंग कमीशन के अनुमान के अनुसार, 48 फीसदी आदमी देश के अन्दर ऐसे हैं जिनको यथेष्ट भोजन नहीं मिलता है, क्योंकि देश गांवों के अन्दर रहता है, तो अधिकतर लोग वहीं हैं। लेकिन यह बात नहीं कि शहरों में गरीब न हों। हमारे प्लानिंग कमीशन का अनुमान है, आंकड़े हैं उनके पास कि 41 फीसदी आदमी शहरों के लिए गरीब हैं। जो बड़े–बड़े महल हैं अहमदाबाद में या दिल्ली या बम्बई में बने हुए हैं, इन गगनचुम्बी इमारतों के पीछे वो लोग रहते हैं, जो सड़क पर चलने वालों को दिखायी नहीं देते। ऐसे भी लोग हैं कलकत्ते जैसे शहर में, हमारे बहू–बेटियों के बच्चे सड़क पर पैदा होते हैं। मकान भी उनके पास रहने को नहीं हैं सबसे मालदार शहर माना जाता है देहली। 26 फीसदी वहां के भी आदमी गरीबी रेखा के नीचे रहते हैं ...बिलो दि पावर्टी लाइन। ये है गरीबी का हाल।

जहां तक बेरोजगारी का सवाल है, अंग्रेज जब गये थे, तो प्लानिंग कमीशन का अनुमान है कि बड़ी मुश्किल से पांच लाख आदमी बेरोजगार रहे होंगे। आज करोड़ों बेरोजगार शहरों में हैं और करोड़ों –– करोड़ों –– करोड़ों देहात में हैं, गांव में।

जब जनता पार्टी ने जिम्मेदारी संभाली थी, देहली में तब एक करोड़ 2 लाख 40 हजार लड़कों का नाम दर्ज था एम्पलायमेंट एक्सचेंज में, शहर में जो कामदिलाऊ दफ्तर गवर्नमेंट की तरफ से खुले हुए हैं, उनके अन्दर नाम दर्ज था कि हम रोजगार चाहते हैं, हमकों रोजगार नहीं मिला। जब यह गवर्नमेंट गयी है, उस वक्त एक करोड़ 35 लाख लड़कों का नाम था। हाईस्कूल पास, इंटर पास, बी0ए0 पास, एम0ए0 पास, साइंस की डिग्री में एम0एस0सी0, डाक्टर, इंजीनियर्स, इलेक्ट्रीशियन्स, कैमिकल इंजीनियर्स, सिविल इंजीनियर्स, तरह–तरह के विद्या प्राप्त हमारे लड़के। और हजारों उनमें से बाहर जाते हैं रोजगार के लिए।

मुझको ऐसे भी केसेज मालूम हैं कि लड़का हर क्लास में फर्स्ट आता चला गया, अब बेरोजगार था, मेरे पास आया था –– 67 की बात आपको बताता हूं, लखनऊ में। मां–बाप पेट पर पट्टी बांधकर बच्चों को पढ़ाते हैं और अपने देश में रोजगार नहीं मिलता। अर्थशास्त्रियों का अनुमान यह है कि हमारे देश के औसतन 65 किसान, साल भर में जितनी आमदनी उनकी होती है, तो हमारे यहां एक लड़के को ग्रेजुएट बनाने पर उतना खर्चा होता है। और इतना इस गरीब देश का खर्चा होने के बाद इन बच्चों की, इन नौजवानों की काबिलयत और पुरूषार्थ से इस देश का फायदा होने के बजाय, अमरीका और इंग्लैंड और

जर्मनी जैसे दशों को होता है, जो कि पहले से मालदार हैं। हमारे ऐसे लड़कें हैं, जो हर साल बाहर जाते हैं, पढ़ने के लिए और फिर लौटकर नहीं आते, क्योंकि यहां उनको रोजगार मिलने वाला नहीं।

ये तो शहर की बात। देहात का यह हाल है कि अंग्रेज जब गये थे तो 17 फीसदी आदमी एग्रीकल्चरल लेबरर था, खेतिहर मजदूर । आज उनकी तादाद साढ़े 26 फीसदी है। किसानों का एक सेन्सस लिया गया 1970–71 में तो 33 फीसदी किसान ऐसे हैं जिनके पास जमीन दो बीघे से कम है, दो बीघे नहीं है, दो बीघे तक है, दो बीघे से कम। 18 फीसदी किसान जो कहलाते हैं उनके पास दो बीघे से चार बीघे। आधा हेक्टेयर से एक हेक्टेयर। ये 51 फीसदी किसान हैं, जिनको किसान यूफेमिस्टकली कह सकते हो अंग्रेजी में, नाम के लिए कह सकते हो, उनकी शोभा बढ़ाने के लिए कह सकते हो। लेकिन ये किसान नहीं हैं, इनको चाहे कितनी मेहनत करें, अपनी थोड़ी–सी जमीन पर इनकी गुजर ईमानदारी से उसमें हो नहीं सकती है। उनको भी मैं बेरोजगार मानता हूं, यह देहात का हाल है।

यहां प्रकृति ने, इतिहास ने हमको जो जमीन दी है, भारतवर्ष को, उसका क्षेत्रफल तो बढ़ेगा नहीं, बढ़ नहीं सकता, लेकिन हमारी जनसंख्या बढ़ती जा रही है, तेज रफ्तार से न बढ़े तो मंदी रफ्तार से बढ़ेगी, तब भी बढ़ेगी। 1857 में 18 करोड़ आबादी थी इस देश में आज पाकिस्तान और बंगलादेश को शामिल करके उसकी आबादी 85 करोड़ है। साढ़े चार गुना आबादी बढ़ गयी। जमीन ज्यों की त्यों है, वही की वही है। तो वहां बेरोजगारी उतनी ही, बल्कि शहर से भी ज्यादा है और फिर जैसे मैंने आपको आकड़े बतलाये, वो बेरोजगारी कम नहीं हो रही है, बढ़ती जा रही है, बढ़ती जा रही है, बराबर बढ़ती जा रही है।

तीसरी समस्या गरीब और अमीर का फर्क। ये मेरी पीढ़ी के लोग महात्माजी के नेत्त्व में अंग्रेजों के खिलाफ थोड़ा–बहुत संघर्ष कर रहे थे, तो हमारी तकरीरों में एक दलील यह होती थी, एक तर्क यह होता था कि अंग्रेजों के आने की वजह से बड़े–बड़े सेठ हो गये, बड़े–बड़े पूंजीपति हो गये। गरीब–अमीर का फर्क बढ़ गया। मुझको अब तक याद है कि हमने अपने लेखों में लिखा था कि 'इंडिया इज टू वर्ल्ड्स' कि हिन्दुस्तान दो संसार है– एक गांव और एक शहर। दोस्तों, वो फर्क कम होने के बजाय दुगना हो गया। आपको जानकर अफसोस होगा सन् 50–51 के आंकड़ों के अनुसार, एक गांव वाले की आमदनी अगर 100 रू0 थी, तो हमारे शहर वालों की आमदनी 178 रूपए थी, पौने दो सौ मानो मोटे तरीके से। सन् 76–77 के आंकड़ों के अनुसार, अगर गांव वाले की आमदनी 100 रू0 थी, तो शहर वाले की आमदनी 346 रूपये थी, साढ़े तीन सौ। पहले फर्क एक और पौने दो का था, अब एक और साढ़े तीन। पौने दो, दूनी साढ़े तीन।

ये हैं नीतियां। अग्रेजों के जमाने में भी सेठ थे, जिन टाटा–बिड़ला का हम नाम सुनते थे। हम समझते थे टाटा और बिड़ला के पर कैच किये जाएंगे स्वराज होने के बाद। लेकिन नहीं दोस्तों! उनकी तादाद भी बढ़ी और उनकी मालदारी भी बढ़ी। केवल इन दो के ही आंकड़े बता देना चाहता हूं– बिड़ला के पास 53 करोड़ रूपये की सम्पत्ति थी सन् 51 में, आज उसके पास 1100 करोड़ रू0 की सम्पत्ति है, 1100 करोड़ रू0। टाटा की सम्पत्ति 113 करोड़ रू0 थी, उनकी भी 1100 करोड़ की है, थोड़ा फर्क, बिड़ला की जायदाद 19 गुना बढ़ी, टाटा की जायदाद नौ गुना बढ़ी। तो यह फर्क होता जा रहा है। मैं जानता हूं एक आदमी और दूसरे आदमी की काबिलियत में फर्क होगा, कुदरती बात है। कभी बराबर आमदनी हो

नहीं सकती, दुनिया में चाहे कभी कोई कोशिश करे, चाहे कोई कम्यूनिस्ट पार्टी कोशिश करे, चाहे रशिया कोशिश करे फर्क रहेगा। लेकिन गवर्नमेंट और पार्टी वही अच्छी मानी जाएगी, जिसके कार्यकाल में, जिसके अहद में यह फर्क कम होगा और वो पार्टी निकम्मी और बेकार साबित होगी जिसके अहद में यह फर्क बढ़ जाये, यह खाई और चौड़ी हो जाए। तो खाई चौड़ी हुई है, तीस साल के स्वराज के अन्दर बजाय कम होने के।

और चौथी समस्या है – भ्रष्टाचार की। हम लोग सब कांग्रेस वाले यह जानते थे कि रिश्वत चलती है गवर्नमेंट के अन्दर, लेकिन उस जमाने में हमने कभी यह नहीं सुना था कि दिल्ली या लखनऊ या बाम्बे में कोई मिनिस्टर भी बेईमान था। नहीं, हमको याद नहीं। हम तो तब उस दिन का सपना देखा करते थे कि जब देश आजाद हो जाएगा तो हमारे कर्मचारियों में जो रिश्वत है, उसको खत्म करेंगे। लेकिन दोस्तों, वो सपने सब भंग हो गये, सब भंग हो गये। आज राज्य–कर्मचारियों में उतनी ही रिश्वत है। शायद बढ़ी। मैं उनको दोष नहीं देना चाहता। अगरचे दोषी जरूर हैं; दोष यूं नहीं देना चाहता कि इसकी जिम्मेदारी राजनीतिक नेताओं पर अधिक है, बनिस्बत उनके। अगर तुम्हारे सूबे का चीफ मिनिस्टर और गृहमंत्री, अगर हिन्दुस्तान का प्राइम मिनिस्टर या कोई भी मिनिस्टर अगर ईमानदार नहीं होगा, और गैर–ईमानदार होगा, तो देश उठ नहीं सकता। आपका सूबा उठ नहीं सकता है, दोस्तों! (तालियां, नारे) !

और, यही जरूरी नहीं है। हमारे यहां पुरानी एक कहावत है, संस्कृत का एक श्लोक है कि महाजन (महान लोग) जिस रास्ते चलते हैं, सर्वसाधारण उसी रास्ते चलते हैं। बड़े आदमियों के लिए यही जरूरी नहीं है कि ईमानदार हो, बल्कि जनता को विश्वास हो कि वो ईमानदार है। तो, भ्रष्टाचार बजाय कम होने के बढ़ता जा रहा है। दोस्तों, इन चार कारणों से देश की जो अधोगति हो चुकी है, बयान करने से वो बाहर है, देश को बचाने का सवाल नहीं है, बल्कि डूबने जा रहा है वो। बचा लो दास्तों! मेरे ––(खांसी) मेरे ख्याल से देश डूब चुका है, उसका सालवेज करना है, उसको निकालना है। कैसे हो ?

एक ही रास्ता है और कोई दूसरा रास्ता नहीं है। वो रास्ता है, वो जो महात्मा गांधी ने हमको बतलाया था, उसी पर चलें। इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं नहीं है। महात्मा यह कहता था कि 'रीयल इंडिया लिब्ज इन द विलेजिस, नाट इन बाम्बे और देहली' –खेती करता है, खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर दो। खेत की पैदावार हमारे किसानों की बढ़ेगी, बाजार में वो कुछ बेचेगा, उसके पास पैसा आयेगा। उधर दुकानदारों की तादाद बढ़ेगी। दुकानदार, ट्रांसपोर्ट भरकर और ट्रक भरकर माल बाहर भेजेंगे, तो तिजारत बढ़ी, ट्रांसपोर्ट बढ़ा और जब किसान की जेब में पैसा आया, उसने जूते, साबुन, कपड़ा, बच्चों के लिए और जरूरी चीजें, स्कूल–कालेज में पढ़ता है तो उसकी फीस, उसके लिए अगर वो साइकिल चाहता है, घड़ी चाहता है, तो घड़ी और साइकिल खरीदेगा। मकान पक्का बनायेगा तो सीमेंट–लोहा खरीदेगा। हजार जरूरतें हैं। खाद अच्छा खरीदेगा, खेत में डालने के लिए। बैल अच्छे खरीदेगा। गरज है कि हजार चीजें हैं आदमी की जरूरत की, जो खेत में पैदा नहीं होतीं। जूता भी खेत के अन्दर पैदा नहीं होता है, तो उन चीजों को खरीदेगा, तो उन चीजों के बनाने वाले लोगों की तादाद बढ़ जायेगी, इंडस्ट्री बढ़ जाएगी, उद्योग–धंधे बढ़ जाएंगे और जो पैसा उसको मिला है, किसान को अपनी पैदावार बेचकर, उस पैसे के बदले वो उस सामान को खरीदेगा, तो उद्योग–धंधे बढ़ते चले जाएंगे।

खेतों के अलावा तीन ही बड़े पेशे हैं– ट्रेड, ट्रांसपोर्ट एंड इंडस्ट्री। तिजारत, परिवहन और उद्योग–धंधे, छोटी–छोटी और हजार चीजें हैं, वो सब निर्भर करती हैं किसान की पैदावार बढ़ने के ऊपर। अगर आस–पास के आपके किसानों की पैदावार, हमारे देश के खेतों की पैदावार अगर दुगनी–तिगुनी हो जाती है, दूसरे देशों में यहां से कई गुना ज्यादा पैदावार है, दोस्तों, तो यह देश दस साल के अन्दर मालदार हो जाएगा। (शोर)

ये लोग वो हैं कि अगर एक बार इनका राज हो गया, तो ये कभी इलेक्शन कराने वाले नहीं हैं, ये बतलाये देता हूं। ये डंडे से धमकाने वाली पार्टी है।

आपने देखा कि जानबूझकर आरगेनाइज्ड तरीके से, संगठित तरीके से इन लोगों ने शोर मचाना शुरू किया। अगर शरीफ घरों में पैदा हुए हों, तो आना नहीं चाहिए था यहां और आये हो तो शांति से बैठना चाहिए। ये शराफत की और सभ्यता की बात नहीं है कि सभा में आकर हुल्लड़ करो। ये तुम्हारे लीडरों ने सिखाया है। ये वो लोग हैं जो हिन्दुस्तान में डिक्टेटरशिप कायम करना चाहते हैं, जो दूसरे की मीटिंग सुनना नहीं चाहते। जनतंत्र में, डेमोक्रेसी में हर आदमी को सभा कर अपनी बात कहने का अधिकार है, अगर मेरी बातें नापसंद हैं, आप दूसरी सभा कर सकते हो। कानून में यह लिखा हुआ है कि जो किसी की मीटिंग में विघ्न डालेगा, वो सजा का मुंतकित है। अगर चाहे तो ये जो ईमानदार और शरीफ घरों के लोग आये हुए हैं इन्हें जेल भेज सकती है पुलिस अगर चाहे। लेकिन मैं यह नहीं चाहता हूं, मैं केवल इनको ये चेतावनी देना चाहता हूं कि किस तरह आप इस लोकदल की सभा में विघ्न डालना चाहते हैं (खांसी), तो दूसरे लोग भी विघ्न डालना चाहते हैं आपके लीडरों की मीटिंग में, फिर हिन्दुस्तान में कहीं नहीं हो सकेगी, कहीं नहीं हो सकेंगी सभाएं।

क्या मायने होते हैं इस बात के? अब दो पढ़े लिखे लोग अपने–आपको बताते हैं। बस, एक हुकुम निकलता है नागपुर से। अपनी अकल उन्होंने मारगेज की हुई है, रहन की हुई है, बेची हुई है इन लोगों ने। ये वो लोग हैं जो हिन्दुस्तान के सब रहने वाले लोगों के साथ एकसा बर्ताव नहीं चाहते, जिनके सामने मुसलमान और ईसाई का कोई स्थान मुल्क के अन्दर नहीं। हमारी पार्टी में और सारे हिन्दुस्तानी इस मुल्क को अपनी मदरलैंड समझते हैं, मातृभूमि समझते हैं, सब के समान अधिकार हैं। ये यही नहीं कि हिन्दुओं का राज चाहते हों, लेकिन हिन्दू राष्ट्र का नाम गलत लेते हैं या एक या दो बिरादरी का ये राज चाहते हैं और इससे ज्यादा का राज नहीं चाहते हैं, ये लोग हैं ईमानदाार? जरा देखो, क्या यह शराफत की बात है? मैं एक बात कह रहा था, जिसको ध्यान से, सब लोग ध्यान से सुन रहे थे; और बीच में खड़े होकर हुल्लड़ करना शुरू कर दिया।

तो, मैं आपसे कह यह रहा था कि किसानों की जब पैदावार बढ़ेगी, तो दूसरे पेशे बढ़ेंगे। साथ ही मैं यह कहना चाहता हूं, अहमदाबाद के लोगों, कि जिस देश में किसानों की तादाद ज्यादा होती है और दूसरा पेशा करने वालों की तादाद कम होती है, वो देश गरीब होते हैं। हिन्दुस्तान में जब अंग्रेज आये थे, तब 60 आदमी खेती करता था सौ के पीछे, 25 आदमी उद्योग–धंधों में लगे हुए थे। आज 60 की बजाय 72 आदमी खेती करते हैं। उद्योग–धंधों में लगे हुए लोगों की तादाद 25 के बजाय दस हो गयी, बल्कि नौ हो गयी। लिहाजा आज देश गरीब है। बजाय बड़ी–बड़ी अट्टालिकाएं बड़े–बड़े शहरों में बन जाने से, लाखों मोटरकार हो जाने, लाखों फ्रिज हो जाने, लाखों रेडियो हो जाने, लाखों टेलीबिजन सेट हो जाने के आज औसत हिन्दुतानी गरीब है, बनिस्बत दो सौ बरस पहले के।

अंग्रेजों ने आकर हमारी दस्तकारियों का सत्यानाश किया। अपने कारखानेदारों के हक में। हमारे यहां का हाथ का बना हुआ कपड़ा इतना नफीस बनता था कि अंग्रेजों के मुल्क के रहने वाले अंग्रेज लोग अपने यूरोप शहर प्रेंसली, लिबरपूल, शहर के, जो लंकाशायर कारखाने उनके मुल्क में लगे थे, उनके बने हुए कपड़े के मुकाबले में हिन्दुस्तान के हाथ के बने हुए कपड़े को पसंद करता था। इन लोगों ने 50 फीसदी उस पर टैक्स लगा दिया, इम्पोर्ट ट्यूटी। तब भी उन लोगों ने पहनना नहीं छोड़ा, उन्होंने फिर 80 फीसदी टैक्स लगा दिया, तब भी वहां के लोग, कुछ मालदार लोग पहनते रहे।

'भारत में अंग्रेजी राज' एक पुस्तक लिखी है पंडित सुन्दरलालजी ने, जो हमारी खुशकिस्मती से अभी जिंदा हैं। उनकी 95 बरस की उमर है। सन् 1912 में जिन्होंने लार्ड हार्डिंग पर बम डाला था, नौजवानों के जिस ग्रुप ने, उस ग्रुप में शामिल थे। उस किताब में उन्होंने यह लिखा है कि सन् 1817 में जब वहां के मालदार घरों की बहू–बेटियों ने हिन्दुस्तान के हाथ के कपड़े को पहनना नहीं छोड़ा, नहीं बंद किया, तो कानून बनाया ब्रिटिश पार्लियामेंट ने कि हिन्दुस्तान के हाथ के बने कपड़े को जो इंगलिस्तान का रहने वाला पहनेगा, उसे तीन महीने की सजा दी जाएगी। इस तरह जो सबसे बड़ा उद्योग था कपड़े का, वो खत्म हो गया। तरह–तरह के उद्योग थे, कारखाने तो थे नहीं, हाथ से ही सब, सारे काम होते थे। ये वो बम्बई से देहली, मद्रास से देहली, कलकत्ते से देहली जो रेलवे लाइन उन्होंने खीची अंग्रेजों ने, वो हमारे फायदे के लिए नहीं, वो अपने उद्योग–धंधे के सामान को, अपने कारखाने के बने सामान को हिन्दुस्तान के कोने–कोने में पहुंचाना, पहुंचा देना चाहते थे और पहुंचा दिया और हमारे दस्तकार सब बेरोजगार हो गए। उस वक्त जमीन की कमी नहीं थी। लोगों ने, सब ने हल की हत्थी पकड़ी, किसानों की तादाद बढ़ी, दस्तकारों की तादाद घटी और देश गरीब हो गया।

आज अमरीका सबसे मालदार है। सौ में चार आदमी खेती करता है, 96 आमदी दूसरा पेशा करता है, लेकिन 200 बरस पहले हमारा मुल्क मालदार था अमरीका के मुकाबले में। सन् 1820 में अब से 160 बरस पहले, अमरीका में 87 आदमी खेती करता था और 13 आदमी दूसरा पेशा करता था। हमारे 60 आदमी खेती करते थे, 40 आदमी दूसरा पेशा करते थे। अगर उस वक्त के आंकड़े आमदनी के मिल जाएं, तो हिन्दुस्तान मालदार था उस वक्त। लेकिन दूसरे देश वालों का राज हो गया, हमारी सब दस्तकारियां, हमारे उद्योग–धंधे नष्ट हो गए। और अफसोस के साथ मुझको कहना पड़ता है कि जो थोड़ी–बहुत दस्तकारियां और हस्तकलाएं बची थीं गांवों में और कस्बों में, स्वराज होने के बाद हमारे लीडरों ने भी अंग्रेजों की पॉलिसी पर अमल करते हुए बड़े–बड़े कारखाने बनते रहे। रूपये ज्यादा लगते रहे, सेठ पैदा होते रहे, लड़के बेरोजगार होते चले गये और जो थोड़ी–बहुत दस्तकारी बची थी, वो भी धीरे–धीरे खत्म होती चली जा रही है।

यू0पी0 के अन्दर कालीन हाथ से बनता था। इंदिराजी ने कारखाने लगाने के, कालीन बनाने के लिए कारखानों के तीन लाइसेंस दे दिये कि कारखाने से कालीन बनेगा, क्यों? हाथ से जो कालीन बनता था यू0पी0 और बिहार के अन्दर, वो इतना नफीस था कि खास तौर से कनाडा और अमरीका के लोग बहुत पसन्द करते थे। अब मैं जब फाइनेंस मिनिस्टर हुआ, तो वो कारखाने लग चुके थे कालीन बनाने के लिए। तो मैंने 30 फीसदी टैक्स लगा दिया कारखाने के बने कालीन पर और हाथ से जो कालीन बना रहे थे, उन सब को माफ कर

दिया, ताकि गरीब लोगों को रोजगार मिले। इसी तरह मैंने दियासलाई पर, एक विमको कारखाना परदेसी आदमी का लगा हुआ है। वो परदेसी एक कैपिटलिस्ट है, तो मैंने जो उसका टैक्स था 48 फीसदी, मैने उसे कर दिया 96 फीसदी और हाथ से जो दियासलाई बनती थी, उसे करीब माफ कर दिया या नाम मात्र के लिए एक फीसदी टैक्स।

अहमदाबाद के मेरे दोस्तों और मेरी बहनों!

(श्रोताओं में से किसी ने कहा– इन्दौर के) (हंसी)

ओह! इन्दौर के; मुझे माफ करना।

अच्छा बहुत खुश हुए हैं, बहुत अच्छी बात है।

इन्दौर के रहने वाले दोस्तों, आपको जानकर ताज्जुब होगा कि कम्युनिस्ट पार्टी के बड़े भारी नेता, नाम लेना मुनासिब नहीं होगा, एक जनता पार्टी की स्टेट गवर्नमेंट के चीफ मिनिस्टर और बम्बई की जनता पार्टी के एक मशहूर एम0पी0 –– तीनों ने मुझको चिट्ठी लिखी कि जो विदेशी कारखाना है, 'विमको', जो यहां बनाता है दियासलाई, इसका टैक्स आपने बढ़ा दिया, यह अच्छा नहीं किया, इसका टैक्स कम कर दीजिये। मैंने उनको तीनों को जवाब लिखा कि मीटिंगों में गरीबों की बात करते हो और अब गरीबों के हक में जब मैं काम करता हूं, सेठों पर मैं भार डालना चाहता हूं, तो सेठों के हक में खत लिखते हो। मैंने उनकी बात को नहीं माना।

तो, मैं यह कह रहा हूं कि जो छोटी–मोटी दस्तकारी बची हुई थी, वो धीरे–धीरे खत्म हो रही है, क्योंकि हम यहां के कारखानेदारों के गुलाम हो चुके हैं, करीब–करीब सब राजनीतिक नेता, बताता हूं दोस्तों! (तालियां) रुपया चाहिए इलेक्शन लड़ने के लिए। रूपया, लाखों रूपया खर्च होता है, वो रुपया कहां से आया है, वो रुपया सेठों से, पूंजीपतियों से, उद्योगपतियों से और कारखानेदारों से लिया जाता है। और जो रुपया लेकर हमारे लोग मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर और प्राइम मिनिस्टर बनते हैं, तो फिर वो एक अंग्रेजी की कहावत है–'ही, हू पेज दी पाइपर विल आलसो काल दी ट्यून! जो आदमी बाजा बजाने वालों को रुपया देता है, वो यह भी बतायेगा कि फलां ध्वनि निकालो और फलां गाना बजाओ या गाओ। तो जिन सेठों के रुपये से हम मिनिस्टर, एम0एल0ए0 और एम0पी0 बनते हैं तो नीतियां गरीबों के हक में नही होगी। नीतियां वो अपनायी जाएंगी, जो बड़े लोगों के हक में होंगी दोस्तों! (तालियां)

इसलिए मैंने, और मेरे साथियों ने सन् 67 में कांग्रेस को छोड़ा था और भारतीय क्रांतिदल बनाया था और फिर उसके बाद भारतीय लोकदल बनाया। उसके बाद सब पार्टियों को मिलाकर कांग्रेस का मुकाबला करने के लिए मैंने एक जबरदस्त पार्टी – जनता पार्टी बनायी और मजबूर होकर हमको फिर अपने लोकदल को पुनर्जीवित करना पड़ा। तो मेरा अपने साथियों से बराबर यह कहना रहा है कि हारना इलेक्शन में मंजूर है, लेकिन सेठों का रुपया लेकर जीतना मंजूर नहीं है, दोस्तों! (तालियां)

मैं अब भी सब सभा में कहकर आया हूं और आपसे भी कहता हूं, जो आपमें से रुपया खुशी से दें, मंजूर, गरीब आदमी जितना दे, मंजूर, लेकिन लोकदल के लोग आपसे रुपया लेने नहीं आयेंगे। बड़े आदमी के सामने सिर झुकाने को मैं और मेरे साथी तैयार नहीं है, दोस्तों!

बात जरा ज्यादती की हो जाती है, ज्यादा कहना नहीं चाहता हूं, ऐसे–ऐसे लोग थे जिन्होंने कहा–चौधरी साहब, लाखों नहीं, हम करोड़ रुपये देने को तैयार हैं। बूढ़े आदमी थे,

ईमानदार आदमी थे, आज संसार में रहे नहीं, मेरा दोस्त मजबूर करके सन् 68 में उनके पास ले गया था, वो साढ़े दस महीने चीफ मिनिस्टर रहा था, उत्तर प्रदेश में। उन्होंने जो शासन की कुशलता और ईमानदारी बढ़ गयी थी, उसको देख के प्रभावित थे, दिल्ली में रहते थे। उनके लड़के अब कई कारखाने चला रहे हैं, उनके सामने भी चलते थे। लेकिन ईमानदार आदमी, धर्मात्मा आदमी, खाने पर बुलाया, अलग मुझको ले गये और मुझसे कहे कि मैं आपको रुपया देना चाहता हूं, मेरे पास रुपये की कमी नहीं हैं, पचास लाख की जरूरत है, एक करोड़ की जरूरत है? मैं चुप हो गया। बोले शायद आप इसलिए चुप हो गए कि जब आप पावर में आयेंगे, मैं उसका मुआवजा चाहूंगा, उन्होंने कहा, हरगिज–हरगिज नहीं। मैं कितने दिन जिन्दा रहूंगा, ये मुल्क तो हमेशा रहेगा और रुपया किस काम आयेगा? मैं कोई बदला नहीं चाहता।

मुझे शर्म आती है, मुझे कहनी नहीं चाहिए अपनी बाबत बात। उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूं कि आप जैसा कुशल प्रशासक, ईमानदार आदमी हिन्दुस्तान का प्रधानमंत्री हो, इसलिए करोड़ों रुपया आपको देना चाहता हूं। मैंने हाथ जोड़े उनके, सेठजी के, मैंने कहा, मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूं। बेशक आप मुआवजा नहीं चाहोगे, आप धर्मात्मा आदमी हो, मुझको मालूम है, लेकिन मेरा सिर तो आपके सामने झुक जाएगा और मैं किसी के सामने सिर झुकाने को तैयार नहीं। उनके लड़के आज मौजूद हैं, लेकिन मैंने कहा कि ये एक ऐसी बात है, शायद किसी को यकीन ना आये। अभी मेरे पास एक साथ दो लाख रूपये रख गए, अगले रोज बुलाकर मैंने वापिस कर दिये। फिर लाये, फिर शायद ज्यादा रूपये लाये। मैंने पूछा भी, फिर मैंने कहा जो भी तुम लाये, वापिस ले जाओ तुम, इसरूपये की मुझे जरूरत नहीं है; उन लोगों की नहीं है जो कि ईमानदारी से रुपया नहीं कमाते हैं।

तो दोस्तों, ये छोटी–छोटी दस्तकारी क्यों खत्म हो गयी? बड़े कारखाने चलाने वालों के हक में। दिल्ली में और यहां भी सड़कों पर जो औरतें कंकड़ कूटती हैं, उनसे जाकर पूछो, क्या उनके बाप–दादे कंकड़ कूटते थे सड़क पर ? नहीं, कोई न कोई दस्तकारी थी, कोई न कोई घर पर काम होता था आजादी के साथ, जो खतम हो गया, आज वो कंकड़ कूट रही हैं।

तो, महात्मा यह कहता था कि खेत की पैदावार बढ़ाओ और दूसरी बात कहता था कि दस्तकारियों को जगाओ, पुनर्जीवित करो। बड़े कारखाने जितने लगेंगे यहां उतने पूंजीपति बढ़ेगें, उतनी बेरोजगारी बढ़ेगी। मिसाल के लिए कहता हूं। मान लो कि पांच हजार जुलाहे हैं। आजादी से एक–एक करघे पर काम करते हैं, तीन–चार रुपये रोज की आमदनी हो जाती है। आजाद हैं, कोई दूसरे के, किसी के मोहताज नहीं हैं। अब आप एक करोड़ रुपये का कारखाना लगा दीजिये। उस कारखाने में, जितना के दस हजार जुलाहे अलग–अलग कपड़ा बनाते हैं, वो कारखाने में एक हजार बल्कि पांच सौ आदमी उतना ही कपड़ा पैदा कर देंगे, जिनता कि दस हजार जुलाहे अलग–अलग करघों पर बनाते हैं। और, इनकी आमदनी तीन–चार रुपये रोज की बजाय 15 रुपये रोज की हो गयी। इन लोगों की बीस की भी होगी, लेकिन अब उधर एक पूंजीपति पैदा हो गया रुपया लेने के लिए, इधर सौ आदमियों को, पांच सौ आदमियों को 15 रुपये रोज की आमदनी होगी, 450 रू0 महीने की, लेकिन नौ हजार आदमी बेरोजगार हो गया। कौन रो रहा है, कहां है वो, उसकी कौन परवाह करता है?

तो गांधी जी कहते थे कि बेशक बड़े कारखाने लगाओ, लेकिन उन चीजों के लिए जो छोटे पैमाने पर न बन सकती हों, जो बड़े कारखाने में ही बन सकती हों, उनको लगाओ। मैं

बड़े कारखाने के खिलाफ इसलिए नहीं हूं क्योंकि बड़ा है। मुझको डर यह है कि जितना बड़ा कारखाना लगेगा, जितनी पूंजी लगेगी, जितना तकनीकी ज्ञान बढ़ता जाएगा, उतनी ही बेरोजगारी बढ़ती जाएगी और सेठों के प्राफिट्स बढ़ते जायंगे। असमानता बढ़ती जाएगी, बेरोजगारी बढ़ती जाएगी।

महात्मा का कहना सही निकला। आज बिल्कुल यही हो गया है। हमारे लीडरों ने कर्ज दुनिया भर से ले लिया और हिन्दुस्तान भी जितना टैक्स लगाया वो ज्यादातर बड़े कारखाने के लिए खर्च किया और गांव पर उतना खर्च नहीं किया। साढ़े सत्रह फीसदी जमीन में सिंचाई का प्रबंध था जब अंग्रेज गये। अगर आज 35 फीसदी जमीन में, रकबे में सिंचाई का इंतजाम हो जाता तो चाहे साल भर तक बारिश न हो, आपको कोई कष्ट नहीं होता। कोई कहर पड़ने का और अकाल पड़ने का सवाल पैदा नहीं होता। आपके मध्य प्रदेश में तो सिंचाई का प्रबंध बहुत कम है। पंजाब में 80 फीसद जमीन सिंचित है आज, वो सबसे मालदार सूबा है। लोग कहते हैं कि कारखानों से देश मालदार होंगे, पंजाब में एक बड़ा कारखाना नहीं है, सबसे मालदार सूबा है। बिहार में सबसे ज्यादा बड़े कारखाने हैं और सबसे गरीब सूबा है।

ये हैं सीधे मोटे सच्चे आंकड़े, क्योंकि वहां के खेत की पैदावार अच्छी है पंजाब के किसान की, बिहार के किसान के खेत की पैदावार सबसे कम है। तीन सूबे सबसे ज्यादा गरीब हैं। सबसे ज्यादा गरीब बिहार, दूसरे नम्बर पर यू0पी0 और तीसरे नम्बर पर मध्य प्रदेश, चौथे नम्बर पर उड़ीसा। तो, बिहार में तो सबसे ज्यादा कारखाने हैं, क्यों नहीं मालदार ? गांधीजी कहते हैं न, बिल्कुल सही कहा कि पहले खेत की पैदावार पर जोर दो। गांव के लोगों के पास क्रयशक्ति आये, पैसा आये, तब वो सामान खरीदें, तब कारखाने लगायें, तब आर्गेनाइज्ड ग्रोथ होगी, तब सच्चा विकास होगा, वरना तो आर्टीफिशियल विकास होगा, केवल कारखाने के बनने से देश मालदार होने वाला नहीं।

तो वो चाहते थे कि छोटी–छोटी दस्तकारियां फलें, बढ़ें, बनें। हम भी यही चाहते हैं, यही दो हमारे प्लांस हैं, यही दो प्लेटफार्म हैं। हमने यह तय किया हुआ है। हमने पार्टी में विकास के बाबत तय किया था। जनता पार्टी ने, मेरी बात तो मंजूर की, उस पर अमल नहीं किया। मैंने कहा कि खेती के बढ़ाने के लिए तो 20 फीसदी रुपया दिया जाता रहा है। कारखानों पर 24 फीसदी दिया जाता रहा। सरदार पटेल के सामने जब पहली योजना बनी थी– खेती के विकास के लिए 37 फीसदी रुपया था, पहली योजना में। बड़े कारखानों के लिए पांच रुपए था, पांच परसेंट था। दूसरी योजना में 37 को घटाकर 18 कर दिया गया, बड़े कारखानों पर बढ़ाकर 5 को 24 कर दिया गया। बिजली जितनी पैदा होती है, चाहे डैम गांवों में लगे हुए हों, लेकिन अब बढ़ते–बढ़ते 14 फीसदी जमीन में पावर जो पैदा होती है, वो केवल खेती के काम आती है। दो–तिहाई बिजली बड़े कारखानों पर खर्च होती है और अब तक दो–चार साल पहले बड़े कारखानों पर जो बिजली खर्च होती थी, उसकी कीमत कम लेती थी गवर्नमेंट और किसानों पर जो खर्च होती थी उसकी कीमत ज्यादा लेती थी। यह हमारी गौरमेंट है जी!

हम इस नक्शे को बिल्कुल बदल देना चाहते हैं। हम खेत की पैदावार पर इस लिए जोर देना चाहते हैं दोस्तों! वो समय आने वाला है, मैं भविष्यवाणी कर देता हूं कि दस साल के अन्दर आप देखोगे कि दुनिया के बहुत से देशों में अन्न की कमी हो जाएगी और जिन देशों में यह बिसात होगी कि अन्न को बाहर भेज सकें, उनके हाथ में बड़ी पॉलिटिकल पावर

होगी। हमारे देश की भूमि बहुत अच्छी है, हमारे देश के अन्दर सूरज की किरणें बहुत पड़ती हैं, बहुत जल्दी फसल को पका देती हैं। हमारे यहां पानी की कमी नहीं है, हम उसका प्रबंध करना नहीं जानते हैं, वरना हमारे यहां इतनी पैदावार हो सकती है कि आधी दुनिया को हम खिला सकते हैं, हिन्दुस्तान की बात तो रही दूसरी।

मेरा, मेरी पार्टी के लोगों का नक्शा यह है कि हम खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर देंगे। सब लोगों का जब काम इससे हो जाए, तो हम इसका एक्सपोर्ट करेंगे और एक्सपोर्ट मार्केट से रुपया कमायेंगे और तब अपने यहां छोटे–मोटे कारखाने लगेंगे, लेकिन पहला नम्बर खेती की पैदावार का, दूसरा नम्बर दस्तकारी का, बड़े कारखाने का नम्बर तीसरा होगा हमारे नक्शे में दोस्तों।

अगर मेरा बस चला, मेरे साथी मुझसे राजी हुए, तो मेरा इरादा यह कानून बनाने का है कि जो हमारे देश के अन्दर ऐसे बड़े कारखाने लगे हुए हैं, जो वो सामान पैदा कर रहे हैं, जो छोटी स्केल, छोटे पैमाने पर बन सकती हैं, छोटी मशीन पर बन सकती हैं, वो छोटी ही मशीन पर बनने दिया जाए और जो छोटी मशीन से भी नहीं, बल्कि हाथ से बन सकता है, वो हाथ से बनने दिया जाए। तो जो कारखाने ऐसा सामान पैदा कर रहे हैं कि दस्तकारी से, हस्तकला से बन सकता है, उनको हमारा हुक्म होगा कि कारखाने बेशक चलाओ, गौरमेंट नहीं लेना चाहती, पूंजी इसमें लग गयी है, बर्बाद भी इनको नहीं करना चाहती, लेकिन तुम्हारा बना हुआ सामान हिन्दुस्तान के अन्दर नहीं बिकेगा, बाहर बेचो। हिन्दुस्तान में अब हाथ का बना हुआ सामान बिकेगा। (तालियां)

टेक्सटाइल कमेटी की रिपोर्ट है सन् 1953 की, जिसमें उन्होंने यह लिखा है कि कारखाने, कपड़े के कारखाने में एक मजदूर जितना कपड़ा पैदा करता है, उसको 12 करघों के द्वारा बारह आदमी पैदा करते हैं। आज दस लाख आदमी लगा हुआ है, टैक्सटाइल इंडस्ट्री में, सबसे बड़ी इंडस्ट्री है यह। मान लो, इसमें छह लाख लगा हुआ है वीविंग में, चार लाख स्पिनिंग में, स्पिनिंग मिल्स को हम रखना चाहेंगे। लेकिन छह लाख, जो कपड़े को बनाने, बुनने की मिल हैं, उनको हमारा इरादा है कि वो अपना सामान बाहर बेंचे। तो, जो छह लाख आदमी कपड़ा बुन रहे हैं, बड़ी मशीनों में उस कपड़े को बनने के लिए 12 छक्का 72–72 लाख आदमियों को काम मिलेगा, बनिस्बत छह लाख के। जो लड़के गांवों में, शहरों में, मारे–मारे फिरते हैं, उन सब को रोजगार मिल जाएगा दोस्तों! (तालियां)। न गौरमेंट को पूंजी लगानी पड़ेगी, न गौरमेंट को बिजली का इंतजाम करना पड़ेगा, न गौरमेंट को टेक्नीकल नो हाऊ जिसको कहते हैं, तकनीकी ज्ञान की जरूरत पड़ेगी। अभी कुशलता हमारे लोगों में पुरानी बची हुई है। लेकिन हमारी गौरमेंट क्या करती रही है, कांग्रेस के लीडरों की, हमारी। ये हाल हो गया है धीरे–धीरे कि मशीन से काम करना उन्नति का द्योतक है, हाथ से काम करना पिछड़ेपन का और गरीबी का द्योतक है। तो, हर चीज के लिए कारखाना लगाओ, मशीन लगाओ, ताकि रूस के और अमरीका के लोग कहें कि वाह! देश तरक्की कर रहा है।

रोटी सबसे पहली जरूरी चीज, कपड़ा नम्बर दो, मकान नम्बर तीन। कपड़े के लिए तो मैं आपको बता ही चुका हूं कि बहुत से लीडर गांधीजी के सामने चरखा चलाते थे, अब भी चरखा चला रहे हैं, अपने आपको गांधीवादी कहते हैं, लेकिन उनके दिल में मिल का मालिक बसा हुआ है, वो गरीब जुलाहा बसा हुआ नहीं है, दोस्तों!

ये तो कपड़े की बात हो चुकी, अब रोटी भी मशीन से बनने लगी है यहां पर। हमारी तो मां और बहू–बेटियां बनाती थीं, बहन हमारी बनाती थीं, अब गवर्नमेंट बेकरी भी लग गयी है। छोटे–छोटे दुकानदार बिस्कुट और वो बनाते थे, क्या नाम केक वेक, न मालूम क्या क्या कहलाती हैं, अपने आटे से, आप आटा दो तो आपको बना के भेज देंगे। अब गवर्नमेंट बेकरी लग गयी। अब वो कानपुर का मुझे मालूम है, एक बेकरी वहां लग गयी है, हजारों लोग बेरोजगार। क्यों? क्या फायदा हुआ? किसका फायदा हुआ? शायद लखनऊ में भी लग गयी है, बॉम्ब में, इन्दौर का मुझको मालूम नहीं।

एक श्रोता दर्शक– इन्दौर में भी लग गयी है।

श्री चरण सिंहः इन्दौर में भी लग गयी है, क्यों, ज्यादा लजीज होती है, रोटी मशीन की बजाय हाथ के, क्या अकल की बात है?

और रह गया मकान। इन्दौर के लोगों, आपको मालूम नहीं है, मकान बनाने का भी कारखाना लगवा गयी थीं इंदिरा जी, मकान बनाने का कारखाना कह रहा हूं। प्रीफैब्रीकेटेड हाउसिंग फैक्टरी, बना–बनाया मकान बनाने का कारखाना। सुल्तानपुर एक गांव है देहली के पास, वहॉ लगा हुआ है। मैंने अभी हुकम दिया है कि उस कारखाने को बंद करो (तालियां)। क्यों? क्या जरूरत है मकान बनाने के लिए कारखाने की? ये हमारे सैकड़ों–करोड़ों दस्तकार हैं, उनका क्या होगा? ईंट पाथने वालों का क्या होगा, ईंट ढोने वालों का क्या होगा? वो छोटे दुकानदार हैं, उनसे सामान गांव में खरीदेगा मकान बनाने के लिए, बहुत–सी छोटी–छोटी चीज या इन्दौर से खरीदेगा, उनका क्या होगा? बढ़ई का क्या होगा? लुहार का क्या होगा? राजगीर का क्या होगा? ये खाली बैठे क्या करेंगे? क्या फायदा होगा?

इजिप्ट में, मिस्र में पिरामिड हाथ से बना दी थी लोगों ने, अपने देश के अन्दर तीन सौ बरस पहले दुनिया की सबसे खूबसूरत इमारत बना दी थी, ताजमहल जिसका नाम है, हमारे दस्तकारों ने हाथ से बना दी थी। लेकिन हमें अब अपने रहने के लिए मकानों की जरूरत है कारखाने के लिए, इससे ज्यादा शर्म की और बेवकूफी की कोई बात हो नहीं सकती। बेवकूफी की बात है, जानबूझकर हम बेरोजगारी अपने लोगों में पैदा कर रहे हैं।

तो दोस्तों, ये तो मैंने तीन नीति की बात बताई। ईमानदारी की बाबत मैं कह ही चुका हूं कि अगर आपके म्यूनिसिपल कारपोरेशन का मेयर ईमानदार नहीं है, तो जो मेम्बरान ईमानदार हैं, उनमें से कुछ बहुत ही बहादुर और ईमानदार, सख्त डिटर्मिनेशन के हों, तो वो ईमानदार बचेंगे, लेकिन अगर उनमें वो कमजोर होंगे तो धीरे–धीरे वो भी बेईमान हो जाएंगे और जितने कारपोरेशन के राज कर्मचारी हैं, उनमें शायद ही बिरला कोई ईमानदार बचेगा।

तो मैं आपको यह कहता हूं और कुछ नहीं, गांधीजी ने क्या कहा था? गांधीजी के पास क्या रखा था ? बेशक बुद्धिमान बहुत, लेकिन उनको जो काम का फल, जो उनको सफलता मिली, इतने बड़े देश को जगाने में, उनका नाम हजारों बरस तक जिंदा रहेगा। बुद्धि तो उनकी पचास फीसदी थी, 50 फीसदी उनका त्याग था, उनकी लंगोटी थी, जिसकी वजह से यह देश उठ गया (तालियां)। लेकिन जब से वो गया, धीरे–धीरे हम नीचे गिरते चले गये।

मैं, मेरी पीढ़ी के लोग जब स्कूल और कॉलेज में पढ़ते थे, मैंने सन् 1919 में मेरठ के स्कूल से हाईस्कूल पास किया। महात्माजी सीन पर आ गए थे सन् 1918 में, 19 में अमृतसर में वो जलियांवाला बाग का किस्सा हुआ, 13 अप्रैल को और उससे पहले 30 मार्च को जो बड़ा बाजार है, वहां का, दिल्ली का, चांदनी चौक में गोली चली, जब स्वामी श्रद्धानन्दजी सीना

तानकर खड़े हो गए थे, ब्रिटिश तोप के सामने। मैं टैन्थ का इम्तहान दे रहा था, उससे एक साल पहले उनकी लिखी हुई किताब, मैं नाम भूल गया हूं उनका 'भारत भारती'। झांसी के पास चिरगांव के पास रहने वाले जो हमारे राष्ट्रकवि हुए हैं, मैं नाम उनका, मैंथिलीशरण गुप्त, उससे मैंने देशप्रेम सीखा, उस किताब से 'भारत भारती' से, और फिर महात्माजी आये।

तो, मेरी पीढ़ी के लोगों के सामने क्या उदाहरण थे, कौन से आइडियल थे, कौन से आदर्श पुरूष थे, जिनमें हम सब लोग, जिनमें कोई अंकुर देशप्रेम का था, जिनकी हम नकल करना चाहते थे। महात्मा गांधी और गोपालकृष्ण गोखले और लोकमान्य तिलक, पं0 मालवीय, लाला लाजपतराय, ये शानदार हस्तियां थीं और तीन संन्यासी थे, उस वक्त कोई जिंदा नहीं था, जिस वक्त हम कालेज और स्कूल में पढ़ते थे। स्वामी रामतीर्थ, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, जिनकी हम लोग जीवनी पढ़ा करते थे। आज मुझको सबसे बड़े दुःख की बात यह लगती है कि आज जो हमारी नयी पीढ़ी है, इन्दौर में कौन नेता है, कौन जनसेवक है, जिसके कदमों पर चलने की हमारी नयी पीढ़ी कोशिश करे, आज की, नहीं, कोई नहीं, कोई नहीं रह गया।

तो, जिस देश के लड़कों में आइडियलिज्म न हो, आदर्शवाद न हो, त्याग की भावना न हो, देश को बड़ा बनाने का स्वप्न न देखते हों, तो देश कैसे उठेगा? लेकिन आज है यह स्थिति।

दोस्तों, मैंने यह पार्टी बनायी इस ख्याल से, मैंने कोशिश ये की थी कि बराबर कांग्रेस का राज तीस साल से चल रहा था, धीरे–धीरे वो भ्रष्ट हो गये थे। उनको डर नहीं था कि हमको कोई पार्टी निकाल सकती है, उनको वोट कुल मिलाकर कम मिलती थी, बनिस्बत सारी पार्टियों की मिलाकर, उससे कम मिलती थी, लेकिन वोट बंटी हुई थी। तो मैंने कई पार्टियों को मिलाकर भारतीय क्रांति दल पार्टी बनाई, भारतीय लोकदल बनाया। उसकी सदस्य संख्या 74 थी। तीन पार्टियां थीं– जनसंघ के हमारे दोस्त, सोशलिस्ट पार्टी के दोस्त और कांग्रेस संगठन के दोस्त, ये राजी नहीं थे।

मैं और मेरे दोस्त कई–कई बार इन लोगों के पास गये कि मुझे बतलाओ कि अकेले रहकर इंदिरा को हरा सकते हो? तो पंचायती राज कैसे चलेगा ? अगर पार्टी अदलती–बदलती न रहे और देश के अन्दर लगभग दो बराबर की और ज्यादा से ज्यादा तीन पार्टियां होनी चाहिए। मैंने उनसे कहा कि लीडर आप बन जाइये, तीन बार मैं गया मोरारजी भाई के पास कि लीडर आप बन जाइये, आप मुझसे उमर में बड़े हैं। आप भी जब कांग्रेस में थे, हम तो आपको अपना लीडर ही मानते थे, अगरचे आपकी हमारी आपस में मुलाकात नहीं थी कोई। झंडा कुछ रखिये, निशान कुछ रखिये, पार्टी का नाम कुछ रखिये, मेरी केवल एक शर्त है कि पार्टी का प्रोग्राम वो होगा, जो हमारे राष्ट्रपिता ने हमको बतलाया था और बाकी सारा आपको सुपुर्द है।

जनसंघ के लोग नहीं माने, बहुत कहा तो मुझसे बोले कि आप देवरस साहब से मिलो, बालासाहब देवरस। मैंने उनको चिट्ठी लिखी। उन्होंने कहा, 18 अक्टूबर सन् 74 को मैं आ रहा हूं कानपुर। मैं लखनऊ से उनके पास गया, घंटे भर मैंने बातें कीं। मेरी दलीलों का उनके पास जवाब नहीं था। उन्होंने कहा कि मैं आपसे सहमत हूं, जनसंघ के लोग क्या कहते हैं, ये मुझसे पूछा। मैंने कहा, जनसंघ के लोग तो आपका नाम लेते हैं, तो बोले कि ये तो गलत कहते हैं। मैंने कहा नहीं, गलत नहीं कहते हैं। जो आप चाहोगे वही होगा, ऐसा हमने

सुना है। तो उन्होंने कहा, महाराष्ट्र में मेरा प्रोग्राम है, नवम्बर के महीने में। मैं महीने भर बाद उनसे बात करके आपको चिट्ठी लिखूंगा। लेकिन मेरे पास कोई चिट्ठी नहीं आयी।

सोशलिस्ट पार्टी के चंद लीडरान हैं, जिनका कोई फॉलोअर नहीं है हिन्दुस्तान में, बहुत–थोड़े फॉलोअर हैं। इन तीनों ने आसरा पकड़ रखा था जयप्रकाश नारायणजी का। 22–23 नवम्बर सन् 74 को जय प्रकाश नारायणजी दिल्ली में आये। मैं, पीलू मोदी, राजनारायणजी और बीजू पटनायक, चारों हम जयप्रकाश नारायणजी से मिले। मैंने कहा, अब आप एक पार्टी बनाइये और आप लीडर होइये, आप नेतृत्व सम्भालिये। और जो आपकी इच्छाएं हैं पूरी हो जाएंगी सब। समग्र रेवोल्यूशन (सम्पूर्ण क्रांति) हो जाएगा।

उन्होंने कहा, मैं एक पार्टी के साथ अपने आपको वाबस्ता करना नहीं चाहता, मेरी मंशा पूरी नहीं होगी। मैंने कहा, मंशा आपको करनी है, समग्र रेवोल्यूशन, क्रांति करनी है, वो आयेगी जब राजनीतिक पावर आयेगी और क्योंकि देश में डेमोक्रेसी है, तो राजनीतिक पावर आयेगी, बैलेंस के जरिये। एजिटेशन से लोगों की एजूकेशन तो होगी, प्रोसेशन और आंदोलन से लोगों का प्रशिक्षण तो होगा, लेकिन राजसत्ता का हस्तान्तरण तो बैलेट के जरिये ही होगा। अगर आप एक पार्टी बना लें, उसके लीडर हो जाएं, अगले इलेक्शन में आपकी कामयाबी होगी और देश में चाहे जो कुछ आप करना। लेकिन मेरी बात उन्होंने नहीं मानी। आपको बतलाता हूं, गिरफ्तार होने के बाद जल्द ही बीमार हो गये और रिहा हुए मार्च, 76 में। एक अखबार 'स्वराज' नाम का निकलता था लंदन से, सरे कोई वहां का मुहल्ला है, वहां से। हिन्दुस्तान के लोग वहां बसे हुए थे, जो कि यहां के आन्दोलन का समर्थन कर रहे थे। जय प्रकाश नारायण जी से उनके किसी आदमी ने इन्टरव्यू ली। उस इंटरव्यू को पढ़ लो। 12 मार्च सन् 76 का है, तो 'स्वराज' मेरे पास उस अखबार की कॉपी रखी है, जिसमें जयप्रकाश नारायणजी ने यह माना कि मेरे से गलती हुई जो मैंने आंदोलन शुरू किया। मुझे नहीं मालूम था कि इंदिरा डिक्टेटर हो जायेगी, इससे तो मैं सब लोगों को मिलाकर इलेक्शन लड़ता तो शायद बेहतर होता।

दोस्तों, इमरजेंसी लग गयी। हम जेल में ठूंस दिए गए। जेल के अन्दर जनसंघ के दोस्तों से, जनसंघ के और सोशलिस्ट पार्टी के दोस्तों से बातें हुई, वो करीब–करीब तैयार हो गए जेल से छूटकर एक पार्टी बनायेंगे। लेकिन मुरारजी टस–से–मस नहीं हुए। 18 जनवरी को इंदिराजी ने घोषणा कर दी चुनाव की, सब लोगों को छोड़ दिया, इमरजेंसी करीब–करीब उठा ली। तब उनको लगा कि शायद अब कुछ सम्भावना उनकी बढ़ जाएगी, तब जा के राजी हुए।

उसके बाद उधर जब टिकट मिल रहे थे, तब जगजीवनराम जी को कोई आशा नहीं थी कि उनकी मिजॉरिटी आ सकती है, तो उन्होंने एक पार्टी बनायी सी0एफ0डी0। तीसरी जनवरी को कांग्रेस छोड़ी। तीन–चार आदमी उनके साथ थे, बहुगुणा वगैहरा और कोई आदमी उनके साथ नहीं था।

मैंने उनसे कहा अलग पार्टी क्यों बनाते हैं, आपने रेजोल्यूशन पेश किया इमरजेंसी का, जबकि आप गृहमंत्री नहीं थे, ये एक तरह से गुनाह है। आपके लिए लाजिमी नहीं था; और बहुगुणा ने 32000 आदमी यू0पी0 में जेल में डाले हैं, आबादी के हिसाब से 17 हजार ही डालने चाहिए थे– एक लाख दो हजार सारे हिन्दुस्तान में थे, आबादी छठी थी, उन्होंने 32 हजार जेल में डाले। बड़ा उत्साह दिखाया। उनको निकाल दिया इंदिरा ने, उनको शक हो

गया उनकी नीयत पर। तो मैंने कहा, आप दोनों माफी मांगो जनता से कि जो आपने पाप किया है और जनता पार्टी में सीधे शामिल हो जाओ। लेकिन अलग पार्टी बनाने की जरूरत नहीं है। नहीं माने।

खैर, इलेक्शन हुआ। हमने लीडर उनको मान ही लिया था पार्टी का, अब प्राइम मिनिस्टर की बात आयी। मैं 19 मार्च को बीमार हो गया। अपने हल्के में 20 मार्च को जाना चाहता था पोलिंग देखने के लिए, रास्ते में से लौट आया। और मुझे अस्पताल में, विलिंगडन हॉस्पिटल में दाखिल होना पड़ा। सोशलिस्ट पार्टी के नेता एन0जी0 गोरे, अटल बिहारी बाजपेयी – जनसंघ के नेता, मेरे पास अस्पताल में पहुंचते हैं और यह कहते हैं कि हम जगजीवनराम को प्राइम मिनिस्टर बनाना चाहते हैं। मैंने कहा, वैसे तो जो उनके कारनामें हैं, मैं बताना नहीं चाहता हूं, सब को मालूम हैं, लेकिन काय बात का इनाम दे रहे हो, इस बात का कि प्रस्ताव पेश किया था इमरजेंसी का ? क्या कहेगी दुनिया, आपके जहन में थूकेगी। मैंने कहा अटलजी, जब उनको प्राइम मिनिस्टर बनाकर बैठोगे, आप लोग सभा में, तो कांग्रेस वालों की आलोचना कर सकोगे कि इंदिराजी ने लगायी थी वो क्या नाम इमरजेंसी? तो वो कहेंगे, वो लीडर आपका प्राइम मिनिस्टर आपने बना रखा है, जिसने इमरजेंसी का प्रस्ताव पेश किया। क्या जवाब होगा ?

अब मेरे पे रहा नहीं गया, मैंने कहा अटलजी, आप उस पार्टी के लीडर हो जो हिन्दू संस्कृति की बात करती है। क्या हिन्दू संस्कृति इस तरह के नेता का तकाजा करती है कि इस तरह का, मैं आपको बताना नहीं चाहता हूं, मैंने उनको भी उस वक्त नहीं कहा। आप हिसाब लगा लो सब, तरह का आदमी होना चाहिए क्या कोई प्राइम मिनिस्टर ?

मैंने कहा, मैं हरगिज–हरगिज तैयार नहीं। मैं जानता हूं कि मोरारजी से मेरे विचार मिलने वाले नहीं हैं, गांव के उठाने में और गरीब के तई हमदर्दी रखने में और उसके मसले हल करने के बाबत। उन पर असर है, उनके दिमाग में भरा हुआ है, उनका बाप था मिल–मालिक। लेकिन फिर भी 19 महीने वो जेलखाने रहे हैं, सात बरस मुझसे बड़े हैं। मैं जगजीवनराम के मुकाबले में उनको प्राइम मिनिस्टर बनाना पसन्द करूंगा।

बस, बात खतम हो गयी। मैंने जयप्रकाश नारायण जी, आचार्य जी को चिट्ठी लिखी। मैं और मेरे साथी, हम मोरारजी को पसंद करते हैं प्राइम मिनिस्टरी के लिए। इस तरीके से वह प्राइम मिनिस्टर तो हो गये। उसके बाद होते ही डिक्टेटर हो गए। इसमें बेवकूफी के कहो, मेरी हठवादिता के कहो, मेरे विचार के कहो, दो नतीजे निकले। मैं डिक्लेयर कर दिया गया हरिजनों का दुश्मन। एक बात। दूसरी तरफ मोरारजी हो गये प्राइम मिनिस्टर, नहीं, डिक्टेटर। यहां तक कैबिनेट बनाने तक में उस आदमी से भी पूरा मशविरा नहीं किया, जिसने उलको उस ऊॅचाई पर बैठा दिया था, उनका स्वप्न सारी जिंदगी का पूरा कर दिया था। 52 आदमी उनके कुल आये थे। हमारे जनसंघ के 80–80 आदमी आये थे। हमारे चार–चार, जनसंघ के एक लीडर ने इस्तीफा दिया था, उनके तीन ही रहे, हमारे चार और जिसके 52 थे उसके छह और प्राइम मिनिस्टर। कौन सी ईमानदारी ? अगर योग्यता थी तो आप बीस के बीस अपने बना लेते। लेकिन योग्य आदमी वो नहीं थे कि हमारे पास योग्य नहीं थे और उनके पास योग्य थे। उनके ऑफिस का सेक्रेटरी, केरल का रहने वाला। बिहार के सीधे–सादे किसानों से हमने चुनवा के भेज दिया। अब बोलो वो बिहार को रिप्रेजेंट करता या केरल को ? वो भी मिनिस्टर हो गया, आपका ऑफिस का सेक्रेटरी। ये उन्होंने काम किया।

धीरे–धीरे एक गलती हमसे ये हुई, मेरे दोस्त राजनारायण से भी कि मेरा जनमदिन मना बैठे थे, 23 दिसम्बर, 1977 को। मैंने मना किया था। इससे गलतफहमी पैदा होगी। नहीं माने। आसपास के 25 लाख 30 लाख किसान इकट्ठे हुए। मोरारजी ने वादा किया था कि मुझे शुभकामना देंगे, जनसंघ के नेता भी आये थे। उन्होंने भी किसानों की हिम्मत बढ़ायी और यह कहा, हम आपके मसले हल करेंगे, वगैरा–वगैरा। मोरारजी ने वादा किया था, लेकिन आये नहीं। उनको जो मालूम हुआ कि 25–30 लाख आदमी मौजूद हैं, तो उनकी छाती पर सांप लोट गया ईर्ष्या का, दोस्तों! कहा कि आदमी शक्तिशाली मालूम होता है, इसके अहसान का बदला उतारना है।

उन्होंने अहसान का बदला यह उतारा कि जनसंघ से मिलकर मुझको और राजनारायण को कैबिनेट से निकाला। राजनारायण जी के खिलाफ झूठा चार्ज। मेरे खिलाफ चार्ज यह कि मैंने यह बयान दिया था कि स्पेशल कोर्ट्स बनाओ, स्पेशल प्रोसीजर बनाओ, मामूली अदालत दस साल तक इंदिरा को जेल नहीं भेज सकती। मैंने कहा था, जनता आज आपको–हमको नपुंसक समझती है। मैं होम मिनिस्टर था, अगर नपुंसक के मायने किसी आदमी के नपुंसक के इस सन्दर्भ में, तो मैं भी नपुंसक ही था। लेकिन मोरारजी को अपना नपुंसकपन पसन्द नहीं था। लिहाजा उन्होंने मुझसे इस्तीफा मांगा और बाद में सारी गवर्नमेंट को कह दिया। मैंने यूं कहा कि 17 जून को वापिस आते हैं अमरीका से, अखबार वाले पूछते हैं, तीन बार उनका बयान है कि मामूली अदालतों से मुकदमा चलाऊंगा मैं।

तो, 22 जून को आचार्य कृपलानी का बयान आता है कि मुझे मालूम होता है कि मोरारजी ने इंदिराजी से फैसला कर लिया, इसलिए ये मामूली अदालतों में चलाना चाहता है, मामूली अदालतों से उनको सजा हो ही नहीं पायेगी। यह आचार्यजी की रीडिंग है। 23 जून को मैंने 29 जून को बयान निकाला, उनको कोई हक नहीं था यह बयान देने का कि हम स्पेशल कोर्ट्स नहीं बनायेंगे। होम मिनिस्टरी का मामला था, मैं होम मिनिस्टर था, बीमार बेशक था, मुझसे डॉक्टर ने यह कहा था कि आप अब खतरे से बाहर हैं, अस्पताल में ज्यादा रहना ठीक नहीं है। देश में तरह–तरह की अफवाह आपसे मुताल्लिक होंगी। सूरजकुंड में एक रेस्ट हाउस है। वो देखकर आये और एक डाक्टर को और एक नर्स को चौबीस घंटे उन्होंने मेरे पास छोड़ा।

दोस्तों! विचार करो, कैसा हमने प्राइम मिनिस्टर बना दिया। मैंने बीमारी में उन्हें प्राइम मिनिस्टर, बीमार पड़ा हुआ था मैं, सख्त, उस वक्त मैंने उनको प्राइम मिनिस्टर बनाया और जब मैं बीमार था, तब उन्होंने मुझसे इस्तीफा मांगा। इस छोटे दिल के आदमी को मैंने बना दिया। इसी सिलसिले में कहना चाहता हूं, जब 24 जून सन् 78 को मुझ पर कातिलाना हमला हुआ, तो 23 दिसम्बर को, दूसरे जन्मदिन के बाद, जिसमें 50 लाख आदमी आये थे बिहार का एक आदमी आता था। उससे मेरा कोई ताल्लुक नहीं है। मेरा ख्याल है उसके पीछे षड्यंत्र था। लेकिन मैं कुछ कहना नहीं चाहता हूं। उसे मजिस्ट्रेट से, यहां सेशन जज से अभी सजा हुई है। मेरे पर हमला करता है और हमारा प्राइम मिनिस्टर हमको टेलीफोन से भी यह नहीं पूछता है कि चरण सिंह, मैंने सुना कातिलाना हमला हुआ, तुम बच गये, मुझे बड़ी खुशी हुई जानकर। नो!

तो, एक और बड़ी गलती मुझसे यह हुई कि 15 जनवरी सन् 78 को भावनगर में उन्होंने एक बयान दिया था – जनता पार्टी की तरफ से एक बड़ी मीटिंग हुई। जनता पार्टी

का प्रेसिडेंट मीटिंग का प्रेसीडेंट था – कि मेरे लड़के पर रोज बेईमानी के चार्जेज अखबारों में छप रहे हैं, वे निराधार हैं। मैं तीन निष्पक्ष आदमियों का कमीशन नियुक्त करने को तैयार हूं। लौटकर आये। हर अखबार में छपी यह खबर, 15 या 16 जनवरी, सन् 78 को। दो महीने से कुछ नहीं किया, क्योंकि बेटा यह कहता था कि आपने गलत बयान दे दिया। तो मैंने उनको चिट्ठी लिखी, 11 मार्च 78 को, आप खुद वादा करके आये, कमीशन मुकर्रर करो। तो मुझे चिट्ठी लिखते हैं कि झूठे इल्जाम लगते ही रहते हैं लोगों पर। सब पर लगते हैं। आपकी घरवाली पर झूठे इल्जाम, अब मेरे पास इल्जाम हैं। मैंने चिट्ठी लिखी कि महाराज, अब कांति के बाद पार्टी के खिलाफ कमीशन बाद में बिठाना, मेरी गृहणी के खिलाफ मैं चाहता हूं कि आप फौरन, आप अभी कमीशन बैठा दो, मैं जानना चाहता हूं (तालियां)।

मैं नहीं समझता हूं कि प्राइवेट लाइफ और पब्लिक लाइफ दो होती हैं। मेरी प्राइवेट और पब्लिक लाइफ एक ओपन बुक है। अगर मेरी वाइफ ने ही गलती की है, मैं इस्तीफा देने को तैयार हूं। लेकिन हिम्मत कहां थी कमीशन बैठाने की, वो तो एक दलील में कह दिया।

ये मेरा बड़ा पाप हो गया दोस्तों, तो उन्होंने इस्तीफा लिया। इसके बाद मेरा अहसान उतारने के लिए तीन चीफ मिनिस्टर थे, अच्छे–से–अच्छे। बिहार में कर्पूरी ठाकुर, नाई के घर पैदा हुआ, उस जैसा त्यागी आदमी बिहार में नहीं है। वो साबित हो जाएगा किस किस्म का आदमी है, जो मैं आपको बताऊं कि उसका बाप आज भी नाई का काम गांव के अन्दर करता है। (तालियां)। लेकिन मोरारजी को, जनसंघ पसन्द नहीं था। वो था बीएलडी का नेता। रामनरेश यादव, एक निहायत ईमानदार आदमी है, यू0पी0 का चीफ मिनिस्टर, उसको हटवाया। मिल चुके थे, जनसंघ और कांग्रेस के लोग और मोरारजी वगैरा। देवीलाल को हटाया, उनके एम0एल0एज को बुलाकर दिल्ली में अपने मकान पर कहा कि कसम खाओ कि देवलीलाल को निकालोगे। तीनों चीफ मिनिस्टर निकाल दिये। हमको दोनों को पहले निकाला ही जा चुका था और राजनारायण जी बेशक संयम से काम नहीं लेते थे, अपने व्याख्यान देने में, बयान देने में। मैं कई बार बयान दे चुका था कि ऐसा नहीं करना चाहिए, नहीं माने। उनको वर्किंग कमेटी से हटा दिया। मैंने उसकी निन्दा नहीं की। तब उन्होंने मुझसे कहा कि मैं पार्टी छोड़ना चाहता हूं। मैं मना करता था। मैंने कहा, पार्टी हमने बनायी है, हम इसे अभी नहीं छोड़ना चाहते, पार्टी के अन्दर लड़ेंगे। बहुत निन्दा की, मैंने इजाजत नहीं दी, दोस्तों।

राजनारायण जी को नहीं हटाया गया, क्योंकि अगर उन्होंने अवहेलना की थी डिसिप्लिन की, तो अगर इस बात पर हटाया तो जनसंघ के सब मेम्बरों ने यू0पी0 की असेम्बली में, सदन में खुलकर–बनारसीदास, जो हमारे चीफ मिनिस्टर थे, उनके खिलाफ वोट दी, अपनी गवर्नमेंट के खिलाफ और उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई, कोई कार्रवाई नहीं हुई, क्योंकि जनसंघ के दोस्त थे।

ये थे हमारे प्राइम मिनिस्टर, ये थे हमारे लीडरान चंद्रशेखर। तय कर लिया कि चरण सिंह को, उसके साथियों को, उनकी पार्टी के चीफ मिनिस्टरों को बर्बाद करना है। इलेक्शन पैनल जो बना है, तीन आदमियों का इलेक्शन पैनल बना है, दिल्ली में, उसमें हमारा आदमी नहीं था। सोशलिस्ट पार्टी का एक था, एक जनसंघ का था, एक कांग्रेस (ओ) का। क्यों ? और सोशलिस्ट पार्टी का कौन मेम्बर बनाया, जो कि म्यूनिसिपेलिटी से चुनकर नहीं आ सकता, जिसको राज्यसभा का मेम्बर मैंने अपने एमएलएज जो थे यू0पी0 में, उनसे चुनवा कर भेज दिया था। यू0पी0 में छह बनाये, कांग्रेस–ओ के दो, बीएलडी का एक, जबकि कांग्रेस–ओ

का लीडर सी0बी0 गुप्ता जमानत जब्त करा चुका था अपनी, अपने दस मेम्बर सन् 74 में चुनकर लाया था। राजस्थान में छह आदमियों का पैलन बनाया है, एक भी यू0पी0 का नहीं और हमारी पार्टी का एक भी नहीं। गुजरात में छह आदमियों का ही इलेक्शन पैनल है, एक भी आदमी बीएलडी का नहीं।

उनका इरादा यह था कि गवर्नमेंट से निकालो और पार्टी से निकालो। 26 जून को वापस आते हैं मोरारजी भाई दिल्ली, बाहर से और पत्रकार–सम्मेलन में कहते हैं। ये सन् 78 की बात कह रहा हूं कि एक, एक पत्रकार ने यह पूछा कि उन्होंने पार्टी छोड़ दी है, राजनारायण जी ने, अगर पुराने भारतीय लोकदल के और लोग भी छोड़ दें तो क्या होगा? 27 जून के अखबार उठाकर देखो आप लोग, इन्दौर के, जवाब यह होता है हमारे एक काबिल प्राइम मिनिस्टर का कि अगर सारे भी छोड़ देंगे लोकदल के, तो मेरे पर कोई असर नहीं पड़ने वाला, गवर्नमेंट और मजबूत हो जाएगी।

बस, यह बात बर्दाश्त नहीं हुई मेरे साथियों। उन्होंने कहा, चौधरी साहब, अब हमको इजाजत दीजिये। मैंने कहा, नहीं, अभी और ठहरो। इसी बीच में 9 जुलाई को चेयरमैन ले आते हैं नो कॉन्फिडेंस मोशन और मेरे साथी उनके खिलाफ वोट करते हैं। 97 आदमियों ने हमारे पार्टी छोड़ी। कहा जाता है कि दल बदला। नहीं। दल बदलने के लिए खुद उन्होंने जो कानून पेश किया, हमारी जनता गवर्नमेंट ने, जनता पार्टी की मंजूरी के बाद, एक कमेटी की सिफारिश के बाद, एक बिल बना, विधेयक बना मई 79 में लोकसभा में पेश हुआ और कमेटी का चेयरमैन मैं था गृहमंत्री होने के नाते, जिस वक्त यह कमेटी मैंने कायम करायी थी 78 के शुरू में। उसमें लिखा यह है कि अगर चौथाई से कम एक पार्टी के आदमी छोड़ें तो डिफेक्शन कहा जा सकता है। चौथाई से ज्यादा छोड़े तो वह विभाजन होगा, वह स्प्लिट होगी। हमने 299 आदमियों में से 97 ने छोड़कर लोकदल बनाया था, तो फिर जो आदमी उसको डिफेक्टर कहता है, वह बेईमान है, झूठा है और दुनिया को बरगलाना चाहता है। दोस्तों! (तालियां) इनसे पूछा जाए कि इन्होंने कई आदमी कांग्रेस के शामिल किए थे 77 से 79 तक, क्यों शामिल किये थे? एक–एक, दो–दो आदमी?

तो दोस्तों, इस तरह से हमको पार्टी से पूरी तरह निकालने का इरादा, जलील करने का इरादा किया, तब यह नौबत पहुंची। मुझको तकलीफ है। इससे देश के अन्दर एक राजनीति के क्षेत्र में बहुत अनसर्टेनिटी, अनश्चितता पैदा हो गयी। इसमें कोई शक नहीं। लेकिन मेरे सामने कोई रास्ता नहीं था।

मुझपर यह इल्जाम लगाया गया कि मैंने इंदिराजी से कोई सहायता मांगी है, हरगिज–हरगिज नहीं। 11 जुलाई से उनके बयान थे कि मैं अनकंडीशनली सपोर्ट करूंगी, नो कॉन्फिडेंस मोशन, बिला शर्त। मेरे पास आते हैं कमलापति त्रिपाठी और स्टीफेन। वे कहते हैं, हम आपको वोट देने के लिए तैयार हैं, लेकिन आप इंदिराजी को फोन कर लो। मैंने कहा, नहीं, हरगिज नहीं। मैंने मना कर दिया।

तो इंदिराजी तो खुद ही पार्टी तोड़ना चाहती थीं। मैंने कहा, तुम्हे दो लेसर ईविल में चूज करना है–– ये जनता पार्टी या हमारी गवर्नमेंट। तुम हमको लेसर ईविल समझते हो, तुम हमारे साथ एहसान नहीं कर रहे हो, लिहाजा मैं इंदिरा से कोई बात कहने वाला नहीं हूं और फोन करने वाला भी नहीं हूं।

जब 20 अगस्त को यह गौरमेंट हमारी बन गई और मैंने तीन हफ्ते के अन्दर पार्टी असेम्बली बुला ली, पार्लियामेंट बुला ली, 285 वोट हमारी आयी थीं, 234 आयी थीं मोरारजी की, राष्ट्रपति के सामने जब उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। इसलिए उन्होंने मुझको बुलाया और यह मशविरा दिया था कि हो सके तो महीने भर के अन्दर लोकसभा को बुला लो। वह मशविरा था, लाजिमी नहीं था, उनको कोई हक नहीं था। मैंने उस मशविरे के मातहत 20 अगस्त को लोकसभा की मीटिंग बुलायी। 19 तारीख की रात को, बीजू पटनायक मेरे दोस्त थे, उनसे कई बार यह मिला था इनका लड़का संजय। वो यह कहता था कि आपकी गौरमेंट बनने के बाद तो हमारे खिलाफ मुकदमे और तेजी से चलने लगेंगे। तो 19 तारीख की रात को साढ़े नौ बजे मेरे पास बीजू पटनायक का फोन आता है कि इंदिराजी यह कह रही हैं कि जिस विज्ञप्ति के जरिये हाईकोर्ट से किस्सा कुर्सी का मुकदमा चला गया सुप्रीम कोर्ट में, हाईकोर्ट में रहता तो चार साल चलाते, सुप्रीम कोर्ट में बहुत जल्दी तय होने वाला है, तो इस विज्ञप्ति को आप कैंसिल करा दें। मैंने कहा नहीं, हरगिज नहीं। उन्होंने कहा बीजू ने कि चौधरी साहब, विचार कर लो, फिर वो आपके खिलाफ कल राय देने वाली हैं। मैंने कहा कि मैंने विचार कर लिया।

श्री देवराज अर्स, कर्नाटक के चीफ मिनिस्टर कर्नाटक हाउस में ठहरे हुए थे, बीजू ने और और लोगों ने उनसे कहा। उन्होंने मुझको फोन किया कि चौधरी साहब, इसमें क्या हर्ज है? मैंने कहा, हर्ज है। मेरी राय में हर्ज है। दुनिया में कुछ मूल्य होते हैं जो प्राइमिनिस्टरी से भी बड़े हैं, लिहाजा मैं उससे कहने वाला नहीं हूं, मैं उस विज्ञप्ति को रद्द करने वाला नहीं हूं। मैंने यही कह दिया।

अगले रोज उनकी पार्लियामेंटरी बोर्ड की मीटिंग होती है, 20 तारीख को सवेरे। साढ़े आठ बजे मेरे पास खबर आती है कि उन्होंने तय किया है कि गवर्नमेंट को गिरायेंगे, जबकि बिला–शर्त के इमदाद करने का उनका वायदा था, उनका बचन था, वायदा तो कोई अदला–बदला होता नहीं है, हमारा तो कोई बदला नहीं था।

तो, मैंने साढ़े नौ बजे कैबिनेट की मीटिंग बुलायी। मैंने कहा, अब हम माइनोरिटी में हैं, हमको इस्तीफा दे देना चाहिए और इलेक्शन की मांग करनी चाहिए। कांस्टीट्यूशन के मुताबिक, रवायत के मुताबिक। जैसा कि मई 79 में ब्रिटेन का प्रधान मंत्री जेम्स कैलहन हार गया, पार्लियामेंट में, और हारने के बाद वो क्वीन से कहता है कि मैं इलेक्शन चाहता हूं, माइनोरिटी में था, लेकिन इलेक्शन हुआ। 54 के नवम्बर में, हमारे जो प्रेसिडेंट थे, ये डिप्टी चीफ मिनिस्टर थे हैदराबाद में, टी0 प्रकाशम चीफ मिनिस्टर थे कांग्रेस के, चंदूलाल त्रिवेदी गवर्नर थे। टी0 प्रकाशम और संजीवा रेड्डी की कांग्रेस पार्टी विधानसभा के सदन में हार गयी और हारने के बाद उन्होंने कहा चुनाव होना चाहिए, चुनाव हुए।

लिहाजा, हमने जब चुनाव के लिए कहा, तो राष्ट्रपति के सामने कोई रास्ता नहीं था, कोई रास्ता नहीं था। कानून में, कांस्टीट्यूशन में, यह लिखा हुआ है। पहले तो उनको अख्तियार कभी नहीं था, कुछ डिस्कशन छोड़ी हुई थी। इंदिरा ने जो कांस्टीट्यूशन बदल दिया था। यह उसमें लिखा था कि कोई रास्ता नहीं है, सिवाय जो कैबिनेट पास करे, उसको मानें।

तो दोनों तरीके से उन्होंने सही काम किया। तो उनको गालियां देना शुरू हो गईं। कहा जगजीवनरामजी ने कि मैं चमार हूं, मैं हरिजन हूं, इसलिए मुझको नहीं बुलाया (शोर)

ख्याल फरमाइये जरा, क्या बहस हुई और अपने राष्ट्रपति के लिए जितने अपशब्द चंद्रशेखर ने और जगजीवनराम जी ने किये इस्तेमाल, उससे ज्यादा शर्म की बात देश के लिए नहीं हो सकती।

दोस्तों, आप में से बहुत से जानते होंगे कि जगजीवनरामजी गरीब घर में जरूर पैदा हुए, लेकिन आज हिन्दुस्तान के कुछ इने–गिने सबसे मालदार आदमियों में उनकी शुमार है। फिर क्यों गरीबी की बातें करते हैं? क्यों लोगों को बहकाते हैं? हरिजनों को और गरीबों को ? वोट से क्यों डरते हो, इलेक्शन से ? मोरारजी इलेक्शन करा सकते थे, हमने इलेक्शन कराया, तो सब पार्टियों ने कहा कि इलेक्शन हो, जनता की राय ली जाए देश की परिस्थिति ऐसी है, सिवाय जनता पार्टी के मुखालफत करने के। उससे आप अंदाज लगा सकते हैं।

मैंने आपका बहुत समय लिया है। मैं माफी चाहता हूं कि इतने समय मैंने आपको बिठाया। लेकिन साथ ही मैं बहुत आपका एहसानमंद हूं कि आपने शांति से मेरी बात सुनी। अब मैं आपसे, हां, हमारे कल्याण जैन यहां के एम0पी0 हैं। मैं यह समझता हूं कि इनसे बेहतर खिदमतगार आपको नहीं मिलेगा (तालियां)। लिहाजा, अगर मेरी बातें पसंद हों और लोकदल का और भारतीय कांग्रेस का संगठन, गठन जो है और उनकी जो स्कीम और पालिसी आपको पसंद हो तो आप इस ईमानदार आदमी को चुनवाइये, राय दीजियेगा। (तालियां)।

इन शब्दों के साथ मैं आपसे अब, बोलो, तो बोलो, बीच में मत बोलो। मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि मैंने कथन समाप्त किया। अब मेरे साथ तीन नारे लगा दीजिये और मुझे जाने की इजाजत दीजिये ..

भारतमाता की जय
भारत माता की जय
महात्मा गांधी की जय
महात्मा गांधी की जय
लोकदल–कांग्रेस की जय
लोकदल– कांग्रेस की जय
————

दिनांक 11 नवम्बर, 1979 को धार (इंदौर) मध्य प्रदेश में जनसभा में श्री चरण सिंह का भाषण

.....

बहनो और दोस्तो,

आज, ये मेरा पहला मौका है आपके इस इलाके में आने का। मैंने आपके इलाके का नाम तो सुना है और राजा भोज का नाम तो हिंदुस्तान के सभी लोगों ने सुना है।

अभी जो हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी पंचायत है, जिसको लोकसभा कहते हैं, उसके लिए चुनाव होने वाले हैं। उसमें तीन बड़ी पार्टियां इलेक्शन के लिए खड़ी हुई हैं, कुछ और भी हैं छोटी–मोटी। लेकिन तीन बड़ी कही जा सकती हैं। एक तो इंदिरा जी की कांग्रेस, और एक जनसंघ और संगठन कांग्रेस मिलकर एक पार्टी है, जिसका नाम जनता पार्टी है, जिसके लीडर हैं जगजीवन राम। एक लोकदल है, जिसमें मैं और मेरे साथी काम कर रहे हैं। तो, ये मीटिंग लोकदल की तरफ से आयोजित की गयी है, ताकि आपको ये मशविरा दिया जा सके कि आप लोकदल के प्रत्याशियों को अपना वोट दें।

सवाल ये उठता है लोकदल और कांग्रेस, दोनों का हमारा गठन है। तो इस गठन की तरफ से जो कोई उम्मीदवार खड़ा हो, तो मैं आपको ये परामर्श देने के लिए आया हूं कि आप इस गठन के उम्मीदवार को अपना वोट दें। सवाल उठेगा मन में आपके, उठना चाहिए,कि क्यों? औरों के मुकाबले में आप इस गठन को अपनी राय क्यों दें। वो इसलिए कि हमारे इस पार्टी के पास या इस संगठन के पास, देश की जो चार बड़ी समस्याएं हैं उनका समाधान है, उनका ईलाज है, दूसरों के पास नहीं। अब आपके पास दूसरी पार्टी के लोग भी आयेंगे, नेतागण आयेंगे, प्रतिनिधिगण आयेंगे, उनके भाषण आप सुनेंगे, तो ठीक है, वो जजबात उभारेंगे, दूसरों को गालियां भी देंगे। मेरी कोशिश होगी कि दूसरों को गाली न दूं और जजबात को न उभारूं। मैं आपके सामने केवल यह बतलाना चाहता हूं कि समस्याएं क्या हैं? ठण्डे दिल से और उनका ईलाज क्या मुमकिन है ?

चार बड़ी समस्याएं देश के सामने हैं। गरीबी ही नहीं, बढ़ती हुई गरीबी, बेरोजगारी ही नहीं बल्कि बढ़ती हुई बेरोजगारी। गरीब और अमीर की आमदनी का अन्तर ही नहीं, बल्कि उस अन्तर का और चौड़ा होते जाना, बराबर जैसे समय बीत रहा है और चौथा भ्रष्टाचार, बेईमानी रिश्वतखोरी राजकर्मचारियों में ही नहीं उससे ज्यादा राजनीतिक नेताओं के अन्दर। ये चार बड़ी समस्याएं हैं देश के सामने। अगर ये हल नहीं हुईं, तो ये हिन्द महासागर में डूब जाएगा, देश। इसको कोई बचाने वाला नहीं। (तालियां)

मैं आपके सामने जो समाधान रखने वाला हूं, वो सिर्फ समाधान वो ही हैं जो महात्मा जी के बताए हुए हैं। मेरी कोई नई बात नहीं। जब इंदिरा जी ने ये राजपाठ संभाला था, सन् 66 में तो उससे पहले साल, 125 देशों में से हमारे देश का नम्बर था 85 वां। 84 देश हमसे मालदार थे और 40 देश हमसे गरीब। 8 साल बाद सन् 73 में हमारा नम्बर खिसक कर आ गया 104, 103 देश मालदार और 21 देश गरीब। उसके 3 साल बाद सन् 1976 में हमारा नम्बर हुआ 111 वां। सिर्फ 14 देश गरीब और 110 देश मालदार और 14 देश गरीब हैं। वो ऐसे हैं जिनके नाम आपने बहुत ही कम सुने होंगे। 4 देश जरूर हैं जिनके नाम सुने हैं, छोटे–छोटे देश भूटान, नेपाल, बर्मा, बंगलादेश और बाकी 10 देश और रह गए, 125 में जिनके नाम मैं नहीं जानता हूं। जिनका इतिहास में नाम नहीं है, जिनका भूगोल में नाम नहीं पाएगा, लेकिन आजाद हो गए, इसलिए देश कहलाते हैं।

तो गरीबी का ये हाल है। हमारा जो प्लानिंग कमीशन है सरकारी, उसने पिछले साल अनुमान लगाया था कि 48 फीसदी आदमी, 100 में 48, हमारे देश के अन्दर ऐसे हैं, जिनको यथेष्ठ भोजन नहीं मिलता है। सूखी रोटी भी नहीं मिलती है जिससे कि वो अपने स्वास्थ्य को

कायम रख सकें। इनमें 80 फीसदी आदमी गांव में रहते हैं, इसलिए गांव में ही अधिकतर गरीबी है। लेकिन बड़े–बड़े शहर जिनमें बड़ी–बड़ी अट्टालिकाएं हैं और बड़े–बड़े महल हैं। जिनको अंग्रेजी में स्काई स्क्रेपर्स कहते हैं, यानि दिल्ली और बम्बई। इन महलों के पीछे भी, इन बड़ी–बड़ी इमारतों के पीछे भी गरीब आदमी रहते हैं। दिल्ली के अन्दर 26 फीसदी ऐसे ही गरीब हैं, जो गरीबी की रेखा के नीचे रहते हैं, और बम्बई में इससे भी ज्यादा हैं।

तो, ये हमारी गरीबी का हाल है जो दुनिया के किसी और देश में नहीं और जो मैंने कहा सबसे बड़ी दुखदायी बात ये है कि जैसे–जैसे समय बीतता जा रहा है, गरीबी कम होने की बजाय गरीबतर और गरीबतम हम होते जा रहे हैं। दूसरी बात है बेरोजगारी की। शहर के अन्दर हमारे पढ़े–लिखे लड़के हैं। मारे–मारे फिरते हैं – एम0ए0 पास, बी0ए0 पास, एम0ए0 पास, एम0एस0सी0 पास, बिजली का काम सीखे हुए हैं, इंजीनियरिंग का काम सीखे हुए हैं, साईंस की कोई और डिग्री लिये हैं। जो कामदिलाऊ दफ्तर हैं जिनको कहते हैं एम्पलायमेंट एक्सचेंज, जो हर शहर में कायम है। जिसमें नाम लिखे जाते हैं, जो लोग रोजगार के उम्मीदवार हैं। तो, जब जनता पार्टी ने चार्ज लिया था, तब एक करोड़ दो लाख आदमी ऐसे थे जिनके नाम दर्ज थे रजिस्टरों में। और अब जनता पार्टी ने चार्ज छोड़ा है तो एक करोड़ 35 लाख।

अब अंदाज लगाओ एक करोड़ 35 लाख पढ़े–लिखे लड़के कुछ उनमें बे–पढ़े भी हैं लेकिन बहुत कम बी0ए0 पास, एम0ए0 पास और मैं जनता हूं कि एक आध ऐसे हैं जो लोग मुझसे मिले हैं जो थ्रो आउट बराबर हर क्लास में प्रथम श्रेणी में आते रहे हैं, वो लड़के मारे–मारे फिरते हैं। ऐसे अनेक लड़के अपने देश से पास करके दूसरे देशों में नौकरी करने के लिए जाते हैं। उनको विद्या दी गयी यहां, उन्होंने डिग्री हासिल की, इन गरीब लोगों के खर्चे से। इनका शास्त्रियों ने हिसाब लगाया कि 65 किसानों की एक साल की आदमनी कहो या एक किसान की 65 साल की आमदनी लगती है एक लड़के को बी0ए0 पास कराने में गवर्नमेंट का इतना खर्चा होता है।

तो, इस गरीब मुल्क का इतना खर्चा करने के बाद वो दूसरे मालदार मुल्कों में जाकर सेवा करते हैं और अपनी ईमानदारी से उनके विकास में योगदान देते हैं। अब ये हजारों लड़के हमारे पढ़ने के लिए चले जाते हैं अमरीका, इंग्लैंड, जर्मनी। वहां से लौटते नहीं, लौटने को तबीयत नहीं चाहती। कोई किसी कारणवश यहॉ आता है यहां नौकरी करने के लिए, दो साल बाद फिर वापिस चला जाता है निराश होकर। ये तो शहर के पढ़े–लिखे लड़कों का हाल है। गांव का भी यही हाल है। दादा–परदादाओं के सामने जो हमारी जमीन थी वो तो बंध गई। प्रकृति और इतिहास ने जो भी जमीन दी है वो ज्यों की त्यों है। लेकिन हमारी जनसंख्या बढ़ती जाती है। तेज रफ्तार से ना सही, मन्द रफ्तार से बढ़ेगी, तब बढ़ती जाएगी। 1857 में जब अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की पहली लड़ाई लड़ी गयी थी, हिन्दुस्तान की कुल आबादी 18 करोड़ थी। आज हिन्दुस्तान, उस वक्त जिस वक्त पाकिस्तान और बंगलादेश शामिल थे। उनको मिलाकर आबादी होगी आज 85 करोड़ की। आबादी 18 करोड़ से 85 करोड़ और जो क्षेत्रफल था जमीन का जो 1857 में था वो ही है। लिहाजा नतीजा यह है कि किसानों के पास जमीन कम और कम और कमतर होती चली जाती है।

1970–71 में हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट ने एक सेन्सस, एक सर्वे किया था कि कितनी जमीन–कितने किसानों के पास है, कौन–सी फसल उसमें बोते हैं, कितनी सिंचित है और

सिंचित जो है उसके सिंचाई के जरीये क्या है, जैसे ट्यूबवेल है या पुराना कुआं है या नहर है। उस रिपोर्ट के अनुसार, उस सेन्सस के अनुसार 33 फीसदी किसान हमारे यहां ऐसा है, जिसके पास 2 बीघे से कम जमीन है। 2 बीघे नहीं है, 2 बीघे तक है, यानि 2 बीघे से कम 18 फीसदी किसान ऐसे हैं, जिनके पास 2 बीघे से 4 बीघे तक जमीन है। 51 फीसदी हुए, आधे से ज्यादा वो लोग जो किसान कहलाते हैं, वो नाममात्र के किसान हैं। वो उस जमीन में गुजर नहीं कर सकते, चाहे दिन और रात बेचारे मेहनत क्यों ना करें। और 19 फीसदी आदमी हमारे ऐसे हैं, इन काश्तकारों में, इन किसानों में, जिनके पास 4 बीघे से 8 बीघे तक जमीन है।

ये हमारे गांव का हाल है। ये लोग भी बेरोजगार बैठै हैं और गांवों के अन्दर हमारी जो कुल आबादी है, उसके 26 फीसदी खेतिहर मजदूर हैं। अंग्रेजों के जमाने में 17 फीसदी खेतिहर मजदूर थे। स्वराज के 20 साल बाद, 25 साल बाद खेतिहर मजदूरों की तादाद या उनका प्रतिशत 17 से बढ़कर हो गया 26। तो, ये बेरोजगारी का अंदाजा लगाइए आप। 22 करोड़ आदमी आज हमारे यहां काम करने के लायक हैं जिनकी उमर 16 बरस से 59–60 बरस की थी। आबादी हमारी 65 करोड़, लेकिन काम करने वाले हमारे हाथ 22 करोड़ हैं। एक तिहाई से कुछ जरा सी ज्यादा आबादी है।

तो उनमें से कुल 3 फीसदी बड़े कारखानों में लगे हुए हैं। अब आपके सब लोग करीब–करीब पूरी तरह बेरोजगार हैं या अर्ध–बेरोजगार हैं, अन–एम्प्लॉयड हैं या अन्डर–एम्प्लॉयड हैं। ये बेरोजगारी जो बढ़ती चली जा रही है। अब असमानता, आमदनी में गैर–बराबरी, फर्क जो नहीं होना चाहिए, इतना ज्यादा हो गया है। ये मेरी पीढ़ी के लोग, अंग्रेजों के जमाने में तकरीर करते थे गांधी जी के नेतृत्व में। जब हम लोग कांग्रेस में काम करते थे तो हमारे लिए एक दलील ये हुआ करती थी कि बड़े–बड़े सेठ आज अंग्रेजों ने पैदा कर दिए हैं पहले सेठ नहीं थे हमारे देश में। इन सेठों में और गरीबों में, बड़े–बड़े शहर के रहने वालों में और किसानों में जो आमदनी का फर्क है, जब स्वराज मिलेगा तब इसको कम करेंगे।

लेकिन दोस्तों, आपको जानकर अफसोस होगा के जो फर्क पहले था 50–51 में, 77–78 में वो फर्क दुगना हो गया, बजाए कम होने के। अगर 50–51 में सरकारी आंकड़ों के अनुसार एक गांव वाले की या किसान की आमदनी 100 रू0 थी तो गैर किसान की, जो अधिकतर शहर में रहते हैं उनकी आमदनी 178 रूपये थी। मोटे तौर पर मैं कह सकता हूं एक और पौने दो का फर्क था। सन् 76–77 में गांववाले की आमदनी अगर 100 रू0 थी, तो शहरवाले की या दूसरा पेशा करने वाले की आमदनी 346 रू0। अर्थात् मोटा–सा फर्क एक और 3.5 का है। पहले फर्क एक और पौने दो का, आज फर्क है एक और साढ़े तीन का। दुनिया में बराबर सबकी आमदनी हो जाए, नामुमकिन है। कभी नहीं होगी, फर्क रहेगा। लेकिन जिस दौर में, अहद में वो फर्क जितना कम हो जाए, वो गवर्नमेंट उतनी ही अच्छी होगी और जिस गवर्नमेंट के अहद में, जमाने में वो फर्क बढ़ जाए, वो गवर्नमेंट उतनी ही निकम्मी मानी जाएगी। इसके अलावा दोस्तों, अंग्रेज के जमाने में, जैसा मैंने कहा धीरे–धीरे बड़े–बड़े उद्योगपति और कारखानेदार पैदा होते जा रहे थे, तो अब बहुत ज्यादा बड़ी तादाद में बड़े–बड़े उद्योगपति कैपिटलिस्ट पूंजीपति पैदा हो गए हैं। उनकी जायदादें बढ़ रही हैं। दो के नाम आपने, लगभग सभी ने सुने होंगे टाटा और बिरला। टाटा के पास सन् 51 में 116 करोड़

की सम्पत्ति थी। सन् 78 में वो 1100 करोड़ से ज्यादा की हो गई। इससे भी ज्यादा तरक्की की बिरला साहब ने। बिरला की कुल 53 करोड़ की सम्पत्ति थी, अब 19 गुना बढ़कर उनकी भी 1100 करोड़ से ज्यादा की हो गई। ऐसी बड़ी–बड़ी मिसाल है और फलां है, फलां है, फलां है, बहुत हैं जो बड़े–बड़े सेठ बनते जाते हैं। उधर 48 फीसदी आदमी गरीबी की रेखा के नीचे रहता है। तो यह हैं तीन बड़ी समस्याएं – गरीबी, बेरोजगारी और गरीब–अमीर की आमदनी का फर्क और ज्यादा बढ़ते जाना, खाई चौड़े होते जाना।

इसके अलावा चौथी सबसे बड़ी समस्या है, बेईमानी की। जिस देश में महाजन लोग, महाजन माने बड़े आदमी। पुराना संस्कृत का एक श्लोक है कि जिस रास्ते महाजन चलते हैं सब साधारण जन उसी रास्ते चलते हैं। जिनके हाथ में अगर सत्ता है जो गांव के सभापति हैं, म्युनिसिपैल्टी के चेयरमैन हैं या एम0एल0ए0 हैं या एम0पी0 हैं या मिनिस्टर हैं या चीफ मिनिस्टर हैं या प्राईम–मिनिस्टर हैं अगर वो ईमानदार नहीं होंगे, तो वो देश कभी तरक्की करने वाला नहीं हो सकेगा दोस्तों, (तालियां) उनका असर सारे लोगों पर पड़ेगा, सारे बच्चों पर पडेगा, सारे विद्यार्थियों पर, नौजवानों पर पड़ेगा, सारे राज–कर्मचारियों पर पड़ेगा। आजकल की जो नई पीढ़ी है, जो स्कूलों और कालेजों में पढ़ती है, मुझे उनके साथ एक मायने में बड़ी हमदर्दी तो यह है कि जब मैं और मेरी पीढ़ी के लोग स्कूल और कॉलेज में पढ़ते थे, तो हमारे सामने बड़े–बड़े लोगों के आदर्श थे। लोकमान्य तिलक, गोपाल किशन गोखले, महात्मा गांधी, पं0 मालवीया, लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह वगैरह–वगैरह और सन्यासियों में स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्थ, मेरी उमर के लड़के जो स्कूल और कॉलेज में पढ़ते थे उिनके जीवन वृत को हम पढ़ते, उनके लेख जो थे किताबों में, उनको हम पढ़ते। और हमारे सामने आदर्श जो थे वो ऐसे थे, दुनिया के महापुरुषों में जिनकी शुमार थी। तो उसका असर पड़ता हर काम पर। आज कहां हैं आदर्श हमारे लोगों के सामने। जो बच्चे हैं, आज जो स्कूल और कॉलेज में पढ़ रहे हैं वो किसको अपना आइडियल, आदर्श मान कर चलेंगे। दिल्ली में चुनाव में जो नेता हैं, नेताओं के नाम गिनाना नहीं चाहता हूं लेकिन जो पार्टी मैंने बतलाई है एक–एक नेता पर नजर डालकर देखो, नौजवानों किसकी नकल करना चाहोगे। नहीं भाई नहीं, आदर्श। जिस देश के सामने आदर्श न हो और जिस कौम के लड़कों के सामने सपने, अरमान ना हों, देश को बड़ा बनाने के लिए वो देश तरक्की नहीं कर सकता। (तालियां)

ये हैं चार बड़ी समस्याएं। तो लोकदल और कांग्रेस के जो हमारा प्रोग्राम हैं वो कोई नये नहीं हैं, ठीक वो ही हैं जो महात्मा जी ने बतलाये थे। महात्मा यह कहता था कि दूसरे देशों की नकल मत करो। जहां पर जमीन ज्यादा है, लोहा ज्यादा है, कोयला ज्यादा है, तेल ज्यादा है, जनसंख्या कम है, वहां बड़े कारखानें होंगे, बड़े–बड़े फार्म होंगे। अपने देश में जनसंख्या बहुत है। उनके देश से जमीन कम। उनको देखते हुए, उनकी संख्या को देखते हुए, लोहा, कोयला, तेल और, और दूसरे खनिज पदार्थ कम। इसलिए बड़े कारखाने जरूर होंगे पर थोड़े से। उनको ही लगाना होगा जो अनिवार्य हों, जिनके बिना देश का काम ना चलता हो। बाकी जो चीजें छोटे पैमाने पर की जा सकती हों जो चीज छोटे पैमाने पर बनाई जा सकती हों, उसको दस्तकारी के जरिये, हाथ के जरिये, हस्तकला के जरिये बनाइए, छोटी मशीन के जरिये बनाइए। बड़े कारखाने लगेंगे तो बड़े–बड़े पूंजीपति भी बढ़ जाएंगे और लड़के बेरोजगार हो जाएंगे।

तो यही दो बात मुझे कहनी हैं आपसे। महात्मा कहता था कि रियल इंडिया लिब्ज इन दि विलेजिज, नोट इन बाम्बे और देहली। असली भारत गांव में रहता है, खेती करता है। खेत की पैदावार बढ़ेगी, तो गांववाले सुखी होंगे और जब खेत की पैदावार बढ़ेगी, तो दुकानदारों के पास पैसा आएगा, तो उस पैसे से कुछ सामान खरीदेंगे—जूता, कपड़ा, साबुन, साइकिल, घड़ी आदि सीमेंट और लोहा चीजों को बनाने के लिए छोटे—बड़े कारखाने लग जाएंगे, परिवहन बढ़ जाएगा और किसानों के लड़के खेती छोड़—छोड़ कर दूसरे पेशों में जाएंगे। जैसे ही किसानों की तादाद घटेगी और दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़ेगी, देश मालदार होने लगेगा।

लिहाजा महात्मा कहता था कि खेत की पैदावार बढ़ाओ लेकिन किसी ने परवाह नहीं की। मैं आपको बता देना चाहता हूं दोस्तों। जहां मैं खेत की पैदावार बढ़ाने की बात कह रहा हूं, वहीं मैं ये इशारा कर चुका हूं कि जिस मुल्क में किसानों की तादाद बहुत ज्यादा होगी, वो मुल्क गरीब होगा। जिस देश में किसानों के अलावा दूसरे लोगों की तादाद ज्यादा होगी, वो देश मालदार होगा। जब अंग्रेज आए थे अपने मुल्क में 60 आदमी खेती करते थे 100 के पीछे। 25 आदमी दस्तकारियों में लगे हुए थे, छोटे—छोटे कस्बों में और हर गांव में। बड़े कारखाने उस वक्त नहीं थे। आज 60 की बजाए 72 हो गए, खेती और दस्तकारी या उद्योगधन्धों में 25 से घटकर 9 या 10 रह गये। लिहाजा, आंख मीच कर कह सकते हो, बिना ज्यादा मुताल्ला किये या अध्ययन किए कि आज ये मुल्क गरीब है बमुकाबले 200 बरस के, जबकि अंग्रेज हमारे मुल्क में आया था। चाहे लाखों लोगों पर कार हो गई हों, चाहें बड़े—बड़े गगनचुम्बी मकान बन गये हों और चाहे कितने टेलीविजन सेट्स हों और हमारे पास रेडियो हों, फ्रिज हों। लेकिन कुल मिलाकर औसत हिन्दुस्तानी आज गरीब है, बमुकाबले 200 बरस पहले के। क्योंकि किसानों की तादाद बजाए घटने के बढ़ी और गैर किसानी पेशा करने वालों लोगों की तादाद 25 से 10 हो गई।

तो गांधी जी ये कहते थे दूसरा काम ये करना है कि छोटे रोजगार लगाओ। वो एक राजा के दीवान के बेटे थे, मालदार घर में पैदा हुए थे, वैरिस्ट्री पास करके आए थे, चरखा लेकर क्यों बैठे? उनका पेशा तो नहीं था जुलाहे का या बनुकर का। केवल हमको ये सिखाने के लिए कि जब कपड़ा बन सकता है हाथ से, चरखे से और करघों से, तो बड़े कारखानों की जरूरत नहीं। और सबसे बड़ा उद्योग कपड़े का ही है। रोटी के बाद कपड़े की जरूरत है। तो सबसे ज्यादा आदमी आज हमारे यहां कारखानों में या इस उद्योग में लगे हुए हैं, कपड़े के उद्योग में। आज जितने भी मैंने बतलाए शायद अभी भी 58 लाख आदमी लगे हुए हैं बड़े कारखानों में। इनमें 10 लाख आदमी तो कपड़े के ही कारखानों में लगे हुए हैं। 1953 की गवर्नमेंट आफ इंडिया की एक कमेटी की एक टैक्सटाइल कमेटी का भी तर्क ये है कि कारखाने का मजदूर जितना कपड़ा बनाता है, उस कपड़े को बनाने के लिए 12 बुनकर चाहिए करघा चलाने को। 12 करघों पर को कपड़ा पैदा होगा। अगर आज हम ये हुक्म दे दें जैसा कि मेरा इरादा है अगर आप लोगों ने हमको मैजोरिटी दी और मेरे साथी राजी हुए तो मेरा इरादा ये है कि कपड़े के कारखानेदारों को ये हुक्म दिया जाए कि तुम हिन्दुस्तान में अपना कपड़ा नहीं बेचोगे, यहां करघों में बना हुआ कपड़ा बिकेगा और तुम हिन्दुस्तान के बाहर ही कपड़ा बेच सकते हो हिन्दुस्तान के अन्दर नहीं। (तालियां)

मैं जानता हूं तुम बाहर की मन्डियों में मुकाबला नहीं कर सकते। दूसरे देशों के बने हुए कपड़े का। तो तुम्हारे कारखाने चाहे बन्द होजाएं लेकिन हिन्दुस्तान में तुम्हारा कपड़ा नहीं बिक पाएगा। तो इसका क्या नतीजा होगा? बिना किसी पूंजी के बिना किसी तकनीकी ज्ञान के बिन पावर के, बिजली वगैरह के अपने आप करोड़ों लोगों को रोजगार मिल जाएगा। दस की जरब दो 12 में, 10 लाख मजदूर लगे हुए हैं। एक करोड़ 20 लाख मजदूर जो हमारे गांवों में, शहरों में, कस्बों में मारे–मारे फिरते हैं, उनको काम मिल जाए। इस तरह आज दियासलाई बन रही है मशीन से–विमको की, मैं जब वित्त मंत्री था तो मैंने विमको का टैक्स दूना कर दिया और हाथ से जो दियासलाई बनती थी, उसका आधा कर दिया और, और कम कर दिया। आपको सुनकर ताज्जुब होगा देहात के रहने वाले बड़े–बड़े लीडरों ने मेरे पास सिफारिश भेजी कि विमको जो कारखाना है, परदेशियों का, इसका टैक्स नहीं बढ़ाइए आप। टैक्स उन पर यों बढ़ाया था, ताकि हाथ से बनाने वाले लोग मुकाबला कर सकें मशीन से बनाने वालों से, ताकि उनको रोजगार मिले। और लीडरान ने कम्युनिस्ट पार्टी के लीडरान ने, मैं नाम नहीं लेना चाहता, एक जनता पार्टी का चीफ मिनिस्टर था इस सूबे में, अब नहीं है, उसकी चिट्ठी आई और बम्बई में एक जनता पार्टी का एम0पी0 है, वकील है बड़ा भारी है, उसने भी मुझसे कहा विमको की सिफारिश की, मैंने कहा हरगिज–हरगिज नहीं।

जो चीज हाथ से बन सकती है, दियासलाई हाथ से बन सकती है, तो मशीन वाले के, जिस तरह के वैल फयेर में जो अच्छा चलता है, जो उस पर जूता रख देता है सारे (नार) रख देता है किसान और दूसरे को खाली कर देता है। तो मैं सारा नार इस कंधे पर रखूंगा, मशीनगार को लेकिन गरीब आदमी से जो कि मैं हर किसी को हाथ से बनाता है। हरगिज–हरगिज नहीं। (तालियां) ऐसे ही इंदिरा जी ने, मैं चन्द बातें सुना रहा हूं कहानी तो ये लम्बी है। जब वो जा रही थीं उस साल सन् 76 में उन्होंने तीन कारखानेदारों को कालीन बनाने के लिए लाइसेंस दे दिए मशीन से कालीन बनाएं। जबकि हुगली के अन्दर और बिहार के अन्दर कालीन हाथ से बनता है, बढ़िया से बढ़िया और दूसरे देशों में जाता था। तो जब मैं वित्त मंत्री हुआ – अपने बजट में मैंने 30 फीसदी टैक्स लगा दिया था कारखानेदार पर जिन्होंने बनाना शुरू कर दिया था कालीन और जो हाथ से कालीन बना रहे थे, मैंने उनका टैक्स माफ कर दिया था, ताकि वह गरीब मुकाबला कर सके, कारखाने से बने माल का। (तालियां)

तो बेशक हवाई जहाज बनाने के लिए, फौज के लिए, टैंक और तोप (और वो) बारूद बनाने के लिए, बड़े कारखाने चाहिएं। बिजली बनाने के लिए, लोहा बनाने के लिए और देश भर में मीटर बनाने के लिए, जो उनको जरूरत होगी तो बेशक बड़े कारखाने लगाए। लेकिन जो भी चीज छोटे पैमाने पर तैयार हो सकती है, उसके लिए हम कारखाने नहीं लगने देंगे आगे को। हमारे कांग्रेस के दोस्तों ने तो रोटी बनाने के भी कारखानें लगा दिए हैं, आपको सुनकर ताज्जुब होगा। आदमियों को तीन ही चीजों की जरूरत है– रोटी, कपड़ा और मकान। पर गवर्नमेंट की बेकरी भी लग गई बम्बई में, कानपुर में तो मुझे मालूम है। पहले छोटे–छोटे दुकानदार अपना आटा खरीदा और आप के लिए केक–वेक, नमक जाने क्या–क्या लगा दिया, देश को तो डबलरोटी बना दिया आपने। आपने आटा दिया आप ही बना लीजिए लाखों छोटे–छोटे पैमाने पर, लोगों को आजादी के साथ रोजगार करने का मौका मिलता था। लेकिन गवर्नमेंट ने कारखाने लगा दिए। रोटी बनाने के कारखाने और वो लाखों आदमी बेरोजगार हो

गए हैं, उनका कौन जिम्मेदार है? दोस्तों और सुनकर आपको तकलीफ होगी, ब्रिटेनिया बिस्कुट, अंग्रेजों का एक कारखाना है, बिस्कुट बनाने में लगा हुआ। क्यों? हमारे लोग बिस्कुट नहीं बना सकते। पूछो इन लोगों से, इंदिरा जी के साथियों से पूछो, इनके अनुयाइयों से पूछो। यही नहीं, मकान बनाने का भी कारखाना लग गया है, आपको पता नहीं। सुलतानपुर एक गांव है देहली के पास प्रीफैब्रीकेटिंग हाउसिंग फैक्ट्री, बना बनाया मकान बनाने का कारखाना। मैंने अभी हुकुम दिया है कि यह कारखाना बन्द हो जाएगा, क्यों? क्या हमारे कारीगर नहीं हैं। मकान बनाने के लिए, राज नहीं हैं क्या ? ईंट काटने वाले क्या हमारे यहां लोग नहीं हैं। क्या ईंटों को ढोने वाले हमारे यहां मजदूर नहीं हैं, अपने बैलों की गाड़ियों को लेकर ढो सकते थे इनको, क्या हमारे बढ़ई नहीं हैं, लुहार नहीं हैं जो इन मकानों को बना सकें, फिर क्यों बनाया ? क्यों बनाया तो ये ख्याल हो गया है, खब्त हो गया है कि मशीन से काम किया जाए। तो फिर मशीन कैसे चलेगी। हाथ से काम लिया जाए, मशीनें बन्द कर दी जाएं।

महात्मा ये कहता था कि ये बात अमेरिका और आस्ट्रेलिया में ठीक हो सकती है लेकिन जहां हाथ खाली पड़े हैं, वहां मशीन से काम करो, ताकि और हाथ खाली हो जाएं, इससे बड़ा, और खराब काम कोई गौरमेंट अपनी जनता के लिए कर नहीं सकती है। (तालियां) हमारे पुरखों ने, हमारे कारीगरों ने 300 बरस पहले ताजमहल जैसा मकान दुनिया में बना दिया लेकिन हमारे कांग्रेस राज में रहने के लिए कोठियां जो हैं, वो मशीन से बनाई गई हैं। विचार करो। लोग बेरोजगार होते जी रहे हैं। एक तरफ बेरोजगारी बढ़ाते जा रहे हैं, दूसरी तरफ बेरोजगारी को रो रहे हैं। आज चारों तरफ हिंसा का जो वातावतरण है और जो कानून तोड़ने की हवा पैदा हो गई है देश में, वो बारतर इन बेरोजगार लड़कों की वजह से हो रही है, जो मारे–मारे फिरते हैं, बड़े कारखानों की वजह से। इम्प्रूवमेंट्स हों, चरण सिंह, हमसे कहते हैं, लोग लिखते हैं अखबार वाले कि चरण सिंह पुराने जमाने का आदमी है, ये जाहिल है, ये मुल्क को पीछे ले जाना चाहता है। नहीं– मैं पीछे नहीं ले जाना चाहता, मैं लड़कों की बेरोजगारी को मिटाना चाहता हूं। मैं केवल वो ही बात कह रहा हूं जो महात्मा गांधी ने कहीं और महात्मा गांधी ने जो कहा था वो धीरे–धीरे दुनिया उसको मान रही है और सन् 2000 में नहीं, 2050 में भी गांधी जी को लोग याद करेंगे, उनकी नीतियों पर अमल करेंगे। (तालियां)

इम्प्रूव्ड टैक्नोलोजी सौफिस्टिकेटिड टैक्नोलोजी ओटोनेशन वगैरह–वगैरह, स्वचालित मशीनें अगर चलें तो ठीक है, एक हजार आदमी काम कर रहे हैं, बहुत बड़ी टैक्नोलोजी या तकनीकी ज्ञान से उसी काम को 10 आदमी कर देंगे लेकिन 990 बेकार हो जायेंगे। ये हमारा हाल है। मैं छोटे से किसान के घर पैदा हुआ हूं, किसान के, जिसके घर में छप्पर था, कच्ची दीवारें थी। 5 साल का था, तो मुझे मालूम है, मैं जानता था कि गरीबी के क्या मायने होते हैं। मैंने वो, मेरे जो संस्कार हैं उसमें वही गरीबी की बात है। तो, मैं गांव की बात कर रहा हूं इसलिए कि गांव में पैदा हुआ हूं, गरीबी की बात, उनकी तकलीफों को जनता हूं, इसलिए कहता हूं। हमारे लीडर, बहुत बड़े–बड़े मैं किसी का नाम नहीं लेना चाहता, बहुत नेक, बहुत काबिल, बहुत कुरबानी करने वाले। दोस्तों ये बड़ी सेवा है, हमारे लीडरों ने बड़ी सेवा की है। ये अब देश को उठाना चाहते थे। लेकिन देश गांव में रहता था, वो महलों के अन्दर पैदा हुए थे, गांव के लोगों की तकलीफों को जानते नहीं थे। इसलिए महात्मा की नीति छोड़कर दूसरी

नीति बदली गई और लोकतंत्र आ गया। (तालियां) मैं फिर गांधी जी की नीतियों का पुनरूद्धार करना चाहता हूं और मेरी पार्टी मेरे साथ है।

दोस्तों, यही अब एक ही बात। बेईमानी वगैरह की उसमें क्या है। गांधी जी ने उस वक्त थोड़ा ही कहा था कि रिश्वत बढ़ोत्तरी थी, उसका अपना उदाहरण सबके सामने मौजूद था, उसकी बात का, उसके चरित्र का, उसके मूल्यों का, नैतिक स्तर का।

पढ़े–लिखे लोग यहां बैठे होंगे, जब सन् 44 में दूसरा विश्व युद्ध हुआ। इटली हार गया सबसे पहले। ब्रिटिश फौजों ने कब्जा किया, हिन्दुस्तान की फौज भी वहां गई। लड़ाई खत्म होने के बाद बहुत से हिन्दुस्तानी उस फौज के मेम्बर थे, जो वापिस आए। मेरे जिले के बहुत से लोग फौज में दाखिल हुए, मेरे खानदान के लोग भी फौज में थे। तो, उनमें से कुछ ने मुझे बतलाया कि चौधरी साहब जब हम इटली में गए, इटली में कब्जा रहा अंग्रेजों का और हमारा देश अब तक जब तक के वो लड़ाई पूरी तरह खत्म न हो गई, गुलाम रहा। तो जिस घर में भी हम गए अन्दर, चाहे शहर के अन्दर चाहे गांव के अन्दर, हमने महात्मा गांधी की फोटो को लगा हुआ पाया। (तालियां)

गरीब देश का लीडर, आजाद देश के घरों में उसकी तस्वीर लगी हुई थी। दुनिया ये समझती थी कि जिस मुल्क ने गरीबी के जमाने में ऐसा नेता पैदा किया है, वो आजाद होने के बाद देश को, दुनिया को, फिर दूसरा कोई संदेश देगा, जैसे कि हमारे पुरखों ने अतीत काल में दिए थे। देखो सब अपना–अपना है। तो मैं इस बिना पर, आपसे कहता हूं, अपने प्रोग्राम के बेसिस पर कहता हूं कि देश का भला इसमें होगा कि आप, लोकदल और कांग्रेस गठबन्धन के जो कैंडीडेट हों, उनको वोट दो। एक बात और कहकर अपनी बात खत्म करना चाहता हूं। मैं सूरज छिपने से पहले इंदौर जाना चाहता हूं, क्योंकि हेलीकॉप्टर उसके बाद उतरेगा नहीं।

महात्मा ये कहता था हमारी सारी संस्कृति का ही ये उपदेश है कि आदमी के जीवन के दो हिस्से नहीं होते कि एक पब्लिक, एक प्राइवेट। नहीं। उसमें कम्पार्टमेंट नहीं होते। आदमी का जीवन एक ही है। जो प्राइवेट जीवन है, वो ही पब्लिक जीवन है। अगर कोई व्यक्ति अपनी साथिन के साथ, अपनी धर्मपत्नी के प्रति वफादार नहीं है, अगर वो पब्लिक का लीडर हो गया तो, सौन्दर्य में फंसकर देश को बर्बाद कर सकता है, दोस्तों। (तालियां) अगर कोई आदमी अपने प्राइवेट जीवन में ईमानदार नहीं है, हाथ का सच्चा नहीं है तो बड़ा होकर भी उससे उम्मीद नहीं की जा सकती कि वो ईमानदार होगा और पब्लिक को नहीं लूटेगा।

पार्टी टूटी, इसलिए, जनता पार्टी मैं ही बनाना चाहता था, मैंने ही सबसे ज्यादा कोशिश की, कोई तैयार नहीं था। ये तो जब जेलखाने में डाल दिए इंदिरा ने, तब जाकर तैयार हुए हैं जनसंघ के लोग, सोशलिस्ट पार्टी के लोग और कांग्रेस संगठन वाले लोग। उसके बाद हमने लीडर बना दिया मोरारजी भाई को, क्योंकि वो मन–मानुस में मुझसे बड़े थे। चुनाव में ये तय हुआ कि दक्षिण प्रदेश से ये श्रीमान् मोरारजी देसाई का जो सम्पर्क है, वो बड़े लोगों तक है, गरीबों से कोई उनका वास्ता नहीं है। नतीजा ये हुआ कि दक्षिण में गुजरात से 15 सीट लाये, 20 या 29 लाये 48 में से महाराष्ट्र में, केरल की एक सीट मिली है उनके कहने से। तमिल में एक, कर्नाटक में एक, आन्ध्र प्रदेश में एक और जो इलाका मेरे सुपुर्द था, वहां कलकत्ते तक कांग्रेस का सफाया हो गया था, दोस्तों। उसका सफाया हो गया था। (तालियां) फिर इलैक्शन पूरी तरह हुआ भी नहीं था। 20–22 को आखिरी पोलिंग डेट थी और मेरा इलेक्शन था, मैं

जाना चाहता था पोलिंग पर, लेकिन मैं काम करते–करते थक गया था, बीमार हो गया था, मुझे अस्पताल में जाना पड़ा। तो 23 मार्च को मेरे पास अटल बिहारी वाजपेयी आते हैं और कांग्रेस सोसलिस्ट पार्टी के लीडर आते हैं एम0जी0 गोरे कि चौधरी साहब हम चाहते हैं कि जगजीवन राम को प्राईम–मिनिस्टर बनाया जाए, मैंने कहा क्यों? मैं और तो कोई बात नहीं कहना चाहता हूं। उनके जो प्राइवेट जीवन की बात है मैं कुछ नहीं कहना चाहता हूं। लेकिन मैं ये पूछना चाहता हूं कि क्या उन्होंने इमरजेंसी लागू किये जाने का प्रस्ताव नहीं किया था, वो हमारी इंदिरा को खुश करने के लिए, उसका ईनाम देने जा रहे हो क्या आप। (तालियां)

वो तब आए, जब देखा कि उनसे इंदिरा नाराज है, उनका विश्वास नहीं करती है। जब हमारी 30 जनवरी को बड़ी–बड़ी मीटिंग दिल्ली में हो चुकी थी। जब हमने इलेक्शन कैम्पेन का उद्घाटन कर दिया। पहले वो आने को तैयार नहीं थे, डरते थे कि पता नहीं यहां क्या है? जब देखा कि जनता जाग चुकी है, जनता पार्टी के साथ आ रही है, तो श्री बहुगुणा और श्री जगजीवन राम आए। मैंने इन दोनों से कहा– स्वागत, लेकिन जनता से माफी मांगो, जो आप लोगों ने पाप किये हैं। आपने आर्डीनेंस पेश किया, जबकि आप गृहमंत्री नहीं थे, आपके लिए लाजमी नहीं था। बहुगुणा ने 32 हजार आदमी जेल के अन्दर डाले, जबकि हिसाब ये यू0पी0 में केवल 16 हजार आदमी जेल में आने चाहिए थे। एक लाख 2 हजार आदमी जेल में डाले गए। यू0पी0 की आबादी 16 फीसदी है, तो 16 फीसदी सवा 16 हजार आदमी होने चाहिए। लेकिन बड़ा जोश उफनाया। 32 हजार जेल में डाले, तो मैंने कहा कि जनता से यह कहो कि हमसे गलती हुई है, हमसे पाप हुआ है, हम माफी चाहते हैं। और सीधे जनता पार्टी में आयें, अपनी अलग पार्टी न बनाएं।

लेकिन नहीं माने और सिर्फ उन सीटों पर वो जीत कर आए हैं, जिन्हें मैंने छोड़ दिया था, उनके लिए। किसी एक पर और जीत के दिखाओ। दो सीटों पर नहीं माने, अपना कैंडीडेट खड़ा कर दिया था, तीन लड़े– एक हमारा जनता दल, एक कांग्रेस का, एक सी0एफ0डी0, इन्होंने नाम रखा दोनों–दोनों का। और अगर ये हमारे टिकिट पे ना खड़े होते, तो दोनों की जमानत जब्त होती, बहुगुणा की भी और जगजीवन राम की भी। मैंने कहा कि मैं ऐसे आदमी को मानने के लिए तैयार नहीं हूं प्राईम–मिनिस्टर। मैं इनके मुकाबले में मोरारजी को पसन्द करूंगा। मेरे से उमर में 7 साल बड़े हैं और 19 महीने जेलखाना काटा है, अगरचे इसे मैं जानता हूं कि गरीबों के प्रति उनमें वह मुहब्बत, वो निगाह नहीं है, जो बड़े– मालदार लोगों के प्रति है, तो मेरे उनके विचार मिलेंगे नहीं लेकिन जब दो में से मुझको चूज करना है, तो मेरी राय में जो लैसर–इविल है, उसको पसन्द करूंगा। मैंने चिट्ठी लिखी जयप्रकाश नारायण जी को कि मैं चाहता हूं मोरारजी को। मेरे और जगजीवन के साथ वोट पड़ेंगे, इसलिए वहां पर चुनेंगे कि प्राइम–मिनिस्टर कौन है? प्राइम–मिनिस्टर होते ही दिमाग खराब। हां, ठीक। मालिक हो गए। केबिनेट बनाई, बिना हमसे मशविरा लिए हुए, तीसरे नम्बर की जो पार्टी थी, जनसंघ के भी बराबर नहीं आती थी। मैं ईमानदारी से इस पार्टी को गांधी जी के उसूलों पर चलने वाली बनाना चाहता हूं। अगर मेरे मन में ये पाप होता कि जनसंघ के लोगों को टिकट न दो। नहीं। जो कुछ आकरे–ठाकरे या कौन साहब हैं, उन्होंने जिसको कहा, आंख मीचकर टिकट दे दिया। आज वो समझते हैं हम मालिक हैं। मध्य प्रदेश में बड़ा भारी हमारा असर है और असर को साबित करना चाहते हैं, दूसरे लोगों की सभाओं में विघ्न डालकर।

खैर, जो कुछ भी हो, हमारे जनसंघ के 80–80 मेम्बर थे और मोरारजी भाई की पार्टी के केवल 52 थे लेकिन हमको 3–3, 4–4 सीट दिए अपनी 6 और प्राइम मिनिस्टरशिप जगजीवन राम ने ये बयान दिया कि चरण सिंह हरिजनों का विद्रोही है। विद्रोही है, दुश्मन है, क्यों, क्योंकि मैं बाधक हो गया हूं उनके प्राइम मिनिस्टर बनने में। बात बहुत सी हैं, छोड़े देता हूं। सन् 77, 23 दिसम्बर को मेरे जनमदिन के दिन राजनारायण ने, मेरे दोस्तों ने तय किया कि हम किसानों को बुलाएंगे, गांव–वालों को बुलाएंगे। गांववाले वहां मुझको जानते हैं 23 साल से, 24 साल से, मेरा इलाका वो ही रहा काम करने का बल्कि सन् 37 से लेकर अब तक एम0एल0ए0 रहा हूं बराबर अपने इलाके से और मेरी नीति जो जमींदारी खत्म करने की बाबत थी और जो मेरे विचार थे, उनको पूरी तरह वह जानते थे। मैंने कहा था दिल्ली वाले लोग नाराज हो जायंगे, ना मनाओ। दिल्ली वाले समझेंगे कि चरण सिंह केवल गांव की बात करता है, केवल किसानों का नुमाइंदा है। अगरचे मेरा विश्वास था और है और आपको शायद थोड़ा–सा समझा चुका हूं कि किसानों की जब तक खेती की पैदावार नहीं बढ़ेगी, तब तक ना तिजारत बढ़ेगी ना और धन्धे बढ़ेंगे ना ट्रांसपोर्ट बढ़ेगा ना देश की तरक्की होगी। गैर मुनासिब पेशा, खेती के अलावा दूसरा पेशा करने वालों के हितों में और किसानों के हितों में विरोध नहीं है बल्कि शहरवालों की ओर खेती ना करने वाले दूसरे पेशे के लोगों की खुशहाली छिपी हुई है, किसानों की खुशहाली में दोस्तो। जब ये खुशहाल होंगे, तभी शहर के लोग खुशहाल होंगे।

लेकिन मैंने कहा कि दिल्ली के लोग ये बात जानते नहीं, यू0पी0 के हर शहर के आदमी को समझा चुका हूं, खूब। तो ना करो, नहीं माने। 20–25 लाख आदमी आ गए। बस, मोरारजी के दिल पर सांप लोट गया, ईर्ष्या का दोस्तों। ये भी नहीं हुआ, उनके बराबर बैठता था कि मुझे शुभकामना दे देते कि चरण सिंह तुम्हारी उमर लम्बी होगी, पर मैं चाहता हूं परमात्मा से, तुम 25 बरस और जीओ। नो। ऐसा छोटा आदमी है। फिर एक मेरे से गलती और हो गई। 15 जनवरी को भाव नगर, जो कि जिले का हेडक्वाटर है गुजरात में, उसमें जनता पार्टी की तरफ से मीटिंग हुई डिस्ट्रिक्ट की, जनता पार्टी का जो प्रेजिडेंट था वो अध्यक्ष था, उसके सामने इन्होंने बयान दिया, जो 15 या 16 तारीख के हिन्दुस्तान के सब अखबार में छपा, छपा कि मेरे बेटे के खिलाफ बहुत से अखबारों में इल्जाम छपे हैं रिश्वत के। मैं इस बात के लिए तैयार हूं कि तीन निष्पक्ष आदमियों की कमेटी बन जाए, जॉच कर ले, जो सब झूठे हैं इल्जाम। कौन से बाप बेटे अब क्या ख्याल है। चुप हो गए। दो महीने तक जिक्र नहीं। तो 11 मार्च को मैंने चिट्ठी लिखी कि महाराज आप ये कहकर आए थे कि कमीशन बैठायेंगे, मैं नहीं जानता क्या आरोप हैं। मैंने पढ़े नहीं हैं। हो सकता है सब गलत हों।

लेकिन सार्वजनिक काम करने वाले के लिए, लीडर के लिए, इतना ही काफी नहीं है कि वो ईमानदार हो, बल्कि जनता का विश्वास हो, कि ये ईमानदार हैं। (तालियां)

रामचन्द्र ने जानकी माता को क्यों निकाल दिया, ये मिसाल हमारे सामने मौजूद है। तो मुझको क्या चिट्ठी लिखते हैं कि इल्जाम तो लगते ही रहते हैं, सब सच्चे नहीं होते हैं, झूठे होते हैं। मेरे पास तो तुम्हारी धरमपत्नी की भी शिकायत आई है। मैंने जवाब लिखा कि ठीक है, आप कांति देसाई के खिलाफ बाद में बिठाना कमीशन, पहले कमीशन मेरे घरवालों पर, मुझ पर बिठा दो, मैं इसके लिए तैयार हूं। (तालियां) कोई जवाब नहीं था। नहीं– नहीं मेरा ये मतलब नहीं हैं।

दोस्तों, मुझे अपनी बात, बात नहीं कहनी चाहिए लेकिन आपको बताये देता हूं क्योंकि जिक्र आ गया है, मेरा जीवन एक खुली किताब है प्राइवेट जीवन भी और पब्लिक जीवन जो चाहे आए, उसे पढ़ ले सूक्ष्म दृष्टि से। (तालियां) बस, नाराज हो गए। मैं बीमार पड़ा हुआ था, अस्तपाल से निकल कर सूरजकुंड पर था लेकिन डा0 जो मेरा ईलाज करता था इंडियन मेडीकल इंस्टीट्यूट आफ साईंसिस में, उस समय मुझको एक डॉक्टर और नर्स 24 घण्टे अटेंड करते थे। (जनसमूह का शोर) तो आप अपने लीडरों से यही सीखकर आये हो, यही सीखा है, तो ये सब नहीं चलने वाला तुम लोगों के जरिये। हरगिज नहीं चला सकते। अगर सभ्य लोग हो, पढ़े–लिखे घरों के लोग हो, चाहते हो पंचायती राज कायम हो तो खामोशी से, जैसे अब तक सुनते रहे हो, सुनो। नहीं सुनना चाहते हो, तो जा सकते हो। लेकिन ये शरीफ आदमियों का काम नहीं है कि मीटिंग में विघ्न डालें, बतलाए देता हूं। (शोर)

मैं आप लोगों से बताना चाहता हूं दोस्तों, इंदिरा तो डिक्टेटर बनना चाहती है लेकिन वह भी एक इंसान है, वो आज नहीं कल, कल नहीं परसों, नहीं रहेंगी, क्योंकि कोई आदमी रहा नहीं है। लेकिन ये जनसंघ एक संगठन है, जो डिक्टेटर चाहता है, बनना चाहता है, ये ज्यादा है। दुश्मन साबित होगा मुल्क के लिए, घातक साबित होगा बल्कि कांग्रेस को मैं बतलाना चाहता हूं। (तालियां) (शोर) इनको लज्जा नहीं आती है इस बात से, ये बच्चे वो हैं, जिनको मैं घण्टों–घण्टों और महीनों पढ़ा सकता हूं और इनको बातें बतला सकता हूं। लेकिन खड़े होकर एकदम संगठित होकर शोर मचाना चाहते हैं, मीटिंग में बिघ्न डालने के लिए और ये बात इनको समझ लेनी चाहिए, ठीक है, तुम घर में शोर मचा सकते हो। मैंने अपने साथियों से कहा नहीं है, अगर 5–7 गांव के लड़कों को ले आते लाठी–वाठी लेकर, तो ये शोर आप यहां भी नहीं कर सकते थे और दूसरे सूबों में तुम्हारी मीटिंग भी नहीं हो सकेगी। मेरे साथी नहीं होने देंगे, मेरे मर्जी के खिलाफ भी (शोर) अगर तुम यहां मीटिंग में इस तरह से विघ्न डालोगे। क्या मतलब हुआ। हर आदमी को अपनी राय रखने का हक है। अगर आप सुनना चाहते हैं, तो फिर खामोशी से सुनिए।

तो मैं आपसे कह ये रहा था कि मैं जब बीमार था, तो मुझसे इस्तीफा मांगा एक बिल्कुल गलत आरोप पर, उसकी तफसील में नहीं जाना चाहता। एक तरफ तो मैंने अपनी बीमारी में इस शख्स को प्राइम–मिनिस्टर बनाया, दूसरी तरफ इतना उदार चेता प्राईम–मिनिस्टर मैंने बना दिया, मुझसे गलती हो गई। क्योंकि उसने मेरी बीमारी में मुझसे इस्तीफा मांगा। फिर हमारे तीनों साथियों को निकाला, तीन चीफ मिनिस्टर थे एक कर्पूरी ठाकुर, वो नाई के घर पैदा हुआ। उससे बड़ा त्यागी आदमी कम–से–कम वहां बिहार में नहीं है, वो हमारा चीफ मिनिस्टर था। उसका बाप आज भी नाई का काम करता है गांव में, इससे अंदाजा लगा सकते हो, उसके चरित्र का। (तालियां) लेकिन क्योंकि बी0एल0डी0 का था, उसको हटाया गया। जनसंघ के लोगों का और मोरारजी का ये फैसला हुआ कि चरण सिंह खतरनाक आदमी है, यह प्रभावशाली आदमी है, इसको निकालो। रामनरेश यादव एक गरीब घर में पैदा हुआ, यू0पी0 का हमारा चीफ मिनिस्टर था, उसको निकाला। देवी लाल को निकाला, राजनारायण को निकाला। राज नारायण बेशक संयम से बाहर कभी–कभी भाषण देते थे। आपने पढ़ा होगा अखबारों में, मैं उनकी इस बात को पसन्द नहीं करता था। लेकिन चलो, आपने निकाला, मैंने उसको कन्डम नहीं किया, आपके निकालने का एक्शन। लेकिन आपने

ईमानदारी और उसके पीछे मेरिट से, नहीं निकाला, क्योंकि अगर आपने राजनारायण जी को निकाला, तो 3 महीने पहले 100 आदमी जनसंघ के लखनऊ की एसेम्बली में अपने चीफ मिनिस्टर के खिलाफ खुली वोट दे सकते थे, उनके खिलाफ आपने कोई कार्यवाही नहीं की? मेरे साथी 21 जून को इकट्ठे हुए और कहा, चौधरी साहब, क्या चलेगा इस देश में। मैंने कहा जिस पार्टी को बनाने में मेरा और तुम्हारा सबसे बड़ा हाथ है, उसको तोड़ने में मुझको तकलीफ होगी। मेरे पास तो कोई समाधान नहीं सूझता है। फिर मेरे सुपुर्द भी कर दिया वो। राजनारायण जी ने 23 जून को पार्टी छोड़ दी। उनको कमेटी से निकाला था। मैंने बहुत समझाया। उन्होंने कहा कि नहीं, आप मुझे इजाजत दे दीजिएगा। दो दफे मैंने मना किया, नहीं माने, तीसरी बार बाग्रह किया तो मैंने कहा कि अच्छा चले जाओ।

26 जून को पत्रकार सम्मेलन में एक पत्रकार सवाल पूछता है उनसे कि राजनारायण जी आपकी पार्टी को छोड़ के चले गए हैं अगर पुराने लोकदल के लोग सब छोड़ के चले गए या और ज्यादा छोड़ के चले गए तब क्या होगा? तब उन्होंने कहा के गौरमेंट और मजबूत हो जाएगी, अगर सब चले जाएंगे। अभी एक साल पहले तो आप ये दल–बदलने वाले हैं, दल बदलने वाले हैं। नहीं। पहली बात तो यह है ऐन्टी डिफैक्शन बिल जो गौरमेंट की तरफ से मंजूर हुआ, जनता पार्टी की तरफ से और जनता की गौरमेंट की तरफ से और जिसका मैं भी मेम्बर था, होम मिनिस्टर होने के नाते। मैं चेयरमैन था उस कमेटी का, उसमें तय किया कि चौथाई से ज्यादा आदमी अगर छोड़ें और दूसरी किसी पार्टी में चले जाएं, ये नहीं कि नई पार्टी बना लें, तो वो डिफैक्शन है। लेकिन अगर चौथाई से ज्यादा छोड़ेंगे तो डिफैक्शन नहीं है। वो इस्पिलिट है, पार्टी की फूट है। 299 में से हमने 97 आदमियों ने छोड़ी थी पार्टी, जो तिहाई नम्बर था जिनका। कैसा दल–बदल है। नहीं। फिर दल बदलने के मायने एक दल से दूसरा दल नहीं। हमारा वो ही प्रोग्राम है, भारतीय लोकदल को हमने पुनः जीवित किया। हमारा नक्शा था एक पार्टी बनाने का। लेकिन जनसंघ के लोग और मोरारजी भाई जैसे छोटी तबीयत के लोग उसके लायक नहीं थे, बनना नहीं चाहते थे। इसलिए हमको मजबूर किया, कोई रास्ता नहीं छोड़ा। उनका ख्याल ये था के भारतीय लोकदल के अगर सारे लोग भी चले जाएं तो उनकी पार्टी मजबूत होगी और पार्टी मजबूत हो गई।

कहां तक बर्दाश्त किया था। जिन लोगों ने पार्टी बनाई, सबसे ज्यादा कुर्बानी दी, सबसे ज्यादा कोशिश की, जिनका सबसे ज्यादा इनफ्लूयेंस था प्रजेंट थिंक में, उनको सबको एक'–एक को चुन कर निकाल दिया। दोस्तों, खैर अब आपको, तो एक हैं हमारे जगजीवन राम जी। उन्होंने क्या कहना शुरू किया कि प्रेजीडेंट ने मुझको यों नहीं बुलाया कि मैं हरिजन हूं, मैं चमार हूं, बहुत जोर के रहे आप। अरे 298 मेरी राय आई थी, 234 आई थी उनकी मोरारजी की, जो आपके लीडर थे। ये हमको बताया इसलिए उन्होंने मुझे वोट दिला दिए। तो यूं नहीं बुलाया कि चमार थे। क्यों महाराज जब मोरारजी ने इस्तीफा दिया था, उसी वक्त आपको कह सकते थे मजबूर था, राष्ट्रपति नियम के कानून के अनुसार और रवायतों के अनुसार कंजंक्शन्स के अनुसार कि इलैक्शन करा दो। इस्तीफा दिया और मोरारजी अगर कहते कि मैं चाहता हूं कि इलैक्शन हो, जनता की फिर राय जाए तो उनको करना पड़ता। लेकिन, नहीं। हिम्मत कहां थी। जब मैंने इन्हें चुन के खड़ा किया तो हर पार्टी ने इस नेता का स्वागत किया, सिवाये जनता पार्टी के। होंगे साहब आप हरिजन या गरीब घर में पैदा हुए। बेशक गरीब घर में पैदा हुए थे लेकिन आज आप हिन्दुस्तान के सबसे इने–गिने मालदार

लोगों में हैं आप। क्या कहते हो, गरीब की बातें करते हो? महल आपके बने हुए हैं। ये हैं, इनसे सीखोगे बच्चों और नाम नहीं लेना चाहता हूं। जो पार्टी बड़ी हिन्दू संस्कृति की बात करती है, उसके बड़े लीडर का क्या हाल है, सबसे बड़े लीडर का। लज्जा की बात है। कहना नहीं चाहता हूं। मुफलिस दोस्तों, कभी–कभी मुझको इतनी तकलीफ होती है आपको यकीन नहीं आएगा, जो मुझको जानते नहीं हो कि मैं कभी–कभी भागने की बात सोचता हूं यहां से। लेकिन, मुझ पे जो जिम्मेदारी है, जो देश का हाल हो चुका है, मैं जानता हूं कि अगर मैंने इस्तीफा दिया, तब भी नुक्ताचीनी होगी। आज ये देश को बचाने की बात नहीं है कि डूबने जा रहा है। ये आलरेडी डूब चुका है। इसको सालवेज करना है। इसको निकालना है। इतना इच्छा हमारा प्यारा मुल्क था, बड़ा मुल्क था, दुनिया का शरोमणी था किसी समय में।

इन शब्दों के साथ मैं आपसे अपील करता हूं आखिरी, कि महात्मा गांधी के प्रोग्राम पर और ईमानदार लोगों को राय दो, अगर हमारे लोकदल और कांग्रेस के काम्बीनेशन से बेईमान आदमी खड़ा हो जाए तो उसको राय हरगिज–हरगिज मत देना दोस्तों। बिल्कुल मत देना, मुझे कोई शिकायत नहीं होगी। (तालियां)

मुझे या मेरे साथियों को, किसी को 10 साल देना, किसी को 20 देना, किसी को 4 साल देना। मुल्क हमेशा रहेगा आपका और कामयाब तभी होगा जब ईमानदार उसके लीडर बनेंगे। इन शब्दों के साथ मैं गरीब लोगों से अपील करूंगा इन किसानों से अपील करूंगा, मजदूरों से अपील करूंगा, बेरोजगार लड़कों से अपील करूंगा कि उठो, जागो और अपनी ताकत को पहचानों। तुम्हारी ही वोट ज्यादा है। तुम्हें जाकर दिल्ली में और भोपाल में लोग भूल जाते हैं, वोटों के वक्त तुमको याद करते है। मैं ये कहता हूं कि अपनी ताकत को पहचानो, अब बहुत दिन तुमको सोते हो गए। ये हिन्दुस्तान तुम्हारा है बड़े–बड़े लोगों का नहीं है, ये कैपेटलिस्टों का नहीं है या उन लोगों का नहीं है जो कैपेटलिस्टों से रुपया लेकर इलैक्शन लड़ते हैं, उनका नहीं है ये। ये तुम्हारा है, छोटे आदमियों का है, गरीबों का है, क्योंकि तुम्हारी संख्या सबसे ज्यादा है। इन शब्दों के साथ मैं अपना कथन समाप्त करता हूं। किसी को तकलीफ हुई हो, तो माफी चाहता हूं मैं।

मैं नारे लगाऊंगा तीन, मेरे साथ नारे लगा लीजिए फिर मुझे जाने की इजाजत दीजिए। भारतमाता की –जय, माहत्मा गांधी की जय, लोकदल–कांग्रेस की जय।

————————————————

दिनांक 11 नवम्बर, 1979 को झाबुआ, इन्दौर, मध्य प्रदेश में प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण

————————————————————

माननीय सभापति जी, बहनों और भाइयों।

आज ये मेरा पहला अवसर है, आपके जिले में आने का, मामा बालेश्वर प्रसाद जी के जरिये और भंवरजी के जरिये मुझे यहां का कुछ हाल तो पहले से मालूम था लेकिन मुझे स्वयं अपनी आंखें से देखने का आपके इस इलाके को, पहले सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था। अब आज जब इस मौके पर आया हूं, तो देश की हालत निहायत खराब है। हर तरीके से खराब है। अब आगे इलेक्शन होने वाला है, देश की बड़ी पंचायत का, जिसको लोकसभा कहते हैं और जनवरी में जिसके लिए वोट पड़ने वाली है।

तो, आया तो मैं उस वोट के सिलसिले में कि आप लोकदल के उम्मीदवार को वोट दें, यानी भंवरजी को वोट दें। लेकिन ये तो एक मामूली–सी बात है, असल में, मैं देश की समस्याओं को थोड़ा–सा आपको समझाना चाहता हूं।

समस्याएं बहुत गम्भीर हो चुकी हैं। अंग्रेजों के जमाने में जब नयी पीढ़ी के लोग महात्माजी के नेतृत्व में थोड़ा–बहुत काम देश की सेवा का करते थे, तो हम तरह–तरह के सपने अपने देश के लिए देखा करते थे। हम यह सोचा करते थे कि अंग्रेजों के जाने के बाद हम इसको ऐश्वर्यशाली, मालदार, धनवान और शक्तिशाली बना देंगे और फिर इसकी इज्जत और गौरव दुनिया में बढ़ जाएगा, जितना कि पहले किसी जमाने में हजारों बरस पूर्व था।

लेकिन, अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि हमारे वो सारे सपने भंग हो गये। हमारे सारे अरमान खतम हो गये। आज दुनिया में भारतवर्ष सबसे ज्यादा गरीब देश है, लगभग सबसे ज्यादा गरीब। दुनिया के 125 मुल्कों में जिनकी आबादी, जिनकी जनसंख्या दस लाख से ज्यादा है, उनमें आज हमारा नम्बर 111वां है, 110 देश हमसे मालदार हैं और 14 देश हमसे गरीब हैं। छोटे–छोटे देश और गरीब हैं। छोटे–छोटे देश, और गरीब हैं बहुत। चलो इसमें इतनी बात दिखलाई। लेकिन हम अगर ऐसी नीति अपनाते कि इसकी गरीबी मिटे, तो गरीबी मिट जाती। लेकिन ज्यादा अफसोस की बात यह है जैसे समय बीतता जा रहा है, अपना देश और गरीब और गरीब, गरीब से गरीबतर होता जा रहा है। जब इंदिराजी ने चार्ज सम्भाला था, सन् 66 में, तो उससे एक साल पहले अपने देश का नम्बर 85वां था। 125 देशों में 84 देश हमसे मालदार थे और 40 देश हमसे गरीब। 125 में से 40 हमसे गरीब और 84 हमसे मालदार। आठ साल के बाद, सन् 73 में हमारा नम्बर 102वां, तीसरा, चौथा हो गया। लंका, पाकिस्तान, हिन्दुस्तान की एक ही आमदनी हुई तो हमारा नम्बर एक तरीके से एक सौ नम्बर 103 और चार हो गया, और नीचे को खिसक गये 18 पोजीशन। यह बात सन् 1973 की बतला रहा हूं, तीन साल बाद सन् 76 जिसके आंकड़े मिलते हैं, तब 103 और चार से खिसककर आठ पोजीशन और नीचे आ गये। ये बता देता हूं कि 111वां नम्बर है, देश की गरीबी का यह हाल है।

आज हमारे 84 फीसदी आदमी ऐसे हैं 100 में 84 आदमी, जिनको खाने भर के लिए नहीं मिलता है, यथेष्ट भोजन नहीं मिलता। ऐसा भोजन नहीं मिलता है कि जिसको खाकर स्वस्थ्य रह सकें। दूध अंग्रेजों के जमाने में जितना मिलता था एक हिन्दुस्तानी को, आज उतना नहीं मिलता। गरीब आदमियों के लिए दूध एक औषधि और दवा बनकर रह गया है कि डाक्टर और वैद्य कहें कि दूध भी पिओ, तब वो औषधि के तौर पर पिया जाएगा, तो यह है गरीबी का हाल।

दूसरी हमारी जो खराबी हुई है अंग्रेजों के जाने के बाद या कांग्रेस के जमाने में, वो यह कि बेरोजगारी बढ़ती जा रही है– गांव में भी, शहरों में भी। गांव में जो जमीन थी, जमीन

तो उतनी ही है, हमारी औलाद बढ़ती जा रही है, तो ये पुराने खेतों में मेढ़ से मेढ़ लगती जा रही है और 51 फीसदी, 50 फीसदी से ज्यादा, आधे से ज्यादा ऐसे किसान हैं, जिनके पास चार बीघे से कम जमीन है। 33 फीसदी ऐसे हैं, जिनके पास दो बीघे से कम है। 18 ऐसे हैं जिनके पास दो से लेकर चार है, तो ये बेरोजगार कहे जाएंगे, ये किसान कहे जायेंगें? ये नाम के किसान हैं, ये तो भूखें मरते हैं और 26 फीसदी सारे देश की आबादी के ही, यानी चौथाई से ज्यादा हमारे यहां खेतिहर मजदूर हैं, जिनके पास कोई काम नहीं है, सिवाय खेतीबाड़ी के, शायद इसीलिए नौकरी कर रहे हैं।

तो, ये तो गांव का हाल है। और शहर का थोड़े से मैं बताये देता हूं कि पढ़े–लिखे लड़के लाखों की तादाद में मारे–मारे फिरते हैं, जो कामदिलाऊ दफ्तर हैं, शहरों में–एम्प्लायमेंट एक्सचेंज अंग्रेजी में कहलाते हैं, एक करोड़ 40 लाख लड़कों के नाम वहां लिखे हुए हैं, बी0ए0 पास, हाई स्कूल पास, इंजीनियरिंग पास और साइंस पास और कुछ बेपढ़े भी हैं, जो ये चाहते हैं कि हमको नौकरी मिल जाए, काम मिल जाए, लेकिन नहीं मिलता।

यही नहीं, और भी जानकर आपको तकलीफ होगी बहुत ही। आपको संक्षेप में बताना चाहता हूं, तो गांव वालों का और शहर वालों का जितना फर्क था अंग्रेजों के जमाने में, वो बजाय कम होने के बढ़ गया। जब अंग्रेज गये थे–अगर सौ रुपया आमदनी एक आदमी की थी, जो गांव का रहने वाला था, तो शहर वाले की या खेती के अलावा दूसरा पेशा करने वाले की आमदनी पौने दो सौ रुपये थी। सौ और पौने दो सौ–ये फर्क था। हम इस फर्क को मिटाना चाहते थे। लेकिन जैसा मैंने अभी कहा, इसका उल्टा हो गया। ये हो गया कि अभी आज अगर गांव वाले की आमदनी 100 है तो शहर वाले की आमदनी साढ़े तीन सौ है, 346 रुपये है शायद। तो एक और पौने दो का फर्क था, अब एक और साढ़े तीन का हो गया। अब बड़े–बड़े सेठ बढ़ते जा रहे हैं। बस एक ही मिसाल दिये देता हूं। एक सेठ हैं, बिड़ला का नाम सुना होगा। सन् 51 में उसकी सम्पति 53 करोड़ की थी। आज 1100 करोड़ की है। तो ये खराबियां सब पैदा हुईं। और, बेईमानी भी राज–कर्मचारियों में और राज–कर्मचारियों से ज्यादा राजनीतिक नेताओं में, बेईमानी भी और भ्रष्टाचार भी बढ़ता जा रहा है। ये चार समस्याएं है, देश की, जो हल करनी हैं।

अब जहां तक गरीबी का ताल्लुक है, तो महात्माजी की बात को माना नहीं हमारे लीडरों ने। महात्मा केवल एक बात कहत थे कि हिन्दुस्तान गांव में रहता है और खेती करता है। हिन्दुस्तान बम्बई में या दिल्ली में नहीं रहता। बहुत थोड़े आदमी यहां रहते हैं, ज्यादातर गांव में रहते हैं, खेती करते हैं, तो खेती की तरफ ध्यान देना चाहिए। जब खेत की पैदावार बढ़ जाएगी तो लोग सुखी होंगे। किसान के पास अगर पैसा आयेगा, उस समय अगर उसकी पैदावार बढ़ी, वह बाजार में बेचेगा, मंडी में बेचेगा, उसके पास पैसा आयेगा, तब अपनी बहू–बटियों के लिए, अपने बच्चों के लिए कपड़ा खरीदेगा, जूता खरीदेगा, उसको पढ़ायेगा, उसके लिए साइकिल भी खरीदेगा, घड़ी भी खरीदेगा, तो व्यापार भी बढ़ जाएगा। मोटर भी चलने लगेंगे, उद्योग–धंधे लग जाएंगे। तो ये उनका कहना था कि सबसे ज्यादा ध्यान खेती की तरफ दो।

दूसरी बात उनकी कहने की यह थी कि बड़े–बड़े कारखाने लगाये जायेंगे लेकिन बहुत थोड़े–से, दस्तकारी होनी चाहिए ज्यादा, बहुत ज्यादा, अर्थात् गांवों में आजादी से लोग अपना कपड़ा बुनें, अपनी दियासलाई बना सकते हैं, साबुन बना सकते हैं और सैकड़ों चीजे हैं, जो

अंग्रेजों के आने से पहले हमारे पुरखे बनाया करते थे अपने हाथ से। सौ में 60 आदमी जब खेती करते थे, 25 आदमी गांव में दस्तकारी या हस्तकला में लगे होते थे। अब 60 की बजाय 72 तो खेती में बढ़ गये, जमीन पर बोझ बढ़ गया और उद्योग–धंधे 25 से घटकर 9 या 7 रह गये तो देश आज गरीब हो गया। खेती की यह उपेक्षा हुई कि जितना रुपया बाहर से कर्जे पर मिला या अपने मुल्क में टैक्स लगाकर वसूल किया गया, उसको ज्यादातर बड़े–बड़े कारखानों में लगाया गया। खेती की पैदावार बढ़ाने पर नहीं लगाया। यह तय किया कि रुपया बजाय खेत की पैदावार बढ़ाने में लगाने के, बाहर से मंगा लेंगे हम अन्न। जब अंग्रेज गये थे तो सौ में साढ़े सत्रह बीघे में सिंचाई का प्रबंध था–साढ़े सत्रह में, आज 24 या 25 में है। केवल 25 में क्यों ?

तीस साल के स्वराज के बाद सात या साढ़े सात फीसदी में सिंचाई का प्रबंध किया। अगर 35 फीसदी रकबे में सिंचाई का प्रबंध हो जाता, तो आज जो ये अकाल या विशकाल पड़ा हुआ है, तो चाहे बारिश बारह महीने तक नहीं होती, तब भी हमारे लोगों के कोई कष्ट नहीं होता। पंजाब का सूबा है। पंजाब के सूबे में 80 फीसदी रकबा सिंचित है। 80 बीघे जमीन है तो ओह! सौ बीघे, तो 80 में सिंचाई का प्रबंध है। उनके यहां भी बारिश नहीं हुई, तकलीफ है उनको भी, लेकिन उतनी तकलीफ नहीं है, जितनी कि आपके सूब में है, जितनी कि यू0पी0 में है, जितनी बिहार में है और जितनी राजस्थान में है और सिंचाई तो आपके यहां बहुत ही कम हुई है। सिंचाई की तरफ ध्यान नहीं दिया गया। अगर सिंचाई की तरफ ज्यादा ध्यान दिया जाता, तो आज हमको जो कष्ट हमारे गांव वालों को, किसानों, गरीबों को, मजदूरों को, बल्कि शहर वालों को भी है, वो कष्ट नहीं होता।

तो अब हमने यह तय किया है कि आगे को हम खेती पर ज्यादा ध्यान देंगे। ये मैं आज से नहीं कह रहा हूं, ये मैं सन् 57 से कह रहा हूं, जिसको 22 साल हो गये। मैं कांग्रेस में ही था, कांग्रेस में रहा हूं बराबर। अनेक बार जेल गया हूं, लेकिन जो नीतियां गांधीजी की थीं, हमारे लीडरों ने छोड़ दीं और इसलिए मुझको ये कांग्रेस छोड़ देनी पड़ी। मैं बराबर यह कहता रहा कि खेती की पैदावार बढ़ाने पर ज्यादा ध्यान दो, लेकिन मेरे साथियों ने नहीं सुना। वे यह करते रहे कि सौ में बीस रूपये खेती पर, 24 रूपये कारखानों पर और जो बिजली पैदा होती थी उस पर बहुत खर्च होता था। उसमें 80 फीसदी बिजली बड़े कारखानों पर और 10–12 फीसदी बिजली गांव में या खेत की पैदावार बढ़ाने पर। 75–80 कारखानों पर और, 10–12 फीसदी और जगह और खेत पर केवल 10 फीसदी। तो, बिजली का सारा खर्चा जो है, वो भी शहर पर होता रहा। तो हमने यह तय किया है कि खेत की पैदावार बढ़ाने पर ज्यादा पैसा लगायेंगे, सिंचाई का प्रबंध करने पर ज्यादा पैसा लगायेंगे। अब हमारे पास अन्न की कमी नहीं है, लेकिन कुछ लोग यह प्रचार करते हैं। आपके यहां यह सुना है और जिम्मेदार लोग यह प्रचार करते हैं कि दिल्ली की गवर्नमेंट उनकी मदद नहीं करती।

खैर, यह झूठी बात है, लेकिन –– (शोर) अब जो नौजवान ये शोर मचा रहे हैं, मैं उनसे कहना चाहता हूं कि पढ़े–लिखे लोग हो, अगर आप इस सभा में शोर मचाओगे तो आपकी सभा में दूसरे लोग शोर मचायेंगे और आपकी सभा भी नहीं हो सकेगी। सीधा ईमानदारी का और सभ्यता का तकाजा यह है, अगर सभा में आये हो तो चुपचाप बैठकर सुनो, नहीं सुनना चाहते हो, चले जाओ। लेकिन बिघ्न डालने से काम नहीं चलने वाला। बिघ्न न डालिये, आवाज आप किस बात की लगा रहे हैं, कौनसी बात मैंने गलत कही?

मैं यह कर रहा हूं कि खेती की उपेक्षा हुई है, खेतों में सिंचाई का प्रबंध नहीं किया गया, जितना होना चाहिए था। हमने यह तय किया है कि हम सिंचाई का प्रबंध ज्यादा करेंगे। और हमने इसलिए तय किया है कि मैं और मेरे साथी ज्यादातर वो लोग हैं, जो गरीब किसान के घर पैदा हुए हैं, जो छप्पर के नीचे पैदा हुए हैं, कच्ची दीवारों के ऊपर छप्पर रखा है, उसके अन्दर पैदा हुए हैं, इसलिए हमको गांव की तकलीफें मालूम हैं। हमारे बाप अपनी जमीन के मालिक भी नहीं थे, काश्तकार थे, बुलंदशहर के जिले के अन्दर।

तो, मुझको और बहुत से मेरे साथियों को, गांव वालों की तकलीफ क्या होती है, किसान की तकलीफ क्या होती है, छप्पर में पैदा होने से क्या तकलीफ होती है, वो मुझको सब कुछ मालूम है। मैं अब केवल यह कह रहा था कि देर तक बारिश नहीं हुई, गांव वालों को तकलीफ होगी, आप लोगों को तकलीफ होगी। तो, हमने यह तय किया है कि कोई आदमी, एक आदमी भी भूखा नहीं मरने दिया जाएगा हिन्दुस्तान के अन्दर, कोई नहीं मरने दिया जाएगा।

हमारे पास दो करोड़ मन गल्ला मौजूद है–– टन, तो हमने आपकी गवर्नमेंट को कह रखा है, जो गवर्नमेंट आपकी वहां पर है, भोपाल के अन्दर, और अभी आपके अफसरों को भी बुलाया था, हिन्दुस्तान के अन्दर सूखा पड़ा हुआ है, कम या ज्यादा। उनके सब अफसरों को भी हमने बुलाया हुआ था। अभी परसों की बात, 9 तारीख थी, मैं खुद उस मीटिंग में गया था। आपके चीफ सेक्रेटरी गये थे, जिनके बारे में मेरी बहुत अच्छी राय है कि बहुत ही योग्य प्रशासक हैं। उनके सामने सारी बातें हुई। हमने उनसे जब भी कह दिया। पहले जब मैं आया था रायपुर में और बिलासपुर में, तब भी मैंने कह दिया कि जितने भी अन्न की जरूरत होगी मिलेगा। और काम करने, जितने काम मैं खोलू, ताकि देश की और गांव वालों की सेवा हो, रास्ते बनें, कुंए बनें, सड़कें बने, नहर बनें और जो आदमी उस पर काम करे, बजाय उनको पैसा देने के, अन्न दो। जितना भी अन्न इस काम के लिए जरूरत होगी, हम लाखों–लाखों टन आपको देने के लिए तैयार हैं।

उसके बाद कुछ लोग ये प्रचार करते हैं, मुझे अफसोस के साथ ये कहना पड़ता है कि जिम्मेदार लोग प्रचार करते हैं, कि हम सेवा नहीं कर पा रहे हैं, मध्य प्रदेश में गरीब लोगों की, क्योंकि दिल्ली की गवर्नमेंट मदद नहीं करती। मेरा कहना है, ये झूठा प्रचार है, ये बेईमानी का प्रचार है, ये राजनीतिक कारणों से प्रचार किया जाता है। मैं आपको बचन देता हूं, मैं ये कह रहा हूं, जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं कि हमको बतलायें कि क्या चीज मांगी आपकी गौरमेंट ने, जो हमने दी नहीं, दी नहीं, जो हमारी बात फैली।

तो, हमारे पास कोई चीज हो और हमने न दी हो आपको, तब आप शिकायत कर सकते हैं। हम तो ये भी प्रबंध कर रहे हैं, दूसरे देशों से प्रबंध कर रहे हैं और सूबों से मांग रहे हैं कि पहाड़ी इलाका जहां जमीन हो, वहां कुंआ नहीं खुद सकता। तो रिंग एक मशीन होती है, उस मशीन के लिए भी हमने कहा है कि जितनी मशीनें मिल सकती हैं अपने देश के अन्दर तो राजस्थान में मध्य प्रदेश में और उत्तर प्रदेश में पहुंचानी हैं, उन इलाकों में जहां आज भी मामूली आदमी कुंआ नहीं खोद सकता। और जो पथरीली जमीन है, उसका भी प्रबंध कर रहे हैं। अन्न हम आपको जिनता दे सकते हैं, वो देने के लिए हम तैयार हैं।

मैं कह रहा हूं कि (शोर) अगर शरीफ घरों में पैदा हुए हो तो बिना नारे लगाये चले जाओ। अगर शरीफ घरों में पैदा हुए हो तो, बस इतना ही कह सकता हूं। (तालियां) वरना

कानून यह है, वो तो मैंने पुलिस वालों को रोका हुआ है कि कोई आदमी दूसरे की सभा में विघ्न डालेगा तो वो सीधा जेल भेजा जा सकता है।

तो, अगर आपको कोई शिकायत है, अब कोई–सी शिकायत हो तो आप लोग अपने मिनिस्टरों से कह सकते हो। मिनिस्टर अगर नहीं सुनते हैं किन्हीं कारणों की वजह से, तो मामा बालेश्वर प्रसाद जी हैं, भंवरजी हैं, इनसे कहो। तो जो हमको चिट्ठी लिखेंगे ये तो हमसे जितना हो सकेगा, आपकी तकलीफ को दूर करने की कोशिश करेंगे।

अब दूसरी बात मैं आपसे यह कहना चाहता था कि बड़े–बड़े कारखाने कुछ जरूरी हैं, बहुत सा सामान बनाने को, हवाई जाहज बनाने को, कोयला खोदने के लिए, बिजली पैदा करने को, रेल का इंजन बनाने को वगैरा–वगैरा। लेकिन ज्यादातर दस्तकारी गांवों में होनी चाहिए। दस्त माने हाथ, हाथ से जो काम हो सकता है, उस काम के लिए हम नहीं चाहते बड़े कारखाने खुलें। मान लो, कपड़ा हाथ से बन सकता है, सूत बनाया जा सकता है, चरखे से और कपड़ा बनाया जा सकता है हथ करघे से – कर माने हाथ। तो करघे पर बनाया जाना चाहिए। गांधी एक लखपति आदमी के घर पैदा हुए, बैरिस्टर थे, बैरिस्टरी उन्होंने छोड़ दी और देश को उठाने के लिए करघा–हथकरघा लेकर बैठ गये। क्यों ? क्या वह किसी जुलाहे के घर में पैदा हुए ? इसलिए यह बताने के लिए कि यहां आदमियों की तादाद ज्यादा है, प्राकृतिक साधन, जमीन, लोहा, कोयला, तेल वगैरा कम है, इसलिए यहां बड़े कारखाने बहुत कम होंगे, जो जरूरी हों, अनिवार्य हो देश के लिए। बाकी छोटी दस्तकारी होनी चाहिए और जमीन भी थोड़ी–थोड़ी होगी, न बड़े फार्म हों, न बड़ी फैक्टरी होगी।

लेकिन हमारे यहॉ बड़े–बड़े कारखाने लगा दिये हैं जिनमें मुनाफा तो बहुत होता है – पूंजीपति को लेकिन आदमी कम लगते हैं। तो अब हमने ये भी तय किया हुआ है, अगर मेरे साथी राजी हो गये और हमारे हाथ में शक्ति आ गयी – जनवरी में, दिल्ली में, तो हम बड़े–बड़े कारखानेदारों को जो ऐसा सामान पैदा करते हैं, जो हाथ से अपने लोग, गरीब लोग, गांव में रहने वाले बना सकते हैं –– दियासलाई बना सकते हैं, कालीन बना सकते हैं, साुबन बना सकते हैं, कपड़ा बना सकते हैं, तो ऐसी चीजों को बनाने के लिए कारखाने पहले से खुले हुए हैं। हम इन कारखानों को बंद तो नहीं करना चाहते लेकिन उनके लिए हम यह कानून बनाना चाहते हैं कि वो अपना सामान बाहर बेचेंगे और हिन्दुस्तान के अन्दर इन चीजों को हाथ से बनाया जाए, ताकि करोड़ों लड़कों को हमारे यहां रोजगार मिल जाए, यह मैने तय किया हुआ है। तो फिर आपको यह भूखा – नंगा आदमी इस देश के अन्दर दिखायी नहीं देगा।

हमारी कोई नयी नीति नहीं है, जो गांधीजी कह गये थे, जो हमारे राष्ट्र का पिता कह गया था, जिसके बराबर का आदमी सैकड़ों बरस से दुनिया में पैदा नहीं हुआ है, वो ही काम करना चाहते हैं बस। दो चीजों पर हमारा जोर होगा – एक तो यह कि खेती की पैदावार बढ़ायें। जमीन तो नहीं बढ़ेगी, लेकिन फी–बीघे पैदावार बढ़ सकती है, अगर पानी का इंतजाम हो जाये, अच्छे बीज का इंतजाम हो जाए और खाद का इंतजाम हो जाए। दूसरा यह कि बड़े कारखाने बहुत कम लगायेंगे, दस्तकारी पर जोर देंगे, तब जा के बेरोजगारी मिटेगी, सबको काम मिलेगा।

एक बात मैं यह बताना चाहता हूं कि यह खराबी क्यों ? ये राज, ये राजनीतिक नेता बहुत से जो हैं, भ्रष्ट हो गये। कुछ तो भ्रष्ट हो गये, कुछ पर भ्रष्टाचार के चार्ज लगे हुए हैं,

इल्जाम लगा हुआ है, क्यों ? लालच में फंस गये। अपने इलेक्शन के लिए लाखों–लाखों रूपया लेते हैं, बड़े–बड़े लोगों से, सेठों से, जब अपने चुनाव लड़ने के लिए राजनीतिक नेता रुपया लेंगे बड़े सेठों से, तो सेठों के गुलाम हो जाएंगे, भ्रष्टाचार फैलेगा।

इसलिए हमारी पार्टी ने यह तय किया है कि हम किसी सेठ से इलेक्शन लड़ने के लिए एक पैसा नहीं लेंगे, चाहे नतीजा कुछ भी हो। ये हमारी राय आज से नहीं है, पहले से है। जब हमने भारतीय क्रांति दल बनाया था, तब भी हमारे पास लाखों–लाखों रूपया लेके लोग पहुंचे थे। अब भी आते हैं देने के लिए, लेकिन हमने मना कर दिया लेने से। बोले, क्यों ? क्योंकि हम ईमानदार आदमी को खड़ा करेंगे। अगर आपके यहां कोई ऐसा आदमी हम खड़ा करते हैं, या कहीं भी, जो ईमानदार नहीं है, तो मैं आपसे कहूंगा कि उसको वोट मत देना, हरगिज–हरगिज वोट मत देना। ईमानदार आदमी को वोट दें, ताकि वो मिनिस्टर भी बने तो वहां बड़ा काम सम्भाल सकता है। अगर चीफ मिनिस्टर और प्राइम मिनिस्टर बेईमान हो जाएगा, ये देश तरक्की करने वाला नहीं।

मैं दूसरी पार्टी के लोगों को कहना चाहता हूं कुछ। जगजीवनराम साहब हैं, एक गरीब घर में पैदा हुए हैं, लेकिन आज हिन्दुस्तान के सबसे मालदार आदमियों में उनकी शुमार है। घर में जरूर गरीब के पैदा हुए, लेकिन बहुत मालदार आदमी हैं, इससे ज्यादा व्याख्या नहीं करना चाहता।

जहां तक इंदिरा का सवाल है, ये आप जानते ही हो, किस तरह की वो महिला है। उसने कसम खा रखी है कि सच कभी नहीं बोलूंगी। हां, वो झूठ ही झूठ बोलेगी, झूठा ही प्रचार करेगी, हमेशा झूठी बात कहेगी। कहती है कि मैं जबर्दस्ती उसे भेजना चाहता हूं जेल में। जबर्दस्ती तो नहीं भेजना चाहता। ये मैं जरूर चाहता हूं मुकदमें, जो उसने जुर्म किए हैं इमरजेंसी के जमाने में, जो उसने पाप किये हैं, उनका मुकदमा अदालत में, कुछ में पेश है, कुछ और पेश होने वाले हैं। अदालत अगर इसके नतीजे के बाद पहुंचे सारी शहादत देखकर कि ये जेल भेजी जाएं, तो मैं उसका स्वागत करूंगा, मुझे खुशी होगी उसके जेल जाने में। (तालियां)

आज तक उसने यह नहीं माना कि इमरजेंसी लगाने में उसने कोई गलती की थी। आपातकालीन घोषणा में उसने कोई गलती की थी। एक लाख दो हजार पब्लिक वर्कर, जिनमें जयप्रकाश नारायण और ये नाना साहब वगैरा शामिल थे, मैं भी शामिल था, सब को जेल में भेज दिया था, बिना मुकद्दमा लगाये और चाहती थी ये कि मेरा बेटा राजगद्दी का मालिक हो। अब भी मुझे मालूम हुआ है कि कांग्रेसमैन उससे कोई मशविरा करने जाते हैं, तो कहती है कि संजय से पूछो, बेटे से पूछो, क्योंकि बेटा राजगद्दी का मालिक होने वाला है।

तो अगर आपने ये गलती की तो वो जो पुराने जुर्म, अपराध हुए थे, उनको इतनी जल्दी आप भूल गये, तो फिर ये देख लो कि डिक्टेटरशिप होगी। और फिर आजादी का काम और वोट देने का काम और आपकी मर्जी का काम नहीं रहेगा। हिन्दुस्तान में एक डिक्टेटरशिप हो जायेगी, एक हिटलर पैदा हो जाएगा।

और, रहा इनका क्या नाम है, हमारे जनसंघ के दोस्तों का, तो जनसंघ के दोस्तों से हमारा सबसे बड़ा फर्क ये है कि ये हिन्दू राष्ट्रवाद चाहते हैं। हिन्दू राष्ट्र चाहते हैं, हिन्दुओं की तादाद ज्यादा है, तो फिर ये जो चाहेंगे, होगा तो देश में वही। लेकिन हम सब के साथ बराबर का बर्ताव करना चाहते हैं। हम, चाहे हिन्दू हों, चाहे मुसलमान हों, चाहे ईसाई हों, या

हिन्दू में चाहे ब्राह्मण हों, चाहे हरिजन हों, सब को एक समान, एक दृष्टि से देखना चाहते हैं। एक समान बर्ताव करना चाहते हैं।

बस, हमारा अपने राजनीतिक दोस्तों से यही फर्क है। इसके अलावा और साहब हैं एक जनता पार्टी के लीडर श्री चन्द्रशेखर, उनका कुछ कहना नहीं है। इनको मैंने ही बनवाया था पार्टी का प्रेजिडेंट। मैंने आज वक्त की कमी के कारण बतलाया नहीं और जो मोरारजी भाई हैं, तो उनको भी प्राइम मिनिस्टर हमने बनवाया था। केवल हमारे चिट्ठी लिखने पर प्राइम मिनिस्टर हो गये। उनका प्रताप कुछ नहीं, उमर में केवल मेरे से बड़े थे। मेरे पास सोशलिस्ट पार्टी के और जनसंघ के लीडर आये अटलबिहारी वाजपेयी, जबकि मैं अस्पताल में बीमार पड़ा था। इलेक्शन के बाद और मुझसे बोले कि हम चाहते हैं कि जगजीवनराम को प्राइम मिनिस्टर बनाना है। मैंने कहा क्यों बनाना चाहते हैं ? इसका इनाम देना चाहते हैं कि उन्होंने प्रस्ताव पेश किया था कि इमरजेंसी देश के अन्दर लागू की जाए। मैं हरगिज ऐसे आदमी को प्राइम मिनिस्टर बनाने के लिए तैयार नहीं हूं, मैंने कह दिया। मैं पसंद करूंगा इनके मुकाबले में मोरारजी भाई को, कम से कम सात बरस मुझसे उमर में बड़े हैं और उन्होंने 19 महीने जेलखाना काटा। मैं जानता हूं कि अहमदाबाद के मिल वालों का उनपे बहुत असर है और गरीब आदमी से उनका कोई सम्बन्ध नही है। गांव के गरीब और मजदूरों से उनकी कोई हमदर्दी नहीं है। लेकिन फिर भी जगजीवन राम के मुकाबले में मैं मोरारजी भाई को पंसद करूंगा, इएलिए मोरारजी प्राइम मिनिस्टर हुए।

और, जो मैंने बात कही कि खेती पर ज्यादा ध्यान दिया जाए और दस्तकारी बढ़ाने में ध्यान दिया जाए। फैसला हो गया जनता पार्टी में। लेकिन उस पर अमल नहीं हुआ। और इससे साबित है कि जब हमने चार्ज लिया था, तब एक करोड़ दो लाख आदमियों का नाम दर्ज था काम दिलाऊ दफ्तरों में, जो लड़के रोजगार चाहते थे और जब उन्होंने चार्ज छोड़ा है, तब एक करोड़ 35 लाख लड़कों का नाम दर्ज था। 33 लाख लड़के और उसमें दर्ज हो गये, क्यों ? क्यों कि बड़े कारखाने, बड़े कारखाने, छोटे रोजगारों की उन्होंने परवाह नहीं की। इसके अलावा उन्हें, अब ये देखें (जनसमूह का शोर) आप लोग जाकर फिर लौट आये हैं, केवल इस मीटिंग को डिस्टर्ब करने के लिए। मैंने आपसे पहले कहा है कि ये भले आदमियों का काम नहीं है। आपकी पार्टी ने यही सिखाया है। देश आपके कब्जे में आ जाएगा, आप इंदिरा से बदतर बदतर साबित होंगे, यही बतलाये देता हूं। आप दूसरों को बर्दाश्त भी नहीं करोगे। दूसरों की बातचीत दूसरों को भी नहीं सुनने दोगे, अपने आप न सुनो, न सुनने दोगे।

तो मैं आपसे यह कह रहा था कि मोरारजी से हमारा झगड़ा हुआ इस बात पर कि उनका लड़का उनके पास रहकर रुपये कमा रहा था, करोड़ों–करोड़ों। ऐसा अखबारों में निकला, हमको नहीं मालूम है, कमा रहा था। नहीं कमा रहा था? उनके खिलाफ इल्जाम थे और मोरारजी ने 15 जनवरी सन् 78 को खुद यह कहा कि गुजरात में 15 जनवरी सन् 78 को कि मेरे लड़के पर आरोप लग रहे हैं और अखबारों में लिखा है। मैं कमीशन बैठाने को तैयार हूं। जब दिल्ली लौट के आये गुजरात से तो बेटा नाराज हुआ कि आपने क्या कह दिया? दो महीने तक कमीशन मुकर्रर नहीं किया। 11 मार्च 78 को मैंने उन्हें दो चिट्ठी लिखीं कि कमीशन मुकर्रर कीजिये, अपने लड़के के खिलाफ, आपका पॉलिटिकल सेक्रेटरी है, एक ही लड़का है, कम्युनिस्ट खानदान का मेम्बर है, अगर वो गलती करता है, तो वो गलती आपकी मानी जाएगी और राजनीतिक नेता केवल ईमानदार ही नहीं होने चाहिए, जनता को विश्वास

होना चाहिए कि ईमानदार है, इसलिए कमीशन बिठाओ। बस, नाराज, आगबबूला हो गये कि मैंने ये हिम्मत की? मुझको क्या कहते हैं कि सब आरोप गलत हैं। मेरे साथ–साथ तुम्हारी घरवाली के खिलाफ भी शिकायतें आती थीं। मुझे बहुत दुख हुआ। तो, मैंने एकदम उनको चिट्ठी लिखी कि अच्छा, कांतिभाई के खिलाफ बाद में बिठाना कमीशन तुम, मेरी पत्नी के खिलाफ अभी कमीशन मुकर्रर कर दो, अभी इसी वक्त मैं चाहता हूं। दोस्तों, तो कहां थी हिम्मत, कहां थी हिम्मत ? नहीं बैठाया, लेकिन आग लग गयी उनके जिसम में।

दोस्तों, मुझे कहना नहीं चाहिए अपनी बाबत, मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि मेरी जीवनी जो है, एक खुली किताब है, चाहे प्राइवेट जीवन हो, चाहे पब्लिक जीवन हो। क्यों नहीं बिठाया कमीशन ? तो न अपने लड़के के खिलाफ बिठाया। कोई नहीं ? बैठाते कैसे ? हिम्मत नहीं थी। तो इस पर नाराज हुए। मेरे जनम दिवस पर राजनारायणजी मेरे दोस्त और भी यहां कुछ दोस्त बैठे हैं, नहीं माने, मेरा जनम दिवस मनाया। बहुत से सूबों के गांव के गरीब लोगों को मौका नहीं लगा आने का तो भी लाखों की तादाद में 20–25 लाख आदमी इकट्ठे हो गये थे 23 दिसम्बर, 1978 को। बस, ईर्ष्या का सांप लोट गया मोरारजी की छाती पर। नाराज हो गये। हमको निकाला, राजनारायण जी को निकाला। हमारे तीन चीफ मिनिस्टर, गरीब घरों में पैदा हुए थे– देवीलाल, रामनरेश यादव, कर्पूरी ठाकुर, जो नाई के घर पैदा हुआ था, वो हमारा चीफ मिनिस्टर था, यादव सब को निकाल दिया। जब राजनारायणजी को निकाल दिया और उन्होंने पार्टी छोड़ दी और अखबार वालों ने 26 जून को मोरारजी से पूछा कि अगर लोकदल के और भी आदमी छोड़ दें, तो कैसे गवर्नमेंट चलेगी? उन्होंने कहा, कोई परवाह नहीं है, अगर और छोड़ते हैं तो गवर्नमेंट मजबूत हो जाएगी। जरा सोचिये।

बस, मेरे साथियों के दिल में एक कांटा चुभ गया। मुझसे बोले कि चौधरी साहब, एक सीमा होती है, अब हमसे बर्दाश्त नहीं होता। मैंने तब भी हां नहीं करके दी। उधर तब मेरे लोगों ने राय दे दी, उनके खिलाफ और गवर्नमेंट गिर गयी। अब उनकी गवर्नमेंट बहुत मजबूत हो गयी है, फिर रहे हैं, घूम रहे हैं सारे देश में। गवर्नमेंट बड़ी मजबूत हो गयी है।

तो, इंदिरा का आदमी मैंने बनवा दिया था प्राइम मिनिस्टर। मैं बीमार पड़ा हुआ था, तब मैंने प्राइम मिनिस्टर बनाया और उधर मैं बीमार पड़ा हुआ था, हृदय–गति के रोग में और तब उन्होंने मुझसे इस्तीफा मांगा। ये उनकी शराफत की निशानी है दोस्तों!

अब मैं आप लोगों से एक बात कहना चाहता हूँ, उधर नहीं देखिये। जितने आप लोग खड़े हो या बैठे हों ये जनसंघ और आर0एस0एस0 के लोगों की शराफत देखो और इनकी ईमानदारी देखो, कि कैसे ये लोग पंचायत राज में विश्वास करते हैं। ये मुल्क को चलायेंगे। इंदिरा तो अकेली है, ये भी हो सकता है कि डिक्टेटरशिप की जो उसकी इच्छा है, वो खतम हो जाएगी, लेकिन ये संगठन है, जो डिक्टेटर है। ये संगठन जो डिक्टेटर है, डिक्टेटरशिप में विश्वास करता है, वो ज्यादा खतरनाक होता है, बनिस्बत एक आदमी के। इनको कोई लज्जा इस बात की नहीं आती।

इन शब्दों के साथ जो मुझे बात कहनी थी, वो मैंने कह दी। आज मुझको आने में देर हो गयी, क्योंकि मुझे रतलाम पहुंचना है, एक और जगह पहुंचना है, शायद दो जगह पहुंचना है, इसलिए मैं माफी चाहता हूं और अब आपसे यह कहता हूं कि मेरे साथ आप तीन नारे लगा दीजिये और मुझको जाने की इजाजत दीजिए ––

भारत माता की जय।

भारत माता की जय।।
महात्मा गांधी की जय।
महात्मा गांधी की जय।।
————————————————

दिनांक 11 नवम्बर, 1979 को रतलाम, मध्य प्रदेश की जनसभा में प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण

————————————————————

दोस्तों और बहनों!

(शोर)

मुझको आपकी सभा में आने में लगभग एक घंटे की देर हो गयी। इसके कुछ कारण ऐसे थे कि जो मेरी शक्ति के बाहर थे, लेकिन फिर भी आपका समय नष्ट हुआ है, मैं इसके लिए आपसे माफी चाहता हूं।

अब लोकसभा का चुनाव होने वाला है और जनवरी में आपके वोट पड़ेंगे। मैं आपको बस इतना कहने के लिए हाजिर हुआ हूं कि जो तीन पार्टियां चुनाव में खड़ी हुई हैं या छोटी–मोटी और बहुत–सी हैं। एक, जनता पार्टी, जिसके लीडर श्री जगजीवनरामजी हैं और दूसरी इंदिराजी, इंदिराजी की कांग्रेस कहलाती है और तीसरा लोकदल। तो लोकदल की तरफ से मैं हाजिर हुआ हूं आपको यह मशविरा देने के लिए कि आप लोकदल को राय दो। तो आप पूछेंगे क्यों? मैं अभी आपको बतलाने वाला हूं। जवाब मेरा यह है कि देश के सामने जो समस्याएं हैं, इनका समाधान केवल लोकदल के पास है और किसी के पास नहीं। (शोर)

और, अब मैं कुछ दोस्तों से यह कहना चाहता हूं कि अगर वो सभा को बिगाड़ने के लिए आये हैं, तो बेशक वे आवाज लगायें। लेकिन अगर वो शरीफ और सभ्य आदमियों की तरह सुनने के लिए आये हैं, तो मेरी बातें उनको पसंद हों या न हों, उनको खामोशी से सुनना चाहिए।

तो, मैं यह कह रहा था, आज देश की चार बड़ी समस्याएं हैं। एक–देश की गरीबी, और गरीबी नहीं बल्कि बढ़ती हुई गरीबी, दिन–ब–दिन देश की ––। दूसरी, ये कि बेरोजगारी, वो भी मुझको कहने में अफसोस होता है कि समय बीतते–बीतते बेरोजगारी भी बढ़ती जा रही है। तीसरा यह कि गरीब और अमीर, गांव और शहर के लोगों की आमदनी में असमानता और गैर–बराबरी, खाई है। तो वो खाई भी बजाय कम होने के चौड़ी होती जा रही है, जब से कि स्वराज आया। और, चौथी बात, राजनीतिक जीवन में और प्रशासन के प्रशासकीय जीवन में हमारे यहां भ्रष्टाचार। वो भ्रष्टाचार भी दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है। आज ईमानदार आदमी ढूंढ़े से, बड़ी मुश्किल से दिखाई देता है।

जब अंग्रेजों के जमाने में मेरी पीढ़ी के लोग अंग्रेजों से संघर्ष कर रहे थे, गांधीजी के नेतृत्व में, तो हम तरह–तरह के स्वप्न अपने देश के लिए देखा करते थे। हमने यह पढ़ा था और अपने लीडरों के जरिये ये सुना था, उस जमाने में भी कि किसी जमाने में हमारा देश बहुत गौरवशाली था, बहुत समर्थशाली था। यहां से विद्या का प्रकाश संसार भर में फैला था। हमारे पुरखों से विदेशी लोग विद्या सीखने के लिए आया करते थे। तो गांव में भी सपना यह था कि देश को आजाद करने की ––– (शोर)

मैं आपसे यह कहूंगा कि अगर आप शरीफ आदमी हैं, तो खामोश रहें। कायदा यह है, कानून यह है कि अगर आप लोगों ने शोर मचाया, मीटिंग नहीं होने दी, तो आप पुलिस वालों पर इल्जाम लगायेंगे कि आपको इन्होंने निकाला। ये कानून है बाकायदा। और, अगर आपकी कोई सभा हुई तो आप ––– (पहले से भी अधिक शोरगुल) क्या मतलब है ? मैं जानना चाहता हूं आपसे ? क्या मतलब है आपका ? और अगर आप आये हैं तो चुपचाप सुनिये और अगर झगड़ा करने के लिए आये हैं, तो मुझे यह बतलाइये कि आप क्या करना चाहते हैं, किस बात का आपने सोच रखा है ? (शोर–शराबा) फिर वही बात, अब यही बात तो मैं कहता हूं कि हमारा जनसंघ का झगड़ा किन बातों पर हुआ ? इसी बात पर हुआ (और भी अधिक शोर) इसी बात पर हुआ। मैंने जनसंघ के और आर0एस0एस0 के खिलाफ कभी कोई लफ्ज नहीं कहा था। वरना उत्तर प्रदेश के अंदर कितने चुनाव हुए थे, मैं राष्ट्रीय स्वयं संघ के लोगों

की तारीफ किया करता था। उल्टे तारीफ करता था, कभी एक शब्द मैंने खिलाफ नहीं कहा, बल्कि इलेक्शन खिलाफ लड़ता था। लेकिन जो धीरे–धीरे अब आप लोग जो करते हैं, वो मैं आपको बताता हूं कि इससे मुल्क चल नहीं सकता, जनतंत्र नहीं चल सकता। इंदिरा तो एक व्यक्ति है, जो डिक्टेटरशिप कायम करना चाहती है। आप एक संगठन हैं, जो डिक्टेटरशिप इस मुल्क के अंदर कायम करना चाहते हैं। (तालियां)। इससे साबित होता है कि आपने यह तय करना है कि हम इस सब चीज को नहीं चलने देंगे सभा में। ठीक है, यह हो सकता है आपको कामयाबी हो। लेकिन मैं आपको बतलाता हूं कि अगर आपकी कोई सभा हुई तो उसको दूसरे लोग नहीं चलने देंगे। क्या मायने हुए इस बात के ? (तालियां)।

तो, मैं आपसे यह अर्ज कर रहा था कि मेरी पीढ़ी के लोग सन् 18 या 20 और 25 की बात कहता हूं, जबकि हम स्कूल और कालेज में पढ़ते थे, तरह–तरह के स्वप्न अपने देश के लिए देखा करते थे। हम ये चाहते थे कि जल्दी ही आजाद हों और फिर इसको हम हिमालय की चोटी पर बैठा देंगे एक प्रकार से। लेकिन दोस्तों, वो हमारे अरमान सब खतम हो गये। आज देश जैसा मैंने कहा कि लगभग सभी देशों से ज्यादा गरीब है। 125 देश हैं, इस दुनिया के अंदर, जिनकी आबादी 10 लाख से ज्यादा है, उनको देश मानेंगे इंडिपेंडेंट। अगरचे, हमारे तो एक–एक जिले की आबादी दस लाख से ज्यादा है। उन 140 देशों में हमारा नम्बर 111 है, अर्थात 110 देश हमसे मालदार हैं और 14 देश हमसे गरीब हैं। ये है गरीबी।

यही नहीं, मैंने आपसे तभी कहा कि हिन्दुस्ताान में गरीबी बढ़ती जा रही। सन् 64–65 में जब इंदिराजी ने चार्ज लिया था, 66 में, तो उससे एक साल पहले हमारे देश का नम्बर 85 था। 84 देश मालदार, और 40 देश गरीब। आठ साल बाद हमारा नम्बर 104 था, 21 देश हमसे गरीब और 103 देश हमसे मालदार। और, ठीक तीन साल बाद, 76 में, मैं आंकड़े 76 के आपको बतला रहा था– चार पोजीशन हम और नीचे खिसक गये और आज देश का नम्बर है गरीबी–अमीरी के लिहाज से 111वां। देश के अन्दर 48 फीसदी आदमी ऐसे हैं, जिनको भरपेट भोजन नहीं मिलता या यथेष्ट भोजन नहीं मिलता या ऐसा भोजन नहीं मिल सकता, जिसको खाकर उसकी तंदुस्स्ती कायम रहे।

दूध, जो कि अंग्रेजों के जमाने में भी कम था, उससे पहले हमारे लोगों को ज्यादा दूध पीने को मिलता था। लेकिन आज अंग्रेजों के जमाने के मुकाबले में फीसद दूध भी कम हो गया है और गरीब आदमियों के लिए, क्या आधे आदमियों के लिए दूध, हमारे लिए दवा बनकर, औषधि बनकर रह गया है। यह हमारी गरीबी का हाल है।

शहरों में भी गरीबी है। वैसे गांव में, क्योंकि आबादी ज्यादा है। 80 फीसदी आदमी हमारे गांव में रहता है, तो वहां तो गरीब हैं ही सबसे ज्यादा। लेकिन जो 20 फीसदी हमारे शहर में रहते हैं, तो हमारे प्लानिंग कमीशन ने जो अनुमान निकाला, वो यह कि 41 फीसदी शहर में भी वैसे ही लोग हैं, जैसे गांव के अंदर हैं। ये बड़ी–बड़ी अट्टालिकाएं, गगनचुम्बी जो इमारतें बनी हुई हैं, इनमें महल बने हुए बड़े–बड़े, इनके पीछे वो गरीब आदमी रहते हैं, जो कि सड़क पर चलने वाले को दिखायी नहीं देते। तो गरीबी का यह हाल है।

दूसरे, मैंने आपसे यह कहा था– बेरोजगारी। बेरोजगारी गांव में भी बढ़ती जा रही है, शहर में भी बढ़ती जा रही है। हमारे शहर के पढ़े–लिखे लड़के, बी0ए0पास, एम0ए0 पास, हाई स्कूल पास, साइंसदॉ, इंजीनियरिंग या डॉक्टरी, इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग, सिविल इंजीनियरिंग और दूसरी इंजीनियरिंग मैकेनिकल वगैरा, उसकी डिग्री हासिल किये हुए दर–दर मारे फिरते

हैं। जब जनता पार्टी ने चार्ज सम्भाला था, तब एक करोड़ 2 लाख आदमी थे, जिनका नाम एम्प्लायमेंट एक्सचेंज में दर्ज था, कामदिलाऊ दफ्तरों में, कि वो रोजगार चाहते हैं और जिस वक्त चार्ज छोड़ा है, जनता पार्टी ने, तो एक करोड़ 37 लाख आदमियों का नाम दर्ज था, अर्थात् बजाय हमारी बेरोजगारी खतम होने के 35 लाख आदमी सवा दो साल के अंदर हमारे लड़के बेरोजगार हो गये।

लाखों–हजारों लड़के हमारे यहां से दूसरे देशों में पढ़ने जाते हैं, वापिस नहीं आते हैं। मुझको कुछ मालूम है, जो वापिस आते हैं, साल – दो साल यहां परेशान होकर फिर वापिस चले जाते हैं। ये तो वो हैं जो पढ़ने जाते हैं, फिर वापिस नहीं आते। हजारों तो वो हैं जो पास अपने यहां करते हैं, विद्या यहां हासिल करते हैं, पूरी डिग्री हासिल कर लेते हैं पर रोजगार न मिलने के कारण इंग्लैंड, अमरीका और जर्मनी चले जाते हैं। एक अर्थशास्त्री ने हिसाब लगाया कि औसत 65 किसान एक साल जितना पैदा करता है, इतना खर्च होता है एक लड़के को ग्रेजुएट बनाने में और वो लड़का ग्रेजुएट और पोस्ट–ग्रेजुएट बनने के बाद उन मालदार मुल्कों को चला जाता है जो हमसे कई गुना मालदार हैं। और बजाय इस गरीब मुल्क के विकास में हाथ बंटाने के, दूसरे मुल्कों की जा के मदद करता है।

तो ये बेरोजगारी का हाल है, शहर का और पढ़े–लिखे लोगों का। हमारे गांव का भी यही हाल है। 1970–71 में एक एग्रीकल्चर सेन्सस किया गवर्नमेंट आफ इंडिया ने, अर्थात् कितनी–कितनी जमीन किन लोगों के पास है, कितनी–कितनी जमीन है, कितने लोगों के पास और कितनी ज्वार बोई जाती है, कितने में गन्ना बोया जाता है, कितने में गेहूं बोया जाता है और कितनी सिंचित है, कितनी असिंचित है और सिंचित है, तो ट्यूबवैल से या नहर से, ये सब हिसाब लगाया एग्रीकल्चर सेन्सस ने सन् 1970–71 में। उसके देखने के बाद, ये मालूम होता है कि 33 फीसदी आदमी जो किसान कहलाते हैं, उनके पास दो बीघे से कम जमीन है, 33 परसेंट एक तिहाई आदमी और 18 फीसदी के पास दो बीघे से चार बीघे तक जमीन है। 33 और 18 हुए 51। आधे से ज्यादा के पास चार बीघे से कम जमीन होगी और 19 फीसदी के पास 4 बीघे तक। ये हैं, जो किसान कहलाते हैं।

हमने अभी किसानों के लिए थोड़ी–सी सहूलियत दी थी, खासकर उनका टैक्स आधा कर दिया था, और उसके लिए हमने टैक्स लगाया था उन लोगों पर जो ऐश और इशरत का सामान इकट्ठा करते हैं। तो सब अखबारों ने, जो बड़े–बड़े पूंजीपतियों के हैं, हमारे खिलाफ प्रचार ये किया कि हम शहर के गरीब आदमी पर टैक्स लगाकर गांव के मालदार आदमी को फायदा पहुंचाना चाहते हैं। दोस्तों! ये मालदार आदमी जो मैंने आपको बतलाये 33 और 18–19 जो कि खाद इस्तेमाल करते हैं।

अभी 1976 में नेशनल काउंसिल ने बतलाया था इकोनॉमिक रिसर्च, गवर्नमेंट का एक संगठन है, उनकी एक रिपोर्ट तैयार हुई। आप लोगों के यहां लाइब्रेरी में होगी, मंगा लेना। कोई पढ़ा–लिखा आदमी, चाहे तो मुझसे कह देना, मैं एक कापी उसके पास भेज दूंगा। उसके देखने से यह मालूम होता है कि दिल्ली शहर में अकेले में इतने मालदार आदमी रहते हैं, जितने हिन्दुस्तान के सारे गांवों में नहीं हैं, उससे ज्यादा केवल दिल्ली शहर के अन्दर मालदार आदमी रहता है।

तो गांव के अन्दर भी बेरोजगारी फैलती जा रही है, दिन–ब–दिन फैलती जा रही है। जमीन बढ़ेगी नहीं। इतिहास ने या प्रकृति ने जो हमको दी है, हमारी मातृभूमि को, जमीन वो

नहीं बढ़ेगी। हमारी संख्या, जनसंख्या बढ़ेगी, आज तेजी से बढ़ रही है। लेकिन हम कितने उपाय कर रहे हैं, वो बढ़ेगी कम रफ्तार से सही। लेकिन ज्यादातर किसानों की जमीन जो थीं, उसी पर मेंढ़–पर–मेंढ़, मेंढ़–पर–मेंढ़ लगती जाती है, क्या इलाज होगा ?

तीसरी बात –– तीसरी बात, मैंने आपसे यह कही कि गैर–बराबरी, असमानता, गरीब और अमीर की आमदनी में फर्क, जो अंग्रेजों के जमाने में था वो बढ़ता जा रहा है। हम लोग अंग्रेजों के खिलाफ अपने भाषणों में, जो तकरीरों में एक तर्क दिया करते थे, तकरीर देते थे, हम एक बात यह कहा करते थे कि अंग्रेजों के जमाने में सेठ लोग ज्यादा पैदा हो गये हमारे देश में। पहले इतनी गैर–बराबरी नहीं थी। सेठ भी हो तो उसके रहन–सहन में कोई अन्तर नहीं था। सेठ के पास मोटर नहीं थी उस वक्त, लेकिन अब बड़े–बड़े मोटर वाले, बड़े–बड़े सेठ हो गये, बड़े–बड़े शहर हो गये, तो जैसे ही स्वराज मिलेगा, हम गैर बराबरी को दूर करेंगे।

तो दोस्तों, जैसा कि गरीबी की बाबत मैंने आपको बताया था, बरोजगारी की बाबत तो ये बदकिस्मती हमारी समानता की बाबत भी हुई है। गरीब और अमीर की खाई, गांव की और शहर वालों की खाई बजाय कम होने के, पटने के, दूनी हुई है। सन् 50–51 के आंकड़ों के अनुसार, सरकारी आंकड़ों के अनुसार, स्वराज के बीस साल बाद एक किसान की या गांव वाले की आमदनी अगर 100 रू0 है तो गैर–किसान की या शहर के रहने वालों की आमदनी या दूसरा पेशा करने वालों की आमदनी 170 रू0 थी। 100 और 170, एक या पौने दो समझो टोटल और अभी 76–77 में अगर गांव वाले की आमदनी 100 रू0 है, तो शहर वाले की आमदनी 346 रूपए है। साढ़े तीन गुना हो गया वो फर्क, जो कि पहले एक और पौने दो था, अर्थात् गरीब और अमीर की खाई बजाय पटने के दुगनी चौड़ी हो गयी। कैसी नीति ? और पहले थोड़े ही साहूकार और बड़े–बड़े सेठ और पूंजीपति और उद्योगपति थे, आज बहुत बड़े–बड़े साहूकार बहुत बड़े–बड़े साहूकार नहीं कहना चाहिए, उद्योगपति कहना चाहिए, पूंजीपति कहना चाहिए। केवल एक ही मिसाल मैं दूं आपके सामने।

बिड़ला का नाम आपने सबने सुना होगा। बिड़ला के पास सन् 51 में 53 करोड़ की सम्पत्ति थी। टाटा का भी नाम सब ने सुना होगा। उसके पास 116 करोड़ की सम्पति थी। गवर्नमेंट के आंकड़ों के अनुसार और 30 जून सन् 78 को दोनों की सम्पत्ति 1100 करोड़ से ज्यादा हो गयी। बिड़ला की सम्पत्ति उन्नीस गुना बढ़ी और टाटा की नौगुना बढ़ी। तो मैं आपको कह रहा हूं कि देश की बदकिस्मती है कि गरीब–अमीर का फर्क बजाय मिटने के और चौड़ा होता जा रहा है, चौड़ा होता जा रहा है, इसका कौन जिम्मेदार है ?

तो नीतियों की गलती रही। हम उन नीतियों को बदलना चाहते हैं। इसके अलावा चौथी बात जो मैंने थोड़ा–सा इशारा किया था, यहां से वहां तक, कहना भी नहीं चाहता। अगर मुझे समय मिला, बाद में कहूंगा, अपने भाषण के, बेईमानी के बाबत। जिस मुल्क के प्रशासन में ही ईमानदारी न रही, जिस मुल्क के राजनीतिक नेता ईमानदार न समझे जाते हों, वो मुल्क कभी तरक्की नहीं कर सकता, कभी तरक्की नहीं कर सकता (तालियां)। नीतियां कितनी अच्छी बना दीजिये, बाहर से सौदा कितना ही अच्छा ले लीजिये, टैक्स लगाकर कितना ही रुपया फूंक दीजिये, लेकिन वो रुपया फुंक जाएगा, वो गरीब आदमी तक नहीं पहुंचेगा। वो खेत की पैदावार बढ़ाने में नहीं लगेगा, वो हमारी फैक्ट्रीज की पैदावार बढ़ाने में नहीं लगेगा, बीच में लोग खा जाएंगे। प्रशासन, हमारे बहुत बेईमान हो गए हैं।

लेकिन मैं उनको इतना दोष नहीं देता, जितना राजनीतिक नेताओं को। अगर होम मिनिस्टर ईमानदार हो, चीफ मिनिस्टर ईमानदार हो, तो कोई बड़ा अफसर बेईमान नहीं हो सकता उस सूबे के अन्दर। (तालियां)। और अगर ईमानदार अफसर रहेंगे, ईमानदार सुपरिंटेंडेंट पुलिस होगा, उस जिले के अन्दर बेईमान सब–इंस्पेक्टर का रहना मुश्किल है, नहीं होगा। (तालियां) लेकिन दोस्तों, और हमारे सामाजिक जीवन में जो बेईमानी है, उस सब के लिए जिम्मेदार हैं वो सब लोग, जो कि महाजन कहलाते हैं। संस्कृत का श्लोक है कि आम आदमी, महाजन जिस रास्ते चलते हैं, उस रास्ते चलता है। मान लो अगर मैं गांव का पंच हूं या मान लो सरपंच हूं या सदस्य हूं। अगर मैं गांव की जमीन अपने घर में इकट्ठी करके रख लेता हूं तो उस गांव में ईमानदारी नहीं रहेगी और लड़के भी और, और गांव के रहने वाले वो भी बेईमान हो जाएंगे। जब उनका नम्बर आयेगा, तो वो अपने बेटे को देंगे, बजाय आम आदमी को देने के, तो बेईमानी बढ़ती जा रही है।

ये चार समस्याएं हैं, जो हल करनी है। तो मैं आपसे यह कहना चाहता हूं, मैं कोई नयी बात नहीं कहता, मैं गरीब घर में पैदा हुआ हूं, इसलिए मुझे गरीबी का जात्ती तजुर्बा है। मेरे संस्कार एक गरीबी के हैं, मैं छप्पर के नीचे पैदा हुआ हूं और कच्ची मिट्टी की दीवारें उसके ऊपर छप्पर, एक काश्तकार का लडका। मेरे पिताजी काश्तकार और उनके जो तीन–चार भाई थे, वो भी काश्तकार। तो मेरे संस्कार एक गरीब आदमी के हैं–– इसलिए मैं जानता हूं कि गरीबी के क्या मतलब हैं

मैं तो सन् 57 में इस नतीजे पर पहुंच गया था कि जो रास्ता महात्माजी ने बतलाया, वो ही रास्ता सही है। अपने अध्ययन के जरिये और उत्तर प्रदेश में ( ) 46 से ले के 57 तक मैं कहता हूं कि मेरे विचार बदल गये थे। उसके बाद भी रहा, लेकिन ग्यारह साल के अध्ययन के बाद और प्रशासन के तजुर्बे के बाद, मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि दूसरे देशों की नकल जो हमारे लीडरों ने की है, अपनी अर्थ–व्यवस्था को बनाने में या बिगाड़ने में या बिगाड़ने में, वो रास्ता गलत था। रास्ता वो ही सही था, जो महात्त्मा गांधी ने बतलाया था। (तालयां)। सन् 57 से बराबर मैं कह रहा हूं, यही बात (तालियां)। नई बात नहीं है ये।

मैंने तो जब कांग्रेस के अन्दर रेवेन्यू मिनिस्टर था, सबसे बड़ी उत्तर प्रदेश रियासत का या प्रदेश का, उस वक्त भी आपके पास यहां नागपुर है, जब पंडितजी प्रस्ताव लाये थे कि सब लोग, गांव के गांव मिलकर (सहकारी) खेती करें। मैंने विरोध किया था कि अगर सबसे मिलकर खेती आपने जबर्दस्ती करा दी, तो हिन्दुस्तान बर्बाद हो जाएगा। नाराज हो गये, मुझको इस्तीफा देना पड़ा, (तालियां)। मैंने कहा, मैं अपनी बात से हटने वाला नहीं हूं, मेरा तजुर्बा है कि बाप के मरने के बाद सगे पांच भाई मिलकर खेती नहीं कर सकते हैं, तो सारा गांव मिलकर कैसे खेती करेगा ?

तो शायद कह मैं आपसे यही रहा था कि मेरी राय ये हुई कि महात्मा जो कहता था, वो ही बात सही है। क्या कहता था महात्मा ? सारी उमर उन्होंने वही कहा और उससे हमारी सारी, तीनों आर्थिक समस्या हल हो जाती थीं। जहां तक ईमानदारी की बात है, उसे कहने की जरूरत नहीं थी, उसका अपना चरित्र सब के सामने था। कितने ईमानदार थे वह। महात्माजी का कहना है कि न्यू इंडिया में उनके जो लेख निकलते थे, 'यंग इंडिया' में, ''रीयल इंडिया लिव्ज इन विलेजेस'', असली भारत गांवों में रहता है, नाट इन बाम्बे इन देहली। बम्बई–दिल्ली में नहीं रहता, खेती करता है। ज्यादा खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर दो।

किसान भी मालदार हो जाए और शहर के कारखानों का रोजगार तभी चलेगा, जबकि किसानों के खेतों की पैदावार बढ़ेगी। मुझ पर बहुत से लोग इल्जाम लगाते हैं, बहुत से लोग कि चरण सिंह केवल किसानों की बात कहता है; नहीं।

मैं किसानों की बात केवल इसलिए कहता हूं कि किसानों की तादाद ज्यादा है। अगर खेती की पैदावार बढ़ जाए तो क्या करेगा किसान उस रुपये का ? जो खेती की पैदावार बेच के लायेगा, परमात्मा करे कि मध्य प्रदेश इतना बड़ा सूबा है आपका, आप अपने सूबे का मुकाबला करो पंजाब के सूबे से। वहां कितनी पैदावार होती है, कितना वहां गौरमेंट ने जोर दिया पैदावार बढ़ाने में। आज हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा फीसदी आमदनी पंजाब के लोगों की है। उसके बाद हरियाणा आता है, और सूबे आते हैं। बिहार सबसे पीछे, उसके बाद गरीबी में उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश तीसरे नम्बर पर है। चौथे नम्बर पर उड़ीसा है। तो आप, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, बिहार गरीब सूबों में आते हैं। क्यों? क्योंकि यहां के किसानों की पैदावार कम है, कारण जो भी रहे हों। खेत की पैदावार बढ़ाने की तरफ इतना ध्यान नहीं दिया गया, जितना पंजाब – हरियाणा के लोगों ने दिया। मान लो, आपके खेतों की पैदावार दूनी हो गयी, जब बाजार में बेचोगे, तब हमारे दुकानदारों की तादाद बढ़ जाएगी। फिर वो सामान जो आपके यहां पैदा होगा, तो यहां से ट्रक भर के चलेंगे तो ट्रक चलाने वालों की और बनाने वालों की तादाद बढ़ जाएगी और किसान के हाथ में पैसा आयेगा, वह उस पैसे का क्या करेगा ? वो जरूरत का सामान खरीदेगा, कपडा खरीदेगा, जूता खरीदेगा, लड़के के लिए साइकिल खरीदवायेगा, उनकी किताबें खरीवायेगा और जो भी; घड़ी भी खरीदवा सकता है, अगर उसको जरूरत है। बहू–बेटी के लिए और सामान खरीदेगा। कच्चा मकान है, तो पक्का मकान बनाने के लिए सीमेंट और लोहा खरीदेगा।

जब इन चीजों की मांग होगी सूबे के अन्दर, तब यह मांग उठेगी गांवों से, तो उस मांग को पूरा करने के लिए अर्थात् इस सामान को पैदा करने के लिए उद्योग–धंधे अपने–आप पैदा कर लेंगे लोग, छोटी मशीन से और बड़ी मशीन से। गवर्नमेंट को विकास की जरूरत बहुत कम पड़ेगी, उद्योग–धंधे अपने आप बढ़ जायेंगे, जहां से सामान पैदा होता है ( ) और एक तो मंडी में वो बढ़े कच्चे माल को खरीदने वाले किसान को और दूसरे, उस कच्चे माल या पैदावार के बदले में किसान के पास जो पैसा आया, उसके बदले में साइकिल, घड़ी और कपड़ा बेचने वाले दुकानदारों की तादाद उसके मुकाबले और भी बढ़ जाएगी।

इस तरह मुल्क तरक्की करते हैं। खेती के अलावा तीन पेशे बढ़े हैं –– ट्रेड, ट्रांसपोर्ट, इंडस्ट्री – व्यापार, परिवहन और उद्योग। धन्धे तभी बढ़ते हैं, जबकि पहले किसानों के खेतों की पैदावार बढ़ती है। इसलिए महात्मा कहता था कि किसानों के खेतों की पैदावार बढ़ाओ। यहां पर दोस्तों, एक बात नयी और बताना चाहता हूं, जो आपको शायद नयी लगे, वैसे शायद नयी नहीं है। जिस मुल्क के अन्दर किसानों की तादाद ज्यादा होगी, वह मुल्क गरीब होगा। (शोर)

मैं उन शरीफजादों से पूछना चाहता हूं कि मतलब क्या है? मैं ये जानना चाहता हूं कि मतलब क्या है ? (शोर) देखिये, मैं अब आपसे एक बात फिर से कहना चाहता हूं कि सभ्यता का तकाजा यह है कि शांति से बात सुनें। अगर नहीं सुनना चाहते तो आपको जाना चाहिए, वरना इस तरह से डेमोक्रेसी चलने वाली नहीं।

तो मैं आपसे यह कह रहा था कि जिस मुल्क के अन्दर किसानों की तादाद ज्यादा होती हे, वो मुल्क गरीब होता है। जिस मुल्क के अन्दर गैर–काश्तकारी पेशा करने वालों की तादाद ज्यादा होती है, वो मुल्क मालदार होता है। एक तरफ मैं कह रहा हूं कि खेत की पैदावार बढे। दूसरी तरफ मेरा सुझाव आपसे यह है कि खेत पर काम करने वाले लोगों की तादाद घटे और दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़े । तो, फी–बीघे खेत की पैदावार बढ़ानी है। अच्छा खाद, अच्छा बीज, अच्छा पानी और आपके बेटों को दूसरे पेशों में जाना है, तब जा कर देश मालदार होगा।

दूसरी बात, जो महात्मा कहता था, वो ये थी कि बड़े कारखाने कम लगाओ। उतने लगाओ जितने जरूरी हैं, जिनके बिना देश का काम न चलता हो। हवाई जहाज है, छोटे पैमाने पर नहीं बन सकता, बेशक बड़े कारखाने लगाओ। रेल का इंजन है, बिजली है, लोहा, ये छोटे पैमाने पर हमारा लोहार नहीं बना सकता। बेशक बड़े कारखाने लगाओ। लेकिन अगर जो चीज छोटे पैमाने पर बन सकती है, उसे छोटे ही पैमाने पर बनाओ। (शोर)

दोस्तों, अगर आप लोगों ने अपने लीडरों से यह सीखा है कि दूसरे की सभा न होने दो। इसका आपको फायदा होने वाला नहीं है। जनता मूर्ख नहीं है, वो सब समझती है कि ये क्या हो रहा है। (तालियां) आपको शरम आनी चाहिए, अगर कोई इन्सान हैं आप तो!

तो, मैं आपसे यह कह रहा था कि खेत की पैदावार फी बीघे बढ़ानी है लेकिन खेत पर काम करने वाले, काम करने वालों की तादाद को घटाना है। दूसरे पेशों में उनको जाना है। अब आपको ये बताना चाहता हूं कि अमरीका सबसे मालदार देश है –– चार आदमी खेती करते हैं, 96 आदमी दूसरा पेशा करते है। उस वक्त हमारे मुल्क में जब अंग्रेज आये थे, 100 में 60 आदमी खेती करते थे, आज 72 आदमी खेती करते हैं। तो उस वक्त हमारा मुल्क आज के मुकाबले में ज्यादा मालदार था और आज गरीब हो गया, क्योंकि खेती करने वालों की तादाद यहां बजाय घटने के, जैसे दूसरे प्रगतिशील या मालदार देशों में घटी है, बढ़ती चली गयी, बढ़ती चली गयी। और गरीबी भी बढ़ती चली गयी। 100 में 32 आदमी उस वक्त दूसरा पेशा करते थे।

ये जो बड़े–बड़े कारखाने लगे हुए हैं, बड़ी तादाद के बावजूद 68 लाख आदमी इन कारखानों में लगा हुआ है। केवल 22 करोड़ आदमी हमारे यहां 15 या 16 साल से बड़ी उमर के ( ) के डेढ़ करोड आबादी हमारी हर साल बढ़ती है। 50 लाख लड़कों की तादाद ऐसी है, जो वर्किंग फोर्स है, काम करने की क्षमता रखने वाले आदमी हैं, उनकी तादाद हर साल बढ़ जाती है। जब आज 95 हजार कारखानों में 68 लाख आदमी लगे हुए हैं, तो हर साल जो 50 लाख हमारे नौजवान बढ़ेंगे, उनको बड़े कारखानों में रोजगार नहीं मिलेगा। इसलिए गांधी चरखा लेकर बैठा था। बड़े घर में पैदा हुआ, राजा के दीवान के घर, बैरिस्टरी करते थे और चरखा लेकर बैठ गया, हमको सिखाने के लिए कि यूरोप की और अमरीका की नकल मत करना, वहां जमीन ज्यादा है, लोहा ज्यादा है, कोयला ज्यादा है, खेत ज्यादा है, वहां बड़े कारखाने चलेंगे। वहां आदमियों की तादाद कम है, वहां मशीन की मदद की जरूरत पड़ेगी, वहां बड़े फार्म होंगे। लेकिन हमारे यहां जनसंख्या बहुत ज्यादा है, जमीन कम है, तो हमारे छोटे–छोटे फार्म होने चाहिए और छोटे–छोटे रोजगार होने चाहिए, उद्योग–धंधे होने चाहिए, दस्तकारी होनी चाहिए।

तो, हम ये कहते कि बड़े कारखाने जो लगते हैं, उससे पूंजीपति पैदा होता है, बेरोजगारी पैदा होती है। (शोर)

अब मैं आपके लीडरों से जाकर ये कहने वाला हूं कि आप सब लोगों ने रतलाम की सभा में विघ्न किया। अगर आप ये करते हैं, तो ये बात हिन्दुस्तान में छुपी नहीं रहेगी और फिर आपकी मीटिंग हो नहीं सकेगी, ये मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूं, ये बतलाना चाहता हूं। अगर थोड़ी ईमानदारी और शर्म रह गयी है, तो ईमानदारी से मेरी बात सुनो या मैं सभा छोड़ के चला जाऊंगा। पढ़े–लिखे लोग हैं, शहर में रहने वाले लोग हैं, बाकायदा डिसाइड करकके आये हैं कि मीटिंग नहीं होने देंगे लोकदल की। मैं अपना अख्तियार इस्तेमाल नहीं करना चाहता हूं। कानून में ये अख्तियार है कि दूसरे कीसभा में जो विघ्न डालेगा, वो जेल भेजा जा सकता है, वो चाहे कोई हो। (शोर)

तो मैं आपसे क्या कह रहा था? बातचीत में मेरी बात की कड़ी टूट जाती है। वो ये कि छोटे–छोटे रोजगार देश में हों, तब जाके इन लड़कों को रोजगार मिले। चाहे पढ़े–लिखे हों, चाहे बेपढ़े हों, चाहे गांव में रहते हों, चाहे शहर में रहते हों। बड़े कारखानों में रोजगार नहीं मिल सकता। वो मैंने आपको समझाने की कोशिश की।

तो ये दो नीतियां हमारी, अगर हमारे हाथ में अख्तियार आता है, तो हम बड़े–बड़े कारखाने जो ऐसा सामान पैदा कर रहे हैं, जो हाथ से बन सकता है, मसलन कपड़े बनाने का कारखाना, क्या जरूरत है? चरखे–करघे से हमारा इतना अच्छा कपड़ा बनता था कि अंग्रेज जब आये, अंग्रेजों के मुल्कों में जाता था। अंग्रेज ने उन पर टैक्स लगा दिया 80 फीसदी, तब भी बिका। 1817 में उन्होंने कानून बना दिया अपनी लोकसभा में कि हिन्दुस्तान में हाथ से बने कपड़ों को जो अंग्रेज पहनेगा, तीन महीने की सजा होगी।

इस तरीके से दोस्तों, हमारी दस्तकारियां खत्म हुईं। हाथ का बना हुआ सामान घरों में बनता है बजाय मशीन के लेकिन मशीन नहीं लगनी चाहिए कि हाथ कमायें आमदनी ज्यादा हो व छोटे रोजगार लगे; तो वो अंग्रेजों ने खत्म किये। अब आजाद होने के बाद हमारी वही पुरानी नीति अंग्रेजों के जमाने की चल रही है। उस सामान को पैदा करने के लिए, जो दस्तकारी से, हस्तकला से, छोटे पैमाने, छोटी मशीन से बन सकता है, उसके बनाने के लिए बड़े–बड़े कारखाने लगा रहे हैं, कई–कई सौ करोड़ के। 300 करोड़ का कारखाना एक गुजरात में बन रहा है, कितने आदमियों को रोजगार मिलेगा ? 500 आदमियों को, क्यों ? 300 करोड़, ज्यादा से ज्यादा रोजगार 500 आदिमयों को मिलेगा। तो हम छोटी–छोटी इकाई चाहते हैं। (शोर)

तो दोस्तों, मैं आपसे यह कहना चाहता था कि हमारा इरादा यह है कि बड़े कारखानों के मालिकों को हमारा हुकुम यह कि जो सामान छोटे पैमाने पर कस्बों और गांवों में बनता रहा है, हाथ के जरिये अब तक, अगर आप वो सामान बनाते हैं तो कारखाने को बेशक चलाओ, लेकिन हिन्दुस्तान के बाहर तुम्हारा सामान बिकेगा और हिन्दुस्तान के अन्दर तुम्हारा सामान नहीं बिकने दिया जाएगा, ताकि लोगों को रोजगार मिले, (तालियां), यह हमारा इरादा है।

तो, अब रही ईमानदारी की बात, वो तो मैं आपसे कह ही चुका हूं। ईमानदार नेताओं की जरूरत होती है और बिना ईमानदार नेताओं के ईमानदार शासक नहीं होंगे। आज हमारे यहां ––

मैं जनसंघ के दोस्तों, आपको बताये देता हूं और आज ऐलान किये देता हूं कि लोकदल के शासन –– लोगों से ये बात छिपी नहीं है। आज यू0पी0 के अन्दर एक भी सभा तुम कर नहीं सकोगे, बतलाये देता हूं, हरियाणा में नही कर सकोगे, बिहार में नहीं कर सकोगे, क्या मायने हुए इस बात के ? जान–बूझकर शोर मचाना, क्या मतलब है? कोई लज्जा, कोई शराफत। लेकिन नहीं, वो एक संगठित तरीके से आये हैं, सभा को बिगाड़ने के लिए।

तो दोस्तों, मैं यह कह रहा था। आज हमारे यहां ( ) का, वकालतखाने में या चेम्बर आफ कामर्स में यही होता है कि फलां आदमी बड़ा ईमानदार है, फलां अफसर ईमानदार है, फलां चेयरमैन ईमानदार है, क्यों ? इसलिए कि बाकी ज्यादातर लोग ईमानदार नहीं है। जिस चीज का अभाव है, उसी का जिक्र होता है। ईमानदारी का अभाव है, इसलिए उंगली दिखाते हैं ईमानदार की तरफ कि फला आदमी ईमानदार है। जनसभा में बैठकर उंगली उठायी जाती है ईमानदार आदमियों पे। वो देश खुशकिस्मत है, जहां बेईमान आदमियों का जिकर होता है, इसका मतलब है, वहां सब ईमानदार हैं। लेकिन फला आदमी बेईमान है। ये तभी होगा जब ईमानदार लोगों को चुनें।

अब ये दोस्त, ये नौजवान इसलिए आये, इनको ये मालूम होना चाहिए जो इनके हाथ में आज मध्य प्रदेश की हुकूमत है, तो मैं नयी पार्टी एक ईमानदारी से बनाना चाहता था। मेरे सामने जनता, कांग्रेस और सोशलिस्ट और भारतीय लोकदल का कोई सवाल नहीं था। जो उसके लीडर को हमने कनवीनर बनाया था, उसको हमने टिकट दे दिया, चुनकर आ गये। शासन आपके हाथ में है, मैं दूसरों को टिकट देता, तो एक दिखलायी नहीं देता, बतलाये देता हूं, (तालियां)। इंदिरा अकेली डिक्टेटर है, आपका ऑर्गेनाइजेशन डिक्टेटरशिप देश के अन्दर लाना चाहता है। वो अकेली है, आज नहीं कल, कल नहीं परसों चली जाएगी। लेकिन आप संगठन पैदा कर रहे हो। इसमें हिन्दू और मुसलमान का देश बना रहे हो। मगर आप हिन्दू राष्ट्रवाद करना चाहते हो, हिन्दू राष्ट्र कायम करना चाहते हो, आपके दिल के अन्दर ये बात छिपी हुई है। (तालियां) तो, यह नहीं होने पायेगा, हरगिज नहीं होने पायेगा। हम सारे हिन्दुस्तानियों को एक समान समझते हैं, चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे ईसाई हो; और हिन्दुओं के अन्दर चाहे वो किसी बिरादरी का हो, उसका बराबर का हक है, छोटी–से–छोटी बिरादरी के सदस्य का भी, यह हमारा धर्म है। आप ताज्जुब करेंगे, मैंने जाना है कि आप हिन्दुओं की छोटी बिरादरी के खिलाफ हैं, मुसलमानों के खिलाफ तो थे ही छोटा गरीब हिन्दू अगर हरिजन है, तो उससे भी आज बराबरी का वर्ताव नहीं करना चाहते। इन्हीं शब्दों के साथ दोस्तों, मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है, जो मैं रतलाम में देख रहा हूं और जब आपके चीफ मिनिस्टरजी से पूछूंगा तो वो इंकार करेंगे कि नहीं, ऐसा नहीं हुआ। ये भी बतलाये देता हूं। वो यही कहेगा कि नहीं, ऐसा हुआ ही नहीं, क्योंकि सच्चाई और गैर –सच्चाई का उसको फर्क मालूम नहीं है, नहीं है दोस्तों, (तालियां)।

हां, पानी की जो बात ,आज सूखा पड़ा हुआ है उत्तर प्रदेश में (तालियां), राजस्थान में, मध्य प्रदेश में और उड़ीसा के बहुत से हिस्से में। अब दो सवाल हैं –– अन्न का और पानी का। हमने आपके चीफ मिनिस्टर से कहा हुआ है, आपकी गवर्नमेंट से कहा हुआ है और अभी चीफ सैक्रेटरी को बुलाया था, नौ सूबों में सूखा है। उनको हमने 9 तारीख को दिल्ली में बुलाया था। उनसे उस वक्त कह दिया, लिख के दे दिया कि फूड फार वर्क योजना शुरू

करवाओ, जो लोगों को अन्न की जरूरत है, बजाय पैसे देने के उनको अन्न दो और जितने अन्न की जरूरत होगी, हम आपको देंगे। (तालियां)

लेकिन हमारे खिलाफ प्रचार यह होता है जनसंघ के लीडरों और मिनिस्टरों की तरफ से कि हम तो मदद करना चाहते हैं गरीबों की, लेकिन क्या करें केन्द्र की, दिल्ली की सरकार हमारी नहीं है, लोकदल की है, इसलिए नहीं देते। ये झूठ और बेईमानी का प्रचार फैला रहे हैं। रतलाम के दोस्तों, मैं भरी सभा में कहता हूं कि हमने अन्न के लिए कभी मना नहीं किया। अब मैं ऐलान किये देता हूं कि 'फूड फार वर्क प्रोग्राम' के लिए जितने अन्न की जरूरत होगी, क्योंकि हमारा भंडार भरा हुआ है अन्न से, हम उतना स्टॉक आपको देंगे और हमारे खिलाफ जो प्रचार किया है झूठ और बेईमानी का, वो खत्म हो जायेगा। (तालियां)

पानी की समस्या जरूर है। पानी इकट्ठा नहीं किया जा सकता और बरसात जो इतनी कम हुई है कि बहुत–सी नदियों का पानी भी कम हो गया। उसके लिए रिग्स चाहिए, मशीन चाहिए, खास तौर से पथरीली भूमि में कुँआ खोदने के लिए, तो वो हमारे यहां आज 'इंडिया नेशनल गैस औरगेनाइजेशन' है, उसके पास कुछ नहीं है। उनसे हमने मालूम किया और उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश को, राजस्थान को और उत्तर प्रदेश को भेज दिया। उनका कहना यह है कि ये जो रिग मशीन है, हमारे पास, ये पथरीली जमीन में काम करने वाली नहीं। तो, फौज के लोगों से भी हमने कहा, मिनिस्टरी, इंजीनियर निर्दोष हैं। लेकिन उन्होंने एक एतराज किया, जो एतराज उनका सही है, जिससे हम उनसे नहीं लेना चाहते और उनके पास इतनी हैं भी नहीं। हमने दूसरे देशों से भी कहा है और हमारे राजदूत जो दूसरे देशों में हैं, उनसे भी कहा कि जहां जितनी रिग मशीन हैं, ले लो। दस हजार हों, उन सब को खरीद लो। रूपये की परवाह न करो (तालियां)। जानता हूं कि कितनी हमारी कोशिश हो, लेकिन रिग ऐसी नहीं है कि महीने में बन जाए, दो महीने में बन जाए, 6 महीने से 9 महीने तक लग जाएं। लिहाजा दोस्तों, पानी का तनाव जरूर एक संकट पैदा करने वाला है और हमारी परेशानी है कि हम उसका क्या इलाज करें, लेकिन जितना हो सकता है, हम चाहते हैं कि वो हम करें।

मुझे सबसे ज्यादा चिंता इस बात की है कि अगर नवम्बर के आखिर तक या दिसम्बर के आखिर तक वर्षा न हुई, तो फिर इसका मतलब यह हुआ कि रबी की फसल भी खराब हो जाएगी। होना यह चाहिए था कि अंग्रेज के जमाने में साढ़े सत्रह फीसदी रकबे पर आबपाशी थी, साढ़े सत्रह फीसदी, अब 25 है। अमरीका से अन्न मंगाते हैं हम खरबों रूपये का, बजाय अपने खेतों की पैदावार बढ़ाने के लिए सिंचाई का प्रबंध कर दें। अब तक स्थिति हमारी यह रही कि जो पहले सरकार में रह चुके हैं कि यहां बड़े–बड़े कारखाने लगाओ, अन्न दूसरे देश से मंगाओ।

हमारा यह विश्वास है कि हम अपने देशवासियों को पहले अन्न का अधिकार देना चाहते हैं, यही नहीं, हम अपने देश के अन्दर इतना अन्न पैदा करना चाहते हैं कि दूसरे देशों को बेचें, क्योंकि हमारी जमीन अच्छी है, हमारे यहां सूरज की किरणें खूब पड़ती हैं, जिनसे कि फसल पकती है। हमारे यहां पानी भी बरसात का खूब होता है, जिसको कि जमा करके नहरें निकाल सकते हैं। तो दूसरे देशों की बजाय कारखाने का सामान भेजने के खेत की पैदावार भेजने का हमारा मंशा है, क्योंकि जैसा मैंने कहा, दूसरे देशों में अन्न की कमी पड़ेगी और दूसरे देश हमारे जैसे देशों से अन्न मंगायें। लेकिन इसके लिए सबसे बड़ी जरूरत है

आबपासी की। आबपाशी केवल। 25 फीसदी कम से कम आबपाशी होनी चाहिए। पंजाब में 80 फीसदी रकबे में है आबपाशी, इतना उन लोगों ने ध्यान दिया। सूखा उतना ही है, जितना आपके यहां, लेकिन उनके लोगों को उतना कष्ट नहीं।

तो हम यह चाहते हैं कि हमारे आधे से ज्यादा रकबे में एक बारआबपाशी का इंतजाम हो जाता। लेकिन उसमें समय लगेगा (तालियां)। हमारे गांवों की उपेक्षा होती रही। सब कुछ बड़े–बड़े शहर, दिल्ली, और बम्बई में खर्च होता रहा, क्यों ? हमारे नेता ईमानदारी से चाहते थे कि हमारा देश उठे। उन्होंने कुर्बानी दी। उनकी नीयत खराब नहीं थी। लेकिन गांव का उनको जाती तजुर्बा नहीं था। गांव की समस्याओं को नहीं समझते थे, केवल कारखाने की समस्या समझते थे, इसलिए शहर के शहर पहले तरक्की करते चले गये और गांव पहले के मुकाबले और पिछड़ते चले गये, पिछड़ते चले गये। तो हम चाहते हैं गांव को उठाना।

फिर मैं कहता हूं कि असली भारत गांव में रहता है, बम्बई और रतलाम में नहीं रहता है। लोग ये कहते हैं कि मैं, चरण सिंह केवल किसानों की बात करता है, नहीं, जब मैं किसानों की बात करता हूं तो उस वक्त गैर–किसानों के लाभ की बात भी मेरी नजर में है, क्योंकि किसान खुशहाल होगा, तभी गैर–किसान खुशहाल होगा। ये हो नहीं सकता कि किसान बर्बाद हो जाए और एक दुकानदार मालदार हो जाए। हो नहीं सकता। (तालियां) तो किसानों की खुशहाली में छिपी हुई है शहर वालों की खुशहाली, इसलिए किसानों को मैं प्रायोरिटी देता हूं, पहला नम्बर देता हूं, जब खेत की पैदावार बढ़ेगी, तभी देश की खुशहाली बढ़ेगी।

इन शब्दों के साथ, बावजूद इसके कि मुझको इस बात का मानसिक कष्ट है कि कुछ लोगों ने जानबूझकर विघ्न डालने की कोशिश की, लेकिन आप लोगों ने शांति से मेरी बात सुनी, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं और मैं चाहता हूं कि मेरे साथ आप तीन नारे लगायें और मुझे जाने की इजाजत दीजिये ––

भारत माता की जय।
भारत माता की जय।।
महात्मा गांधी की जय।
महात्मा गांधी की जय।।
लोकदल की जय।
लोकदल की जय।।

————————

दिनांक 12 नवम्बर, 1979 को मुरैना, मध्य प्रदेश में, प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का उद्‌बोधन

————————————————————

मान्यवर सभापति जी, बहनों और दोस्तों,

अभी कोई डेढ़ महीने के अंदर हिंदुस्तान की बड़ी पंचायत, जिसका नाम लोकसभा है, उसका चुनाव होने जा रहा है। यहॉ तीन दल हैं, सारे हिंदुस्तान में जिनके उम्मीदवार खड़े हुए हैं। वो आपसे वोट मांगने आयेंगे। एक दल तो इंदिरा जी का है, उसका नाम ही इंदिरा की कांग्रेस है, दूसरा है जनसंघ का, कुछ लोग कांग्रेस के साथ हैं, लोग उनके साथ हैं, मोराजी देसाई के जो साथ थे उनके लीडर हैं – जगजीवनराम जी, जिन्होंने इमरजेंसी का प्रस्ताव पेश किया था और जब चुनाव आया तो कांग्रेस को छोड़कर जनता पार्टी में शामिल हो गये। तीसरा है लोकदल और कांग्रेस के वो लोग, चव्हाण वगैरह जो कि इंदिरा जी से नाराज थे, इस बात पर कि इमरजेंसी लगाने पर उन्होंने अफसोस प्रकट नहीं किया। वो कहते थे गलती हुई है, गलती स्वीकार करनी चाहिए। इंदिरा ने कहा हमारी कोई गलती नहीं है, तो वो छोड़कर हमारे साथ आ गये। तो ये लोकदल कांग्रेस गठबंधन कह सकते हैं इसे। यह नयी टीम इसी लोकदल गठबंधन की ओर से है।

तो मैं आपको यह मशविरा देना चाहता हूं कि अगले चुनाव में हिंदुस्तान का प्रबंध कैसा हो, वो सरकार के द्वारा तय होगा, तो आप हमारी पार्टी को वोट दें। सवाल यह होता है क्यों ? और पार्टियों को क्यों न वोट दी जाये ? तो मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि हिंदुस्तान की जो चार बड़ी–बड़ी समस्याएं हैं, उनका इलाज या समाधान हमारी पार्टी के पास है और किसी के पास नहीं। चार बड़ी–बड़ी समस्याएं या मसले जो हिंदुस्तान के सामने हैं, वे यह हैं : एक तो हमारे देश की गरीबी और गरीबी ही नहीं समय बीतने के साथ गरीबी का बढ़ते जाना। जब इंदिरा जी ने सन् 66 में देश का चार्ज संभाला था तो उससे पहले साल 64–65 में 125 देशों में से हमारे देश का नंबर 85वां था। 84 देश हमसे मालदार थे और 40 देश हमसे गरीब थे। 8 साल बाद सन् 76 में हमारे देश का नंबर 104 हो गया। 103 देश गरीब और 21 देश .... नहीं, 103 देश मालदार और 21 देश गरीब। तीन साल के अंदर ही 73 के बाद 76 में हम आठ पोजीशन और नीचे खिसक गये। आज हमारा नंबर 111वां है, अर्थात 110 देश हमसे मालदार हैं और केवल 14 देश, जिनमें से बहुतों के नाम न आपने सुने हैं न मैंने सुने हैं, जिनकी आबादी दस–दस लाख के करीब है, अधिकतर वो देश हैं, जो आज हमसे गरीब हैं।

तो मैं आपको यह बतलाना चाह रहा था कि गरीबी है, होती है, गरीबी के कुछ कारण होते हैं। मिटने की बजाय स्वराज होने के बाद हमारी गरीबी दूसरे देशों की अपेक्षा बढ़ी है। हम पीछे खिसकते गये हैं। एक तो समस्या है गरीबी की। इसी सिलसिले में यह बताना चाहता हूं कि हमारे प्लानिंग कमीशन के अनुमान के अनुसार 48 फीसदी आदमी हमारे देश में कुपोषण के शिकार हैं, अधिकतर वो गांवों में रहते हैं, थोड़े बहुत शहर में भी हैं और दूध हमारे यहां पहले से ही बहुत कम हो गया था। अंग्रेजों के जमाने में भी सबको दूध नहीं मिलता था। अब तो हमारे बच्चों को भी दूध नहीं मिलता। दूध दवा बनकर रह गया है, इन 48 फीसदी आदमियों के लिए। यह तो गरीबी का हाल है।

और दूसरी बात है बढ़ती हुई बेरोजगारी की। जैसे गरीबी हुई है, बढ़ती हुई गरीबी, ऐसे ही समय बीतने पर हमारी बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। शहर में एक करोड़ 40 लाख आदमियों ने काम–दिलाऊ दफ्तर में नाम लिखवाया हुआ है, कि हम रोजगार चाहते हैं। पढ़े–लिखे लड़के एफ0ए0 पास, बी0ए0 पास, एम0ए0 पास, इंजीनियरिंग, डाक्टर, ये मारे–मारे

फिरते हैं। बहुत से लड़के हमारे यहां से दूसरे देशों में नौकरी करने को चले जाते हैं। हिसाब यह लगाया गया है कि 85 किसानों की आमदनी जो साल भर में होती है, उतना गवर्नमेंट का खर्च होता है, एक लड़के को बी0ए0 पास कराने में।

तो इस गरीब मुल्क का इतना खर्च कराकर हमारे लड़के मुल्क के विकास में मददगार नहीं हो पाते हैं, क्योकि उनको रोजगार नहीं मिलता। वो दूसरे देशों में जाकर मदद करते हैं—मालदार देशों की, अपनी सेवा और पुरूषार्थ के जरिये। यही नहीं कि हमारे यहां से पढ़—लिख कर लड़कों को दूसरे देशों को जाना पड़ता है बल्कि बहुत से लड़के पढ़ने ही चले जाते हैं—हजारों जर्मनी, अमरीका और इंग्लैंड और फिर वापस नहीं आते, वहीं बस जाते हैं।

तो यह बेरोजगारी है शहर के पढ़े—लिखे लोगों की। गांव में भी बेरोजगारी बढ़ती जाती है। जमीन जो प्रकृति ने या इतिहास ने हमको दी थी, वो दादे—परदादों के जमाने में जितनी थी, उतनी ही आज है। हमारी तादद बढ़ती जाती है, जमीन नहीं बढ़ेगी। सन् 1857 में 18 करोड़ आबादी थी हिंदुस्तान की। आज 85 करोड़ है, बंगला देश और पाकिस्तान को शामिल करके। साढ़े चार गुना पौने पांच गुना आबादी बढ़ गयी, लेकिन जमीन जितनी तब थी उतनी अब है। तो अभी सन् 70—71 में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ने एक संस्था से सर्वे या सर्वेक्षण करवाया था, यह जानने के लिए कि कितने आदमियों पर कितनी—कितनी जमीन है और कितनी जमीन में क्या फसल होती है और कितनी जमीन में सिंचाई है और कितनी जमीन में सिंचाई नहीं है। यह कहलाता है 'एग्रीकल्चरल सेंसस 1970—71'।

आप लोग खामेशी से मेरी बात सुनिये। ये मालूम होता है जनसंघ के या आर0एस0एस0 के लड़के कुछ शोर मचाना चाहते हैं। आप खामोशी से मेरी बात सुनो। तुमने यही सीखा है?

तो एक तिहाई किसान हमारे यहां ऐसे हैं, जिनके पास दो बीघे से कम जमीन है। दो बीघे से कम जमीन, एक तिहाई (33 फीसदी); और 18 फीसदी किसान हमारे यहां ऐसे हैं, जिनके पास दो बीघे से चार बीघे तक जमीन है और 19 फीसदी किसान हमारे यहां ऐसे हैं जिनके पास दो बीघे से ... 4 बीघे। 33 और 18 बराबर 51 और 19 बराबर 70। 70 फीसदी किसान ऐसे हैं जिनके पास एक बीघे से 8 बीघे तक जमीन है। इससे कैसे गुजर हो सकती है ? नहीं हो सकती! ये लोग एक तरीके से अर्द्ध रोजगार हैं, आधा समय इनका खाली जाता है, बल्कि आधे से भी ज्यादा जाता है। बेरोजगारी हमारे गांवों में बढ़ गयी। जब अंग्रेज आये थे बल्कि उससे कुछ बाद तक हमारे यहां सौ में सत्तरह थे खेतीहर मजदूर, जिनके पास जमीन एक बीघा भी नहीं थी। अब इनकी तादात साढ़े छब्बीस फीसदी है।

तो मजदूरों की तादाद गांव में बढ़ गयी, जो खेतों पर मजदूरी करते हैं। क्योंकि जमींदारों ने किसानों की जमीन छीन ली और वे बेचारे मजदूर हो गये। बहुत से लोगों की जमीन छीन ली, उनके पास थोड़ी—थोड़ी जमीन रह गयी। अब यहां मेरे पास मेरा मजमून नहीं बताने का, लेकिन यह बतलाये देता हूं चलते—चलते आपको कि बड़े किसानों की तादाद सन् 60 में 23 लाख थी, जिनके पास 25 एकड़ से ज्यादा जमीन थी। सन् 71 में उनकी तादाद बढ़कर 28 लाख हो गयी। इस तरह कांग्रेस वालों ने जमींदारी को खत्म किया।

तो खैर ! गांव में भी बेरोजगारी बढ़ती जाती है और बढ़ती जाती है। और तीसरी बात यह है तीसरी समस्या सबसे बड़ी है कि गरीबी—अमीरी का अंतर बजाय पटने के, कम होने के चौड़ा होता जा रहा है। अंग्रेजों के जमाने में ये नयी पीढ़ी के लोग महात्मा गांधी के नेतृत्व में

देश के लिए संघर्ष कर रहे थे तो हमारा तर्क यह होता था अंग्रेजों के खिलाफ कि उनके जमाने में गरीब और अमीर का अंतर बढ़ गया है। शहर और गांव का अंतर बढ़ गया है। बड़े सेठ पैदा हो गये जो पहले नहीं थे। स्वराज मिलेगा तो हम इस खाई को पाटेंगे। लेकिन दोस्तों। ठीक उल्टा हुआ। एक किसान या गांव वाले की आमदनी अगर सन् 50–51 में सौ रूपये थी तो शहर वाले की आमदनी पौने दो सौ रूपया थी। सन् 77–78 में अगर गांव वाले की आमदनी सौ रूपये थी तो शहर वाले की या खेती के अलावा दूसरा पेशा करने वाले की औसत आमदनी 346 रूपया। सौ और पौने दो सौ और सौ और साढ़े तीन सौ। पहले एक और पौने दो का फर्क अब एक और साढ़े तीन का। तो और जैसा मैंने कहा शहर में भी गरीब आदमी हैं। उनको भी निकाल दो तो शहर के चंद आदमियों के पास देश की आर्थिक सत्ता का केंद्रीकरण होता चला जा रहा है। इकट्ठी होती जा रही है चंद लोगों के हाथ में सारी दौलत। सेठ उस वक्त भी थे लेकिन कुछ कम। आज सेठों की जायदाद भी बढ़ गयी है और तादाद भी बढ़ गयी है। बिड़ला, टाटा का आपने शहर में नाम सुना होगा, सिर्फ दो के आंकड़े बताये देता हूं। बिड़ला के पास 116 करोड़ की संपत्ति थी सन् 50–51 में अब 1100 करोड़ की संपत्ति है। नौ गुना मालदार हो गया है। बिड़ला की जायदाद उससे टाटा से आधी भी नहीं थी– 53 करोड़ लेकिन वो भी आज 1100 करोड़ की सम्पत्ति का मालिक –– उसकी जायदाद बढ़ गयी है 19–20 गुना। तो इस तरीके से गरीब और अमीर का फर्क बढ़ता चला जा रहा है। गांव और शहर का फर्क बढ़ता चला जा रहा है। बड़े सेठों की तादाद बढ़ती जा रही है और उनकी संपत्ति भी बढ़ती जा रही है।

तो तीन बातें – देश की गरीबी बढ़ती जा रही है, बेरोजगारी शहर और गांव में बढ़ती जा रही है और गरीब और अमीर का फर्क भी और चौड़ा–चौड़ा होता चला जा रहा है। समय बीतने के साथ। लेकिन सब से ज्यादा खराबी इस बात में है, जो देश के लिए घातक सिद्ध होगी और हो चुकी है एक प्रकार से, वो यह कि अंग्रेजों के जमाने में छोटे–मोटे कर्मचारी कुछ रिश्वत ले लिया करते थे। हम यह समझते थे कि क्योंकि हमारा देश गुलाम है इसलिए हम रिश्वत से निकल नहीं पा रहे हैं। देश आजाद होगा तो हमारे यहां रिश्वत बंद हो जायेगी। लेकिन दोस्तों ! इस बात में भी ठीक उल्टा हुआ। हमारे कर्मचारियों ने भी, राज–कर्मचारियों ने भी रिश्वत लेनी शुरू कर दी। लेकिन मैं उनको इतना दोष नहीं देता। असल दोष तो राजनीतिक नेताओं का है। वह भ्रष्ट हो चुके हैं, जिसकी वजह से हमारे कर्मचारियों पर उनका कोई कंट्रोल नहीं होता। अगर आपके सूबे का चीफ मिनिस्टर भ्रष्ट हो और उसका कोई यश न हो, बदनाम हो, किसी दूसरे सूबे का भी चीफ मिनिस्टर अगर बदनाम हो, गृहमंत्री अगर रिश्वत लेता हो तो फिर सिविल एंड पुलिस कमिश्नर से यह उम्मीद करना कि वह ईमानदार होगा यह मुश्किल है। यह उम्मीद करना गलत होगा। अगर प्राइम मिनिस्टर रिश्वत लेता हो या सेठों से रुपया इकट्ठा करता हो, इलेक्शन के नाम पर तो भी देश के अंदर ईमानदारी नहीं हो सकती। कोई भी सक्रिय देश टूट जायेगा। संस्कृत का एक श्लोक है जो मुझे ठीक याद नहीं है लेकिन जिसका अर्थ यह है कि महाजन जिस रास्ते जाते हैं, मामूलीजन भी उसी रास्ते चलते हैं। सर्वसाधारण बड़े आदमियों की राह चलते हैं। तो हम लोगों ने हमारे देश में आजादी के बाद जो महाजन हुए, बड़े आदमी हुए, जिनके हाथ में आर्थिक सत्ता आयी उन लोगों के चले जाने के बाद धीरे–धीरे सब नीचे की तरफ जा रहा है। आज की जो युवा पीढ़ी है मुझे उसके साथ बड़ी हमदर्दी है और मेरी समझ में नहीं आता कि ये लोग क्या करेंगे! जो

मेरी पीढ़ी के लोग थे, सब जवान थे स्कूल और कॉलेज में पढ़ते थे, मैंने सन् 1919 में मेरठ में गवर्नमेंट स्कूल से हाई स्कूल पास किया था, मेट्रीकुलेशन। उसके बाद मैंने एम0ए0 पास किया सन् 1925 में, आगरा कॉलेज से। तो उस जमाने में जो मेरी पीढ़ी के लोग थे, हमारे सामने बड़े–बड़े महापुरूषों के आदर्श मौजूद थे तीन तो संन्यासी हो चुके थे बड़े–बड़े स्वामी दयानंद, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द, इस्लाम के लोग, सन्यासी लोग उनका चरित्र और उनके उपदेशों को पढ़ा करते थे। उनकी जीवनी पढ़ा करते थे। फिर राजनीति के क्षेत्र में महात्मा गांधी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, शेरे पंजाब लाला लाजपत राय, पं0 मालवीय वगैरह–वगैरह अनेक लोग थे, जो हमारे लिये आदर्श थे। आज जो हमारी युवा पीढ़ी है स्कूल और कालेज में पढ़ती है उसके सामने क्या आदर्श हैं और किससे क्या सीखा है? किसके कदमों पर चलकर अपने जीवन को ढालें और अपने देश को बड़ा बनायें। इंदिरा की नकल करेंगी क्या हमारी बहू–बेटियां ? जगजीवन राम से कोई सबक मिल सकता है इनकी जिंदगी से ? अरे भाई हिंदू–संस्कृति की बात करते हैं, तो वो वाली बातें गयीं। अगर उनके बारे में मालूम करेंगे तो क्या उनके जीवन से हमारे नौजवानों को कोई सबक मिलेगा ? क्या मोरारजी भाई और कांति देसाई के जीवन से और अमल से कोई सबक हमारे बच्चों को मिलेगा। क्या जनता पार्टी का जो चेयरमैन है चंद्रशेखर इसको भी मैंने ही बनाया था, मुझे नहीं मालूम था। उसका जीवन जाकर देखो, उससे कोई सबक मिलेगा। बहुगुणा से सबक मिलेगा, किससे सबक मिलेगा ? लड़के जायें तो कहॉ जायें। जिस देश में आइडियल नहीं रहता, ''जिस देश की युवा पीढ़ी में कोई आदर्शवादिता नहीं रहती, जिनके सामने अच्छी मिसाल नहीं होती है, ऐसे देशों का भविष्य अंधकारमय होता है दोस्तों''। तो आज हमारे देश का भविष्य अंधकारमय है। कई बरस से मिनिस्टरी करने के बाद और तजुर्बे के बाद और अध्ययन के बाद मैं इस नतीजे पर सन् 1957 में पहुंच गया था कि देश के आर्थिक विकास को दिखाने का एक ही तरीका है और वो तरीका है महात्मा गांधी का तरीका। हमको दूसरे देशों की नकल करने से नुकसान होगा।

महात्मा दो सीधी सी बात कहते थे कि असली भारत गांवों में रहता है बम्बई , दिल्ली या कलकत्ते में नहीं रहता। वो खेती करता है। तो खेती की पैदावार जब तक नहीं बढ़ेगी, देश की गरीबी नहीं हटेगी और जब खेत की पैदावार बढ़ेगी, तभी दूसरे पेशे भी बढ़ेंगे। जब किसान की पैदावार बढ़ जाती है, बाजार में कुछ बेचता है, उसकी जेब में कुछ पैसा आता है तो वो दुकान पर जाकर देता है, दुकानदारी बढ़ जायेगी, दुकानदार बढ़ जायेंगे। किसान बढ़ती आमदनी के पैसे से अपनी जरूरत की चीजें खरीदेगा। मकान पक्का बनायेगा, तो सीमेंट और लोहा खरीदेगा। बैल अच्छा खरीदेगा, खाद अच्छी खरीदेगा। बेटे को पढ़ायेगा, उसके लिए कपड़ा और साइकिल और अगर लड़का अच्छा हुआ पढ़ने में, तो उसके लिए घड़ी खरीदेगा। बहू–बेटी के लिए अच्छा सामान खरीदेगा। हजार चीज की जरूरत होती है, तो जो खेत में पैदा नहीं होता, उसे खरीदने के लिए जब पैसा आ गया, पैदावार उसकी बढ़ी, उसको बेचने के बाद, कारखानों में बना सामान वह खरीदेगा। उस सामान को पैदा करने के लिए छोटी–मोटी मशीनें उद्योग–धंधे अपने आप लग जायेंगे। तब बड़े शहरों में दूसरी चीजें बननी शुरू हो जायेंगी, किसान की जरूरत का सामान बेचने के लिए। खेती के अलावा तीन ही (.....) बढ़ेगा ...रोड ट्रांसपोर्ट और उपज। (.....) उद्योग धंधे और परिवहन वो सब खेत की पैदावार बढ़ने से बने हैं। बहुत से लोग दोस्तों कहते हैं शहर के, लोग शिकायत करते हैं कि

चरण सिंह किसान की बात कहता है, यहां की बात नहीं कहता। लेकिन दोस्तों मैं यह कहता हूं कि शहर तभी पनपेंगे, जब गॉव खुशहाल होंगे, जबे किसान खुशहाल हांगे। अगर किसान खुशहाल नहीं होगा, तो शहर पनप नहीं सकते, शहर चल नहीं सकते। दुकानें और (.....) चल नहीं सकतीं हैं। इसलिए मैं किसान की बात कहता हूं, क्योंकि किसान ही यहां सबसे ज्यादा हैं। फिर दोहराता हूं– किसान के खेतों की पैदावार अगर नही बढ़ी तो देश के बढ़ने का कोई सवाल उठता ही नहीं।

दूसरी बात महात्मा यह कहता था कि बड़े कारखाने बहुत कम लगाओ। हवाई जहाज बनाने के लिए बहुत–सा सामान, टैंक और गोली बारूद बनाने के लिए बेशक बड़े कारखाने लगाओ, हमारे लोहार नहीं बना सकते। बिजली पैदा करने के लिए, फौलाद पैदा करने के लिए, रेल का इंजन बनाने के लिए, मोटर बनाने के लिए – उनकी राय में मोटर अपने देश में बहुत कम होनी चाहिए– लेकिन जो कुछ हों, तो उनके बनाने के लिए बड़े–बड़े कारखानों की जरूरत होगी लेकिन जो चीज हाथ से बन सकती है और सैकड़ों वर्ष से अपने देश में बनती आ रही है, उसे बनाने के लिए बड़े कारखाने मत खोलो। जैसे कपड़ा हमारे देश में हाथ से बनता था। ढाके की मलमल दुनिया भर में मशहूर थी और किसान बनाते थे इसको। ये नहीं कि कोई जुलाहे अलग (.....) किसान ने आधा वक्त लगाया अपना खेत में और बाकी आधा वक्त लगाया किसी दस्तकारी में, कपड़े वगैरह बनाने में।

हजार चीजें हैं जो हाथ से बनती थीं। जब अंग्रेज आया था, तब 60 फीसदी आदमी खेत में काम करते थे और 25 फीसदी आदमी दस्तकारी में लगे हुए थे। अंग्रेज के जमाने में किसानों की तादाद 72 हो गयी थी। क्योंकि दस्तकारियां उस समय खत्म कर दीं अपने कारखाने के हित में इंग्लैंड के जो कारखानेदार थे उनके कारखाने का सामान हिंदुस्तान में बिका, तो हिंदुस्तान की दस्तकारी जिसमें 25 फीसदी आदमी लगे हुए थे वो बेरोजगार हो गये, दस्तकारियां खत्म हो गयीं। उन लोगों ने जो बेरोजगार हो गये (.....) पकड़ी। उनकी तादाद 72 हो गयी, खेती करने वालों की, और जो लोग दस्तकारी करते थे, उद्योग–धंधे करते थे, उनकी 25 फीसदी से ज्यादा तादाद घटकर दस हो गयी। आज दस फीसदी उद्योग–धंधे में लगे हुए हैं और 72 फीसदी खेत में लगे हुए हैं। एक और बात जल्दी मैं बता देना चाहता हूं आपको, जिस मुल्क में किसानों की तादाद ज्यादा होती है, मुल्क गरीब होता है। जिस मुल्क में दूसरा पेशा करने वालों की तादाद ज्यादा होती है, वो मुल्क मालदार होता है।

आपके मन में शंका होती होगी कि चौधरी साहब एक तरफ तो आप हमको ये मशविरा दे रहे हैं कि खेत की पैदावार बढ़ाओ, दूसरी तरफ कह रहे हैं कि किसानों की तादाद घटाओ। हां यह बात ठीक है दोनों बातें हैं। किसानों की तादाद घटानी है और खेत की पैदावार किसी तरह बढ़ायें। खेत नहीं बढ़ेंगे, आदमी हम बढ़ाना नहीं चाहते, घटाना चाहते हैं और फिर भी खेत की पैदावार बढ़ाना चाहते हैं, तो खेत में पूंजी लगाओ। अच्छी खाद दो, पानी दो, बीज दो और खेती का हुनर अच्छा सीखो। अगर अपने देश में नहीं है, तो दूसरे किसानों से सीखो और इस तरह खेत की पैदावार बढ़ाओ। आर्थिक विकास का एक ही नुस्खा है, एक ही गुर है, एक ही फार्मूला है, दूसरा नहीं। खेत की पैदावार तिल–तिल के बढ़ानी है। लेकिन खेत में काम करने वाले लोगों की तादाद घटानी है और दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़ानी है। अगर यह हो जायेगा, तब देश मालदार हो जायेगा।

तो मैं आपसे कहता था कि छोटे रोजगारों में आदमी ज्यादा लगते हैं और बड़े कारखाने लगे, तो पूंजीपति पैदा हो जायेंगे। कम लड़के उसमें लगेंगे और बाकी लोग बेरोजगार हो जायेंगे। एक ही मिसाल दिये देता हूं। टैक्सटाइल कमेटी की रिपोर्ट सन् 1953 की है, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया की, जिसमें लिखा है कि बड़े कारखाने से जो कपड़ा आया, जो उस कारखाने से बना, उस कपड़े को बनाने के लिए 12 करघे चाहिए। 12 करघों से उतना कपड़ा बनेगा, जितना कि एक आदमी बड़े कारखाने के जरिये बना सकता है। तो आज सबसे बड़ा हमारे यहां उद्योग कपड़े का ही है, टैक्सटाइल में दस लाख आदमी लगे हुए हैं। अगर मेरी बात मेरे साथियों ने मानी और आप लोगों ने हमको दिल्ली में अधिकार सौंप दिया, तो मेरा इरादा यह है कि इन सेठों के बड़े–बड़े कारखानों के, मेरा हुकुम यह होगा कि तुम हिंदुस्तान में कपड़ा अब नहीं बेच सकते, तुमको बाहर बेचना होगा। अगर यह हमारी बात चल गयी, तो आज जो दस लाख लोग काम कर रहे हैं बड़े कारखानों में, उस कपड़े को पैदा करने के लिए 12 किसान लगेंगे। एक करोड़ 20 लाख लड़कों को रोजगार मिल जायेगा, एकदम बिना गवर्नमेंट के कुछ किये हुए। (तालियां) न तो तकनीकी ज्ञान की जरूरत पड़ेगी, न इसमें पूंजी की जरूरत पड़ेगी, न इसमें बिजली पैदा करने की जरूरत पड़ेगी। इस तरह से अनेक काम ... मैं कहता हूं 25 फीसदी आदमी हमारा दस्तकारी में लगा हुआ है। ये जो बर्तन बनते हैं, इसके, क्या नाम चीनी मिट्टी के, इनके लिए कारखाना बनाने की क्या जरूरत है ? ये तो हमारा कुम्हार जानता ही है, बना सकता है, बनाता था पहले। कालीन है, ये यू0पी0 और बिहार में इतना अच्छा हाथ से बनता था और अब भी बनता है, जो दूसरे देशों को जाता है। इंदिरा जी ने तीन कारखानेदारों को लाइसेंस दे दिया कालीन बनाने का। मैं जब वित्त मंत्री हुआ तो मैंने जो कारखाने कालीन बना रहे थे, उन पर 30 फीसदी टैक्स लगा दिया और जो हाथ से कालीन बना रहे थे उन पर टैक्स माफ कर दिया, ताकि वो कारखाने का मुकाबला कर सकें। मेरा बस चलता तो मैं कारखाने जो कालीन बना रहे हैं उनको बंद कर देता। मना कर देता कि नहीं, हाथ से कालीन बनाया जाये, जो अच्छे से अच्छा बनता है।

लेकिन हमारे कांग्रेस के लीडरों का यह खब्त था कि मशीन से काम किया जाये तो प्रगति का द्योतक है। रोटी भी मशीन से बनने लगी, कपड़ा तो मशीन से बनने ही लगा। रोटी बन रही है। गवर्नमेंट बेकरी ... गवर्नमेंट ने लगा दिये कारखाने डबलरोटी बनाने के। क्यों ? अरे भई आपके ग्वालियर में भी होंगे 10–15 छोटे–छोटे आदमी। बाजार से खरीदा आटा और उन्होंने आपके लिए डबल रोटी क्या बना दी। आपने दे दिया आटा, आपको बना दिया और गवर्नमेंट ने आज कारखाने लगा दिये रोटी बनाने के, क्यों भई। क्या फायदा ? हजारों आदमी लाखों आदमी बेकार हो गये हैं, हिंदुस्तान के अंदर, क्या फायदा हुआ आपने मशीन लगाकर अगर बेकरी लगा दी?

यही नहीं है, एक है बिस्कुट फैक्ट्री ब्रिटानिया। अंग्रेज आये, करोड़पति, कारखाना लगाया बिस्कुट बनने का, क्यों ? हिंदुस्तान के आजाद हो जाने के बाद भी अंग्रेज का कारखाना बिस्कुट बनाने के लिए क्यों ? अपने देश में लगा हुआ है ? और बिस्कुट छोटे पैमाने पर बन सकता है, बड़े कारखानों की आखिर जरूरत क्या है ? यही नहीं दोस्तों ! रोटी की आदमी को सबसे जरूरत है। ये कारखाने से बनने लगे। कपड़े की जरूरत है। महात्मा के सामने सब लोग चरखा कातते थे। उनके जाने के बाद उनके सिखाये जो चेले थे, ये जब मालिक हो गये देश के, 300 कारखाने कपड़े बनाने के लगा दिये। और मकान भी बनने लगा

मशीन से। (.....) ये सुनकर आपको शायद ताज्जुब होगा, मकान भी बनने लगा है कारखाने से। प्री फेब्रीकेटेड हाउसिंग सेक्टर, बना बनाया मकान बनाने का कारखाना, सुल्तानपुरी गांव है दिल्ली से 15 मील दूर, वहां लगा रखा है।

यह ठीक नहीं चल रहा है। मैंने हुक्म दिया है इस मकान बनाने के कारखाने को बंद करो। क्या जरूरत है कि दीवार और छत बनेगी कारखाने के जरिये और हमारे कारीगर क्या करेंगे, जो ईंट पाथते थे, वो लोग बेचारे कहां जायेंगे ?

ईंट ढोने वाले लोगों को, सारे देश में लाखों लोगों को रोजगार मिलता था, वो कहां जायेंगे ? और यह कहां जायेगा हमारा लुहार, क्या नाम बढ़ई ? जो कि मकान बनाने में सहायक होता था, राज मिस्त्री, कहां जायेंगे लाखों। लेकिन आज ये मशीन का काम है कि दूसरे देशों के लोग आयेंगे (.....) रूस और अमरीका के और ये देखकर जायें कि देश प्रगति कर रहा है। मैंने अभी हुक्म दे दिया है कि उस कारखाने को बंद करो। अब वो हमारे कारीगर ही बनायेंगे। क्यों मानें? कौन अक्ल की बात है ? ताजमहल को हमारे आर्टीजंस ने, दस्तकारों ने, हमारे कारीगरों ने ताजमहल जैसी दुनिया की सबसे खूबसूरत इमारत हाथ से बना दी थी। लेकिन इंदिरा के कांग्रेस वालों के रहने के मकान मशीन से बनेंगे। इससे ज्यादा मूर्खता की बात क्या हो सकती है ? तो ये है हमारी मशीन।

हम देश की पैदावार को बढ़ाने पर जोर देंगे, गांव को जगायेंगे। गांव में आजकल रेगिस्तान हो गया है। नहीं है इसमें कोई रेशे, नहीं है इसमें कोई जीवन। सब कारीगर खाली बैठे हैं और खेत की जमीन कम है। थोड़ी–थोड़ी जमीन है, भूखे मरते हैं लोग। न गांव में स्कूल हैं, इस तरह के अच्छे, न गांव में कालेज हैं। वहां के पढ़े हुए लड़कों का मुकाबला नहीं करते, शहर के कालेज से पढ़े हुए लड़कों से। न अस्पताल हैं और न, छोड़ो पुरुषों के लिए, हमारी बहू–बेटियों के काम के लिए शौचालय–टट्टियां वगैरह नहीं हैं। उनको अपनी शर्म को छोड़कर सडकों पर बैठना पड़ता है। खेतों में नंगे। (.....) देश के तीस साल आजाद होने के बाद भी मैं फिर दोहराता हूं, गांव में हमारी बहू–बेटियॉ सबेरे–शाम को खेतों में जाकर बैठेंगी। हमको मालूम है, हम जिस घर में पैदा हुए हैं, हमारी माताजी, हमारी बहनें रात को टट्टी जाती थीं, दिन में नहीं जाती थीं। क्या बात है ? क्यों है यह हाल ? क्यों नहीं हमारा ध्यान गया ? इसलिए ध्यान नहीं गया कि इनके ध्यान का सवाल नहीं था। ये गांव से तो जाते थे एम0एल0ए0 और एम0पी0 लेकिन लीडरशिप जिनके हाथ में थी, उनकी बहू–बेटियों के लिए फ्लश लगे हुए थे। उनकी बहू–बेटियां बाहर नहीं जाती थीं। अगर उनकी बहू–बेटियों को बाहर जाना पड़ता तो कभी का इलाज हो जाता। कम से कम औरतों के लिए सार्वजनिक शौचालय हर गांव में बन जाते। पुरूषों के लिए छोड़ देते कि जंगल में चले जाओ। यह है आज गांव का हाल।

इसी तरीके से जो चूल्हे हैं हमारे वही पुराने के पुराने। जवान बेटियॉ, जवान लड़कियां, चूल्हे को झोंकते–झोंकते चार–पांच साल में उनका सौंदर्य खत्म, उनकी आंखें खराब, उनके फेफड़े खराब। और गोवर से जलाती हैं चूल्हा। जो गोबर खेत में डालने के लिए परमात्मा ने बनाया, न कि चूल्हे में फूंकने के लिए। इसका इलाज आज कुछ नहीं है। बड़ी आसानी से हो सकता है लेकिन अब मैं यह बताना नहीं चाहता हूं, मेरे पास समय नहीं है लेकिन किसी का ध्यान हो तो, तो हम गांव को जगाना चाहते हैं, पुनर्जीवित करना चाहते हैं। अब जैसे महात्मा

ने कहा था कि असली भारत–हिंदुस्तान रहता है ..... गांव में रहता है। हम गांव को इसीलिए जगाना चाहते हैं, तभी भारत जागेगा और केवल शहरों से जागने वाला वो नही है।

दूसरी बात जैसे कहा, मैंने दस्तकारी की बात की है ..... ये तो बेईमानी की बात है यह क्यों है ? ज्यादातर बेईमानी हो रही है। एक तो वैसे बेईमान तो हैं ही हैं लेकिन एक कारण रिश्वत और भ्रष्टाचार का और गलत नीतियों का यह भी है कि हमारे पॉलिटिकल लीडर्स को इलेक्शन लड़ने के लिए सेठों से रूपया लेना पड़ता है। असेंबली का इलेक्शन लड़ा, पार्लियामेंट का इलेक्शन लड़ा तो लाखों–लाखों रूपया खर्च होता है और लेते हैं सेठों से। मैंने जब कांग्रेस को सन् 67 में छोड़ा तो हमने उस समय तय कर लिया था कि हम सेठों के रूपये से इलेक्शन नहीं लड़ेंगे। मैं तफ्सील में नहीं जाता हूं। मेरे पास रूपये देने के लिए एक से एक आया। पांच लाख रूपये, दस लाख रूपये लेकर आया था। तीन बार मेरे पास आया था लेकर मैंने इंकार कर दिया। सन् 68 में एक सेठ ने मुझको बुलाया कि पैसा और .... सब कुछ है, मैं आप जैसा कुशल और ईमानदार प्रशासक हिंदुस्तान के लिए चाहता हूं, जो आदमी सारे देश में (.....) मैं बूढ़ा हो गया हूं। मेरे पास करोड़ों रूपये हैं। मैं सब कुछ आपको देने को तैयार हूं। मैंने मना कर दिया। उन्होंने कहा मैं बदला कुछ नहीं चाहूंगा। आप जो मना कर रहे हैं। मैंने कहा यह बात मैं जानता हूं, आप बदला नहीं चाहेंगे, एवज नहीं चाहेंगे और कोई लाइसेंस नहीं चाहेंगे, परमिट नहीं चाहेंगे। मैं जानता हूं, मैं ने आपकी तारीफ सुनी है। आज वो बूढ़े आदमी रहे नहीं। मैं उनको ले के कारखाने ... बहुत मालदार हैं। लेकिन मैंने कहा सेठ जी माफ करना मेरा सिर आपके सामने अहसान से झुक जायेगा।

सेठों के पास रुपया कहां से आता है ? दूसरी पार्टियों के पास करोड़ों–करोड़ों रुपया है। इंदिरा के पास करोड़ों हैं, जगजीवनराम के और उनके साथियों के पास करोड़ों है, इकट्ठा किया है। जनसंघ वालों ने खूब इकट्ठा किया। और जगजीवन राम भी मशहूर आदमी हैं। तो रुपया उनके पास होगा। तो मेरे साथी कहते हैं हम क्या करें? मैंने कहा, ये कि पहले कोशिश करो कि ईमानदार लोगों को खड़ा करो। ईमानदार लोग खड़े होंगे तो जनता बिना पैसे के वोट देगी, यह मेरा तजुर्बा है। सन् 74 में जो हमने असेंबली का इलेक्शन उत्तर प्रदेश में लड़ा–425 सीटें। कांग्रेस वालों ने 21 करोड़ रूपाये खर्च किये। कुछ लोग कहते हैं 30 करोड़, 21 करोड़ से कोई कम नहीं बताता। पांच लाख रूपये का एक सीट पर असर पड़ता है और मेरे पास पांच लाख रूपये कुल नहीं थे, इन सीटों को लड़ने के लिए। सारे यू0पी0 के अंदर ये सूरत थी। फिर मुझे अपनी बात कहनी पड़ती है, कहनी शायद मुझको चाहिए नहीं कि मैंने वहां किसानों के लिए इतना किया गरीब आदमी इतना मुझसे प्यार करता था और करता है कि अगर मुझको, मेरी गाड़ी जा रही है और देखने के लिए आया दौड़कर और मुझको नहीं देख पाया और गाड़ी पर जो धूल पड़ गयी, उसकी मिट्टी उठाकर उसने अपने माथे पर लगा ली। और उस समय बहुगुणा थे चीफ मिनिस्टर, उन्होंने इतनी गैर–ईमानदारी से काम लिया उस इलेक्शन में, जिसका बयान हो नहीं सकता।

वी0पी0 सिंह ने यह कहा था कि भारतीय क्रांतिदल की तादाद, मेंम्बरों की 200 से ज्यादा आयेगी। कांग्रेस की 100 से ज्यादा नहीं आयेगी और इंदिरा का कोई मुकाबला अगर हिंदुस्तान में और कांग्रेस का कर सकता है, तो भारतीय क्रांतिदल और चरण सिंह कर सकता है और कोई नहीं कर सकता। लेकिन नतीजा हुआ था, हमारी 106।

तो, मैं इसलिए अपने तजुर्बे से कह रहा हूं, मैं इन सब साथियों से कह रहा हूं, आपके जरिये और आपको भी बताना चाहता हूं कि अगर आप ये चाहते हैं कि आपके लिए नीतियां बनें, तो खर्चा मत कराओ अपने कैंडिडेटों से। वरना जिनसे रुपया लेंगे, उन्हीं के हक में नीतियां बनेंगी और तुम्हारे हक में वो नीतियां नहीं बन पायेंगी।

और एक बात और कहना चाहता हूं कि यह मुल्क तो हमेशा रहेगा। आदमी आते हैं, जाते हैं, लीडर आते हैं, जाते हैं, सब चले जाते हैं, मैं बहुत ज्यादा रहा पॉलिटिक्स में, दो–चार साल। मेरे साथी हैं, लड़के हैं, ये रहेंगे सालों साल। आखिर पचास साल, चालीस साल से काम करते आये हैं। मैं इनको यही मशविरा देता हूं कि कभी कोई ऐसा काम न करो, जिससे कि कोई गलत उदाहरण पेश हो। ईमानदारी से रहो। आज नहीं जीतोगे, कल जीतोगे। कल नहीं जीते तो ये जनता बिना पैसे तुम्हें परसों को जितायेगी।

अगर मेरी पार्टी की ओर से कोई गलती से हमारा बेईमान कैंडिडेट खड़ा हो जाये, तो किसानों और दोस्तों उसको वोट मत देना, मुझको कोई शिकायत नहीं होगी।

इन शब्दों के साथ बातें बहुत हैं, देश की कहानी लंबी है। देश का प्रशासन डूब चुका है हिंद महासागर में, उसको निकालना है। डूबने से बचाने का सवाल नहीं है, डूब चुका है, उसको निकालना है। इन शब्दों के साथ मैं अपना कथन समाप्त करता हूं। मैं एक बारगी तकरीर कर रहा हूं, तीन दिन के अंदर। तीन दिन से मैं लगा हुआ हूं, मैं थक गया हूं। मेरी उमर 77 वर्ष की है, ये तुम्हारी तालियां, तुम्हारा प्यार मुझे काम करने को मजबूर करता है। (नारे)

अब मुझे ... तुम्हारी .... तुम्हारे ... अब मैं .... अब मुझको ग्वालियर तकरीर करनी है। वहां बड़ी सभा होगी। बड़ी सभा हुई तुम्हारी भी, बहुत जयादा। अभी आज मुझे लखनऊ पहुंचना है और फिर उसके बाद और जगह जाना है। दो दिन से वहां गवर्नमेंट का काम इकट्ठा होगा, वो मुझको करना है। मुझे इजाजत दो जाने की। केवल मेरे साथ तीन नारे लगा दो–

भारतमाता की जय, भारत माता की जय, महात्मा गांधी की जय, महत्मा गांधी की जय, लोकदल–कांग्रेस की जय, लोकदल–कांग्रेस की जय।

————————————

दिनांक 12 नवम्बर, 1979 को दतिया, मध्य प्रदेश में जनसभा में प्रधान मंत्री श्री चरण सिंह का भाषण।

———————————————

बहनों और भाइयों,

आज, ये मेरा पहला मौका है, आपके इस इलाके में आने का। मैं बहुत–– मुझको प्रसन्नता हुई है, मुझको बहुत–आप लोगों को देखकर इस बड़ी तादाद में और धूप में बैठे हुए घण्टे दो घण्टे से। अब मैं ये चाहता हूं कि आप लोग शांति से मेरी बात सुनो और अगर हो सकता हो, तो, बैठ जाओ। आप जो एक–दूसरे से सटे हुए खड़े हो, ये मैं जानता हूं कि बैठने में आपको उसी जगह तकलीफ होगी। अगर, पीछे वाले कुछ पीछे को हटते चले जाएं तो बैठने में आसानी होगी। वैसे मैं 40 मिनट से ज्यादा आपका लेना नहीं चाहता। तो, खड़े होकर भी सुन सकते हो। लेकिन, आपस में बात मत करो–

दोस्तों, जब अंग्रेजों का यहां जमाना था, तो मेरी पीढ़ी के लोग गांधी जी के नेतृत्व में देश की आजादी के लिए लड़ रहे थे। अपने देश के लिए तरह–तरह के सपने देखा करते थे कि हम अपने देश को गौरवशाली बना देंगे, मालदार बना देंगे और शक्तिशाली बना देंगे। इसको फिर से हिमालय की चोटी पर बिठा देंगे। लेकिन अफसोस की बात है कि हमारे वो सारे सपने भंग हो गए। आज दुनिया में यह देश सबसे अधिक गरीब देशों में से एक है।

इंदिरा जी ने जब राज संभाला था, उससे एक साल पहले 64–65 में 140 देशों में हमारे देश का नम्बर था 85वां। 84 देश हमसे मालदार थे और 40 देश हमसे गरीब थे। उनके राज के 8 साल के बाद सन् 1973 में हमारे देश का नम्बर था 104 वां। 103 देश हमसे मालदार और 21 देश हमसे गरीब और 3 साल बाद सन् 76 में हम 8 पोजीशन और नीचे खिसक गए। आज हमारा नम्बर है 111वां, 110 देश मालदार और 14 देश गरीब। तो, यही नहीं कि हम गरीब हैं। अफसोस और तकलीफ इस बात की ज्यादा है कि हम और गरीब होते जा रहे हैं, गरीबतर होते जा रहे हैं।

आज हमारे यहां 100 में से 48 आदमियों को पूरा भोजन भी खाने को नहीं मिलता। वे लोग अधिकतर गांव में रहते हैं, क्योंकि हमारा देश ही गांव में रहता है। लेकिन, शहर में भी बहुत से गरीब आदमी हैं; ये दिल्ली, जो आपको बड़ा भारी मालदार शहर ... ये सबसे मालदार शहर .. दिल्ली। इसमें भी 100 के पीछे 26 आदमी इतने गरीब हैं।

आज हमारे बच्चों को दूध पीने को नहीं मिलता। अंग्रेजों के जमाने में भी कम मिलता था, लेकिन आज तो उतना भी नहीं मिलता और बच्चों के लिए या बीमार के लिए दूध एक दवा और औषधि बनकर रह गई है, इतना कम मिलता है। तो ये तो हमारी गरीबी का हाल है।

दूसरी बात ये है कि बेरोजगारी बढ़ती जा रही है, शहर में भी गांव में भी। शहर में भी पढ़े–लिखे लड़के बी0ए0 और एम0ए0 पास और एम.एस.सी. पास और डाक्टरी और इंजीनियरिंग पास मारे–मारे फिरते हैं। आज एक करोड़ 40 लाख लोगों का नाम काम दिलाऊ दफ्तर में दर्ज हैं। शहर के अन्दर, हिन्दुस्तान के सारे शहरों में, जो हमारे लड़के काम चाहते हैं, पढ़ने दूसरे देशों में चले जाते हैं, वहां से वापस नहीं आते। क्योंकि यहां रोजगार नहीं मिलता, वहीं बस जाते हैं। यहां से भी पढ़े–लिखे लड़के .. यहां रोजगार नहीं मिलता, विद्या

यहां हासिल करेंगे, शिक्षा अपनी यहां पूरी करेंगे, दूसरे देश को जाते हैं रोजगार के लिए, ये तो शहर का हाल है। गांव का हाल उससे भी बदतर है।

सन् 70–71 में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया की तरफ से, भारत सरकार की तरफ से एक गणना की गई थी कि कितनी जमीन कितने लोगों के पास, कितनी–कितनी जमीन है और उसमें कितने रकबे में ईख होती है, कपास होती है, गेहूं होता है, ज्वार होता है, तम्बाकू होता है– ये सब हिसाब लगाया गया था और कितने में सिंचाई है, कितने में सिंचाई नहीं है। और, अगर सिंचाई है तो नहर से कितने में है, कुंए से कितने में है, ट्यूबवेल से कितने में है। यह हिसाब लगाया गया। तो उसको देखने से पता चलता है कि हमारे गांव के किसानों में एक तिहाई किसानों के पास दो बीघे से कम जमीन थी। यह बात कह रहा हूं 9 या 10 साल पहले की। एक तिहाई किसानों के पास, जो किसान समझे जाते हैं, उनके पास दो बीघे से कम जमीन। 18 किसानों के पास–100 में से 18 किसानों के पास 2 बीघे से ज्यादा और 4 बीघे से कम और 19 किसानों के पास 4 बीघे से ज्यादे और 8 बीघे से कम। 33 और 18 बराबर 51। 51 और 19 बराबर 70। तो 70 किसान ऐसे हैं जिनको मैं नाममात्र का किसान समझता हूं। उनकी गुजर नहीं हो सकती, इतनी थोड़ी जमीन उनके पास है। आप लोग मेरे सामने बैठे हो, मैं आपके चेहरे देखकर बता सकता हूं कि ये इलाका बहुत गरीब है।

मैं एक मामूली किसान के घर पैदा हुआ हूं। मेरे पिताजी और मेरे ताऊ वगैरह 4–5 भाई थे। सगे भाई थे। वो काश्तकार थे। अपनी जमीन के मालिक नहीं थे। बुलन्दशहर में कुचेसर का जमींदार बहुत बड़ा जमींदार कहलाता था, उसके भी काश्तकार थे। अब से 50 साल पहले जो मेरे खानदान के लोग थे, जो मेरे चचा जात भाई, मेरे भाई, वगैरह सब, उनके मुकाबले में आज जो मेरे पोते–पढ़पोते हो गए हैं, वो आज गरीब हैं 50 साल पहले के मुकाबले में। क्योंकि तब जमीन मेरे पिताजी और ताऊ वगैरह के पास 10–10 एकड़ आती थी। अब उनके पोतों के पास दो–दो एकड़ जमीन रह गई है। उनके चेहरे पे न वो रौनक है, ना वो सुर्खी है, ना ही जिस्म में जान है, ना बैल उतने अच्छे हैं, जितने कि पहले थे। ना गाय और भैंस उतना दूध देती हैं, जितना पहले देती थीं। ना बहू–बेटियों के पास उतने अच्छे कपड़े हैं और ना उनका स्वास्थ्य अच्छा है।

तो किसानों की हालत बिगड़ती जाती है, क्योंकि जमीन तो बढ़ेगी नहीं, औलाद बढ़ती जाती है और दूसरा पेशा यहां के लोगों को करने को रहा नहीं बल्कि, जो दूसरे पेशे अंग्रेजों के आने से पहले गांव में हुआ करते थे, वो सब बर्बाद कर दिए अंग्रेजों ने। और अब हमारे लीडर, आजादी के बाद जो थोड़े बहुत बचे थे उनको बर्बाद करने पर लगे हुए हैं।

जमीन प्रकृति ने या इतिहास ने इस देश को जो दी थी वो बढ़ेगी नहीं, आबादी बढ़ेगी। तेज रफ्तार से न सही, धीमी रफ्तार से सही, तो दादा, परदादा के सामने जो जमीन थी उसी पर मैंड पर मैंड ठलकती जाती है। पहले 100 में से 17 आदमी मजदूर थे, खेतिहर मजदूर, जो किसानों की खेतों पर मजदूरी करते थे। अब 25.5 फीसदी मजदूर हैं, तो ये गांव का हाल, बेरोजगारी का।

अब, तीसरी बात जो बताना चाहता हूं मैं, इनका सबका इलाज बाद में बतलाऊंगा, अभी तो समस्यायें बतला रहा हूं। तीसरी बात जो है वो यह कि गरीब और अमीर का फर्क बढ़ता जा रहा है। गांव वाले का, शहर वाले का फर्क बढ़ता जा रहा है। खेती पर काम करने

वालों का और दूसरा पेशा करने वालों की आमदनी का फर्क, बजाए कम होने के और बढ़ता जा रहा है, चौड़ा होता जा रहा है।

अंग्रेजो के जमाने में हम यही कहा करते थे कि अंग्रेजों ने बड़े–बड़े सेठ पैदा कर दिए। पहले बड़े–बड़े सेठ नहीं थे, अब हम सेठों को घटायेंगे, इनकी तादाद कम करेंगे तो स्वराज हो जाएगा।

लेकिन, दोस्तों – अफसोस के और तकलीफ के साथ आपको बताना पड़ता है कि किसान की और गैर किसान की, शहर के रहने वालों की और गांव के रहने वालों की आमदनी में जो फर्क था, वो अब दूना हो गया, बजाए कम होने के। सन् 50–51 में अगर गांव वाले की या किसान की आमदनी 100 रू0 थी तो, शहर के रहने वाले की आमदनी, गरीबों को छोड़कर, वहां गरीब तो मैंने बताया कि 100 में से 40 गरीब हैं तो, औसत आमदनी 178 रूपये। वो ज्यादातर बड़े लोगों के पास थी। 100 और 178 मोटा– सा सम दो 100 और पौने दो सौ। एक और पौने दो का फर्क। लेकिन, आज अगर गांव वाले की आमदनी या किसान की आमदनी 100 रूपये है, तो , शहर वाले की आमदनी 346 रूपया है। यानि, साढ़े तीन सौ। अब एक और साढ़े तीन का फर्क है, पहले एक और पौने दो का फर्क था।

तो, गांववालों की उपेक्षा की गई है, खेती की उपेक्षा की गई है। इनकी तरफ से गफ्लत की है हमारे लीडरों ने। गांव की तरफ ध्यान नहीं दिया गया स्वराज होने के बाद। हां, वोट लेने के वक्त हमारी जरूरत थी और है। हमारे लिए तरह–तरह के लोग, तरह–तरह की बातें कहने वाले हैं। लेकिन मैं बात ईमानदारी की और सही बात आपको कह रहा हूं। मैं गरीब घर में पैदा हुआ हूं और मैं जानता हूं गरीबी की तकलीफें क्या होती हैं, गरीबों की समस्यायें क्या होती हैं और गांववालों का मनोविज्ञान क्या होता है।

तो, गरीब अमीर का फर्क बढ़ता जा रहा है। पहले जो सेठ थे वो कम थे। अब सेठ भी ज्यादा हो गए, उनकी आमदनी और ज्यादा बढ़ गई है स्वराज के बाद। मसलन, दो नाम बतलाए देता हूं, सबने नाम सुने होंगे, आप में जो पढ़े–लिखे लोग बैठे होंगे टाटा और बिरला का। टाटा की जायदाद सन् 50–51 में 1 सौ 16 करोड़ रूपये की थी। आज 11 सौ करोड़ की है। 9 गुना बढ़ गयी। 10 गुना। और बिरला की जायदाद उससे कम थी, 53 करोड़ थी। उसकी भी 11 सौ करोड़ हो गई। बहुत तेज रफ्तार से बढ़ा है बिरला। उसकी 19 गुना हो गई और इस तरह के बिरला और टाटा जैसे अनेक हो गए, पहले इतने नहीं थे।

तो, ये तीन समस्याएं हुई आर्थिक क्षेत्र में। हमारी गरीबी नहीं, हमारी बढ़ती हुई गरीबी, बढ़ती हुई बेरोजगारी, बढ़ता हुआ गरीब–अमीर का फर्क। और चौथी समस्या है देश के सामने रिश्वतखोरी और बेईमानी।

अंग्रेजों के जमाने में, जो कुछ कर्मचारी, वो भी छोटे कर्मचारी रिश्वत लेते थे। हम सोचा करते थे, जब स्वराज हो जाएगा हम रिश्वत को खत्म करेंगे। आज छोटे नहीं, कुछ ऐसे भी बड़े कर्मचारी हैं और अफसर हैं जो रिश्वत लेते हैं। लेकिन मैं उनको अधिक दोष नहीं देता। अधिक दोष बल्कि सारा दोष है राजनैतिक नेताओं पर। अंग्रेजों के जमाने में जो थोड़ा बहुत अख्तियार था, मिनिस्टरों को, कोई उनमें रिश्वत नहीं लेता था। आज हमारे मिनिस्टर मिल जायेंगे, चीफ मिनिस्टर मिल जाएंगे, सूबों में मिल जाएंगे, दिल्ली में मिल जाएंगे, जो रिश्वत लेते थे और आज भी ले रहे हैं।

अब, जब चीफ मिनिस्टर रिश्वत लेगा, मिनिस्टर, गृह मंत्री लेगा, चाहे वो मध्य प्रदेश का हो, चाहे उत्तर प्रदेश का हो, चाहे किसी सूबे का हो, चाहे दिल्ली का हो, तो ये देश तरक्की नहीं करेगा – फिर अफसरान भी लेंगे। अब अफसरान को वो किस मुंह से कह सकते हैं उनके खिलाफ कार्रवाई करने को, जब खुद बेईमान होंगे और मिनिस्टर की या किसी की भी बेईमानी अफसर से तो छिपेगी नहीं। अब उस अफसर ने, जो आपकी बेईमानी जानता है, जो आपकी तरफदारी को जानता है, जो आप– उनसे नाजायज कार्रवाई कराते हो, तो अफसरों की नाजायज कार्रवाई पर बेईमान मिनिस्टर कोई कार्रवाई करने का हक नहीं रख सकता, कर नहीं सकता – तालियां–। तो, धीरे–धीरे चारों तरफ बेईमानी फैलती जा रही है। बेईमानी इतनी फैल गयी है, और ईमानदारी इतनी कम रह गई है कि तुम लोग पंचायतों पर, चौपालों पर बैठकर, वकील लोग वकालत खाने में बैठकर जिक्र करते हैं कि फलां अफसर ईमानदार है, फलां लीडर ईमानदार है। इसका मतलब है कि बाकी बेईमान हैं। जिक्र तो उसी का किया जाता है जो कम रह जाए चीज, तो ईमानदारी कम रह गई हो तो ईमानदार लोगो का जिक्र किया जाता है। तो, देश बदकिस्मत, इस देश को बचाना है तो चारों समस्याओं को हल करना है।

अब, मैं आपसे जो राय मांगने के लिए आया हूं। आया हूं लोकदल की तरफ से। तीन पार्टियां आपके सामने राय मांगने आएंगी। एक तो लोकदल और जो लोग कांग्रेस को छोड़कर चले आए थे, इंदिरा को छोड़कर, वो भी अपने आप को कांग्रेस मैन कहते हैं, जो इंदिरा से नाराज थे, जो कुछ उसने ज्यादतियां की हैं, इंदिरा अपनी गलती नहीं मानती थी। शामिल वो भी थे उस वक्त इमरजेंसी में, जो हमारे कांग्रेस के लीडर, जो हमारे साथ हैं, चिमन भाई वगैरह। लेकिन, वो ये महसूस करते थे कि गलती हुई, हमसे पाप हुआ, इंदिरा इस पाप को मानने के लिए तैयार नहीं थी। तो, वो छोड़ के चले आए, तो ऐसे ईमानदार कांग्रेसी एक हमारे साथ हैं और हम लोकदल वाले पुराने लोग हैं– लोकदल है, वो लोकदल–कांग्रेस संगठन की तरफ से राय मानने आएंगे। और जनता पार्टी जिसमें जनसंघ का सबसे बड़ा हाथ है, वो लोग वोट मांगने आएंगे और इंदिरा आएंगी वोट मांगने के लिए।

आपको यह तय करना है कि किस को वोट दें। मुल्क की जो किस्मत है किसके हाथ में है, किन लोगों के हाथ में सुपुर्द करें। मेरा मशविरा ये है कि इन चारों बीमारियों का ईलाज लोकदल के पास है। इसलिए लोकदल और कांग्रेस संगठन को आप वोट दो– तालियां –– और उनको मत दो, वो लोग जिम्मेदार हैं इस सारे देश की हालत के लिए आज।

और मेरे पास कोई नई बात नहीं है किसानों कहने के लिए। मैं सिर्फ वो ही बताना चाहता हूं जो कि, और यही मैं कहता रहा हूं, आज से नहीं–सन् 57 से, जब मैं मिनिस्टर था यू.पी. में। मैं अपने तजुर्बे के बाद इस नतीजे पर पहुंचा कि गांधी का बताया हुआ रास्ता सही था। गांधी जी दो बात कहते थे– एक तो यह कि, हिन्दुस्तान बम्बई और दिल्ली में नहीं रहता, गांव में रहता है, खेती करता है, इसलिए खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर दो।

दूसरी बात, वो ये कहते थे कि जो दस्तकारियां हैं, छोटे–छोटे रोजगार हैं, जो गांव और कस्बे में होते थे, उन रोजगारों को जगाओ, तब जाकर लड़कों को रोजगार मिलेगा। वरना आबादी बढ़ती जाएगी, जमीन ज्यादा नहीं है। बड़े कारखाने मत लगाओ, जहां तक बन सके। बड़े काखाने की कुछ की जरूरत होगी, बिना उनके काम नहीं चलेगा, लेकिन उनका कहना ये था कि बड़े कारखाने कम लगाओ। जहां तक मुमकिन है, वहां तक कम लगाओ।

हवाई जहाज बनाने को, फौज का सामान बनाने को, टैंक और गोला, बारूद आदि बनाने को और बिजली पैदा करने को, स्टील बनाने को या इस्पात – फौलाद बनाने को, रेल का इंजन बनाने को, मोटर बनाने को और बहुत–सी चीजों के लिए बड़े कारखानों की जरूरत पड़ेगी। लेकिन, जो काम हाथ से हो सकता है, उसके बनाने के लिए बड़े कारखाने मत लगाओ। वरना बड़े–बड़े सेठ और पूंजीपति पैदा हो जाएंगे और जितना बड़ी मशीन से काम होगा, उतना लड़कों में बेरोजगारी फैल जाएगी।

तो, गांधी जुलाहे के घर तो नहीं पैदा हुए थे, एक राजा के दीवान के लड़के थे। बड़े घर में पैदा हुए थे। बैरिस्ट्री पास करके आए थे इंग्लैंड से, बैरिस्ट्री करते थे। लेकिन, जब देश की समस्याओं पर उन्होंने विचार किया, बैरिस्ट्री छोड़ के चरखा और करघा लेकर बैठ गए, हमको सिखाने के लिए कि अमरीका की और इंग्लैंड की नकल मत करना। जहां बड़े–बड़े फार्म हैं, आदमी कम हैं जमीन ज्यादा है, लोहा और कोयला और तेल ज्यादा है। वहां बड़े फार्म भी होंगे, बड़े कारखानें भी लगेंगे। यहां हमारी औलाद बहुत ज्यादा है, जमीन कम है, तो थोड़ी–थोड़ी जमीन सब पे आएगी, ज्यादा बड़ी–बड़ी जमीन नहीं होनी चाहिए लोगों के पास, बड़े फार्म नहीं होंगे और बड़े कारखाने भी नहीं होने चाहिए। गांधी जी ये सीधी सी दो बात कहते थे और वो मैं कह ही चुका कि गांव में ज्यादा लोग रहते हैं, तो गांधी जी का कहना था कि खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर दो।

दोस्तों, जब अंग्रेज आया था तो 100 में 60 आदमी खेती करते थे, आज 72 करते हैं। जब अंग्रेज आया था तब 25 फीसदी आदमी गांव में दस्तकारी में लगे हुए थे। दियासलाई बनाने पर, साबुन बनाने पर, कपड़ा बनाने पर, कालीन बनाने पर, बर्तन बनाने पर, चाय के बर्तन बनाने –– हजार तरह के काम थे। 100 में 25 दस्तकार और 60 किसान थे और 15 और काम करते थे – तिजारत का, ढोने–ढाने का सामान का। अब क्या है? दस्तकारी खत्म हो गई, अंग्रेजों ने कर दी अपने कारखानों के लिए, मुकाबला नहीं कर सके हमारे दस्तकार मशीन के बने हुए सामान का, खत्म हो गए, सबने हल की हत्थी पकड़ी। आज 60 की बजाए 72 हैं खेती पर और दस्तकारी या उद्योग धन्धों में 25 की बजाय रह गये 10। तो मुल्क गरीब हो गया। मैं किसानों के खेतों की पैदावार बढ़ाने की बात करता हूं, उसके बिना देश का काम नहीं चलेगा। लेकिन साथ ही किसानों ये बता देना चाहता हूं कि जिस मुल्क में किसानों की तादाद ज्यादा होगी और दूसरा पेशा करने वालों की तादाद कम होगी, वो मुल्क गरीब होगा। दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़नी चाहिए, उतना ही मुल्क मालदार होगा।

तो मतलब ये हुआ मेरे बताने का कि खेत की पैदावार फी बीघे से बढ़ानी है लेकिन खेत पर काम करने वाले लड़कों की तादाद घटानी है और दूसरा पेशा करने वाले लोगों की तादाद बढ़ानी है। ये ही नुस्खा है और कोई नुस्खा और गुण नहीं है गरीब देश को मालदार बनाने का। फिर दोहराए देता हूं, खेत की पैदावार फी बीघे बढ़ानी है। खेत पर काम करने वाले लोगों की तादाद घटानी है और ये लड़के खेती से उठकर, इन सब को दूसरा कोई न कोई दूसरा पेशा करना चाहिए, तब जाकर के ये देश मालदार होगा।

अब आप ये कहोगे, आपके मन में ये सवाल उठेगा कि साहब, हमारे पास तो जमीन कम है हमको रोजगार दिला दीजिए, हम दूसरे रोजगार में जाएंगे। इसकी बाबत –– क्यों भई ! क्या बात है, आप लोग बात न करो, बात न कीजिए – बिल्कुल ध्यान से बात सुनिए, जो ना सुनना चाहें, वो जा सकता है खामोशी से– लेकिन बात आपको सुननी पड़ेगी – मेरा मन

नहीं लगेगा, आपका मन भी नहीं लगेगा। .. तो, मैं आपसे कह रहा था ध्यान से बात सुनो! कि, मैं कोई पेशा नहीं दिलवा सकता। पेशे अपने आप, जब बढ़ेंगे जब पहले खेत की पैदावार बढ़े। अब खेत की पैदावार कैसे बढ़ेगी ? रकबा तो बढ़ नहीं सकता और खेत पर काम करने वाले लोगों की तादाद घटाना चाहते हैं और फिर खेत की पैदावार फी बीघे बढ़ाना चाहते हैं तो दो ही रास्ते हैं– कि उसमें पानी खूब दिया जाए, सिचांई का प्रबन्ध किया जाए, खाद अच्छा दिया जाए, बीज अच्छा दिया जाए और खेती का हुनर अच्छा किया जाए। ये ही दो रास्ते हैं और कोई रास्ता नहीं।

अब जब अंग्रेज गया था, तो 100 में साढ़े सत्रह बीघे में खेत –– उसका प्रबंध था, क्या नाम है – पानी का, सिंचाई का। अब 30 साल के स्वराज के बाद 25 फीसदी में। आज सूखा पड़ी हुई है, उत्तर प्रदेश में और जो आपके पड़ोस में है, राजस्थान में है और मध्य प्रदेश में, या और भी बहुत से सूबों में है, हरियाणे में भी या पंजाब में भी। लेकिन पंजाब में असर कम हुआ। क्यों ? वहॉ 100 में 80 बीघे में सिंचाई का प्रबन्ध है। 100 में 80 बीघे में। तो, वे इस सूखा को बर्दाश्त कर गये। तुम्हारे सूबे में मेरे ख्याल से 100 में 15 होगा ? (पीछे से आवाज आती है, 8) 100 में 8। तो गवर्नमेंट का फर्ज ये था 8 की बजाए 16, 16 के बजाए 25 के बजाए 35 बीघे में अगर, इन्तजाम कर देती 100 के पीछे, तो सूखा चाहे 2 साल तक पड़ी रहे, तुम लोग भूखे न मरते, हिन्दुस्तान के लोग भूखा न मरते। ..... तालियां ....

लेकिन हमारे लीडरों ने क्या किया ? गांधी जी की बात को नहीं माना। गांधी कहता था खेत की पैदावर पर जोर दो। गांधी बड़े घर में पैदा हुआ था। लेकिन झोंपड़ा डालकर एक गांव में, 'सेवा ग्राम', उसमें बैठ गया था वो झोंपड़ी उनकी अब तक वहीं है। इसलिए, गरीब की बात वह जानता था। हमारे लीडरों ने ये किया कि बड़े–बड़े कारखाने बनाओ, कुछ थोड़े से बेशक जरूरी थे, लेकिन बहुत से गैर जरूरी तौर पर बना लिए। रूपया बाहर से कर्जा लो, अपने देश वालों पर टैक्स लगाओ और खेती की बजाए बड़े कारखानों पर जोर लगाओ।

सरदार पटेल था, किसान का बेटा। पांच भाई थे। दस एकड़ जमीन थी। पांच भाई। इनका नम्बर था तीसरा। जब मिडिल पास कर लिया, तो बाप ने कहा कि खेती करो, मेरे पास पैसा नहीं है तुम्हें पढ़ाने के लिए, आगे। तो, दो साल तक सरदार पटेल ने अपने बचपन में, जवानी में हल चलाया। उसके बाद बाप ने अंग्रेजी पढ़ने भेजा। बड़े भाई थे विट्ठल भाई वो कुछ कमाने लगे। तब छोटे भाई को पढ़ने भेजा। तो, वो हमारा लीडर हुआ। हमारा गृह मंत्री हुआ। उसने सब राज–पाटों को खत्म करके हिन्दुस्तान में मिला दिया और अगर वो नहीं होता, तो हमारे और लीडर तो व्याख्यान देते रहते, लेकिन मुल्क को संगठित नहीं कर सकते थे।

तो, पहली योजना, ये जो पंचवर्षीय योजनाओं का तुमने नाम सुना, उनके जमाने में बने, जिसमें अरबों रूपया लगाया गया। तो सरदार पटेल ने अपने अर्थशास्त्रियों से कहा के 100 में 37 रुपये खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए रखें और 100 में 5 रखें बड़े कारखानों के लिए।

इस बीच में महात्मा भी हमसे चले गए। सरदार पटेल भी चले गए। दूसरी योजना जो सन् 56 में तैयार हुई तो उसमें खेती का विकास 37 से घटाकर 18 कर दिया गया। कारखाने का रुपया 5 से बढ़ाकर 24 कर दिया गया। अब जिस पेशे में 100 में 72 आदमी लगे हुए, उस पेशे के विकास के लिए 18–20 रुपया और जिस पेशे में 10 लगे हुए, उसके विकास के

लिए 24 रुपया। बिजली में बहुत रुपया लगा, वो भी खेती में बहुत कम, बड़े–बड़े कारखानों पे लगा और खर्च हुई ज्यादातर बिजली बड़े कारखानों में। कारखानेदारों से बिजली के दाम कम और ट्यूबवैल लगाने के लिए किसान बिजली लें, तो उसके दाम ज्यादा। – तालियां ..... ये हुआ किसान के साथ बर्ताव। इससे खेत की पैदावार नहीं बढ़ी।

और गांववालों मैं कहता हूं कि गफलत हो गई और देश की ये हालत हो गई। दूसरे पेशे बढ़ने चाहिए मैंने आपसे ये कहा था। लेकिन, दूसरे पेशे – मैं चाहता हूं – ध्यान से मेरी बात को पल्ले गांठ बांध के चलें जाएं, दूसरे पेशे तभी बढ़ेंगे जब कि किसान बाजार में कोई माल बेचे। अगर किसान की इतनी पैदावार हो कि अपनी जरूरत का गेहूं और चावल घर पर रख के बाकी बाजार में बेचे, तो दुकानदार बढ़ेंगे और इनके पास पैसा आएगा। कोई सामान अपने बहू–बेटी के लिए, बच्चे के लिए, स्कूल और कालेज में पढ़ता होगा, उसको साइकिल भी, घड़ी भी, कपड़े भी, जूते भी, किताब खरीदने के लिए पैसे की जरूरत होगी, वो पैसे से खरीदेगा। तो, इन चीजों को बनाने के लिए अपने आप छोटी–बड़ी मशीन लग जाएगी। दियासलाई के लिए भी, साबुन के लिए, जूते के लिए जो पहले रोजगार करते थे हमारे मोची बनाते थे, गांव में ही जूता बनता था, अब तो बड़ी–बड़ी फैक्ट्री से बनकर जूता आता है।

तो, इन सबके काम करने वाले अपने आप पैदा हो जाएंगे और परमात्मा करे हमारे मुल्क के किसानों की दूनी पैदावार हो जाए। तो दूने दुकानदार हो जाएंगे, फिर उस माल को ढोने वाले ट्रक चलेंगे यहां से दूसरी जगह ले जाएंगे तुम्हारे खेत की पैदावार को, जहां वो नहीं होती होगी। उसके बदले में जब किसान घड़ी, साइकिल, कपड़ा खरीदना चाहेगा तो घड़ी और साइकिल और घड़ी कहीं से लाएंगे, दूसरी जगह से और फिर तुम्हारे जिले के अन्दर, दतिया के अन्दर दुकान खुल जाएगी, उस सामान को बेचने के लिए, उसी किसान को जिसने अपनी पैदावार बेचकर जिसकी जेब में कुछ पैसा आया।

तो, तीन पेशे हैं बड़े खेती के अलावा। उनमें ही काम करने वालों की तादाद बढ़ेगी, जब देश की गरीबी मिटेगी। तिजारत, परिवहन और उद्योग–धन्धे। लेकिन ये तभी बढ़ते हैं जब कि पहले खेत की पैदावार बढ़ जाती है। अब मैं जो खेत की बात कह रहा हूं, किसानों की पैदावार की बात कह रहा हूं बराबर सन् 57 से मैं यही राग अलाप रहा हूं, मैं सारे देश में और सारे यू0पी0 में। तो मुझे लोग कहते हैं कि चरण सिंह शहर वालों के खिलाफ है, बनियों के खिलाफ है। नहीं। बनियों के खिलाफ नहीं, मैं शहरवालों के खिलाफ भी नहीं हूं, किसी के खिलाफ क्यों होता, मेरे लिए सारे देशवासी एक से हैं। लेकिन मेरा तजुर्बा ये बताता है– अब दुनिया का इतिहास यह बताता है कि जब किसान खुशहाल होता है, जब खेत की पैदावार बढ़ जाती है। तभी दूसरे पेशे बढ़ते हैं, तभी बनिये की दुकानदारी चलती है। वरना नहीं चलती और वो देश तरक्की नहीं करेगा। –– तालियां ––

अगर, तुम्हारे आस–पास के इलाकों की पैदावार दूनी हो जाए किसानों, तो मैं ये लिखे देता हूं कि 5 साल के अन्दर दतिया में रहने वाले लोगों को जो दूसरा पेशा करते हैं, जो कस्बे और शहर में रहते हैं उनकी आबादी दूनी हो जाएगी। अगर ये 25 हजार का कस्बा है मुझे नहीं मालूम दतिया छोटा ही होगा, मेरे ख्याल में 40 हजार का है, तो 10 साल के अन्दर एक लाख आदमियों का शहर हो जाएगा। अगर आसपास के किसानों की पैदावार दूनी हो गई। –– तालियां ––– हर तरह के काम करने वाले लड़के हैं और उधर ये किसानों के बेटे ही तो आएंगे। ये जो 40 से जब ये एक लाख बनेंगे, तो 60 हजार लोग कहां से आएंगे, वो

किसानों के बेटे आएंगे। आज इन पे जो दो–दो बीघे जमीन है इन पे चार बीघे हो जाएगी। इनकी जमीन का रकबा बढ़ेगा, इनकी खेती का। जमीन तो कहीं जानी नहीं है, आपस में ही बटनी है।

तो, जब मैं किसानों के खेतों की पैदावार बढ़ाने की की बात करता हूं तो देश की खुशहाली की बात करता हूं और जो रुपया इन पे आएगा, इन के पास रहेगा, नहीं रहेगा वो तो दुकानदार के यहां चला जाएगा, सामान खरीदने के लिए और दुकानदार के भी ये सब नहीं रहना, उसमें अधिक हिस्सा चला जाएगा, मशीन चलाने वाले और मोटर चलाने वालों पर और दस्तकारी करने वालों पर और उद्योग–धन्धें में लगे हुए। वो सारे देश में बटेगा।

तो, किसानों की खुशहाली में छिपी हुई है, गैर किसानों की और शहर वालों की खुशहाली। बिना गांव के खुशहाल हुए और बिना खेती की तरक्की किए, हमारा मुल्क तरक्की कर ही नहीं सकता, कर ही नहीं सकता दोस्तों। यह सीधी सी बात है। –– तालियां ––– सीधी सच्चाई है। इसको कोई इन्कार नहीं कर सकता। तो खेत का –– की तरफ से हमारे बहुत से लीडरों ने, नाम नहीं लेना चाहता हूं, उपेक्षा की और बर्बाद हो गया हिन्दुस्तान। और खर्बों का कर्जा लेकर हमने बाहर से अन्न मंगाया।

अच्छा अब दूसरी बात, जो महात्मा कहता था, वो कहना चाहता हूं। इशारा तो करता हूं दस्तकारी। अब जैसे कपड़ा हाथ से बन सकता है, चरखे से, करघे से, तो बड़े कारखाने लगाने की क्या जरूरत है। तो महात्मा को अकल नहीं थी कि क्या जो चरखा और करघे की बात हमसे कहता था। वो नहीं जानता था कि मशीन से बन सकता है। लेकिन वो ये कहते थे कि –– और गौरमेंट की एक रिपोर्ट है कि बड़े कारखानें में एक मजदूर जितना कपड़ा पैदा करता है, उस कपड़े को बनाने के लिए 12 आदमी चाहिए, करघे पर। तो आज 10 लाख आदमी टैक्सटाइल मिल में लगे हुए हैं, बड़े–बड़े कारखानें में –– बनाने में। अब एक आदमी मैं फिर दोहरा रहा हूं –– (अरे !) क्या बात है ? ये लड़कों – बैठो, इनसे कहो – बच्चों से, के ये बैठें और जाएं नहीं – अरे, तुम्हारी बात कह रहा हूं – आगे जो जा के अच्छा खाने को मिले तुम्हें) – तो मैं आपसे ये कह रहा था –– (अच्छा, तो बात सुना करो) – मैं ये कह रहा था कि अब मेरा इरादा है, अगर हमारी मैज्योरटी आ गई दिल्ली में और हमारी गवर्नमेंट बनी और मेरे सभी साथी राजी हुए और राजी इनको होना पड़ेगा, मेरे साथ – तो मैं बड़े–बड़े कारखाने, जो कपड़ा बना रहे हैं, इनको मेरा हुक्म होगा या आदेश होगा, गवर्नमेंट का, कि तुम हिन्दुस्तान के अन्दर कपड़ा नहीं बेच सकते, बाहर बेचो, यहां तो हाथ का बना हुआ कपड़ा बिकेगा। ––– तालियां ––

तो 10 लाख आदमी जो बड़े कारखनों में लगे हैं। इनकी बजाए एक करोड़ 20 लाख, 12 गुना आदमी लगेंगे – जो मारे–मारे गांव में फिरे हैं, भूखे पड़े हैं। जिनके पास एक बीघे जमीन है, 1 करोड़ 20 लाख, गवर्नमेंट को कर्जा देने की जरूरत नहीं। गवर्नमेंट को कोई तकनीकी ज्ञान देने की जरूरत नहीं, गवर्नमेंट को बिजली देने की जरूरत नहीं। और अपने आप 1 करोड़ 20 लाखों को बिना गवर्नमेंट के पूछकर ये ध्येय– लेकिन, हिम्मत हमको ये करनी पड़ेगी कि बिरला को नाराज करना पड़ेगा। बिरला का यहां टैक्सटाइल मिल है। हां, ग्वालियर में बिरला का एक कारखाना है और ये ना मालूम कितने बिरला हैं, 300–400 कारखाने हैं। अब एक कारखानेदार को नाराज करने की हिम्मत जिस लीडर में होगी, वही ये काम कर सकता है। कारखानों से जो रुपया लेता है वो वेतनधारी होता है। (तालियां)–

हमने जो पार्टी भारतीय क्रांतिदल बनाई थी, वो भारतीय लोकदल अब हो गया है। हमने अपने साथियों से कह दिया था कि हम बड़े कारखानेदार से रुपया नहीं लेंगे और ना उनके हाथ बिक जायेंगे। अगर हम उनसे रुपया लेकर इलैक्शन जीते और चीफ मिनिस्टर या प्राईम–मिनिस्टर या मिनिस्टर बने, तो हम पर उनका एहसान हो जाएगा। फिर हमारी गवर्नमेंट की नीतियां बड़े कारखानेदार के हित में होंगी, उसके हक में होंगी। हम गरीब आदमियों की बात तो करेंगे इलैक्शन के वक्त लेकिन दरअसल हमारी नीतियां बड़े आदमी के हक में होंगी, क्योंकि उनके पैसे के बल पर हम इलैक्शन में चुनकर आए। –– तालियां।

तो, इसीलिए मैंने अपने साथियों से, अब भी कह रखा है। मुझको रोज मेरे साथी कहते हैं कि चौधरी साहब रुपये का क्या होगा? दूसरी पार्टियों के पास, इंदिरा के पास और जगजीवन राम की पार्टी के पास और जनसंघवालों के पास करोड़ों रुपया है। कहां से आया ये पैसा ? मैंने कहा मैं नहीं जानता। मैंने यह तय किया हुआ है कि मेरी पार्टी की तरफ से किसी बेईमान आदमी को हम खड़ा नहीं करेंगे। बतलाये देता हूं। –– तालियां –– ईमानदार लड़के हमारे खड़े होंगे। तो तुम उनको पहचानोगे। तुम उसका खर्चा नहीं कराओ। थोड़ा बहुत जिसका बस चले, उसको दे भी सकोगे। लेकिन, अगर वो सेठ हैं। – । अब भी आते हैं, देने को कहते हैं। मैंने कहा नहीं मैं नहीं लेने के लिए तैयार। मुल्क तो ये हमेशा जिन्दा रहेगा, मुल्क बर्बाद हो चुका है, राजनीतिक लोगों की बेईमानी से और लालच के कारण और मुझे कितने बरस जिन्दा रहना है। मैं क्रियाशील पार्टी में राज चाहता था 2–4 साल और, 5–7 साल और, किस को अमर रहना है, सबको ही जाना है। मुल्क तो हमेशा रहेगा। फिर जिनको चुनकर आप लीडर बनाते हैं– प्राईम मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर बनाते हैं और वो रुपये के लालच में फंसकर सत्ता लाना चाहते हैं, तो ये देश नहीं उठेगा, उठेगा नहीं। उठने का सवाल नहीं –– ये देश डूब चुका है– दोस्तों! इसको बचाने का सवाल नहीं है कि डूबने जा रहा है बचाओ। डूब चुका है, इसको सालवेज करने का सवाल है, इसको समुद्र की तलहटी से निकालने का सवाल है इस वक्त। – तालियां।

खेत की पैदावार बढ़े, तो खाद पर जो टैक्स लगा हुआ था, खाद पर भी, जो दुनिया में खाद पर कोई टैक्स नहीं लगाता, लेकिन हमारे लीडरों ने खाद पर भी टैक्स लगा दिया था। कीमत भी वैसे उसकी ज्यादा थी, एक्साइज लगा दी, उसको मैंने आधा कर दिया। तो 1 करोड़ 5 लाख रुपये का किसानों को फायदा हुआ। तो शहर के जितने अखबार हैं सबने मेरे खिलाफ लिखना शुरू कर दिया। अब झूठी गढ़–गढ़ के बात लिखनी शुरू कर दी – क्यों ? क्योंकि बड़े पूंजीपतियों के अखबार हैं वो – पत्रकारों का दोष नहीं है। मैं एडीटर का और जर्नलिस्ट का दोष नहीं मानता, लेकिन मालिक जो है, जो नीति वो चाहता है, इन विचारों को उसको अमल करना पड़ता है। और चार बड़े जो अंग्रेजी अखबार निकलते हैं। हिन्दी के भी निकलते हैं उनके संस्करण दिल्ली में वो कौन हैं ? – इंडियन एक्सप्रेस गोयन्का का, टाईम्स ऑफ इंडिया साहूजैन का, हिन्दुस्तान टाइम्स और हिन्दुस्तान बिरला का, स्टेट्समैंन टाटा का ये सब जानते हैं कि यह आदमी न मालूम जंगली कहां से दिल्ली में आके मिनिस्टर हो गया है –– इसका काम तो हल चलाने का था। किसानों और बात समझ लो। तुम या तो हल चलाओ और जान लो या तुम्हारा बेटा कांस्टेबल पुलिस में हो सकता है, या फौज में जवान हो सकता है। हुकूमत करने का अख्तियार कुछ बिरादरियों को है, शहर के बड़े लोगों को है, तुमको हुकूमत में कोई हिस्सा मिलने का अधिकार नहीं। – तालियां।

तो उन्हें लगा कि ये किसान का बेटा है, जो किसान की बात करता है, खेती की बात करता है, गरीब की बात करता है, दस्तकार की बात करता है, बेरोजगारी की बात करता है, ये अजीब फैनीमॅनन् है, ये कहां से आ गया। तो आज सारे अखबार हमारे खिलाफ लिख रहे हैं। उन्हें यह भी डर है कि बड़े–बड़े कारखाने कुछ बन्द कर देगा। और मैंने कहा कि मैं उन कारखानों को बंद तो नहीं करना चाहता, लेकिन ये हुकुम जरूर दूंगा कि तुम अपना सामान बाहर भेजो, जो वो सामान भेज रहे हैं–– बना रहे हैं, जो छोटे–छोटे लोग हमारे गांव में काम कर सकते थे और जो करोड़ों आदमी बेरोजगार बन बैठा– पढ़ा लिखा – बे–पढ़ा लिखा, ताकि उनको रोजगार मिल जाये, इसलिए। तो इसलिए तरह–तरह के अखबारों में खबर छपती है।

मैं आपके इलाके में पहली बार आया हूं। नाम ज्यादा जानते नहीं और नाम थोड़ा–बहुत कहीं सुन लिया हो, लेकिन मेरे इलाके के लोग यू0पी0 के सारे लोग, इस बात को जानते हैं। तो मैं किसानों से यह कहता हूं – तुमसे भी यह कहता हूं कि जब तक अखबार मेरी बुराई करते रहें, तो समझ लेना कि मैं कोई काम तुम्हारे फायदे का कर रहा हूं। –– तालियां – और अगर इन्होंने मेरी तारीफ करनी शुरू कर दी तो ये विचारना– आपको पड़ेगा कि क्या गलती, कहीं चरण सिंह गलती तो नहीं कर रहा है। –– तालियां ––

और अब मैं बात को खत्म करता हूं। मैंने आपको चारों बातों का हल बता दिया कि गरीबी तब मिटेगी, जबकि खेत की पैदावार बढ़े और दूसरे पेशे बढ़ें। और बेरोजगारी तब मिटेगी और असमानता, जो गरीब और अमीर की आमदनी में फर्क बढ़ता जा रहा है वो तब मिटेगी जब बड़े कारखाने कम हों; जरूर हों कुछ, लेकिन कम हों, छोटी मशीन ज्यादा हों और दस्तकारी में ज्यादा लोग लगे हों। बेईमानी तब मिटेगी जबकि मिनिस्टर, चीफ मिनिस्टर और प्राईम मिनिस्टर ईमानदार हों। –– तालियां ––और ये ईमानदार तब ही रह सकेंगे, जब बड़े लोगों से इलैक्शन लड़ने के लिए ये रुपया न लें। वरना् बिक जायेंगे बड़े लोगों के हाथ।

तो यह हमारी पार्टी कर सकती है और नहीं कर सकतीं। और वो कर सकें – गरीबी कौन मिटायेगा ? –– (देखो– बात न करो– ए बेटी बात ना करो) गरीबी कौन मिटायेगा ? जिसने गरीबी देखी हो। जिसने गरीबी देखी नहीं है, वो गरीबी कैसे मिटायेगा, उसको तो पता ही नहीं कि गरीबी किसे कहते हैं। जो ऐयाश और ऐयाशी में पैदा हुआ है, जो बड़े–बड़े महलों मे पैदा हुआ है, जिनके पास तरह–तरह के ऐश और इशरत के सामान मौजूद हैं, जिनके यहां कारें मौजूद हैं, जिनकी बहू–बेटियां सेज से नीचे पैर नहीं रखती हैं, वो गरीबी मिटायेंगे ? नहीं। वो नेक–नीयत होते हुए भी उनको सच्चा ईमानदारी से भी वो अगर देश को उठाना चाहते हैं, अब मैं अपने बड़े लीडरों को नहीं कहता हूं कि उठाना कोई नहीं चाहता था, या उठाना नहीं चाहते हैं – नहीं। उठाना चाहते हैं लेकिन वो शहर में पैदा हुए हैं। बड़े घरों में, देश रहता है गांव में, गरीबी में। तो उनको गांव के लोगों की समस्याएं नहीं मालूम हैं। इंदिरा अगर आ जाये तो उससे ये पूछना कि भैंस और गाय में क्या फर्क है, तो बता नहीं सकेगी वो। –– तालियां –– बिना दिखाये पूछना, भैंस गाय खड़ी कर दी सामने, तो बता देगी ? लेकिन वैसे पूछना कि हम दिखाते नहीं, ये बता दो कि भैंस में और गाय में ये फर्क होता है, बता नहीं सकती। ये पूछना कि एक बीघे जमीन कितने फर्लांग लम्बी और कितने फर्लांग चौड़ी होती है। ये भी नहीं बता सकती। कुछ नहीं बता सकती। उसको ये भी नहीं मालूम है कि हमारे चूल्हे कैसे होते हैं। हमारी बहू–बेटियों की जवानी और सौन्दर्य तीन साल में खत्म

हो जाती है उन चूल्हों को झोंकते–झोंकते। क्यों ? चूल्हे अब तक क्यों नहीं सुधर पाये हैं, और छोड़ो। सबसे ज्यादा शर्म की बात कि देश को 30 साल आजाद होने के बाद हमारी बहू–बेटियों को जंगल में बड़ी बेशर्मी के साथ शौचालय जाना पड़ता है, आज भी। क्यों ? हमने देखा है सड़कों पर, हम खुद अपने घर की बात कहते हैं। अपनी माता की और अपनी बहन की बात कहते हैं। हम गांव के – अपने सभी लोगों की बात जानते हैं कि किस तरह बाहर वो बैठती हैं जाकर के । क्यों ? क्यों ये हुआ ? क्या आज तक ये नहीं हो सकता था कि लड़कों के लिए, मर्दों के लिए नहीं, तो बहू–बेटियों के लिए कम –से–कम घर–घर में नहीं, तो गांव के बाहर शौचालय का इन्तजाम हो जाता। लेकिन किसको फिकर पड़ी है – दोस्तों ! किसको फिकर पड़ी है। जिनके हाथ में लीडरशिप नहीं है – चुन के उनको तो तुमने एम0एल0ए0, एम0पी0 भेज दिया। लेकिन जिनके हाथ में नीतियां बनानी हैं, बनाने का हक था, जो लीडरान थे, उनकी बहू–बेटी को बाहर नहीं जाना पड़ता था। उनको तो फ्लैश मिला हुआ था। तो उन्हें तुम्हारी तकलीफों का क्या पता– क्या पता। ये बताओ जरा। ये है सवाल। मैं ज्यादा इसमें जाना नहीं चाहता हूं।

मैंने आज अखबार में पढ़ा है–राजमाता, जो यहां की ग्वालियर की, उनकी मैं बड़ी इज्जत करता हूं, बहुत अच्छी देवी हैं। वो हमारे मुखालिफ हैं, वो जनसंघ में हैं, वो बात रही अलग। लेकिन बहुत अच्छी देवी महिला हैं। आज अखबार में पढ़ रहा था अभी जब मैं उतरा यहां से – एरोड्रम पे– इस पे– क्या नाम है –– ग्वालियर में तो एक अखबार दिख गया। मैंने उसमें पढ़ा कि कैसे जनता पार्टी गिरी, सत्तालोलुप आदमियों ने गिराई – नहीं ! उन लोगों ने गिराई जो कि – जिन्होंने पार्टी बनाई, उनको निकाल दिया, जिन लोगों ने। तीनों हमारे चीफ मिनिस्टर हटा दिए – हरियाणे के, यू0पी0, के और बिहार के। हमारे तीनों गरीब आदमी थे। दो किसान के बेटे और एक नाई का बेटा था चीफ मिनिस्टर हमारा बिहार का। –– तालियां –– पर पूरे ठाकुर और इतना त्यागी आदमी कि, जिसका बाप आज भी गांव में नाई का ही काम करता है। – तालियां – मगर, नाई को और किसान के लड़कों को चीफ मिनिस्टर बनने का अधिकार नहीं – नहीं, इनको नहीं है। सब हटाए मोरारजी ने। और मोरारजी की कोई हैसियत नहीं थी, कोई असर नहीं था।

मैं जानता था कि मेरी और इसकी राय नहीं मिलेगी। लेकिन जनसंघ के नेता मेरे पास– जब बीमार में पड़ा हुआ था, इलैक्शन के बाद और सोशलिस्ट पार्टी के नेता, जो गरीबों का हमदर्द होने का दावा भरते हैं, सोशलिज्म–सोशलिज्म, समाजवाद के रोज नारे लगाते रहे। एन0जी0 गोरे, अटल बिहारी वाजपेयी मेरे पास 23 मार्च, 77 को पहुंचे, जब मैं अस्पताल में था– बीमार था, इलेक्शन के बाद से। और मुझसे कहते हैं कि हम जगजीवन राम को बनाना चाहते हैं प्राईम मिनिस्टर। मैंने कहा – क्यों ? मैं – ज्यादा बात नहीं कहना चाहता हूं। उनके प्राइवेट जीवन की बात नहीं कहना चाहता हूं। लेकिन उन्होंने प्रस्ताव पेश किया। था इमरजेंसी लादने का, 21 जुलाई, 75 को, जबकि वो गृह मंत्री नहीं थे। उनके लिए लाजमी नहीं था और जब उनको टिकिट मिलने की उम्मीद नहीं रही, तो छोड़ के एक सी0एफ0डी0 पार्टी बना ली, जनता पार्टी में नहीं आए। तो आप ईनाम देना चाहते हैं। मैंने कहा अटल बिहारी वाजपेयी उस आदमी को ईनाम देना चाहते हैं, क्योंकि उसने प्रस्ताव पेश किया था इमरजेंसी का। और 150 आदमी कांग्रेस के फिर भी जीत के आए हैं। अगर आप एमरजेंसी की बुराई करोगे, तो वो कहेंगे कि आपको क्या मुंह आया है, आपने तो प्राइम मिनिस्टर उस

आदमी को बनाया है, जो कल कांग्रेस में शामिल था और जिसने पेश किया था प्रस्ताव। मैंने कहा कि दूसरी बात का इशारा करें देता हूं, मैंने कहा वाजपेयी साहब, आप बड़ी हिन्दू–संस्कृति का नाम लेते हैं। हिन्दू संस्कृति यही कहती है कि इस तरह के लोगों को प्राइम मिनिस्टर बनाया जाये तब देश बढ़ेगा, तब देश बनेगा। तो मैंने कहा कि नहीं ! मैं उनके साथ नहीं हूं, जगजीवन राम के लिए। इससे तो मैं पसन्द कर लूंगा – उसको, मोरारजी देसाई को। अगरचे ये पूंजीपति उनके नजदीक हैं, गरीब और किसान से उनका भी मतलब नहीं है। लेकिन मैं कम–से–कम दो गुण उनमें देखता हूं कि 19 महीने जेलखाने में रहे हैं और मुझसे उमर में बड़े हैं, तो मैं उनको तो स्वीकार कर लूगा एक बार को। लेकिन जगजीवन राम को नहीं।

मैंने चिट्ठी लिखी आचार्य कृपलानी को और जय प्रकाश नारायण को कि मेरी और मेरे साथियों की सब की वोट है मोरारजी के लिए। इस तरह से यह सब हुआ, बाद में जगजीवन राम ने देखा कि ये आदमी मेरे आड़े आ गया, प्राईम मिनिस्टर बनने में। फिर कितना झूठा प्रचार हमारे खिलाफ हुआ कि हरिजनों का दुश्मन है चरण सिंह। नहीं। मैं दुश्मन उन गरीबों का नहीं, मैंने उनके लिए इतना काम किया जो किसी मिनिस्टर या चीफ मिनिस्टर ने भी नहीं किया। लेकिन अभी मेरे पास समय नहीं। और ये डिक्टेटर हो गया। इन्होंने कहा कि चरण सिंह बहुत शक्तिशाली आदमी दिखाई देता है। जब मेरे जनम दिन पर 25 लाख आदमी इकट्ठे हो गए– यू0पी0 दिल्ली में किसान, गांव के दूर–दूर से बिहार से, उड़ीसा से और आन्ध्र प्रदेश से, बांधों तो 50 लाख हुए संगठन पर और इनको बुलाया गया शुभकामनाएं देने को। नहीं, आए वादा कर कर और एक आध, मैं –– ऐसे –– उनको संयोजनों को पसन्द नहीं करता हूं, इस तरह की योजनाओं को । क्यों ? अब मेरे पास – मैंने तो मना किया था राजनारायण नहीं माने कि हम सम्मेलन बनाएंगे आपके जनम दिन को मनाएंगे। तो गांव के गरीब आदमी आये थे मेरा जन्म दिन मनाने और शहर का कोई टाटा–बिरला के रूप में नहीं आते मेरे पास, न उनकी कारें आतीं। नहीं तो मोरारजी के पास ही मैं बैठता था वहां लोकसभा में, क्योंकि मेरा दूसरा नम्बर था उनके बाद, उम्र के लिहाज से, हर लिहाज से, पार्टी तो मैंने बनाई थी, तो सब मुखालिफ थे, जब जेल में डाल दिए गए, तब वो राजी हुए थे जाकर के। मुझसे ये नहीं कहा मोरारजी ने कि चरण सिंह मेरी शुभकामनाएं, परमात्मा करे तुम सौ वर्ष जिन्दा रहो। नो। ऐसा छोटा आदमी है वो।

सांप लोट गया 25 लाख आदमियों की भीड़ को देखकर, ईर्ष्या का सांप लोट गया और तय किया कि चरण सिंह बहुत शक्तिशाली आदमी है। जनसंघ ने और उन्होंने, दोनों ने मिलकर हमको – मुझको, राजनाराण को हटाया। तीनों चीफ मिनिस्टर हटाए, और जो इलैक्शन कमेटी रखी गई, उसमें हमारे लोगों को नहीं रखा। मिनिस्ट्री से हटाओ, आगे चुनाव जनता पार्टी का बनेगा, उसमें मिलाओ। क्यों तोड़नी पड़ी ये ? कहते हैं कि दल–बदल । बेईमान लोग हैं जो दल–बदल कहते हैं। खुद कानून जो बनाया है, जो मई सन् 79 में पेश हो गया। एन्टी डिफैक्शन बिल। अब मेरी ही अध्यक्षता में होम मिनिस्टर होने के नाते, कमेटी बनी थी कि बिल बने। इस तरह के लोग जो दूसरी पार्टी में जाएं, तो वो ना जा सकें। तो उसमें लिखा है कि अगर चौथाई आदमी से कम छोड़ेंगे पार्टी को, तो डिफैक्शन माना जाएगा। चौथाई या चौथाई से ज्यादा छाड़ेंगे, डिफैक्शन नहीं माना जाएगा। हमने 299 में से 97 में एक तिहाई आदमी ने छोड़ा, कैसे डिफैक्शन है? और फिर जब राज नारायण को निकाल दिया,

राज नारायण पार्टी छोड़कर चले गए, तो 26 जून सन् 79 को एक पत्रकार सम्मेलन में पत्रकारों ने कहा कि महाराज राजनाराण जी छोड़कर चले गए हैं, जबकि आपने जनता पार्टी के – जनसंघ के सौ आदमियों को नहीं निकाला, जिन्होंने कि अपने चीफ मिनिस्टर के खिलाफ, बनारसी दास के खिलाफ यू0पी0 में सदन में वोट दी थी, उनके खिलाफ आपने कोई कार्यवाही नहीं की। राजनाराण जी को निकाला। अतः अगर पुराने लोकदल के आदमी चले गए, तो क्या होगा ? तो उन्होंने कहा – चले जाएं, चले जाएं – पार्टी और मजबूत हो जाएगी, गवर्नमेंट और मजबूत हो जाएगी। –– शोर –– मुझसे मेरे साथियों ने कहा कि चौधरी साहब अन्त हो चुका है, अब हमारे बस का रहना नहीं। मैं उनको रोक नहीं पाया।

वो बेईमान लोग, जो हम पे चार्ज लगाते हैं जो कि पार्टी बनने के आखिरी दिन तक खिलाफ था, ये मोरारजी देसाई और जब मेरे ऊपर कातिलाना हमला होता है – दोस्तों। 24 जनवरी, दिसम्बर को, 23 दिसम्बर को, मैं ... 24 को एक आदमी आया था, बिहार का आता है और जगजीवन राम जी की बिरादरी का आदमी आता है। मैंने अखबार वालों से कहा कि इसकी बिरादरी मत लिखना। मेरी उससे कोई रंजिश नहीं है। मैं उसको जानता नहीं था, वो पागल नहीं है, पढ़ा–लिखा आदमी था, वो षडयंत्र था। लेकिन मैंने अखबारों में ये चीज जाने नहीं दी। उस वक्त भी मोरारजी, मुझको एक लैटर भी नहीं लिखता है, मुझको फोन पर भी नहीं कहता है कि चरण सिंह तुम बच गए भईया, परमात्मा ने बड़ी कृपा की। नहीं! ऐसे छोटे आदमी को मैंने बनवा दिया था प्राईम मिनिस्टर। मैं क्या कहूं, आप लोगों से ? ऐसा ही चन्द्रशेखर बकवास करता फिरता है कि हम किसी को नहीं लेंगे, जो लोकदल में चले गए हैं। मैंने पूछा – ऐ ईमानदार आदमी, कौन आदमी जाना चाहता है आपकी पार्टी में से लोकदल का। कौन जाना चाहता है ? कैसे ये प्रचार कर रहे हो? क्या–क्या मनवाना चाहते हो? हरगिज–हरगिज नहीं। –– तालियां –। इसके गांव में जो चले जाओ, सिकन्दर पुर में, तो महल बने पाओगे, दो साल के अन्दर, महल बन गया। लाखों–लाखों रूपये के, वो कहां से बने? पूछना।

और जगजीवन राम कहते हैं कि क्योंकि मैं हरिजन था, इसलिए प्रैजीडेंट ने नहीं बुलाया। नहीं! हमारी वोट ज्यादा थी, इसलिए उन्होंने हमको बुलाया। और जगजीवन राम गरीब घर में पैदा तो हुआ है लेकिन आज हिन्दुस्तान के बड़े–बड़े मालदार लोगों में उसकी शुमार है। –– तालियां ––

आप समझ गए –– नहीं समझ रहे बात को, समझ रहे नहीं – किसानों! हां, तो ये ऐसे लोगों से – ये देश को उठायेंगे। जो ये पार्टियां हैं, इनके लीडरों पर नजर डालो। उनके चरित्र देखो, उनकी ईमानदारी देखो, उनके कारनामे देखो, और यह आपको बता देना चाहता हूं– किसानों, के जो चरित्र है– उसके दो हिस्से नहीं होते, कि प्राइवेट चरित्र और, और पब्लिक चरित्र और। चरित्र एक होता है। अगर प्राइवेट लाईफ में आदमी चरित्रहीन है, बेईमान है तो मिनिस्टर और प्राईम मिनिस्टर होकर भी ईमानदार और चरित्रवान नहीं रहेगा, देश को डुबो देगा एक–न–एक दिन। –– तालियां –– ये गांधी ने हमको सिखाया है।

इन शब्दों के साथ आपको धन्यवाद देता हूं, बहुत शांति से मेरी बात सुनी। अन्त में मैं दो–तीन नारे लगाना चाहता हूं। नारे साथ में लगा देना, अगर जी चाहे और फिर मैं आपसे इजाजत चाहूंगा जाने की।

भारतमाता की जय,

भारतमाता की जय।
महात्मा गांधी की जय,
महात्मा गांधी की जय।
लोकदल कांग्रेस की जय,
लोकदल कांग्रेस की जय।

———————————

दिनांक 12 नवम्बर, 1979 को भिंड, मध्य प्रदेश में जनसभा में प्रधान मंत्री श्री चरण सिंह का भाषण।

———————————

किसानो और बहनो,

मुझको अफसोस है कि मुझे यहां आने में घंटा भर लग गया, देर हो गयी और आप लोग इस धूप में बैठे हुए हो, जबकि हवा भी तेज चल रही है। लेकिन यह बात तो मैं शहर वालों के लिए कह सकता था, आप लोगों को तो खेत में काम करना पड़ता है– गर्मी में भी और धूप में भी और ठंड में भी। लेकिन फिर भी मैं माफी चाहता हूं, मेरी वजह से ही आपको यह कष्ट उठाना पड़ा।

मैं देश के कुछ हालात बताने के लिए आपको आया था। अभी जो देश की सबसे बड़ी पंचायत है, जिसका नाम लोकसभा है, उसका चुनाव होने जा रहा है डेढ़ महीने के बाद। आपको यह तय करना है कि किसको वोट देने हैं। तीन दल आपके सामने आयेंगे। एक तो इंदिरा गांधी की पुरानी कांग्रेस, जिसकी वो खुद ही मालिक हैं, उनके नाम के पीछे ही उनके संगठन का नाम है– इंदिरा गांधी की कांग्रेस कहलाती है, उन्हीं की जायदाद है वो; दूसरा जनसंघ वाला एक संगठन है जिसका नाम है – जनता पार्टी, जिसके लीडर हैं हमारे जगजीवनराम जी, जो पहले कांग्रेस में थे और जिन्होंने आपातकालीन स्थिति की घोषणा की थी, इमरजेंसी जिन्होंने लगवायी थी, वो हैं जनता पार्टी के लीडर। और, एक वो कांग्रेसी लोग जो इंदिरा से नाराज हो गये थे कि उन्होंने आपातकालीन घोषणा लगायी और उनको छोड़ के चले आये। वो कहते थे कि इंदिरा को अपनी गलती माननी चाहिए और अपने पाप की माफी मांगनी चाहिए जनता से, जिसके लिए इंदिरा तैयार नहीं थी। चव्हाण वगैरा थे वो लोग इन थोड़े कांग्रेसियों का संगठन। और, एक हमारा भारतीय लोकदल, अब हमने जिसको केवल लोकदल कहना शुरू किया है। एक पार्टी है लोकदल, जिसकी तरफ से मैं आपसे वोट मांगने के लिए आया हूं।

सवाल ये उठता है कि हमें वोट क्यों दी जाये? दूसरों को क्यों नहीं ? मैं आपसे कहना चाहता हूं, अभी मैं जो चार समस्याएं बताने जा रहा हूं, जो देश के सामने हैं, उनका इलाज, उनका समाधान सिवाय हमारे दल के, लोकदल के और किसी के पास नहीं है। –(तालियां) –– वो लोग इलाज कर ही नहीं सकते हैं। वो लोग अगर इलाज करते, तो अब तक देश की यह हालत न होती।

आज देश के सामने चार समस्याएं हैं – एक समस्या गरीबी की है। किसानों और दूसरे दोस्तों, आपको जानकर तकलीफ होगी कि जब इंदिरा गांधी ने चार्ज संभाला था देश का, सन् 66 में, तो उससे पहले साल 64–65 में हिंदुस्तान का नंबर 125 देशों में 85वां था। 84 देश इससे मालदार थे और 40 देश इससे गरीब थे। आठ साल बाद, सन् 73 में इसकी पोजीशन खिसककर हो गयी नंबर 104। 21 देश इससे गरीब रह गये और 103 देश इससे मालदार हो गये। और तीन साल के बाद सन् 76 में जबकि आंकड़े मिलते हैं सबसे ताजा, तो हमारा नंबर 111वां हो गया। आज पोजीशन में हम लोग और भी नीचे खिसक गये। अब 14 ही देश हमसे गरीब हैं। ऐसे देश हैं कि जिनमें से 10–11 के नाम तो आपने कभी सुने

नहीं होंगे। लेकिन वो भी देश, देशों में शुमार हैं। आज 110 देश हमसे मालदार हैं। तो हम लगभग सबसे ज्यादा गरीब हैं लेकिन गरीबी का इतना अफसोस नहीं था। अफसोस इस बात का है कि समय बीतते–बीतते–जैसे समय बीतता जा रहा है, हम और गरीब और गरीब और गरीबतर होते जा रहे हैं। 85, 104 आज 111 और अपने देश में 100 के पीछे 48 आदमी ऐसे हैं जिनको पूरा खाने को नहीं मिलता है। जो गरीबी की रेखा है, उससे नीचे रहते हैं। इनमें कुछ आदमी शहर में भी हैं, बड़े–बड़े शहरों में उन महलों के पीछे, जो हमें दिखायी नहीं देते हैं। तो 48 फीसदी आदमी को तो रोटी पूरी नहीं मिलती है। दूध अंग्रेजों के जमाने में भी कम हो गया था।

मुझको याद पड़ता है, जब मैं अपने हल्के में जाता था, बागपत तहसील है मेरठ जिले की, उसमें छपरौली का हल्का है, जहां से मैं हमेशा चुनके आता रहा हूं सन् 37 से लेकर अब तक, तो एक वहां पंजाब से आया हुआ रिफ्यूजी मिलकियत सिंह, वो हमारे कांग्रेस कमेटी की जीप का ड्राइवर था। दस–बारह दफे मेरे साथ गया। जिस गांव में गये, दूध पीना पड़ता था उनको, और अगर दूध नहीं पीता था, तो नाराज हो जाता था आदमी, वहां का किसान। ये हालत थी उस वक्त। तो, मिलकियत सिंह ने एक दफे मुझसे ये कहा कि चौधरी साहब, माफी चाहता हूं, किसी और ड्राइवर को ले जाइये आप। मैंने कहा क्यों ? बोला कि साहब, दूध पीना पड़ता है सब जगह और हर वक्त इतना दूध पीया नहीं जाता। ये हालत छपरौली की थी, मैं आपको बतलाता हूं। यह बात है अब से तीस साल पहले, 47–48 की। लेकिन आज जब मैं भी छपरौली जाता हूं, 30 साल के स्वराज के बाद, तो आज कोई दूध–वूध पीने के लिए मुझसे भी नहीं कहता है। उस जगह ये हालत हो गयी है दूध की। यही आपके देश का, प्रदेश का हाल होगा। अब दूध हमारे सब लोगों को नहीं मिलता, बच्चों को नहीं मिलता, मरीजों को नहीं मिलता। दवा बनकर रह गया है आज दूध।

ये हमारी गरीबी की हालत है। जहां तक बेरोजगारी की बात है, तो शहर में तो बेरोजगारी है ही पढ़े–लिखे लड़कों की। 1 करोड़ 40 लाख लड़के आज बेरोजगार हैं जिन्होंने कामदिलाऊ दफ्तरों में नाम लिखाया हुआ है। लेकिन वहां की छोड़ो, मैं तो गांव की बात आप को बताना चाहता हूं। गांव से आप वाकिफ हैं। सन् 70–71 में भारत सरकार ने एक गणना की गांव की जमीन की, कि कितनी जमीन कितने लोगों के पास है। क्या उसमें बोया जाता है, कैसी सिंचाई है, सिंचाई का क्या प्रबंध है, वगैरा–वगैरा। सन् 70–71 का एग्रीकल्चरल सेंसस वो कहलाता है। उसकी रिपार्ट के अनुसार 33 किसान ऐसे हैं 100 में, एक तिहाई, जिनके पास दो बीघे से कम जमीन है। सारे देश के आंकड़ों का औसत है। एक–तिहाई किसान ऐसे हैं, जिनके पास दो बीघे जमीन नहीं है, दो बीघे से कम है। 18 ऐसे हैं जिनके पास दो बीघे से ज्यादा, चार बीघे से कम। 19 किसान ऐसे हैं जिनके पास चार बीघे से ज्यादा लेकिन आठ बीघे से कम। 100 में 70 किसान ऐसे हैं जो नाममात्र के किसान हैं, और जिनकी उस जमीन से गुजर नहीं हो सकती दोस्तों।

ये है किसानों का हाल; और मजदूरों की हालत और पहले से ज्यादा खराब हो गयी। अंग्रेज जब गये थे, बल्कि सन् 60 तक, 100 में 17 किसान थे हमारे गांव के अंदर रहने वाले, बल्कि सारे मुल्क में रहने वाले, उनकी तादाद साढ़े 26 हो गयी है। क्यों? क्यों कि जमींदारी खात्मे का नाम उछाला गया और जमीन–वमीन पर वो लगी–सीलिंग वगैरा, तो बड़े–बड़े जमींदारों ने काश्तकारों से जमीन छीन ली। सब मजूदर हो गये। 8 फीसदी मजदूर बढ़ गये,

60 से लेकर 70 तक, दस साल के अंदर। तो साढ़े 26 फीसदी मजदूर हैं, साढ़े 43 फीसदी किसान हैं और उन किसानों में से मैंने बता दिया, एक–तिहाई दो बीघे से कम, 18 दो बीघे और चार बीघे के बीच– 18 फीसदी। और चार और आठ बीघे के बीच 19 फीसदी।

और, जब इनके –साथ शहरवालों का ये हाल है, कि जब मैं अभी वित्त मंत्री हुआ, तो मैंने किसानों के खाद पर जो टैक्स लगा हुआ था, जो दुनिया में कहीं टैक्स नहीं लगता। किसानों के खाद पर टैक्स नहीं, बल्कि अनुदान दिया जाता है। तो सन् 65 में जो हमारे वित्त मंत्री थे, अभी हमने उनको प्राइम मिनिस्टर बनवाया था, मोरारजी देसाई, इन्होंने एक्साइज ड्यूटी लगा दी थी खाद के ऊपर किसानों के। बाहर से गल्ला मंगाते थे और अपने देश के खेतों की पैदावार बढ़ाने का जो सबसे बड़ा साधन था खाद, उस पर टैक्स लगाया था मोरारजी देसााई ने सन् 1965 में। तो मैंने उस टैक्स को आधा कर दिया था। तो शहर के लोगों में बड़ा शोर मचा कि चरण सिंह शहर के लोगों पर टैक्स लगाकर गरीब लोगों पर टैक्स लगाकर गांव के मालदार किसानों को फायदा पहुंचाना चाहता है। झूठा प्रचार। झूठा प्रचार। ये सब बात बेमतलब।

तो, ये बेरोजगारी का हाल है हमारे गांव के बच्चें का। जमीन तो बढ़ेगी नहीं। दादे–परदादों के सामने जो जमीन थी, उसी पर मेंड पर मेंड लगती जाती है और औलाद बढ़ती जाती है और हर एक के हिस्से में थोड़ी जमीन आती जाती है। मैं दूसरों को क्या कहूं ? मुझे आप भी दीख रहे हैं, आपकी शक्ल भी दीख रही है। मैं तो अपने घर की बात कहता हूं कि अब से पचास साल, साठ साल पहले, जो मेरे घर वालों की हालत थी किसानों की। मैं एक मामूली किसान के घर पैदा हुआ हूं, काश्तकार के घर। ऊंची रियासत थी बुलंदशहर की, उनकी जमीन मेरे बाप पर मेरे खानदान वालों पे थी। दस एकड़। तो उस वक्त की मझको याद पड़ती है, मेरे ताऊ, मेरे ताऊ के लड़के जो मेरे भाई लगते थे और सब हमारे बहू–बेटियों, सबके चेहरे पर रौनक, सबकी तंदुरूस्ती अच्छी। गाय–भैंस की भी अच्छी। आज वहीं उनके लड़के, मेरे ताऊ मेरे भाई तो दोनों वहां रहते नहीं, लेकिन जो मेरे ताऊ के पोते और पड़पोते जो मेरे पोते लगते हैं अब, उनकी शक्ल देखता हूं तो मुर्दा, काला रंग, जिस्म में कोई ताकत नहीं, चेहरे पर रौनक नहीं, कपड़े अच्छे पहनने को नहीं मिलते, पीने को दूध नहीं मिलता। क्यों? क्योंकि जमीन अब दो–दो एकड़ रह गयी है बजाय दस एकड़ के। तो यही गांव की सारी व्यथा है। और इस पर कहता है शहर वाला कि मालदार किसानों को फायदा पहुंचाना चाहता है चरण सिंह खाद की कीमत कम करके।

.....

आदमी दस्तकारी में लगा हुआ था। कपड़े बनाता था, साबुन बना लेती थीं घर की बहू–बेटियां, दियासलाई बनाते थे, जूता वहीं बनता था। हजार काम होते थे हाथ से, दस्तकारी में। दस्त माने हाथ, जो हाथ से काम किया जाये। हस्तकला भी कहते हैं हिन्दी में। तो अंग्रेज जब आया था तब 25 फीसदी किसान और भी काम करते थे। हमारे यहां ढाका की मलमल मशहूर थी दुनिया में। वो किसान बनाता था अपने खाली वक्त में। खेत में काम किया और खाली वक्त में कपड़ा बनाया। वह कपड़ा इंगलिस्तान में जाता था और इंगलिस्तान के लोग अपने इस मुल्क के बने हुए कारखाने के मुकाबले में हिंदुस्तान के बने हुए हाथ के कपड़े को पंसद करते थे और खरीदते थे। तो दूसरे रोजगार थे। अब दूसरे रोजगार सब खत्म हो गये। किसानों की तादाद पहले 60 थी 100 में, वो 72 हो गयी और दस्तकारों की तादाद 25

थी, अब सब कारखाने में लगे हुए हैं, अब थोड़े–बहुत दस्तकार बचे हैं, उनकी तादाद मिलकर कुल 9 रह गयी। 25 से 9, 60से 72, देश गरीब हो गया। बावजूद लाखों मोटरकारों के, जो बड़े–बड़े शहर में बड़े–बड़े लोगों के पास हैं केवल। फ्रिज जिसमें सामान रखा जा सकता है। अगर गर्म चाहते हैं तो गर्म रहेगा, ठंडा चाहते हो ठंडा रहेगा, ऐसी मशीन होती है। और ये रेडियो और टेलीविजन सेट, और गगनचुंबी बड़ी–बड़ी इमारतें बनी हुई हैं– दिल्ली में, बंबई में। बावजूद इन सबके, 200 वर्ष पहले जब अंग्रेज आया था, आम हिंदुस्तानी, औसत हिंदुस्तानी उस वक्त मालदार था, खुशहाल था, बनिस्बत आज के, 65 हजार फैक्टरी लगने के बावजूद। तो बेरोजगारी फैलती जा रही है।

तीसरी बात यह कहना चाहता हूं दोस्तों, कि गांव की उपेक्षा की गयी है। गांव की तरफ से गफलत हुई है। गवर्नमेंट तो बनी है तुम्हारे वोटों के बल पर, लेकिन नेतृत्व रहा है शहर के लोगों के हाथ में। हुकूमत रही है शहर के लोगों के हाथ में, बिना तुम्हारे वोट के कोई गवर्नमेंट बन नहीं सकती है – दिल्ली में या भोपाल में। लेकिन जिनके हाथ में हुकूमत रही है, बागडोर रही है, जिनके हाथ में नीतियां बनानी रही हैं, वो महलों में पैदा हुए थे। उन्होंने गरीबी नहीं देखी थी, वो छप्पर के नीचे नहीं पैदा हुए थे। उन्होंने गाय–भैंस नहीं देखी थी, उन्होंने कच्चे कुंए नहीं देखे थे। उन्हें क्या मालूम ? नेकनीयत, देश के लिए कुरबानी की हमारे बहुत– से नेताओं ने, देश को उठाना चाहते थे, लेकिन जैसा गांधी जी कहते थे– रीयल इंडिया लिव्स इन दि विलेजेस नाट इन बाम्बे, देहली और कलकत्ता– असली भारत गांव में रहता है, दिल्ली बंबई में नहीं रहता। असली भारत को दिल्ली और बंबई वाले लोग जानते नही थे। उन्होंने गरीबी कभी देखी नहीं थी। उनकी बहू–बेटियां सेज से कभी उतरती नहीं थीं। उन्होंने तकलीफ क्या जानी थी ? वो कहां खेत पर रोटी लेकर गयी थीं किसानों के लिए ? तो, इसलिए गांव की उपेक्षा होती रही।

नतीजा ये हुआ कि गांव और शहर का पहले भी बहुत फर्क था, आमदनी का। अब वो दुगना हो गया। मुझे याद है, अब तक स्वराज होने के बाद और स्वराज होने से पहले सन 1937 में, मैं एम0एल0ए0 होके आया था विधानसभा यू0पी0 में। मैंने एक लेख लिखा था कि किसान के बेटों को 60 फीसदी नौकरी मिलनी चाहिए कम से कम– कम से कम। (तालियां) उस वक्त, सन् 37 की बात को मैं कहता हूं आपको दोस्तों! लेकिन, मेरी बात को कौन सुनने वाला था ? किसी ने उस बात को नहीं सुना।

तो सारी हुकूमत जो रही है, वो शहर वालों के हाथों में। कहता हूं नेक नीयत वाले के पास, लेकिन उन्हें गांव का क्या पता था ? बड़े–बड़े अफसर भी आमतौर पर बड़े–बड़े शहरों में पैदा हुए हैं। मझे माफ करेंगे, ये खड़े हैं इधर–उधर, कुछ होंगे गांव के भी लोग। लेकिन जिनके हाथों नीतियां बनाना, जो सेक्रेटरी हैं, जो फाइलों पर हुकुम लिखते हैं, उन्होंने गांव देखा नहीं। एक अर्थशास्त्री हुए हैं हमारे बहुत महशहूर डा0 .... लखनऊ के। उन्होंने किताबें लिखी हैं कई गांव के ऊपर लिखी हैं। लेकिन सारी उमर तक गांव नहीं देखा था और गांव के ऊपर किताबें लिखी थीं उन्होंने। ऐसे लोगों के हाथ में ये देश की बागडोर रही। लेकिन उन्हें देश की समस्याओं का ज्ञान नहीं था, इसलिए देश की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया।

हां, तो मैं यह कह रहा था, जो बात भूल गया था। सन् 37 में मैंने एक लेख लिखा था कि 'इंडिया इज टू वर्ल्डस' – उसमें मैंने एक फिकरा ये लिखा था– हिंदुस्तान दो दुनिया है – एक दुनिया गांव की, दूसरी दुनिया शहर की। यूं समझते थे अंग्रेजों के जमाने में, महात्मा

के नेत्त्व में थोड़ा–बहुत काम करते थे देश के लिए कि अंग्रेज को निकालने के बाद गांव और शहर की जो खाई है इसको पाटेंगे। गांव वालों के कष्टों को मिटाने की कोशिश करेंगे। बड़े–बड़े सेठों को नहीं बढ़ने देंगे।

लेकिन दोस्तों, हमारे सारे जो अरमान थे, सपने, सब भंग हो गये। गांव और शहर की आमदनी का जो फर्क था वो दूना हो गया बनिस्बत अंग्रेजों के जमाने के। तुममें पढ़े–लिखे लड़के बैठे होंगे, नोट कर लेना मेरी बात को। सन् 50–51 में अगर एक गांव वाले की आमदनी या किसान की आमदनी 100 रूपये थी, तो शहर वाले की आमदनी या किसान के अलावा दूसरा पेशा करने वाले की औसत आमदनी 178 रूपये थी। 100 और 178 का फर्क था तब, अंग्रेज गये जब। सौः पौने दो सौ, मोटा–सा समझो। और, 77–78 में वो फर्क हो गया 100 और 346। गांव वाले की आमदनी 100, शहर वाले की आमदनी 346–350। पहले एक और पौने दो का फर्क, अब एक और साढ़े तीन का फर्क है।

गांव में न सड़कें हैं उस तरीके से कि हर गांव में सड़क हों, ना अस्पताल हैं। बीमार हो जाये आदमी तो भिंड जाये या ग्वालियर जाये। स्कूल जो हैं वो रद्दी किस्म के हैं। और कोई सहूलियत नही है। और सोचो, सब बातों को छोड़ो, हमारी बहू–बेटियों के लिए शौचालय का भी इंतजाम नही है। उनको नंगे, शर्म छोड़कर सड़कों पर बैठना पड़ता है, दोस्तों ! क्यों ? सड़कों में जाओ शाम को कभी, बैठी हैं बेचारी, क्या करें ? लड़के तो अन्दर चले जायेंगे, जवान आदमी, पुरूष अंदर चला जायेगा जंगलों में; ये बेचारी कहां जायें? तो मैंने कहा कि मैं तो छप्पर के नीचे पैदा हुआ हूं। मैंने अपनी माता को भी देखा है, अपनी बहनों को भी देखा है, सुबह की बजाय रात को जाती थीं, शौच। यही आपके यहां हाल होगा। क्यों ? तीस साल हो गये स्वराज को। शहरों की रौनक बढ़ गयी, जिसकी कोई सीमा नहीं, लेकिन हमारी बहू–बेटियां जो गांव में हैं, उनके शौच का भी कोई इंतजाम नहीं। छोड़ो लड़कों का, ना इंतजाम करते, लेकिन लड़कियों का तो इंतजाम कर देते। इसका कारण केवल एक है कि जिनके हाथ में सत्ता रही है देश की, उनकी बहू–बटियों को बाहर नहीं जाना पड़ता था। उनके लिए फ्लश का इंतजाम था। लिहाजा तुम्हारे लिए इंतजाम कैसे होता दोस्तों ? (तालियां) तो ये गांव की और शहर की जो तुलना है, वो मैंने की।

फिर अंग्रेज जब यहां थे तो छोटे–मोटे काफी सेठ पैदा हो गये थे। पहले जमाने में नहीं थे, जब हिंदुस्तान आजाद था। हम ये चाहते थे कि सेठों की तादाद को कम करेंगे, उनकी संपत्ति कम करेंगे। ये भी उल्टा हुआ। सेठों की तादाद बढ़ गयी। और दो सेठों का आपने नाम सुना है। मैं बताये देता हूं कि उनकी कितनी जायदाद बढ़ी। टाटा है, टाटा का नाम सुना होगा, 116 करोड़ रूपये की जायदाद थी जब अंग्रेज गया। आज 1100 करोड़ की है। 116 और 1100 करोड़। और एक बिरला का नाम सुना होगा। उस वक्त तो टाटा से आधा ही था, – 53 करोड़ था, आधे से भी कम, उसकी जायदाद भी 1100 करोड़ थी, 19–गुना मालदार हो गया।

एक तरफ किसान और शहर का फर्क पौने दो की बजाय साढ़े तीन गुना हो गया और बिरला की जायदाद बीस–गुना बढ़ गयी। ये हुआ स्वराज में। गरीबी बढ़ती जाती है, बेरोजगारी बढ़ती जाती है, गरीब–अमीर का फर्क बजाय कम होने के बढ़ता जाता है।

और, चौथी बात, जो सबसे ज्यादा दुःखदायी है, गरीबी भी भुगती जाती थी, शख्ती भी, बेरोजगारी भी, लेकिन बेईमानी भी बढ़ती जाती है देश के अंदर, भ्रष्टाचार बढ़ता जाता है। हर

आदमी करीब–करीब बेईमान हो गया है। राज कर्मचारी छोटे–मोटे अंग्रेजों के जमाने में भी बेईमान थे। हम सोचा करते थे कि स्वराज मिलेगा तब बेईमानी को मिटायेंगे, कोई रिश्वत नहीं ले पायेगा गांव वाले से, शहर वाले से, किसान से।

लेकिन दोस्तों, ठीक उल्टा हो गया। राज–कर्मचारियों में भी रिश्वत पहले से बढ़ गयी। लेकिन मैं इसके लिए राज–कर्मचारियों को इतना दोष नहीं दूंगा। असल जिम्मेदारी राजनीतिक नेताओं की है। जिनको आप लीडर समझते हैं, वो लखनऊ में और भोपाल में और दिल्ली में जाकर रिश्वत लेते हैं दोस्तों, असल बात यह है। –– (तालियां) – जब लीडर रिश्वत लेगा, जब मिनिस्टर रिश्वत लेगा, जब गृहमंत्री रिश्वत लेगा, जब चीफ मिनिस्टर रिश्वत लेगा, जब प्राईम मिनिस्टर अगर रिश्वत लेगा या बड़े सेठों से इलेक्शन लड़ने के लिए रुपया लेगा, तो फिर अफसरों को कौन रोकने वाला है? कौन रोक सकता है ? (तालियां) तो सार ––––

मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ इस बात की है और वो पांचवीं बात है, कोई समस्या तो नहीं है खास– कि जब मेरी पीढ़ी के लोग, मैंने सन् 1919 में हाई स्कूल पास किया था मेरठ के गवर्नमेंट हाईस्कूल से। महात्मा गांधी ने देश की बागडोर तभी संभाली थी। अंग्रेजों से बगावत करने के लिए कांग्रेस की बागडोर उन्होंने संभाली थी। तो उस वक्त मेरी पीढ़ी के जो लड़के थे, स्कूल और कालेज में पढ़ते थे, महापुरूषों के नाम हमारे सामने थे। स्वामी दयानंद, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानंद – ये सन्यासी लोग थे, महात्मा लोग, जिनकी हम जीवनी पढ़ते थे, जिनकी किताबें पढ़ते थे। राजनीति के क्षेत्र में महात्मा गांधी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, पंडित मालवीय जी, लाला लाजपतराय, गोपाल कृष्ण गोखले, चितरंजनदास– ऐसे–ऐसे महापुरूष जिन्होंने जीवन झोंक दिया था देश को आजाद करने के लिए। तो वो हमारे सामने आदर्श थे। उनकी नकल करने की हम लोग उस उमर में कोशिश करते थे। सादा जीवन और ईमानदार रहने की और देशप्रेम की कहानियां पढ़ना और उनसे खुश होना और बन सके तो कुछ कुरबानी करना।

लेकिन आज जो स्कूल और कालेज में लड़के पढ़ते हैं यहां भिंड में या ग्वालियर में, उनके सामने कोई आदर्श है? ये बच्चे किसको बनायेंगे अपना आदर्श, किसकी नकल करेंगे ? इंदिरा की नकल करेंगी क्या हमारी बहू–बेटियां, जगजीवनराम की नकल करेगा कोई। जगजीवन राम आदर्श पेश करते हैं? मोरारजी और कांतिभाई की कोई नकल करेगा क्या ? अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन से कोई हमारा नौजवान सीखेगा कुछ? और चंद्रशेखर साहब से कोई कुछ सीखेगा ? या बहुगुणा से कोई सीखेगा ? ये आज आदर्श हैं। मुझे सब सबब –––

फिर दोहराता हूं, देश की सबसे बड़ी बदकिस्मती है, जबकि उसके जवानों के दिल में कोई आदर्शवाद न रह जाये और कोई सामने आदर्श का कोई आदमी न रह जाये, जिसकी वो नकल करना चाहें, वो देश डूब जाते हैं, और हिंदुस्तान डूब चुका है, दोस्तों! यह समुद्र में डूबने जा रहा है, बल्कि दौड़ के कोहली भर लो, बचाओ। वो डूब चुका है। उसको निकालना है। सालवेज करना है, जिसे अंग्रेजी में कहते हैं। ये हालत है देश की। तो कैसे सुधरेगा ?

तो ये मैं कहना चाहता हूं कि हमारा लोकदल–कांग्रेस का जो संगठन है या गठबंधन है, हम लोगों ने तय किया है कि वो गांधी जी के रास्ते पर चलने की कोशिश करे। गांधी जी का ही बताया हुआ रास्ता था। उसको भूल गये कुछ लोग और देश बर्बाद हो गया। गांधी ने

दो बात कही थीं सीधी सी। अपना चलन तो था ही त्याग का उसके कहने की कोई जरूरत नहीं है। उनकी दो ही शिक्षा थीं। उन दो शिक्षा को हमारे लीडरान मानते तो आज देश इस अधोगति को प्राप्त नहीं होता।

जैसे मैं कहता हूं कि महत्माजी ने हजार बार कहा कि असली भारत–हिंदुस्तान गांव में रहता है, खेती करता है, तो खेती की पैदावार बढ़ाओ– ये उनका कहना था। खेती की पैदावार बढ़ जायेगी, गांव वाले मालदार हो जायेंगे। गांव वालों की जेब में पैसा आयेगा, बाजार से कुछ खरीदेंगे, तो उद्योग–धंधे वाले पैदा हो जायेंगे, तिजारत बढ़ जायेगी, मोटर चलने लगेंगी, कालेज और स्कूल बन जायेंगे, देश मालदार हो जायेगा। लेकिन पहली शर्त यह है कि खेत की पैदावार दूनी हो।

दोस्तों, आज दुनिया में ऐसे देश हैं जो आपके मुकाबले में दस–दस गुना पैदा करते हैं, एक बीघे से। हामरे यहां परमात्मा ने जमीन बहुत अच्छी दी है। बारिश भी बहुत ज्यादा होती है। उस जमीन में हम पानी का संग्रह कर सकते और इस्तेमाल कर सकते हैं, जब जरूरत हो, उससे नहर वगैरा निकाल सकते हैं। हमारे यहां सूरज की किरणें भी बहुत पड़ती हैं, जिससे कि जमीन, फसल पकती है। अगर देश की खेती का इंतजाम अच्छा करते हमारे लीडरान, तो हम आधी दुनिया को खिला सकते हैं। आधी दुनिया को अकेला भारतवर्ष खिला सकता है, दोस्तों! (तालियां) इतना अन्न कि बचने के बाद दूसरे देशों को खिला सकते हैं। आज हम अपने देशवासियों को नहीं खिला पाते; क्यों ?

सबसे बड़ी जरूरत थी पानी की, दूसरे नंबर खाद की, तीसरे नंबर बीज की। पानी का ये हाल है कि जब अंग्रेज गया था, तो 100 में साढ़े सत्रह बीघे आबपाशी होती थी, सिंचाई होती थी। आज कुल 24–25 बीघे में होती है और ये भी सारे सूबे, हिंदुस्तान का औसत है। पंजाब में 80 फीसदी रकबे में आबपाशी है, वहां की गवर्नमेंट किसानों के हाथों में रही है हमेशा। तुम्हारी नहीं रही उस तरह से। मैंने सुना है तुम्हारे यहां तो 100 में 8 बीघे में आबपाशी है।

आज सूखा पड़ा हुआ है, पंजाब में भी पड़ा है, हरियाणा में भी। राजस्थान में और मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा और बंगाल के भी पांच–छह जिलों में पड़ा हुआ है। 9 सूबों में पड़ा हुआ है, हमने 9 तारीख को उनके अफसरान को बुलाया था और कहा था कि जितनी मदद दे सकती है गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, वो देगी सबको।

लेकिन मैं आपसे ये कह रहा हूं कि पंजाब में 80 फीसदी रकबे में सिंचाई का प्रबंध है, लिहाजा सूखा होते हुए भी उनको कोई इतना कष्ट नहीं हुआ है। आपके यहां जमीन ज्यादा है, आदमी कम हैं बनिस्बत यू0पी0 के। यू0पी0 में एक–तिहाई रकबे में आबपाशी का इंतजाम है। लेकिन कष्ट उनको भुगतना पड़ेगा ज्यादा, क्योंकि तुम्हारे यहां 100 में 8 ही बीघे में सिंचाई का प्रबंध है। काश, 8 की बजाय 40 फीसदी रकबे में इंतजाम हो जाता। मध्य प्रदेश में और सारे देश के 40 फीसदी हिस्से में होता, बजाय 25 के, तो दोस्तों, एक साल नहीं, अगर एक फसल नहीं, दो फसल भी सूखा पड़ जाय, तब भी लोगों को कष्ट नहीं होता। (तालियां) तब भी नहीं होता। (तालियां)

खुशकिस्मती से सरदार पटेल था किसान का बेटा, वो गृहमंत्री हो गये थे हमारे कुछ दिन के लिए। परमात्मा ने जल्दी उठा लिया उन्हें। बीमार रहते थे अक्सर, 75 वर्ष की उम्र में सन् 50 में हमसे विदा हुए। पांच भाई थे। दस एकड़ जमीन थी बाप के पास और 1857 की

बगावत में उनके बाप ने हिस्सा लिया था। देशभक्त के बेटे थे। गरीब किसान, जैसे किसान गरीब होता है। मिडिल पास करने के बाद उन्होंने कहा, बल्लभभाई इनका नाम था, कि खेती करो, मेरे बस की नहीं है आगे पढ़ाना, खेती करो, हल उठाओ। उन दिनों मैं मिडिल पास होता था। तो दो साल उन्होंने खेती की। बड़े भाई थे विट्ठल भाई पटेल। उन्होंने पढ़ के वकालत शुरू की। जब उनकी कुछ आमदनी आई तो बाप ने कहा कि अब पढ़ने के लिए जाओ। तब उन्होंने बी0ए0 पास किया। आगे बहुत देश की सेवा की। और, पहली पंचवर्षीय योजना, उनके जमाने में बनी जिसमें अरबों रुपया –– वो जानते थे किसान की मुसीबतों को, तो 37 फीसदी रुपया उन्होंने खेत के विकास के लिए रखा। 100 में 37, और 5 रखा कारखानों के लिए, क्योंकि सबसे बड़ा उद्योग–धंधा तो हमारे यहां खेती ही थी। गांव में 80 आदमी रहते 100 में और 72 करते खेती। तो 37 रुपया रखा उसके लिए।

सन् 56 में जब दूसरी योजना बनी, सरदार के पटेल के चले जाने के बाद, तो खेती का रुपया 37 से घटाकर कर दिया गया 18। कारखाने का रूपया 5 से बढ़ाकर कर दिया गया 24। खेती की तरफ से लापरवाही। अन्न की जरूरत होगी, अमरीका से मंगा लेंगे। ये हमारे लीडरों की राय हुई। देश बर्बाद हो गया। गांव बर्बाद हो गये तो देश बर्बाद हो गया, ये है आज हालत।

तो हमने ये तय किया, हमारे लोकदल ने और हमारे कांग्रेस के साथियों ने कि हमसे जितना भी रुपया बचेगा और सब चीजों से बचाकर हम 40 फीसदी रुपया कम से कम खेती पर खर्च करेंगे। दोस्तों ! (तालियां) हम चाहेंगे कि हमारा हर गांव सड़क से मिल जाये, बड़ी सड़क से छोटी सड़क के जरिये। हम चाहेंगे कि हमारे बड़े–बड़े गांवों में सब में अस्पताल हो जायें। हम चाहेंगे कि हमारे जो हाईस्कूल कायम हों गांवों में, उनमें शिक्षा उतनी ही अच्छी हो, जितनी कि भिंड के स्कूल में या ग्वालियर के कॉलेज में होती है। आज गांव में जो स्कूल हैं उन पर गवर्नमेंट बहुत कम खर्चा करती है। वहां के पढ़े–लिखे लड़के शहर के पढ़े–लिखे लड़कों का इम्तहान में मुकाबला नहीं कर सकते हैं और इसलिए नौकरी में बिचारे नहीं आ पाते हैं।

तो, गांव की बिलकुल उपेक्षा हुई है। हम ये भी चाहेंगे–चूल्हे को बदलना। मैंने देखा अपने घर में देखा, जब मैं बात करता हूं गांव की या किसान की और गरीबी की, तो किसी पे एहसान नहीं करता। कोई पढ़ी–लिखी बात नहीं कह रहा हूं, स्वयं भुगती हुई बातें कह रहा हूं। हमारी बहू–बेटियां, जवान बहू–बेटियां तीन साल–चार साल के बाद, शादी के तीन–चार साल के बाद उनका सौंदर्य खत्म हो जाता है, चूल्हा झोंकते–झोंकते उनकी तंदरूस्ती खराब हो जाती है, आंखें खराब हो जाती हैं, उनके फेफड़े खराब हो जाते हैं (तालियां), हम इन चूल्हों को बदलना चाहते हैं जिससे कि इतना धुआं न निकले। और हम गोबर को बचाना चाहते हैं, जो बजाय चूल्हे के खेत के अंदर गोबर जाना चाहिए दोस्तों ! तब खेत की पैदावार बढ़ेगी। उसके लिए इंतजाम कुछ करना पड़ेगा। कोयला पहुंचाया जा सकता है बड़ी आसानी से। ऐसे दरख्त हैं कि अगर गवर्नमेंट चाहती केवल मेंड पर लग सकते हैं, जो छैल भी नहीं मारेंगे फसल को। उसकी पत्तियां कम होती हैं। मेंड पर पैदा हो जाता, कल्लर में पैदा हो जाता। सीधा ऊंचा जाता, लंबा चला जाता। ईंधन उसका मिल सकता था। लेकिन किसी को फिकर हो तब ? किसी को दुःख हो तब ? हमारे लीडरों की बहू–बटियों या माता या बहनों को चूल्हा झोंकना पड़ता हो तब ?

बड़े कारखाने लगायें बिजली पैदा करने के लिए, फौलाद पैदा करने के लिए, रेल का इंजन बनाने के लिए, थोड़ी–बहुत जरूरत हो मोटर बनाने के लिए, बेशक बड़े कारखाने लगाये जायें। लेकिन जो काम हाथ से हो सकता है, उसको हाथ से करो, क्योंकि हाथ से जब काम होगा तो ज्यादा लोगों को रोजगार मिलेगा और कोई पूंजीपति पैदा नहीं होगा।

पैदा हुआ था एक राजा की रियासत के दीवान के घर, मालदार घर में महात्मा गांधी, बैरिस्टरी करके आया था और फकीर होकर चरखा और करघा हाथ में उठा लिया। ये बताने के लिए कि अमरीका की नकल मत करना। अमरीका में आबादी कम, जमीन हमसे कई गुना ज्यादा है। लोहा, कोयला और तेल ज्यादा है। वहां बड़े कारखाने होंगे, बड़े फार्म होंगे। हमारे यहां जमीन कम, कोयला, तेल और लोहा कम आदमियों को देखते हुए, लिहाजा हमारे यहां छोटी–छोटी जमीन होगी लोगों पर। बीस–बीस, पच्चीस–पच्चीस बीघे या चालीस बीघे ज्यादा से ज्यादा और हमारे यहां दस्तकारी होगी। बड़े कारखानों के अलावा जो भी काम हाथ से हो सकता है, सब हाथ से किया जाये। चरखा ले के बैठो। लेकिन उनके चले जाने के बाद कांग्रेस वाले जो उनके सामने चरखा चलाते थे और हाथ से सूत कातते थे और खद्दर पहनते थे, उन्होंने 300–400 कारखाने लगा दिये कपड़ा बनाने के – सेठों के, बिरला के, टाटा के और लोगों के।

अब गवर्नमेंट की एक रिपोर्ट है 1953 की, जिसमें लिखा है कि बड़े कारखाने में एक मजदूर जितना कपड़ा पैदा करता है, उसको हाथ से पैदा करने में बारह आदमी लगेंगे करघे पर। तो हमारा इरादा है, सुन लो ध्यान देकर, अगर हमारी बात चल गयी और आपने दिल्ली की जिम्मेदारी हमारे और हमारे साथियों के सुपुर्द की और मेरे साथी राजी हो गये, तो मैं उन सब कारखाने के मालिकों को, जो कपड़ा कारखाने में बना रहे हैं या और काम कर रहे हैं, जो हाथ से हो सकता है, उनको ये हुकुम दूंगा कि कारखाने तुम्हारे बंद तो नहीं होंगे, चलाओ; लेकिन तुम्हारा माल हिंदुस्तान से बाहर बिकेगा, तुम हिंदुस्तान में अपना माल नहीं बेच सकोगे (तालियां)। हाथ से कपड़ा बनेगा, हाथ से दियासलाई बनेगी, हाथ से कालीन बनेगा, हाथ से साबुन बनेगा, हाथ से जूता बनेगा बजाय कारखानों के। ताकि ज्यादा लोगों को रोजगार मिले। औलाद हमारी बढ़ेगी, फिर कहता हूं, चाहे तेज रफ्तार से चाहे कम रफ्तार से, लेकिन जमीन हमारी बढ़ने वाली नहीं है।

तो दोस्तों, ये हमारा इरादा है गांव को उठाने का। इसीलिए मेरे जन्मदिन पर 77 लाख रूपये इकट्ठे हुए थे, जब मेरी 77वीं वर्षगांठ अभी मनाई गई – 23 दिसम्बर सन् 77 को। आपके यहां से भी मैंने सुना हजारों आदमी गये थे या सैकड़ों आदमी गये थे। तो, 77 लाख रूपये का हमने ट्रस्ट बना दिया है एक, और उसमें अखबार निकालना शुरू किया है। जितने अखबार हैं, कोई गांव वालों की समस्या का जिक्र नहीं करता है। ये कत्ल है, ये उसने गाली दी है, ये उसने व्याख्यान दिया है, लेकिन गाय का दूध कैसे बढ़े, खेत की पैदावार कैसे बढ़े, पानी का इंतजाम क्या हो, गांव वालों की हालत कैसे सुधरे ? कोई अखबार ऐसे लेख नहीं लिखता। लिहाजा मैंने अखबार निकाला है एक। उसका अंग्रेजी में भी है एक साप्ताहिक, हिंदी में भी है। अंग्रेजी वाले का नाम रखा मैने 'रीयल इंडिया', और हिंदी वाले का नाम रखा हमने 'असली भारत'। तो वो अखबार आप मंगाना शुरू करना धीरे–धीरे। बहुत अच्छा अखबार होने वाला है – तालियां ––। उसमें गांव वालों की सब समस्याओं का जिक्र होगा। अध्ययन के बाद उसमें लेख लिखे जायेंगे, गांव वालों की हालत कैसे सुधरे।

दोस्तों, हमने सन् 74 में एक पार्टी बनायी थी, बल्कि कोशिश की थी भारतीय लोकदल बनाने की। हमने 'कांग्रेस' छोड़ दी सन् 66 में और 'भारतीय क्रांतिदल' नाम रखा। 74 में फिर हमने कोशिश की कि सब पार्टियां जो कांग्रेस के मुखालिफ हैं इकट्ठी हो जायें। बहुत–सी चार–पांच पार्टी इकठ्ठी हो गयी। जनसंघ और एक सोशलिस्ट पार्टी है छोटी–सी, वो उसमें शामिल नहीं हुई और न मोरारजी भाई की एक छोटी–सी कांग्रेस है, वो राजी हुई। हमने इनको बहुत समझाया। नहीं मानते थे। मैं ये कहता था कि मिलकर एक जबरदस्त पार्टी बनाओ, कांग्रेस के खिलाफ बनाओ, तब जा के मुल्क चलेगा, जब बराबर की दो पार्टी हों। कांग्रेस का 30 साल से बराबर राज चल रहा है। ये मस्त हो गये हैं, भूल गये हैं गांव वालों को, करप्ट हो गये हैं, रिश्वत लेने लगे हैं, क्योंकि उनको निकालने वाला कोई नहीं रह गया है, उनका ये ख्याल है, मैं कहता हूं कि एक वैकल्पिक साधन पैदा करो– देश के स्तर पर एक बड़ी पार्टी।

मैंने इन लीडरों से भी कहा। मोरारजी देसाई से कहा, अटल बिहारी वाजपेयी से कहा और बालासाहब देवरस हैं, एक इनके बड़े लीडर आर0एस.एस0 के, उनसे भी मेरी घंटे भर कानपुर में बात हुई 18 अक्टूबर सन् 74 को कि सब मिलकर हरा सकते हैं कांग्रेस को। अकेले–अकेले नहीं हरा सकते। लेकिन कोई राजी नहीं हुआ। मेरा कहना ये था कि नाम पार्टी का कुछ ही रख लो, निशान कुछ ही रखो, झंडा कुछ ही रखो, लीडर किसी को बनाओ। केवल मेरी एक शर्त है कि महात्मा गांधी ने जो प्रोग्राम बनाया था देश को उठाने का, उस प्रोग्राम को स्वीकार कर लो, तब जा के देश का काम चलेगा।

किसी ने मेरी बात को माना नहीं। नतीजा यह हुआ कि इमरजेंसी लग गयी। एक लाख दो हजार आदमी जेल में डाल दिये गये। उस वक्त जनसंघ के, सोशलिस्ट पार्टी के लोग जब जेल में पहुंच गये, तब राजी हुए। एक मोरारजी इतना जिद्दी आदमी है तब भी नहीं तैयार हुआ। जब छूट गये 18 जनवरी को, तब जाके तैयार हुआ। और फिर हमारे लोगों ने कहा कि मोरारजी को बनाओ चेयरमैन। हमने कहा चलो बना दो चेयरमैन। इलेक्शन लड़ा, सारा उत्तरी भारत मेरे सुपुर्द हुआ। और सारा दक्षिण महाराष्ट्र, गुजरात के समेत चार राज्य दक्षिण के छः राज्य छः सूबे उनके सुपुर्द हुए। वो वहां से कुल लाये 65 सीट इन छः सूबों से और हमने अमृतसर से लेकर कलकत्ते तक सारी कांग्रेस का सफाया कर दिया, जैसा कि दुनिया में कभी हुआ नहीं था दोस्तों! (तालियां)

आप सबने कांग्रेस के खिलाफ वोट देकर उन सब लोगों को जिता दिया, जिसका नाम जनता पार्टी हमने रखा था। अब लीडर बनने की बात हुई, तो जैसे ही 20 मार्च को इलेक्शन खत्म हुआ, मैं बीमार होकर अस्पताल पहुंच गया। मेरे पास अटल बिहारी वाजपेयी पहुंचते हैं जनसंघ के लीडर और सोशलिस्ट पार्टी के लीडर एन0जी0 गोरे और कहते हैं कि हम जगजीवनराम को पी.एम. बनाना चाहते हैं। मैंने कहा इसलिए कि इमरजेंसी का प्रस्ताव पेश किया, इसलिए इनाम देना चाहते हो क्या ? 25 जून को इमरजेंसी घोषित हो चुकी थी, हम लोग सब जेल भेजे जा चुके थे, कानूनी शक्ल देने के लिए 21 जुलाई को विधेयक पेश किया गया पार्लियामेंट में। गृहमंत्री नहीं थे जगजीवनराम, फिर भी इन्होंने उसे पेश किया, इंदिरा को खुश करने के लिए वो प्रस्ताव कि इमरजेंसी लागू की जाये, लोगों की आजादी छीन ली जाये बजाय अदालत में भेजने के।

मैंने कहा इस शख्स ने जब देखा कि इंदिरा इससे खुश नहीं है, इसको टिकट नहीं देने वाली हैं, जब चुनाव होने लगे 77 में, तो ये कांग्रेस को छोड़कर आये। इसने एक छोटी–सी पार्टी बना ली और आप उसको बनाना चाहते हो, इसलिए कि उसने प्रस्ताव पेश किया था। मैंने कहा और बात नहीं करना चाहता हूं, निजी बात, जगजीवनराम की बात किसी से छिपी नहीं है। अटलजी से मैंने कहा कि बड़ी हिंदू संस्कृति की बात करते हो, इस प्रकार के आदमी को लीडर बनाना पसंद करती हैं आपकी हिन्दू संस्कृति ? देश ऐसे लोगों से उठेगा क्या ? (तालियां) मैंने कहा, दुनिया तुम्हारे जनम पे थूकेगी, जब उसको लीडर लेकर चलोगे तुम। वो प्राइम मिनिस्टर होगा। 150 आदमी कांग्रेस के फिर भी जीत के आ गये, 550 में से, जब तुम इंदिरा की आलोचना करोगे और ये कहोगे कि इसने इमरजेंसी लगाकर पाप किया था, तो लोग कहेंगे कि जिसने इमरजेंसी का प्रस्ताव पेश किया था, वो आपका प्राइम मिनिस्टर बैठा है। आपका क्या मुंह है हमारी शिकायत करने का (तालियां)। तब जाकर उनकी अकल में आयी। मैंने कहा कि मैं हरगिज, हरगिज जगजीवनराम जी के लिए तैयार नहीं (तालियां)।

मैं जानता हूं कि मोरारजी बड़े आदमियों के असर में हैं, लखपतियों और करोड़पतियों के। मैं जानता हूं गरीब की बात, मेरी और उनकी बातों में फर्क होगा। मैं जानता हूं उनको किसान से और गरीब से कोई हमदर्दी नहीं है। लेकिन सिर्फ दो बात की वजह से मैं इस आदमी के मुकाबले में उसे पसंद करूंगा कि 19 महीना जेलखाना काटा है ओर उम्र में मुझसे सात साल बड़े हैं। चिट्ठी लिख दी जय प्रकाश नारायण जी को और आचार्य कृपलानी जी को उन दिनों वो दिल्ली आये हुए थे कि मेरे और मेरे साथियों के वोट मोरारजी के लिए। इसलिए मोरारजी प्राइम मिनिस्टर हुए और जगजीवन राम ने घोषणा कर दी कि ये हरिजनों का दुश्मन है, क्योंकि हरिजन को इसने प्राइम मिनिस्टर नहीं बनने दिया।

मेरे सामने दोस्तों, हरिजन गैर–हरिजन का सवाल नहीं था, मैं उसको प्राइम मिनिस्टर इसलिए नहीं बनने दिया क्योंकि उसने आपात्कालीन स्थिति का प्रस्ताव पेश किया था, इमरजेंसी लगायी थी, अब अपने स्वार्थ के लिए, अपना स्वार्थ देखकर, कांग्रेस को छोड़कर आया था, हम में मिलने के लिए। मैंने कहा नहीं, हरगिज नहीं (तालियां)।

मैंने हरिजनों के लिए जितना किया है, मेरे पास बताने को वक्त नहीं है। लेकिन मैं ये बिलाखौफ तरदीद कहने के लिए तैयार हूं कि अपने ये जो गरीब भाई हैं, कि ये जो हजारों वर्ष से अपने को ऊंची जाति के कहने वाले हिंदओं ने इनके साथ जो अन्याय किया है, मैंने हिंदुस्तान में किसी भी मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर से ज्यादा इनकी खिदमत की है बनिस्बत किसी और के। लेकिन ––(तालियां) –– आज मेरे पास समय नहीं।

उधर मेरार जी हो गए लीडर, प्राइम मिनिस्टर के बजाय बन गए डिक्टेटर। अपने आदमी सब भर लिये मिनिस्ट्री में और जब 25 लाख आदमी 23 दिसम्बर सन् 77 को पहुंचे दिल्ली में किसान, सारे हिंदुस्तान के और 50 लाख से ज्यादा पहुंचे 78 में तो, उनके हृदय पर सांप लोट गया ईर्ष्या का कि चरण सिंह इतना जनप्रिय है। इसने एहसान किया है मुझे प्राइम मिनिस्टर बनाकर, इसका एहसान उतारना है। एहसान उतारा ये कि हमारे तीन चीफ मिनिस्टर थे, उनको निकाला। बिहार में थे कर्पूरी ठाकुर– एक नाई के घर पैदा हुआ था। हमारी पार्टी के लीडरान ज्यादातर गरीब लोग हैं, गरीब घरों में पैदा हुए हैं। उसका बाप आज भी नाई का काम करता है, ऐसा लीडर है वो कर्पूरी ठाकुर। उसको भी चीफ मिनिस्ट्री से हटवाया जनसंघ ने और मोरारजी ने मिलकर। रामनरेश यादव को हमने यू0पी0, हिंदुस्तान के

सबसे बड़े सूबे का चीफ मिनिस्टर बनाया था, हमारे हाथ की बात थी यू0पी0 में– उसको निकाला। देवीलाल, एक किसान का बेटा है हरियाणे में, उसको निकाला। राजनारायण को मिनिस्ट्री से हटाया, मुझको भी हटाया था। राजनारायण को वर्किंग कमेटी से भी निकाल दिया। ये तो सब मिनिस्ट्री से निकाले गए, हमारे लोग जो आगे चुनाव होने वाला था जनता पार्टी का, इलैक्शन की जो कमेटियां बनी थीं, उसमें लोकदल के लोगों को नहीं रखा गया। केवल यू0पी0 में एक या दो एक आदमी रखे गये।

इरादा था हमारा एहसान उतारने का। एहसान उतारने को कहानी सुनाये देता हूं। तुम धूप में तो बैठे ही हो। हापुड़ के पास एक गांव है, मेरे पिताजी सुनाया करते थे और दिल्ली के पास के गांव के दो लोग आए गंगाजी नहाने के लिए गढ़मुक्तेश्वर। पहले पूर्णिमा को जाया ही करते थे सब हिन्दू लोग और नंगे पैर पैदल आए। एक दिन में, दिल्ली से पहुंच गए हापुड़ के पास वो एक गांव है। रात को वहां ठहरे एक चौधरी साहब के यहां। उन्होंने खातिर की। दूध पिलाया। सुबह चले गऐ गढ़मुक्तेश्वर। एक दिन का वो रास्ता है और जब लौटकर आए, फिर उसी के यहां ठहरे और उन्होंने अपने खिड़क में, अपने घेर में सुला लिया उनको, जहां बैल बंधे हुए थे उनके। और वो घर का मालिक किसान किसी और जगह सो गया। खुशहाल आदमी मालूम होता था। तो इन दोनों दोस्तों ने ये तय किया जो दो आदमी आए थे वहां से दिल्ली के पास एक गांव से, हमारी तो चौधरी ने बड़ी खातिर की है, इसका एहसान उतारना चाहिए, कैसे ? तो उसके दो बैल ये बड़े अच्छे खूबसूरत, उनको उठाकर, खोलकर ले गये। अब सुबह जब आया चौधरी अपनी खिड़क में अपने घेर में, जहां बैल बंध रहे थे, तो चौड़ा पाया उसने। उसने कहा, ओ हो, हो न हो वो लोग ले गए। उन दिनों बैलों की चोरी काफी होती थी।

मोरारजी का नाम लेना नहीं चाहता हूं, ठीक नहीं रहेगा (हंसी)। अच्छा, तो उनसे पहले ही गांव पूछ लिया था चौधरी साहब ने। तो पहुंचे उनके गांव– कू के भई, वो हमारे तो दो बैल खुल गए। नू कहे, अच्छा, हम तो चौधरी छोड़के आए थे दोनों बैलों को बंधे हुए उस वक्त। नू के जी आपको कहां, आप कैसे जाने, लेकिन साहब मेरी मदद करो किसी तरह उनको ढुंढवाओ। नू कहे, अच्छी बात है, ढूंढेंगे। अब 15 दिन बाद वो चौधरी फिर पहुंचा। नू के पता तो लग रहा है, पर बहुत ही बदमाश आदमी हैं, जरा हम और पक्की कर लें बात। 15 दिन बाद वो फिर पहुंचा बैलों का मालिक। नू के जी पता तो लग गया, पूरा हमारा यकीन हो गया, पर क्या करें कोई बात कहने की है नहीं। हमें तो शर्म आती है। ने के जी बात तो बताओ। नू के बात ये है कि वो 100 रू0 की फिरौती मांग रहा है। आप समझ गए, फिरौती जानो हो नहीं ? अब बिचारे ने 100 रू0 की फिरौती दे दी। 500 रू0 के बैल होंगे, आज तो आते हैं वो 5000 में। तो देखा, एहसान उतार दिया ना, जो खाना–वाना खाया था, खातिर की थी और 100 रू0 ले लिए।

तो मोरारजी ने कहा कि इस शख्स ने मुझको बनवाया प्राइम मिनिस्टर, इस चरण सिंह का एहसान उतारना है किसी तरह ? तो यह उतारा उसने एहसान। हमको बर्बाद करने में। और 26 जून सन् 79 को, अभी पांच महीने पहले अखबार वालों ने पूछा कि आपने निकाल दिया था उनका वर्किंग कमेटी से और राजनारायण को, उन्होंने पार्टी छोड़ दी ? लोकदल के अगर और लोग छोड़े तो क्या होगा ? नू के छोड़ दो, अगर सारे छोड़ दें, कोई हर्ज नहीं, मेरी पार्टी मजबूत हो जाएगी, मेरी गवर्नमेंट मजबूत हो जाएगी।

मेरे साथियों ने कहा, चौधरी साहब, आपने ये पार्टी बनायी, हम सब लोगों ने कोशिश की। आपने इनको चेयरमैन भी बना दिया और इसके बाद प्राइम मिनिस्टर बना दिया था। अब हम सब को निकाल दिया है और ये कहते हैं कि लोकदल के सभी चले जाएं तो कोई हर्ज नहीं, पार्टी मजबूत हो जाएगी। अब हम पे इससे ज्यादा नहीं सहा जाएगा–– ले आये अविश्वास का प्रस्ताव। मेरे साथियों ने कहा कि अब हमको इजाजत दीजिए, हम ज्यादा नहीं रह सकते, हम और ज्यादा जलील होना नहीं चाहते हैं।

इस तरह पार्टी टूटी। इसको कहते हैं कि हमने दल बदला, नहीं। कानून जो पेश हुआ पार्लियामेंट में मई, 79 में, जो विधेयक है, जब मैं होम मिनिस्टर था, जब कमेटी बनी थी, उसमें ये तय हुआ था कि चौथाई आदमी से कम अगर पार्टी को छोड़े तो माना जाएगा–डिफैक्शन, और चौथाई छोड़े या चौथाई से ज्यादा छोड़े तो पार्टी का विभाजन होगा। हम 299 आदमी पार्टी के थे, हमने 97 ने छोड़ा, एक–तिहाई ने, लिहाजा जो आदमी कहता है कि हम डिफैक्टर रहे, हमने दल बदला है, वो बेईमान है। झूठ बोलता है– ये मैं कहना चाहता हूं (तालिंया)। तो सब तरह से पार्टी टूटी। हमने तोड़ी, इसलिए कि हमको मजबूर कर दिया आज कि बाइज्जत तरीके से नहीं रहें।

आपके सामने चुनाव होने जा रहा है। अब आपको तय करना है कि किसको वोट देने हैं। तो दोस्तों, हमने अभी दो महीने के अन्दर गन्ने के दाम बढ़ा दिए हैं। पहले 10 रूपये फी क्विंटल गन्ने के दाम थे। हमने तय कर दिया कि साढ़े बारह रू0 से कम नहीं होंगे और मेरठ के अन्दर जहां गन्ना बहुत अच्छा पैदा होता है, एक इलाके में, उसे 15 रू0 फी क्विंटल फैक्टरी से इस वक्त मिल रहा है (तालियां)। धान के दाम पहले 85 रू0 फी क्विंटल थे, हमने 95 रू0 फी क्विंटल कर दिया। गवर्नमेंट जो खरीद करेगी। साथ ही ज्वार के दाम भी पहले 85 थे, धान के बराबर, वो भी 85 हो गए। अब तक मोरारजी के सामने 225 रू0 फी क्विंटल कपास के दाम थे, हमने उसको 275 रू0 कर दिया, 50 रू0 उसके बढ़ा दिए। अन्य चीजों के भाव बढ़ रहे थे पहली गलतियों के कारण, तो हमने एक ऑरडिनेंस– अध्यादेश जारी किया कि जो दुकानदार अपने घर के अन्दर माल रखते हुए या डीजल ऑयल अपने यहां रखते हुए, किसानों को, गरीबों को नहीं देता है और दुगने–चौगुने दाम मांगता है, तो गवर्नमेंट चाहे सूबे की हो, उसको जेल भेज सकती है, और जेल भेजे जा रहे हैं। अब आपने देखा कि भाव जो बढ़ रहे थे वो रुक गए, लेकिन आपके मध्य प्रदेश के, जनसंघ के चीफ मिनिस्टर ने यह तय किया कि हम इस कानून को लागू नहीं करेंगे, ये उनको अधिकार था। क्यों ? (तालियां)। बेईमान दुकानदारों के दोस्त, बेईमान मुनाफाखोरों के दोस्त। सब लोगों का पहला ख्याल था कि जनसंघ पार्टी दुकानदारों की है, गरीबों की नहीं है, गांव वालों की नहीं है, किसानों की नहीं है, बल्कि किसानों से बैर है। अब साबित उन्होंने कर दिया। अटल बिहारी वाजपेयी ने ये कहकर कि ये आर्डिनेन्स नहीं लानी चाहिए थी, बल्कि उल्टा ये कहते हैं साहब, कि मैं सत्याग्रह करूंगा इस अध्यादेश के खिलाफ, जो बेईमान दुकानदारों को पकड़ने का हमने हुकुम जारी किया। ठीक है, अगर जब वो सत्याग्रह करें दिल्ली में, हिम्मत नहीं है, अगर करें दिल्ली में, तो ये रमाशंकर से कह रहा हूं कि इनके साथ 100 आदमी माला लेकर चले जाना कि बड़ा पुण्य का काम कर रहे हैं आप, जरूर जेल जाओ, इस काम में, बेईमानों की मदद में।

ये है, साहब, जनसंघ। कांग्रेस को मैं बता ही चुका हूं। इसके नेता मोरारजी भाई और इंदिराजी को मत भूल जाना, बड़ी चालबाज महिला है। वो बहन लगती है हमारी रिश्ते में,

क्योंकि लीडर की बेटी थी। लेकिन बड़ी चालाक है, बड़ी ही चालाक। सिवाय झूठ बोलने के और दूसरा काम उसको नहीं आता। सच वो सारी उमर नहीं बोली है। सच न बोलने की कसम खाई हुई है। आज तक ये कहती रही है कि मैंने ठीक इमरजेंसी लगाई थी। अगर फिर आपने उसको गलती से मालिक बना दिया देश का, तो अब के कोड़े लगवाएगी। ये बात जरूर है कि कोड़े मुझको ज्यादा लगेंगे हमको चार–पांच को, लेकिन नम्बर तुम्हारा भी आएगा, बतलाए देता हूं।

और अखबारवालों के पहले नकेल डाल दी थी। अब भी कहती है कि मैं अब भी नकेल डाल दूंगी लेकिन आज अखबार में मैंने पढ़ा है कि मुजफ्फरपुर एक जिला है बिहार में, वहां श्रीमती जी गई हैं और श्रीमती जी ने किसानों से ये कहा है कि मझे अपनी बेटी समझकर माफ कर देना। आज अखबार में छपा है। माफ ही मत करना, बाताए देता हूं किसानों! बाद में मारे जाओगे तुम, मारे जाओगे बतलाए देता हूं। बस, इन शब्दों के साथ मैं अपने कथन को समाप्त करता हूं और आप धूम में बैठे हो इसके लिए मैं आपको बहुत–बहुत – क्या – क्या

(शोर– नू कह रही हैं सूखे के लिए कुछ नहीं कहा)

हां, सूखे के लिए अभी मैं कहकर आया हूं, और ये चीफ मिनिस्टर आपके सकलेचा मुझसे मिले थे। मैंने कहा, तुम ये प्रचार कर रहे हो क्योंकि सेंटर की गवर्नमेंट मध्य प्रदेश के लोगों को कुछ नहीं देना चाहती। नू कहते हैं कि नहीं, मैं तो नहीं कह रहा। मैंने कहा, सब अखबार वाले मुझसे कह रहे हैं कि तुम लोगों को ये बतला रहे हो कि केन्द्र की गवर्नमेंट, चरण सिंह के हाथ में हैं और वो हमारी मदद नहीं करता, क्योंकि हम जनसंघ की गवर्नमेंट हैं। बोले कि नहीं ? लेकिन झूठ बोलते हैं। मैं जानता हूं सब जगह ये लोग यह कह रहे हैं कि केन्द्र की गवर्नमेंट, दिल्ली की गवर्नमेंट हमको मदद नहीं करती। मैंने दोस्तों, ये कहा कि झूठ, हमने ये कहा था पहले और अभी 9 तरीख को सूबे अफसर बुलाए थे, 9 सूबे के अफसर बुलाए थे, जहां सूखा पड़ा है और सबसे कह दिया था जो भूखे लोग हों, जो गरीब हों जिनके पास पैसा नहीं है, अन्न खरीदने के लिए, उनसे कुछ काम करवा लो सार्वजनिक और उसके लिए जितने अन्न की जरूरत पड़ेगी, एक लाख टन की, दो लाख टन की, गवर्नमेंट आपको देगी। हमारे पास इत्तफाक से अन्न की कमी नहीं है। अन्न की कमी के कारण हिन्दुस्तान में दिल्ली की गवर्नमेंट एक आदमी को भूखा नहीं मरने देगी।

हमारे सामने सवाल है पानी का कि पानी हम कहां से लाएं ? पथरीली जमीन में कुआं खोदने के लिए चाहिए रिग, मशीन। तो हमारे पास दो–तीन महकमें थे, जिनके पास रिग होती है। उनसे हमने कहा, लेकिन वो रिग ऐसी है कि वो जल्दी से कुआं नहीं खोद सकती है। तो जो हमारे राजदूत दूसरे देशों के अन्दर गए हैं, उनसे हमने कहा कि जितनी भी रिग, जितनी मशीन पथरीली जमीन को खोदकर पानी निकालने की क्षमता रखती हैं, उन सब को खरीदो और जल्दी से जल्दी हिंदुस्तान भेजो। दोस्तों, एक अखबार वाला आज मुझसे बोला, जरूर जनसंघी होगा, कि चौधरी साहब लोग यह कह रहे हैं कि जब से आप आए हैं, तब से सूखा पड़ा है (हंसते हुए)। मैंने कहा, आप क्या कहते हैं? नहीं, नहीं, मैं तो नहीं कह रहा। बेईमान लोग झूठे प्रचार हमारे खिलाफ करते हैं।

तो महात्मा गांधी की हत्या हुई जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल के रहते हुए। और जिन्होंने की, उनका भी अंदाज लगा लो। तो क्या जवाहर लाल ने सरदार पटेल ने महात्मा गांधी की हत्या कराई थी क्या ? ऐसा प्रचार!

मैं एक बात और कहना चाहता हूं आपसे और बात खत्म कर दूंगा। इंदिरा तो अकेली डिक्टेटर है और ये आर0एस0एस0 संगठन ही डिक्टेटर है। इंदिरा तो आज नहीं कल, कल नहीं, परसों मर जाएगी, जैसा हम सब को मरना है, लेकिन संगठन मरता नहीं है, ये इससे ज्यादा जहरीला जानवर है जिसका नाम है– आर0एस0एस0, भूल मत जाना। गलती मत करना, किसानों का खास तौर से दुश्मन। जो बिरादरियां पेशा करती हैं खेती का, उनको नहीं पसन्द करता है। पहली बात तो हिन्दू और मुसलमान में भेद करता है। हम नहीं भेद करते हैं, जितने हमारे हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं, हमारा बर्ताव सब के लिए बराबर होगा, सब को बराबर हक होगा। हिन्दू राष्ट्र की बात करता है आर0एस0एस0। हिन्दू राष्ट्र में एक या दो बिरादरी का राज चाहता है वो। हरिजनों के साथ भी उनको कोई हमदर्दी नहीं है। वो जन्मगत बिरादरी में विश्वास करते हैं। मैं और मेरे साथी स्वामी दयानन्द के अनुयायी हैं ज्यादातर, हम जनमगत बिरादरी में विश्वास नहीं करते बल्कि जाति को तोड़ना चाहते हैं, तभी आपस के तफरके मिटेंगे, ये आपको बतलाए देता हूं।

इन शब्दों के साथ दोस्तों, बहुत–बहुत धन्यवाद। मैं भी थक गया हूं। मेरे साथ तीन नारे लगा दो, तब मैं आपसे इजाजत चाहूंगा जाने की –

भारत माता की जय हो– भारत माता की जय हो।

महात्मा गांधी की जय हो– महात्मा गांधी की जय हो।

लोकदल कांग्रेस की जय हो– लोकदल कांग्रेस की जय हो।

नमस्ते लो मेरी आप।

————————

दिनांक 12 नवम्बर, 1979 को ग्वालियर, मध्य प्रदेश की जनसभा में प्रधान मंत्री श्री चरण सिंह का उद्‌बोधनः

———————————

दोस्तों और बहनों,

मुझे अफसोस है कि मुझे आने में देर हो गई कोई एक घंटे। कुछ इसमें मेरी गलती है और कुछ हमारे जो प्रोग्राम बनाने वाले हैं, उनकी भी गलती है। मुझको यह मालूम हुआ है कि शायद साढे चार या पांच बजे का वक्त दे दिया गया। साढ़े चार या पांच बजे मैं यहां आ ही नहीं सकता था, किसी हिसाब से। खैर, मैं फिर माफी चाहता हूं कि आपका इतना समय नष्ट हुआ। आज अभी डेढ़ महीने के अन्दर जो देश की सबसे बड़ी पंचायत है, जिसका नाम लोकसभा है, उसका चुनाव होने वाला है। आपके सामने कई पार्टी के लोग आएंगे। इंदिरा जी कांग्रेस (इ) इनकी पार्टी इलेक्शन लड़ रही है और दूसरी लड़ रही है– जनता पार्टी। जनता पार्टी में जनसंघ और मोरारजी देसाई के साथ कांग्रेस वाले लोग शामिल हैं –– (शोर)

मैं जानना चाहता हूं, कि आप पढ़े–लिखे लोग हैं, आप सभा में विघ्न करने के लिए आए हैं, फिर नहीं आना चाहिए था आपको और अगर आप यहां विघ्न करेंगे, तो दूसरी जगह दूसरी पार्टी के लोग अपकी सभाओं को नहीं होने देंगे। (तालियां)

शरीफ घरों में पैदा हुए हो, शहर के रहने वाले हो, इस पार्टी के मेम्बर हो, अगर आप समझते हैं कि यहां मेरी सभा नहीं हो पाएगी, तो मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि आपकी सभा भी कहीं नहीं हो पाएगी फिर (तालियां)।

मैं कोई बात कह भी नहीं पाया था– कि शरीफजादे खड़े हो गए। तो, मैं यह कह रहा था कि तीन पार्टियां आपके सामने बड़ी–बड़ी हैं, जो कि चुनाव के लिए खड़ी हैं। उनमें एक इंदिरा कांग्रेस है, दूसरी जनता पार्टी है, हमारे जगजीवनराम जी जिस पार्टी के लीडर हैं। तीसरी पार्टी उन कांग्रेस वालों की है, जिन्होंने इंदिरा कांग्रेस को छोड़ दिया था और लोकदल से इनका गठबन्धन है। ये वो पार्टी है, जिसकी तरफ से मैं आया हूं। मैं आपको ये मशविरा देने के लिए हाजिर हुआ हूं कि आप लोकदल के कैंडीडेट्स को वोट दें। सवाल यह होता है आपके मन में और होना चाहिए कि दूसरी पार्टियों को वोट न देकर केवल लोकदल और कांगेस के गठबंधन के उम्मीदवारों को ही क्यों राय दी जाए ? मैं आप लोगों को बताना चाहता हूं और मैं ये समझाने की कोशिश करूंगा कि हिन्दुस्तान के सामने जो समस्याएं हैं, उनका इलाज और समाधन केवल हमारे पास है और दूसरी पार्टियों के पास नहीं है।

आज देश के सामने चार बड़ी समस्याएं हैं। देश की गरीबी और गरीबी में बढ़ती हुई गरीबी। समय बीतता जाता है और हमारी गरीबी बढ़ती जाती है। दूसरी समस्या है बेरोजगारी की। बेरोजगारी भी समय के साथ बढ़ती जा रही है, बजाय कम होने के। तीसरी समस्या है गरीब और अमीर की आमदनी के फर्क की। ये फर्क या खाई, जो गरीब और अमीर आदमी के बीच थी या गांव और शहर के बीच थी, अंग्रेजों के जमाने में, वो बजाय घटने के या कम होने के और भी चौड़ी होती जा रही है। और चौथी समस्या है– करप्शन की, भ्रष्टाचार की। अंग्रेजों के जमाने में भ्रष्टाचार था। लोग यह स्वप्न देखा करते थे कि जब देश आजाद होगा, यह भ्रष्टाचार खत्म हो जाएगा। लेकिन नहीं, ये भ्रष्टाचार भी दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है।

ये चार समस्याएं देश के सामने हैं। जहां तक मैंने गरीबी की बात आपको बतलाई, गरीबी का ये हाल है कि सन् 1964–65 में इंदिराजी ने जब कार्यभार सम्भाला, उससे एक साल पहले 140 देशों में हमारे देश का नम्बर 85वां था। 84 देश –– (शोर)––। कौन दल–बदलू है, तुम हो, अभी साबित करे देता हूं। अगर ईमानदार हो तो सुनना मेरी बात, सुनो चुप हो जाओ, दलबदलू तुम लोग हो। शर्म आनी चाहिए तुम सब लोगों को, मेरी बात सुनो! अगर जवाब देना है तो अपने लीडरों से जवाब दिलवाना, अगर हिम्मत है। बेईमान लोग!

तो मैं आपसे यह कह रहा था कि 85वां हमारे देश का नम्बर था, 84 देश हमसे मालदार थे। सन् 64–65 में और 40 देश हमसे गरीब थे, 125 देशों में। इसके आठ साल बाद, सन् 73 में हम और खिंच के नीचे आ गए, हमारा नम्बर 104 हुआ और हमसे मालदार देश 103 हो गए और केवल 21 देश हमसे गरीब रहे। जो सबसे ताजा आंकड़े मिलते हैं तीन साल बाद के सन् 1976 के, तो हमारा देश और तेजी से नीचे गिरा, 111 पर आ गया और 110 देश हमसे मालदार हुए। मतलब हुआ यह कि केवल 14 देश हमसे गरीब हुए। होती है गरीबी, हो सकती है, गरीबी है, गरीबी के कुछ कारण हैं, लेकिन सवाल ये है कि दूसरे देशों की अपेक्षा गरीबी बढ़ती जाती है, बजाय घटने के। अमरीका के वो देश जो सन् 48 और 50 में हमारे साथ आजाद हुए थे– ना तो सड़कें थीं, ना नहर थीं, ना बिजली थी ना अस्पताल थे, वो आज लगभग सभी हमसे आगे हो गए और हम सबसे पीछे रह गये। हमारे रेवन्यू कमीशन के अनुमान के अनुसार 48 फीसदी आदमी यहां गरीबी की रेखा से नीचे रहते हैं, बिलो दि पावर्टी लाइन जिसको अंग्रेजी में कहते हैं। उनको सूखा भोजन भी इतना नहीं मिलता है कि जिससे वो अपना स्वास्थ्य कायम रख सकें। दूध हमारे लिए दवा हो गया है, हमारे बच्चों के लिए। अंग्रेजों के जमाने में भी सब को दूध नहीं मिलता था और मैं समझता हूं कि आधे आदमी ऐसे हैं जिनको दूध नहीं मिलता है। बीमारी के समय में भी दूध हासिल करना मुश्किल हो जाता है।

दूसरी बात मैंने बेरोजगारी की बतलाई। तो शहर में भी और गांव में भी बेरोजगारी बढ़ती जाती है। जब जनता पार्टी ने चार्ज लिया मार्च सन् 77 में तो एक करोड़ 2 लाख 40 हजार लड़कों का नाम दर्ज था एम्पलायमेंट एक्सचेंजों कामदिलाऊ दफ्तरों में। सब रोजगार चाहते हैं, हाई स्कूल पास, बी0ए0 पास, एम0ए0 पास, इंजीनियरी पास, तरह–तरह की, साइंस की उनकी डिग्रियां हैं। इसमें कुछ बेपढ़े शहर के लोग भी हैं जो रोजगार चाहते हैं। जनता पार्टी के दो साल के राज के बाद अब एक करोड़ 35 लाख उन लोगों की संख्या है। मैंने इलाज बतलाया था,मंजूर कर लिया, लेकिन अमल करने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। ये मैं आपको बतलाने वाला हूं कि बेरोजगारी शहर के अंदर क्यों बढ़ती जाती है।

हमारे देश के लड़के बाहर पढ़ने के लिए जाते हैं – इंग्लैंड, जर्मनी और अमरीका में, वहां से वापस नहीं आते। यही नहीं, वो अपनी विद्या समाप्त कर लेते हैं, जब उनको रोजगार नहीं मिलता तो दूसरे देशों को चले जाते हैं रोजगार के लिए। एक अर्थशास्त्री ने ये हिसाब लगाया कि 65 किसान औसतन हिन्दुस्तान के साल भर में मेहनत करके जितना कमाते हैं – उतने रुपये गवर्नमेंट खर्च करती है एक ग्रेजुएट को पैदा करने में। एक आदमी के लिए बी0ए0 पास करने में जितना खर्चा आता है, उतना 65 किसानों की साल भर की आमदनी होती है। इस गरीब देश के लोग, इस गरीब देश के पैसों से विद्या पाकर, बजाय इसका विकास करने के, दूसरे जो मालदार देश है, उनके विकास में जाकर सहायक होते है। मैं उन

लड़कों को दोष नहीं देना चाहता हूं। हमारी राज–व्यवस्था ही गड़बड़ हो गई है, जिसकी वजह से रोजगार न मिलने के कारण हमारे नौजवान बाहर जाने को तैयार हो जाते हैं।

यह तो शहर की हालत है, जहां तक गांव की हालत है वहां लोगों का बड़ा ख्याल है कि हमने गांव वालों के लिए थोड़ा–सा किया था, टैक्स वगैरह उनका माफ किया था, उनका खाद पर टैक्स लगता था, वो आधा कर दिया था और हमने कुछ उनके लिए किया नहीं था। यहां ये जो आवाजें लगा रहे हैं, ये लोग और शहर के बड़े–बड़े अखबार ये लोग चलाते हैं। उन्होंने हमारे खिलाफ प्रचार ये किया कि हम लोग शहर के गरीब आदमियों पर टैक्स लगाकर गांव के मालदार आदमियों की मदद करना चाहते हैं। नहीं, ऐसी बात नहीं। दुनिया में कहीं खाद पर टैक्स नहीं लगता है। श्री मोरारजी देसाई ने सन् 1965 में खाद पर टैक्स लगा दिया था, तो केवल हमने आधा किया। और जब खाद नहीं मिलेगा किसान को, तो कोई भी तरकीब इस्तेमाल कर लो, खेत की पैदावार नहीं बढ़ेगी।

तो मैं आपसे कह ये रहा था कि 1970–71 में पहली दफा एग्रीकल्चर सेन्सस किया गवर्नमेंट आफ इंडिया ने कि कितनी जमीन कितने लोगों के पास है, कितने बड़े हैं, कितने छोटे हैं, कितनी फसल, कितने रकबों में होती है। कितने सिंचित तथा कितने असिंचित क्षेत्र हैं। इस सेन्सस के अनुसार, आपको सुनकर ताज्जुब होगा कि 34 फीसदी किसान ऐसे हैं जिनके पास दो बीघे से कम जमीन है। 18 फीसदी ऐसे किसान हैं जिनके पास दो बीघे से चार बीघे तक जमीन है। 19 फीसदी ऐसे किसान हैं, जिनके पास चार बीघे से आठ बीघे तक जमीन है। नाम के किसान हैं। उनकी गुजर नहीं हो सकती। वे लोग खाली बैठे रहते हैं। जमीन तो हमारे बाप–दादाओं से मिली है, जमीन तो बढ़ेगी नहीं। आबादी हमारी तेजी के साथ बढ़ रही है। सन् 1857 में जो पहला विद्रोह अंग्रेजों के खिलाफ हुआ था, तब़ हमारी जनसंख्या 18 करोड थी। आज बांगलादेश और पाकिस्तान को शामिल करके 85 करोड़ हो गयी है आबादी। पहले से चार–गुना, साढ़े चार–गुना आबादी बढ़ी और जमीन ज्यों की त्यों।

जमीन का उपजाऊपन तो बढ़ेगा नहीं, जो प्रकृति ने, इतिहास ने इस मुल्क को दिया, वही रहेगा तो गुजर करना ही करना है। मैंने आपको बताया कि 40 फीसदी किसान नाम के लिए किसान हैं, जिनके पास चार बीघे से कम जमीन है। ये गांव के लोगों का हाल है जो कि खाली बैठे हैं– अंडर एम्पलाएड या अनएम्पलाएड। बिलकुल बेरोजगार या देश का 24 घंटे नुकसान करने वाले, जिनका उदाहरण मिलता या नहीं मिलता है। इसके अलावा जो हमारे खेतिहर मजदूर हैं, अंग्रेजों के जमाने में उनकी संख्या 17 फीसदी थी बल्कि सन् 60 में भी 17 फीसदी थी। जब सीलिंग वगैरह लगी, जब इसका जिक्र हुआ तो जमींदारों ने किसानों से जमीन छीन ली। जिसकी जमीन छीनी, 5 एकड़ में से 4 एकड़ छीन ली, एक एकड़ छोड़ दी। चार एकड़ निकाल दी किसी की 5 एकड़ थी, वो पूरी छीन ली। नतीजा यह है कि 17 फीसदी की बजाय आज साढ़े छब्बीस फीसदी खेतिहर मजदूर हैं। साढ़े छब्बीस फीसदी, अपने देश की आबादी का –– (शोर)–– क्या बात है, साढ़े छब्बीस फीसदी साबित करेंगे, करेंगे या कम –– (शोर)– क्या मतलब है ईमानदार लोगों मैं जानना चाहता हूं। साढ़े छब्बीस फीसदी जो खेतिहर मजदूर और 51 फीसदी कल का किसान, तो आप बेरोजगारी का अंदाजा लगा सकते हैं कि बेरोजगारी किस कदर बढ़ती जाती है।

तीसरी बात जो मैं आप लोगों को बताना चाहता था, वो ये कि अंग्रेजों के जमाने में गरीबी–अमीरी का फर्क बढ़ता जा रहा था। शहर और गांव का फर्क बढ़ता जा रहा था। ये फर्क पैदा हो रहा था, जो पहले नहीं था।

तो हम ये स्वप्न देखा करते थे कि देश आजाद होगा– गरीब और अमीर, गांव और शहर के बीच जो चौड़ाई बढ़ी है, जो अन्तर आ गया, कम होगा। लेकिन ठीक उल्टा हो गया, दूना हो गया। एक किसान की आमदनी, सन् 50 में अगर 100 रू0 थी, तो गैर किसान या शहर में रहने वाले की आमदनी 178 रू0 थी। यह अनुपात एक और पौने दो का था। आज सन 76–77 के आंकड़े के अनुसार, अगर गांव वालों की आमदनी 100 रु0 है, तो खेती के अलावा दूसरा पेशा करने वाले जो शहर में रहते हैं, उनकी आमदनी 346 रु0 है। पहले फर्क हुआ, अनुपात हुआ एक का, फिर दो का, अब अनुपात है 100 और 350। तो गरीबी और अमीरी के बीच में जो फर्क था वो चौड़ा हुआ, दूना हुआ। यही नहीं, खेतों की तादाद बढ़ी और सेठों की सम्पत्ति भी बढ़ गई। आप लोगों ने टाटा, बिरला के नाम सुने होंगे? सबसे मालदार लोग अपने देश के अन्दर वो ही हैं। टाटा की जायदाद सन् 1950–51 में थी 116 करोड़ रु0 आज है 1100 करोड़ 30 जून 1978 में। बिरला की जायदाद थी 53 करोड़, यह टाटा से छोटा था, अब टाटा से आगे बढ़ गया है। 111 सौ करोड़ से भी ज्यादा। टाटा की जायदाद दोगुनी बढ़ी। बिरला की जायदाद 19 गुना बढ़ी। यही गरीबी–अमीरी का फर्क है।

चौथी बात, जहां तक मुल्क का सवाल है, तो जैसा मैंने कहा कि अंग्रेजों के जमाने में कुछ राज–कर्मचारियों में भ्रष्टाचार था। हम समझते थे कि देश गुलाम है इसलिए भ्रष्टाचार है। देश आजाद हो जाएगा, भ्रष्टाचार नहीं रहेगा। लेकिन ठीक उल्टा हुआ, राज–कर्मचारियों में भी भ्रष्टाचार बढ़ा और इस भ्रष्टाचार के बढ़ने का मुख्य कारण रहा कि कुछ जिम्मेदार लोगों में भ्रष्टाचार बढ़ गया। अगर मंत्री और जिम्मेदार लोग ईमानदार नहीं होंगे, अगर मुख्यमंत्री बेईमान होगा, मंत्री बेईमान होगा और हमारे सेंटर का कोई भी मंत्री बेईमान होगा, तो उस महकमें के लोग ईमानदार रह ही नहीं सकते, वो भी बेईमान हो जाएंगे।

तो राजनैतिक लोगों में उस वक्त कोई बेईमानी नहीं थी, उनको मौका भी कम मिलता था उनके पास रास्ता भी नहीं था। लेकिन फिर भी थोड़े–बहुतों के पास राजसत्ता थी या अंग्रेजों के पास राजसत्ता थी, उनमें कोई बेईमानी देखने को नहीं मिलती थी, सिर्फ हिन्दुस्तानी छोटे अफसरों में राज–कर्मचारियों में देखने को मिलती थी। आज मुश्किल से ईमानार आदमी दिखाई देता है देश के अन्दर! और जिस चीज की कमी होती है, उसी का जिक्र होता है। आज ईमानदार आदमी अंगुली पर गिने जाते हैं, इसका मतलब यह है कि ईमानदार कम हैं, बेईमानी ज्यादा हैं। दूसरे मुल्क के लोग सभाओं में बैठते हैं, बारों में बैठते हैं, चेम्बर्स आफ कामर्स में बैठते हैं, दस आदमी जहां बैठते हैं, खास जिक्र ये होता है कि फलां आदमी बेईमान है। यह बताता है कि आम लोग ईमानदार हैं। हमारे मुल्क में जिक्र होता है, फलां आदमी ईमानदार है, इसका मतलब है कि आम आदमी बेईमान है (शोर)। ये आपकी जो आवाज आयी है, वो बेईमानों का समर्थन करने के लिए आई है। इसी तरह बेईमानों का समर्थन करते हो तुम लोग।

तो मैं आपसे ये कह रहा हूं कि बेईमानी बढ़ती जा रही है। अब जिस देश में बेईमानी बढ़ जाए वो देश कभी तरक्की नहीं करेगा –– (शोर)–– तो क्या किया जाए ? इस तरह तो भाषण नहीं दे सकता हूं। मैं यही कह सकता हूं कि हम तुम्हारी सभा नहीं होने देंगे।

एक सहयोगी द्वाराः

चौधरी साहब का भाषण आज जिस तरह डिस्टर्ब किया जा रहा है, हम जनता के नौजवानों से कहना चाहते हैं कि अटल बिहारी वाजपेयी, राजमाता सिंधिया, शीतला सहाय, उनको हम सभा में घुसने नहीं देंगे। हां, हम घुसने नहीं देंगे। याद रखना भ्रष्टाचार का समर्थन करने वाले बेईमान लोगों, दुनिया में मुंह दिखाने लायक आप लोग नहीं हो। ईमानदार आदमी की आवाज दबाई नहीं जा सकती। और हम नौजवान आपका मुंह काला ––(नारे –– शोर ––)

श्री चरण सिंह : दोस्तों, दोस्तों, मैं एक बार और कोशिश करूंगा अपना भाषण जारी रखने की। लेकिन ये दोस्त ऐसा नहीं होने देते हैं, जो कि ऐसी पार्टी से वास्ता रखते हैं जो चरण सिंह में विश्वास नहीं रखती है। मेरे बार–बार मना करने पर भी ये नहीं मानते, तो मेरे साथी आपको हिन्दुस्तान में कहीं मीटिंग नहीं करने देंगे, मैं बताये देता हूं।

(जनता द्वारा : चौधरी चरण सिंह हाय ! हाय!!)

ये वो लोग हैं जो अकड़ रहे हैं नागपुर में। अगर नागपुर का आदमी कह दे कि बकरी का सींग टांग लो तो सभी लोग कहेंगे कि बकरी का सींग टांग रखा है। ये वो लोग हैं, ये लोग गुंडागर्दी में विचार करने वाले हैं। उनका ज्यादा खतरनाक यह कोई तरीका नहीं है। अगर चुनाव होना है इस देश में, तो सभा में आपको विघ्न नहीं डालना चाहिए। अगर आप डालेंगे तो दूसरा भी आपकी सभा में विघ्न डाल सकता है, तो फिर सभाएं नहीं होंगी। अपनी बात का प्रचार नहीं हो सकेगा। और वैसे तो आप प्रचार करना नहीं चाहते हैं अगर आपकी ताकत होगी दिल्ली में, तो आप कभी चुनाव कराएंगे हिन्दुस्तान के अन्दर, ये भी मुझे मालूम है। हमेशा के लिए आप चुनाव नहीं होने देंगे।

कानून ये है कि इलैक्शन की सभा में अगर कोई विघ्न डालेगा तो वो आदमी उस जुर्म का अपराधी है। वो अपराध करता है, उसका दोष है। अगर मैं चाहूं तो अभी पुलिस को हुक्म दिया जा सकता है आपको गिरफ्तार करने का लेकिन मैं आप पर अपनी ताकत का इस्तेमाल नहीं करना चाहता हूं, आपको बताता हूं बेईमान लोगों, अब मैं ––(शोर)––

सहयोगी सदस्य : जो लोग चौधरी साहब को नहीं सुनना चाहते, उनको लोकसेवादल के कार्यकर्ता, गांव के नौजवान ––

चौधरी साहब : दोस्तों, मैं यह कह रहा था कि हमारी चौथी समस्या है– हमारी आचरणहीनता और भ्रष्टाचार। हमारे देश के अन्दर रिश्वतखोरी बजाय कम होने के बढ़ती जा रही है और जिस देश में रिश्वतखोरी बढ़ जाएगी, राजनैतिक नेता और शासक लोग, प्रशासक लोग, ईमानदार नहीं होंगे, वहां गवर्नमेंट नहीं चलेगी––(शोर) –– इनकी पिटाई अच्छी तरह करा दो –– मुझे जाने दो !

दोस्तों, मैं यह कह रहा था, आप शांति से मेरी बात सुनने की कोशिश करें। और फिर भी मैं दरख्वास्त करूंगा कि जिन लोगों को मेरी बात पसंद नहीं है वो या तो खामोश रहें या फिर उठकर चले जाएं, लेकिन विघ्न न डालें। ये भले आदमियों का काम नहीं है। इस तरह मुल्क चल नहीं सकता है। हो सकता है, मेरी राय गलत हो, आपको नापसंद हो, लेकिन अगर आप सभा में आये हैं, तो आपकी जिम्मेदारी है कि आप खामोशी से उस बात को सुनें।

तो मैं यह कह रहा था कि गरीबी बढ़ती जाती है। बेरोजगारी बढ़ती जाती है। गरीब–अमीर का फर्क बढ़ता जाता है और –– और हमारे मुल्क में भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी बढ़ती जाती है। ये चार समस्याएं देश के सामने हैं। अब इनका क्या समाधान हो सकता है– इनका क्या हल हो? तो हमारे पास समाधान वही है जो कि महात्मा जी ने बताया था – महात्माजी का कहना ये था कि हिन्दुस्तान, असली हिन्दुस्तान या असली भारत गांवों में रहता है, बड़े शहरों में नहीं रहता, दिल्ली, बम्बई या कलकत्ते में नहीं रहता, गांव में रहता है और जो खेती करता है। तो जब तक खेती की पैदावार नहीं बढ़ेगी – ये देश मालदार नहीं होगा। लेकिन हमारे यहां जमीन बहुत कम हो गई है। तब, खेत की पैदावार बढ़ाने के लिए हमें उस पर सिंचाई का इंतजाम करना पड़ेगा, अच्छे बीज का इंतजाम करना पड़ेगा, अच्छे खाद का इंतजाम करना पड़ेगा। जब तक खेत की पैदावार नहीं बढ़ेगी, देश गरीब रहेगा, मालदार नहीं हो सकता। दुनिया में ऐसे देश हैं, जहां चार–गुना, आठ–गुना, दस–गुना तक पैदावार होती है, हमारे मुल्क के मुकाबले। हमारे मुल्क में पानी की कमी नहीं है। प्रकृति इतना पानी देती है, 50–60 सालों को छोड़ दो, लेकिन आम तौर पर हर साल बारिश जरूर होती है, लेकिन 90 फीसदी पानी समुद्र में बहकर पहुंच जाता है। हमारे यहां सूर्य की किरणें भी तेज पड़ती हैं, जिससे फसल पकती है। हमारी भूमि भी निहायत उपजाऊ है। फिर भी हमें अनाज बाहर से मंगाना पड़ा, गलत नीतियों के कारण। दूसरे लोग यह कहते हैं, बहुत से– कि मैं केवल किसानों की बात कहता हूं और शहर वालों के खिलाफ हूं। नहीं, हरगिज नहीं। मेरा अनुमान है, रीडिंग है, दुनिया का तजुर्बा यह है कि जब किसानों की, खेतों की पैदावार बढ़ती है, तब उसे बाजार में भेजते हैं, तब जाकर दुकानदारी चलती है। तभी मोटर चलती है। तभी उद्योग–धंधे बढ़ते हैं। किसानों के खेतों की पैदावार घट जाएगी तो सब बर्बाद हो जाएंगे।

शहर का मतलब क्या है ? वो लोग गैर–खेती पेशा करते हैं– खेती के अलावा जो दूसरा पेशा करते हैं, वो आम तौर से शहरों में, कस्बों में रहते हैं। जो खेती का पेशा करते हैं, वो गांव में रहते हैं। अगर किसान की पैदावार मान लो दूनी हो जाए– हमारे देश की, तो दुकानदार दूने हो जाएंगे, यहां ट्रांसपोर्ट दूनी हो जाएगी। छोटे–बड़े कारखाने दूने लग जाएंगे। तब दूसरा पेशा करने वालों की तादात भी बढ़ेगी और देश मालदार हो जाएगा। इसलिए मैं किसान की बात करता हूं। किसान, जब उसके खेत की पैदावार बढ़ी, उसके पास पैसा आया तो जरूरत का सामान खरीदा जाएगा। तब कारखाने लगेंगे, तब मशीनें लगेंगी, उस चीज को पैदा करने के लिए। साबुन है, कपड़ा है, जूता है, दियासलाई है, साइकिल है, घड़ी है। अगर उसका बच्चा पढ़ता है तो उसकी किताब का खर्च है, उसकी फीस का खर्च है, तब जाकर स्कूल और कॉलेज चलते हैं। जहां किसानों की हालत अच्छी रहती है, वो अपने स्कूल और कॉलेज खूब खोल लेते हैं। तो ये जो ग्वालियर आबाद है और तरक्की कर रहा है, तो उसी आधार पर तरक्की करेगा, जब आसपास के किसानों की हालत अच्छी होगी। अगर आसपास के किसानों की हालत खराब हो जाए तो बर्बाद हो जाएगा ग्वालियर, दस साल के अन्दर उजड़ जाएगा। आप कहीं जाकर देखो, वहीं कस्बे आबाद हैं, वहीं मुल्क की रौनक हैं, नई–नई इमारतें बन रही हैं, नये स्कूल और कालेज बन रहे हैं, वहीं सड़कें बन रही हैं, जहां आसपास के किसानों की हालत अच्छी है। तो इसलिए खेत की पैदावार बढ़नी चाहिए। इसके बिना देश मालदार नहीं हो सकता।

दोस्तों, जहां मैं आपसे यह कह रहा हूं कि खेतों की पैदावार बढ़ाओ, दूसरी बात इसके साथ यह कहना चाहता हूं कि खेतों पर काम करने वाले लोगों की तादाद घटनी चाहिए। खेत पर काम करने वालों की तादाद घटे और नान–एग्रीकल्चर आक्यूपेशन, खेती करने के अलावा दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़े। जितना किसानों की तादाद घटेगी, दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़ेगी, मुल्क मालदार होगा। लेकिन दूसरे पेशे तभी बढ़ेंगे जबकि पहले खेत की पैदावार बढ़े। आज अमेरिका में 100 में से 4 आदमी खेती करते हैं, ताज्जुब होगा आपको सुनकर कि यह मुल्क जब अंग्रेज आये थे, हमारे 100 में से 60 आदमी खेती करते थे, आज 72 आदमी खेती करते हैं। 25 फीसदी आदमी दस्तकारी या उद्योग धंधों में लगे हुए थे। आजकल केवल 10 फीसदी रह गये हैं। तो जब अंग्रेज आये थे, उस वक्त हमारा देश मालदार था– मुकाबले आज के। यह ठीक है, दिल्ली में और बम्बई में गगनचुम्बी इमारतें हो गई हैं, लाखों के पास मोटरकार हो गई हैं, टेलीविजन हो गया है, फ्रिज हो गया है, रेडियों हो गया है। फिर भी औसतन 8 हिन्दुतानी गरीब है, मुकाबले 200 बरस के जब अंग्रेज आया था। क्यों? क्योंकि किसानों की तादाद बढ़ी और गैर–किसानों की तादाद घटी। 1961 की अगर आप सेन्सस की रिपोर्ट उठाकर पढ़ें तो नाम ऐसे मिलेंगे उसमें कि मानो किसी गांव में एक रामलाल, बाप का नाम हीरालाल, काम कुम्हार, पेशा खेती। नाम अब्दुल्ला बाप का नाम मोहदुल्ला, काम जुलाहा पेशा खेती। ये दोनों चीजें बता रही हैं कि उनके बाप–दादा खेती नहीं करते थे। एक कपड़ा बुनने का काम करता था तो दूसरा बर्तन बनाने का। लेकिन जब अंग्रेजों ने अपने कारखाने चलाने के लिए हमारी दस्तकारी को नष्ट कर दिया, अपनी पॉलिटिकल ताकत के जरिये। तब हमारे दस्तकारों ने मजबूर होकर हल में अपने आपको जोत दिया, जिससे किसानों की तादाद बढ़ गयी और मुल्क गरीब हो गया।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता था कि खेत की पैदावार बढ़ाने के अलावा बड़े कारखाने कम लगाओ। जो काम छोटे पैमाने पर हो सकता है वो छोटे पैमाने पर करो। जो केवल बड़े पैमाने पर हो सकता है, उसे बेशक बड़े पर करो। मैं इसके खिलाफ नहीं हूं। अगर कोई बड़ा कारखाना बिजली से चलता है, बिजली जरूर इस्तेमाल करो, लेकिन उस तरह की बात होनी चाहिए कि बेरोजगारी न बढ़े, बल्कि ज्यादा लड़कों को रोजगार मिले। उनका कहना ये था कि हवाई जहाज, तोप का सामान, टैंक, गोला–बारूद है और बिजली है, फौलाद है, रेल का इंजन है, मोटर–कारें, बेशक बड़े कारखाने में बनें। लेकिन कपड़ा है, हाथ से बनता है, हमारे मुल्क में किसान खेती भी करता था और खाली वक्त में कपड़ा भी बनाता था। ढाका की मलमल दुनिया में मशहूर थी। हमारे यहां का कपड़ा इतना अच्छा बनता था कि जब अंग्रेज आया था, इंगलिस्तान के मुल्क में बिकता था। अंग्रेज लोग अपने यहां के बने हुए कपड़ों के मुकाबले हिंदुस्तान के हाथ के बने कपड़ों को खरीदते थे। तब 50 फीसदी टैक्स लगा। हिंदुस्तान का कपड़ा इंगलिस्तान में आएगा, उस पर 50 फीसदी ड्यूटी लगेगी। फिर भी पहनना नहीं छोड़ा। 50 फीसदी ड्यूटी लगेगी। भारत में अंग्रेजी राज जो लार्ड हार्डिंग ने डाला था, उसमें शामिल था। अभी हाल ही में ''भारत में अंग्रेजी राज'' किताब जिसे अंग्रेजों ने जब्त कर लिया था, उसमें लिखा है कि मालदार अंग्रेज खानदानों ने 80 फीसदी टैक्स हिंदुस्तानी कपड़ों पर लगाने के बाद भी हिंदुस्तानी कपड़ों को पहनना नहीं छोड़ा है। 1817 में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने यह कानून बनाया कि हिंदुस्तान के हाथ से बने कपड़े जो पहनेगा, तीन महीने की सजा मिलेगी। इस तरह हमारे कपड़े के धंधे को खत्म कर दिया।

बम्बई से दिल्ली, मद्रास से दिल्ली, कलकत्ता से दिल्ली आने–जाने के लिए रेलगाड़ियां थीं, रेलवे ट्रेन बनीं। आप सोचते हैं कि अंग्रेजों ने हमारे फायदे के लिए बनाई थीं, नहीं, इसलिए बनाई थी ताकि उनके कारखानों का सामान हिंदुस्तान के कोने–कोने में पहुंच जाए और उसकी बिक्री हो। उन्होंने हमारी दस्तकारी खत्म कर दी और जो थोड़ी–बहुत दस्तकारी बची थी, वो हमारे लीडर नीलाम करते रहे। बड़े–बड़े कारखानों को प्रोत्साहन दिया गया। महात्मा चरखा लेकर क्यों बैठे– क्यों चरखा लेकर बैठे ? वो तो एक बड़े घर में पैदा हुए थे, एक राजा के दीवान के यहां। गरीब क्योंकर थे ? फिर भी हमको यह सिखाना चाहते थे कि दूसरे देशों की नकल करने के लिए गैर–जरूरी तौर पर बड़े कारखाने मत लगाओ, अमेरिका से नकल नहीं कर सकता है हिंदुस्तान। उनके एक आदमी के पास हिंदुस्तानियों के मुकाबले नौ गुना जमीन है, इसलिए उनके पास लोहा ज्यादा है, सोना ज्यादा है, तेल ज्यादा है, इसलिए वहां बडे कारखाने लगेंगे, क्योंकि आदमी कम हैं। 64 करोड़ 65 करोड़ की आबादी में वर्किंग सोर्स काम करने वाले हमारे यहां जो लोग हैं उनकी तादाद तिहाई है। डेढ़ करोड़ आबादी हर साल बढ़ती है। डेढ़ करोड़ कुल आबादी है आस्ट्रेलिया की, वह हमारे यहां एक साल में बढ़ जाती है।

50 लाख लड़के हमारे यहां 15–16 वर्ष की उम्र के हो जाते हैं, अर्थात् जब इतने वर्ष की मेहनत के बाद बड़े कारखाने लगे तो मैं जानना चाहता हूं 50 लाख लड़कों को कैसे रोजगार मिल जाएगा? नहीं मिलेगा, नहीं मिल सकता। हमारे अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोग, हमारे अंग्रेजी पढ़े–लिखे लीडर हैं बहुत से, वो आकर्षित होंगे, बड़ी मशीनें लगाने में, ठीक है बड़ी मशीन चलेगी, तब जब आबादी कम होगी, आदमी कम होंगे। लेकिन हम ये कहते हैं कि बड़ी मशीन को इस्तेमाल करना निहायत गलती होगी, निहायत गलती।

हमारे दोस्तों ने, हमारे कांग्रेस के कुछ दोस्तों ने ये समझा कि मशीन लगाना उन्नति का द्योतक है, विकास का द्योतक है। हाथ से काम करना पिछड़ेपन का द्योतक है। लेकिन दोस्तों, जब हाथ खाली खड़े हैं, वहां मशीन लगाना बेवकूफी की बात है। महात्मा के सामने जो लोग चरखा कातते थे, उन्होंने 300–400 कपड़ा बनाने के कारखाने बना दिए और 10 लाख आदमी इन कारखानों में लगा – स्त्रीलिंग और पुल्लिंग मिलाकर, सूत कातने वाली और कपड़ा बुनने वाली, मुझे खुद नहीं मालूम है, शायद 6 लाख लगे हुए हैं कपड़ा बुनने वाले और 4 लाख या तीन लाख लगे हुए हैं सूत बनाने वाले।

अपनी गवर्नमेंट की कमेटी की रिपोर्ट सन् 1953 में जो आई थी, उसमें उन्होंने ये हिसाब लगाया था कि बड़े कारखाने में एक मजदूर जितना कपड़ा पैदा करता है, वो 12 करघों पर पैदा होता है। 12 आदमी करघों पर काम करें, तब जाकर इतना कपड़ा पैदा होता है। तो मैं और मेरे साथी इस पर राजी हो गए कि बड़े कारखानों को हम बंद नहीं करना चाहेंगे। ना गौरमेंट उनको खत्म करना चाहती है, लेकिन हम तुम्हारी मदद करेंगे, तुम हिंदुस्तान से बाहर अपना कपड़ा दे दो। लेकिन हिंदुस्तान में हाथ से बना कपड़ा बिकेगा। जिसका मतलब ये हुआ कि अगर 7 लाख आदमी कपड़ा बना रहे हैं, जो हिंदुस्तान में बिक रहा है, तो 84 लाख आदमियों को काम मिल जाएगा, बिना गौरमेंट के कुछ करे–धरे। उनको रोजगार मिल जायेगा, जो मारे–मारे फिरते हैं, जिनके पास दो बीघे जमीन है, जिनके पास तीन बीघे जमीन है, जो हाई स्कूल पास करके भी चपरासी गीरी करना पसंद करते हैं, जिनको नौकरी नहीं मिलती।

तो मैं आपसे यह कह रहा था कि यह दो चीज महात्मा कहता था, ये आप सब को पता है। दो–तीन दिन में ये चुनाव का मामला छंट जाए, मैं ज्यादा समय आपका लेना नहीं चाहता, तो ये दो बात हुईं – खेत की पैदावार बढ़ाने पर जोर हो, गौरमेंट कहती है अन्न अमेरिका से क्यों लाना पड़े। अंग्रेज जब थे तो साढ़े सत्रह बीघे में सौ फीसदी निकासी का इंतजाम था। आज 24–25 है, 30 साल के अन्दर, सूखा पड़ गया देश में, पेरशान हैं लोग। पांच–सात सूबों में पड़ा है, पंजाब में भी पड़ा है, लेकिन पंजाब की गौरमेंट इतनी अच्छी थी, किसान नेता सरकार में पहुंच गये, तो 80 फीसदी रकबे में सिंचाई का इंतजाम है पंजाब में। गांव को किसानों को कोई तकलीफ नहीं है। जहां तक मुझे मालूम है, आपके सूबे में किसानों की तरफ ध्यान नहीं दिया गया। 8 फीसदी रकबे में सिंचाई का इंतजाम हुआ, 8 फीसदी में। बाकी जमीन में कोई सिंचाई का इंतजाम नहीं। अगर सूखा पड़ा तो अन्न कोई कमी नहीं। अन्न आपको मिलेगा, जितना गौरमेंट चाहेगी। जो लोग खाली बैठे हैं, काम करने पर अन्न मिलेगा, बजाय रुपए के। और जो लोग, गरीब हैं, बीमार हैं, विधवा हैं, उनकी कोई सहायता करेने वाला नहीं है, बूढ़े आदमी हैं और सहायता करने वाला घर में कोई नहीं है। विधवा है, काम नहीं कर सकती है। उनके लिए हमने तय किया कि उन्हें मुफ्त पैसा मिलेगा, जो दिल्ली से आप लोग मांगेंगे।

लेकिन ईमानदारी ये हो रही है कि मध्य प्रदेश में जनसंघ की, जो गौरमेंट है, वो यह प्रचार कर रही है कि केन्द्र की गौरमेंट अन्न नहीं देती है, उनकी मदद नहीं करती। मैं कहता हूं ये सरासर गलत बात है। मैंने पूछा आप ऐसा कहते हैं ? तो अखबार वालों से ये लोग खुद कहते हैं कि केन्द्र की गौरमेंट हमारी मदद नहीं करती है। मदद कर सकती है हमारी गौरमेंट, तो क्यूं नहीं कर रही। ये फर्क पड़ता है कि एक आदमी ग्वालियर में पैदा हुआ और दूसरा आगरे में पैदा हुआ है। इनके लिए फर्क पड़ता होगा, लेकिन मेरे लिए नहीं पड़ता, मेरे लिए सारे हिंदुस्तानी, सारे हिन्दू और मुसलमान एक हैं।

पानी ऐसी समस्या है जिसके लिए हम परेशान हैं और हमारी समझ नहीं आता कि क्या किया जाए। अभी 9 तारीख को हमने बुलाया था, रिलीफ कमिश्नर को। मैंने उनसे कहा कि किस तरह की सहायता चाहते हैं, जो दे सकते हैं, हम दिल्ली से और नहीं देना चाहते। उन्होंने कहा हमें कोई शिकायत नहीं। पथरीली जमीन है जिससे सिंक के जरिये पानी निकाला जा सकता है। उनसे हमने कहा था कि जो सेवाएं गौरमेंट चाहती है उनको दो, लेकिन गौरमेंट कहती है सिंक के जरिये पथरीली जमीन से पानी नहीं निकाल सकते। तो हमने दूसरे देशों में कहलवाया कि हमारी मदद करो, लेकिन इसमें छह महीने से नौ महीने लग सकते थे, यह हमारी मुश्किल है।

बीज भी हमारे देश में अच्छे नहीं हैं, वो भी दूसरे देशों से मंगाने को कहा। मैं आपसे फिर कहता हूं कि अन्न की कोई कमी नहीं है। अन्न ठेकेदारों के पास जमा हो जाता है। यही बिहार में हो रहा है, यही मध्य प्रदेश में हो रहा है। हम यह चाहते हैं, तहसीलदार और नायब तहसीलदार की निगरानी में काम हो। अन्न उनके सामने बांटा जाए, ना कि ठेकेदार के आगे जो कि फूड कारपोरेशन के बेईमान छोटे अफसरों से मिलकर रिश्वत ले लें और उस अन्न को खा जाएं।

तो दोस्तों, महारानी सिंधिया, मैं उनकी बड़ी इज्जत करता हूं, बड़ी अच्छी महिला हैं। मैंने कहा कि मैं उनकी जाती तौर पर बहुत इज्जत करता हूं, लेकिन आज मैंने अखबार में

पढ़ा, कल उन्होंने तकरीर में यह कहा कि चरण सिंह ने जनता पार्टी को तोड़ा। नहीं, हमको निकाला गया है, किसने निकाला ? ये जनता पार्टी बनाई किसने थी ? पहले मैं ये जानना चाहता हूं। ये मेरी और मेरे दोस्तों की कोशिश का नतीजा था। सन् 74 में लोगों ने कहा कि 30 साल से कांग्रेस का राज और एक ही पार्टी का राज चलता रहा, निरन्तर, तो ऐसे जनतंत्र कायम नहीं होगा, पंचायती राज कामयाब नहीं होगा। कोई बराबर की पार्टी होनी चाहिए देश में। पांच साल का उनका तजुर्बा होगा। अगर बात नहीं चली तो कहूंगा कि दूसरी पार्टी को बुला लो। दूसरी पार्टी को देख लो पांच साल, दस साल, फिर दूसरी को बुला लो। लेकिन तीस साल से जब एक पार्टी चली आती है तो उसके मेम्बर भ्रष्ट हो जाते हैं और वे समझते हैं कि बईमानी के रास्ते पर चलो, हमें निकालने की किसी में बिसात नहीं है। इसलिए देश बर्बाद हो रहा है।

सभी पार्टियां मिल गयीं, इसलिए हमने बी0के0डी0 का बना दिया– भारतीय लोकदल। बजाय भारतीय क्रांतिदल के। और छोटी सोशलिस्ट पार्टियां हैं, जिनके लीडर–लीडर हैं, जनता में उनका कुछ है नहीं। और तीसरा मोरारजी भाई का कांग्रेस संगठन। मैं तीनों पार्टियों से मिला, कई–कई बार गया, मेरे दोस्त मेरे साथ गये। हमने कहा कि बताओ, आप अकेली पार्टी बना सकते हो, गौरमेंट को हरा सकते हो क्या ? कांग्रेस को हरा सकते हो ? सब ने माना नहीं।

जनसंघ के दोस्तों से हमने कहा, लेकिन उन्होंने कहा कि बालासाहब बहुत व्यस्त हैं। तो मैंने उन्हें चिट्ठी लिखी। तो उन्होंने कहा मैं 17–18 अटूबर को मैं कानपुर में रहूंगा। उन दिनों मैं लखनऊ में रहता था। मेरी राय यह थी कि बिना एक पार्टी बनाये ये जनतंत्र कामयाब होने वाला नहीं है। मुझसे सहमत थे। मुझसे बोले कि जनसंघ के लीडर क्या कहते हैं ? मैंने कहा, यार मुझसे क्या कहते हैं ? जनसंघ के लीडर वही कहते हैं जो आप कहेंगे। वो बोले नहीं, नहीं ये बात नहीं है, मैंने कहा न सही। मैं उनसे मिला था और उन्होंने ये कहा था कि आपसे बात कर लें। उन्होंने कहा कि मेरा महाराष्ट्र में आजकल प्रोग्राम है। मैं एक महीने के बाद आपको चिट्ठी लिखूंगा, उनसे बात करता हूं। वो चिट्ठी कभी आयी नहीं मेरे पास। कभी नहीं आई। ये बड़े लीडर का हाल है।

मोरारजी के पास मैं और मेरे साथी तीन बार गये। हमने कहा पार्टी का नाम कुछ रखिए, झंडा कुछ रखिए, निशान कुछ रखिए और लीडर खुद हो जाइए। मैंने कहा कि आप मुझसे उम्र में बड़े हैं, आप कांग्रेस में रहे, आप लीडर हो जाएं। लेकिन मेरी एक शर्त है कि अब तक जितनी समझ और रूतबा था कि हमने दूसरे देशों की नकल की है, उससे देश को फायदा नहीं हुआ। महात्मा गांधी का प्रोग्राम मेरी पार्टी का प्रोग्राम स्वीकार करें, बस इतनी मेरी शर्त है। तो वो बोले, ये जो हमारा जंतर–मंतर है, इसका क्या होगा ? मैंने कहा, ये क्या बात हुई मेरी समझ में नहीं आया। वो बोले, अगर मैं कांग्रेस दल छोड़कर अन्य किसी पार्टी में चला गया, तो जंतर–मंतर का दफ्तर इंदिरा के पास चला जाएगा। मैंने कहा, क्या कह रहे हो मोराजी भाई, पार्टी एक हो जाएगी, तो सारा हितंदुस्तान आपका हो जाएगा, जंतर–मंतर तो पीछे है।

दूसरी बार उनके पास गया। मैंने सोचा भई, इस आदमी को समझाना बहुत मुश्किल है। लेकिन एक बार फिर कोशिश की जाए। ये थी 18 अक्टूबर की बात। हमने फोन किया, तो हमसे क्या कहते हैं कि हमारी तीन जगह गुजरात, कर्नाटक और तमिलनाडु, इनका क्या

होगा? अगर मैं आपके पास एक नई पार्टी में शामिल हो जाऊं ? वो बोले कोई फायदा नहीं, नई पार्टी बनाने में, क्योंकि इंदिरा 6 महीने के बाद रहने वाली नहीं है। किसी पंडित से पूछ लिया होगा उन्होंने। मैंने 6 महीने इंतजार कर लिया, 18 अक्टूबर से 22 अप्रैल भी हो गई।

इतना ही नहीं, मैं आपको बताता हूं कि मैंने जय प्रकाश नारायण जी को 22 नवम्बर को कहा कि तीनों पार्टी छोटी–छोटी आपका सहारा ले रही हैं, एक कांग्रेस संगठन और जनसंघ, जनसंघ के आर0एस0एस0 के वर्कर्स बहुत अच्छे हैं, अनुशासित हैं। मैं उनके खिलाफ इलेक्शन लड़ता था, लेकिन कभी उनके खिलाफ एक शब्द नहीं कहा। कभी एक शब्द नहीं कहा।

सोशलिस्ट पार्टी के लीडर राजनारायण जी से दिल्ली में बात हुई कि महाराज, आप इन तीनों पार्टियों को भूल जाइए, लीडरशिप आप संभालिये। मेरा– आपका क्या मुकाबला, मैं इस्तीफा दिये देता हूं। नहीं हुए राजी। पार्टी एक बनी और हमारी जीत हुई। ये जो एजीटेशन की बात करते हैं। राजसत्ता का हस्तांतरण बैलेट से होता है, वोट से होता है, एजीटेशन से नहीं होता। फिर मैंने उनसे कहा कि एजीटेशन की जरूरत नहीं पड़ेगी, अगर हम एक पार्टी बनाने में सहायक हो जाएं,तो, मेरा मिशन खत्म हो जाएगा।

एमरजेंसी लगी। 22 जून को हमने जो भारतीय लोकदल नया बनाया था। मैंने कहा कि आप बड़ी गलती कर रहे हैं। एक पार्टी बनाओ, अगर देश को जिंदा रखना है, नहीं माने। कुछ दिन बाद एमरजेंसी लगी और हम सब लोग जेल के अंदर पहुंच गए। वहां जब हम जेल में पड़े हुए थे– तिहाड़ में थे, हमारे जनसंघ के दोस्त थे नानाजी, उन्होंने कहा कि जेल से निकलने के बाद एक पार्टी बनाएंगे। लेकिन हमारे मोरारजी भाई राजी नहीं हुए। क्यों नहीं राजी हुए ? इतने जिद्दी आदमी हैं, जिसकी कोई सीमा नहीं। जितनी अकड़ उतने ही ज्यादा जिद्दी। 18 जनवरी को गौरमेंट ने छोड़ दिया। इलेक्शन का एनांउसमेंट कर दिया और एमरजेंसी हटा दी।

तो मुझे लखनऊ में बुलाया गया। मैं लखनऊ गया और मुझे कहा गया कि मुझे चेयरमैन बना दिया जाए। जो आदमी आज तक पार्टी बनाने के खिलाफ था, उनको आज चेयरमैन बनाकर क्या होगा, जरा सोचो। उनका दिमांग ही कुछ और है! लेकिन मेरी डिसक्वालिफिकेशन थी, मैं कहना नहीं चाहता हूं। जो कि 14 नवम्बर को पटना में जनसंघ के और सोशलिस्ट पार्टी के लीडरों ने और जो हमारी तरफ से गए थे भानुप्रताप सिंह जी भारतीय लोकदल की तरफ से, हमने ये तय किया था कि जनता पार्टी का जो नुमाइंदा होगा, उसका दल (बी0एल0डी0) का, वह लीडर बना पार्टी का। शर्म की बात जो यह हुई, ये शासन भी कैसा है ?

तो मोरारजी को चुना गया। इलेक्शन की तैयारी हुई। उत्तर भारत मेरे सुपुर्द हुआ। इलेक्शन लड़ाने के लिए और दक्षिण उनके सुपुर्द हुआ, सारा दक्षिण और महाराष्ट्र–गुजरात। गुजरात से 15 सीट आयीं, महाराष्ट्र से 27 या 28, आंध्र से एक, कर्नाटक से एक, तमिलनाडु से एक। हमारे साथियों ने मजबूती से काम किया– उत्तर भारत में आपको मालूम है कि हमने अमृतसर से कलकत्ते तक सब जगह कांग्रेस को साफ कर दिया था।

आज मेरे दोस्त लोग शोर मचा रहे हैं। जब मैं मई–जून के महीने में यहां आया था, कांग्रेस के जिताने के लिए कितनी बड़ी सभा हुई थी। सरकार ने कहा आपको कि वो आए हैं जनसंघ को कम करने के लिए। मेरे दिमाग के अन्दर ना जनसंघ था, ना बी0एल0डी0 थी।

ना मेरे दिमाग में सोशलिस्ट पार्टी थी, ना कांग्रेस थी। मैं ईमानदारी से चाहता था कि एक नई पार्टी बने। वरना मैं मेरे हाथ जिसके सुपुर्द कर दिया जाए। ये बता दिया मध्य प्रदेश ने आंख मींच के वोट दें। ऐसा ही एक मुकाबला राजस्थान में उसके सुपुर्द दे दिया। और वे लोग सोचते हैं हमारी पार्टी में, धीरे–धीरे जनता में भटकाव होगा। जनसंघ के लोग सोचते हैं कि हम राजस्थान के मालिक हैं, मध्य प्रदेश के मालिक हैं। नहीं, मालिक कोई पार्टी नहीं है। ये जनता तय करेगी कि कौन मालिक है और कौन नहीं।

20 मार्च को मैं बीमार पड़ गया। 21 मार्च को मुझे अस्पताल में दाखिल होना पड़ा। मेरे पास अटलजी आते हैं। उन्होंने कहा कि प्राइम मिनिस्टर किसे बनाया जाए ? मैंने कहा मैंने तो खास बात सोची नहीं, मैं तो बीमार पड़ा हुआ हूं। उन्होंने जगजीवनराम जी का नाम सुझाया। मैंने कहा क्यों, क्या इसलिए कि उन्होंने इमरजेंसी लागू करने का प्रस्ताव पेश किया था। इसलिए इनाम देना चाहते हो क्या ? मैं उनके प्राइवेट जीवन के बारे में कहना नहीं चाहता हूं आपसे। अगर कोई मेरी राय में है, ग्वालियर के दोस्तों, तो जमीन के दो टुकड़े नहीं होंगे। जीवन दो हिस्सों में बॅटा हुआ नहीं है– एक प्राइवेट, एक पब्लिक। जो आदमी अपने प्राइवेट जीवन में ईमानदार नहीं होगा, जो अपने साथियों को धोखा देता होगा, जो हाथ का सच्चा नहीं होगा प्राइवेट जीवन में, वो पब्लिक जीवन में प्राइम मिनिस्टर या चीफ मिनिस्टर बनने के बाद भी चरित्रवान नहीं होगा और देश को आगे नहीं ले जा पाएगा दोस्तों।

हमारे नौजवानों के सामने कौन आइडियल–हैं, यह खुद समझना है। नई पीढ़ी के लोगों को। मैंने हाईस्कूल पास किया था और आगरा कालेज में पढ़ने के लिए चला गया था। तो, मैं आपसे कहना चहाता हूं कि इस समय नई पीढ़ी के जितने भी हम लोग थे उनके पास महापुरुषों के वृतांत मौजूद थे। स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द। इनका जीवन–दर्शन हम पढ़ते थे। उनकी पुस्तकें पढ़ते थे। इसका हम लोगों पर अच्छा असर पड़ता था। राजनैतिक और सार्वजनिक जीवन में महात्मा गांधी ने चार्ज ले लिया। सन् 1918–19 में ये लोग हमारे सामने थे लोकमान्य लितक, पं0 मालवीय, लाला लाजपतराय, ऐसे दिग्गज लोग हमारे आदर्श थे।

आज के नौजवान किसको आदर्श मानें ? कौन आदमी है ? कौन रहेगा, इस देश के अन्दर। इस देश में आइडियलिज्म ही ना रहा तो ये देश तरक्की नहीं कर सकता। हमारी बहू–बेटियां इंदिरा से कुछ सीख सकती हैं क्या ? हमारे नौजवान जगजीवन राम से कुछ सीखते हैं ? या मोरारजी से सीख सकते हैं या अटलजी से कुछ सीख सकते हैं ? नहीं, कुछ नहीं सीख सकते। बहुगुणा या चन्द्रशेखर से सीख सकते हैं, नहीं, सीख सकते हैं कुछ नहीं सीख सकते हैं। फिर आज उनके सामने कौन से आदर्श हैं ? उनके सामने जो मौजूद हैं, उनके घरों के बच्चों पर भी असर पड़ा है, वो देश को क्या चलाएंगे ?

अटलजी से मैंने कहा कि हरगिज, हरगिज तीसरे आदमी को प्राइम मिनिस्टर मानने को तैयार नहीं हूं। जो इलेक्शन होने के बाद कांग्रेस छोड़कर आया और जनता पार्टी में शामिल नहीं हुआ। मैंने कहा था– शामिल हो जाओ, वो इसलिए आया था कि वह प्राइम मिनिस्टर हो जायेगा। जिसने इमरजेंसी का रिजर्वेशन पोस्ट किया था। मैंने अटलजी से पूछा कि जरा बतलाइये, अगर उन्हें प्राइम मिनिस्टर बनाया, तो जो 150 आदमी कांग्रेस से आये हैं दूसर पार्टी से कामयाब होकर आये हैं, अगर आपने इस वक्त आलोचना की इमरजेंसी की, तो कांग्रेस वाले पूंछेंगे, आपका मुंह कहां है? जिस आदमी ने इमरजेंसी का रेजोजल्यूशन पोस्ट

किया था, वह आपका प्राइम मिनिस्टर है। अटल जी चुप हो गये। मैंने कहा, 25 साल से आप जनसंघ में हो। हिन्दू संस्कृति की बातें करते हो। हिन्दू संस्कृति में ऐसा लीडर चलेगा तो देश किधर जाएगा ?

मैं जानता हूं कि गरीब आदमी के लिए मोरार जी के दिल में कोई जगह नहीं है। मेरे विचार उनसे मिलने वाले नहीं है, लेकिन 19 महीने जेलखाने में रहा और जगजीवनराम ने जेलखाने भेजने का प्रस्ताव पेश किया। फिर वह मुझसे सात साल बड़े हैं तो मैं उनको पसंद करूंगा। तो मैंने जयप्रकाश जी को चिट्ठी लिखी 14 तरीख को, अस्पताल से, बीमारी की शैया से कि मैं और मेरे साथी चाहते हैं मोरारजी को प्राइम मिनिस्टर बना दिया जाय। इस तरह वह प्राइम मिनिस्टर बन गए। प्राइम मिनिस्टर बनते ही हमें भूल गये।

जगजीवनराम को जब प्राइम मिनिस्टर नहीं बनने दिया गया तो उन्होंने कहा कि मैं हरिजनों का दुश्मन हूं। मैंने जितना हरिजनों के लिए किया, मिनिस्टर और चीफ मिनिस्टर होने के बाद कर सकता हूं, उतना हिंदुस्तान के किसी मिनिस्टर नहीं किया।

खैर, अब बात हैं मेरे जन्मदिन की। मेरे साथी नहीं माने। मैंने कहा कि दिल्ली के लोग मुझसे नाराज होंगे, गलतफहमी हो जाएगी, गरीब आएंगे, किसान आएंगे, लाखों की तादात में और गलतफहमी हो जाएगी लोगों के दिलों में। नहीं माने। मोरारजी को बुलाया गया पहले, लेकिन जब 25 लाख की भीड़ देखी तो नाराज हो गये। उन्होंने मुझे यह तक नहीं कहा कि तुम 76 साल के हो गये हो, भगवान तुम्हारी आयु बढ़ाए। नहीं। हरगिज नहीं। उल्टे सांप उनके दिल पर लोट गया कि यह आदमी इतना लोकप्रिय है। कुछ करना चाहिए इसका इलाज। एक गलती मुझसे हुई जो मैंने उनको चिट्ठी लिखी कि आप बिहार में यह बयान देकर आये हैं कि मेरे लड़के के खिलाफ कोई शिकायत अखबारों में निकलता था और मैं कमीशन बैठाने को तैयार हूं। सार्वजनिक जीवन में आदमी को ही ईमानदार होना जरूरी नहीं है, जनता को भी ईमानदार होना चाहिए। मैंने कहा, कमीशन बैठाइये। तो बोले कि मेरा एक ही बेटा है, अगर उसके खिलाफ शिकायतें हैं, तो आपके खिलाफ भी हैं। शिकायतें तो होती रहती हैं। शिकायतों का क्या करें। मेरे पास तो तुम्हारी स्त्री के खिलाफ भी शिकायत है। इस पर मैंने उनको एकदम चिट्ठी लिखी कि मेरी वाइफ के खिलाफ कमीशन बैठाइये, मैं आपको रिक्वेस्ट करता हूं, कमीशन बैठाइये। मैंने उनको लिखा कि मेरी पब्लिक और प्राइवेट लाइफ एक है, दो नहीं हैं। मेरी लाइफ एक खुली किताब है, जो चाहे पढ़ सकता है। आप करा लीजिए जॉच। हिम्मत नहीं थी बैठाने की। लेकिन नाराज हो चुके थे।

फरवरी 78 में मेरे पास चिट्ठी आती है बाम्बे से कि जनसंघ के लोगों ने और मोरारजी ने तय कर लिया है मुझे मिनिस्टरी से हटाने का। अगर मझे मिनिस्टरी से नहीं हटायेंगे तो हम खुद हट जायेंगे। मेरे डाक्टर ने कहा कि आप खतरे से बाहर हैं, आप सूरजकुंड के पास एक रेस्ट–हाउस है, उसमें ठहरिये। एक डाक्टर और एक नर्स 24 घंटे मेरे पास बैठे। जब मैं जून 78 में वापस आया वहां से, तो अखबार वाले पूछते हैं कि इंदिरा के खिलाफ आप क्या करेंगे ? मालूम नहीं अदालतों में मुकदमें चलेंगे, मालूम नहीं, कानून कौनसा क्या कोई विशेष प्रोसिजर है, कुछ विशेष अदालतें होंगी। मैंने कहा नहीं, जनता की अदालतें चलेंगी। फिर मालूम हुआ, मोरारजी भाई का इंदिराजी से समझौता हो गया है। इसलिए मामूली अदालतों में दस साल लगेंगे। हिन्दू अखबार है, मुझे याद है मद्रास का, जिसमें वह छपा था।

16 जून को मैंने सूरजकुंड में होम सेक्रेटरी को बुलाकर कहा था कि केस रजिस्टर करो। होम मिनिस्टरी का मामला था, मेरा मामला था। मैं अभी जिंदा था तो इनको कोई अधिकार नहीं था बावूद प्राइम मिनिस्टर होने के। उन्होंने कहा कि हम स्पेशल केस नहीं रजिस्टर करेंगे। उन्हें मुझसे पूछना चाहिए था। अगर उनकी नाक कटती है मेरे पास आने से तो कमीशन बैठाकर पूछ सकते थे। लेकिन जब यह बयान दो बार, तीन बार दोहराया तो मैंने कहा कि जी, मुझसे गलती हुई। आज इंदिरा खुद कहती है कि आज हिम्मत नहीं जनता पार्टी में गिरफ्तार करने की। जनता समझती है कि गौरमेंट नपुंसक लोगों की है। (मिसिंग)। लेकिन एक बहाना था और बाद में आपने देखा कि कोर्ट में उनके साहबजादे के खिलाफ केस चल रहे हैं। अगर शराफत होती तो आदमी यह कहता कि चरण सिंह, मेरी गलती थी, तुमसे माफी चाहता हूं। मैंने तुमसे इस्तीफा मांगा था, अब मैं तुमसे रिक्वेस्ट करता हूं, तुम वापस आ जाओ, तो मैं मान जाता। लेकिन इतनी शराफत कहां ?

यही नहीं, बिहार का एक आदमी मुझ पर कातिलाना हमला करता है 24 दिसम्बर सन् 78 को। पुलिस उसको गिरफ्तार करती है। जगजीवनराम जी या मोरारजी का आदमी है। मेरा उससे कोई ताल्लुक नहीं था, कोई दुश्मनी नहीं थी। वो लड़का पागल नहीं है, वो समझदार है। पढ़ा–लिखा है, बी0ए0 में पढ़ रहा है। बी0ए0 पास कर चुका है। फर्स्ट क्लास आया था शायद हाईस्कूल में। मैंने अखबार वालों से कहा कि इसके खिलाफ नहीं लिखना, क्योंकि इससे बात और आगे बढ़ेगी। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि मामूली शिष्टाचार भी नहीं रहा मोराराजी को कि मुझे फोन पर यह कह सकते कि चरण सिंह, मुझे खुशी हुई कि तुम बच गये, मुझे खुशी हुई। नो, एक छोटे दिल का आदमी था, जिसे मैंने गलती से बनवा दिया था प्राइम मिनिस्टर।

खैर, मुझको निकाला, राजनारायण को निकाला। राजनारायण को वर्किंग कमेटी से निकाला। हमारे चीफ मिनिस्टरों को निकाला। गरीब लोगों के घर जो पैदा हुए थे, कर्पूरी ठाकुर बिहार का चीफ मिनिस्टर, एक नाई का लड़का है, कितना त्यागी और कितना ईमानदार आदमी है, यह इससे साबित होगा कि इसका बाप आज भी गांव में नाई का काम करता है, बावजूद बेटे के चीफ मिनिस्टर होने के। रामनरेश यादव को निकाला। छोटी–सी बिरादरी का आदमी है। देवीलाल को निकाला। राजनारायण को वर्किंग कमेटी से निकाला। मैंने समझा, यह बात ठीक है, क्योंकि राजनारायण कभी–कभी संयम छोड़ देते, ज्यादा बात कह देते। मैंने कहा कि राजनारायणजी, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए, हमको पार्टी के अन्दर रह कर लड़ना है। लेकिन उनके खिलाफ जो कार्यवाही की गयी थी, वो ईमानदारी भी नहीं थी।

मैं चाहता हूं, आप मेरी बात सुनने के बाद चुपचाप बैठ जाएंगे। हमने उन्हें मिनिस्टर भी बनवाया, चेयरमैंन भी बनवाया, प्राइम मिनिटर भी बनाया। लेकिन जब ना–काबिले–बर्दाश्त हो गया तो हम पार्टी छोड़ने के लिए मजबूर हो गए। अब जो पार्टी की तरफ से विधेयक पेश हुआ, मई 79 में, उसमें लिखा था कि चौथाई से कम आदमी पार्टी छोड़ जाएं तो डिफेक्शन होगा और चौथाई या चौथाई से ज्यादा आदमी छोड़ेंगे तो पार्टी का विभाजन होगा। हमने ठीक एक–तिहाई आदमियों ने पार्टी छोड़ी थी। बेईमान हैं वो लोग जो हमें डिफेक्टर कहते हैं। मजबूर हैं। हमने पार्टी बनाई थी। इस पार्टी का एक–एक सदस्य जानता है कि ये पार्टी बनाने के खिलाफ थे। तो यह मैंने पार्टी की बात बताई।

अब मैंने आपका बहुत समय लिया, मुझे अब देहली जाना है। तो मैं आपको धन्यवाद देता हूं बावजूद कुछ लोगों के शोर मचाने के, आपने तसल्ली से मेरी बात सुनी। बस एक ही बात कहना चाहता हूं, हम गांवों को उठाना चाहते हैं, जहां असली हिंदुस्तान रहता है। गांव में हाईस्कूल और कॉलेज बनाकर शहर के बड़े–बड़े स्कूल–कॉलेजों के लड़कों का मुकाबला नहीं कर सकते हैं ना अस्पताल मौजूद हैं, ना सड़कें मौजूद हैं, ना बिजली मौजूद है। गांव और शहर शहर के बीच एक और साढ़े तीन का फर्क है आमदनी का। हमारी बहू–बेटियों के लिए गांव में शौचालय भी नहीं हैं। विचार करो, सड़कों पर देखा हमने सब को। मैं खुद एक किसान के, काश्तकार के घर में पैदा हुआ हूं। मैंने अपनी माताजी को भी देखा, अपनी बहनों को भी देखा है, सब जाती हैं रात के समय। दिन में जा नहीं सकतीं बाहर। हमने सड़कों पर देखा है अपनी बहू–बेटियों को गांव में। शर्म आनी चाहिए। पुरूष तो अन्दर जा सकते हैं, जंगलों में खेतों में लेकिन लड़कियों के लिए, बहू–बेटियों के लिए शौचालय बनाये जाने चाहिए। पहली सुविधा हमारे लिए ये है, क्योंकि दोस्तों, ये तो आप देखें, वोट आप देते हैं, ये लीडरशिप उनके हाथ में रहती है जो बड़े घरों मे पैदा हुए हैं। सत्ता अभी तक उन्हीं लोगों के हाथ में रही है, जिनकी बहू–बेटियों के लिए फ्लश हैं, उन्हें बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ती है।

हम ये सारे नक्शे को बदलना चाहते हैं। हम गांवों को पूरा दुरुस्त करना चाहते हैं। हमारे यहां गोबर जलाया जाता है, जिसे परमात्मा ने खेत में डालने के लिए पैदा किया था, उससे ईंधन का काम लिया जाता है। और इस गोबर से हमारी बहू–बेटियों की आंखें खराब हो जाती हैं, उनके फेफड़े खराब हो जाते हैं और देखते–देखते उनका सौंदर्य पांच साल में खत्म हो जाता है। अगर हमारी शक्ति चली, हमें मौका मिला, हमको वोट मिला, और आप लोगों का सपोर्ट मिला, तो हम अपनी बहू–बेटियों के लिए परमानेंट लैट्रीन बनवाना चाहते हैं और सारे नक्शे को बदलना चाहते हैं, क्योंकि महात्मा ने बताया था कि असली भारत गांव में रहता है, शहर या ग्वालियर में नहीं रहता।

ये जो शोर मचा रहे हैं, हमने एक अध्यादेश जारी किया, शहर के बड़े–बड़े दुकानदारों और जमाखोरों के खिलाफ, भाव बढ़ने से रोकने के लिए, बेईमान दुकानदारों के खिलाफ तो इस अध्यादेश की मुखालफत की गई थी, ये बेईमानों के साथ मिल गये। अटलबिहारी वाजपेयी कहते हैं कि अध्यादेश नहीं लाना चाहिए था। मैं इसके खिलाफ 'सत्याग्रह' करूंगा। क्यों ? डा0 जोशी जी ने, भिवानी में, इलेक्ट्रिक वर्कर्स को दूर करने के लिए अध्यादेश जारी किया था तब उन्होंने इसकी मुखालफत क्यों नहीं की थी। मार्च, 78 में जिसका मैंने समर्थन किया था लोकसभा में गृहमंत्री के पद पर, तब नहीं की, क्यों नहीं की थी? और अब हम–तुम उन बेईमान दुकानदरों को जो जमाखोरी करते हैं, मुनाफा दुगना कमाते हैं, दाम ज्यादा लेते हैं गरीब लोगों से, उनके लिए अध्यादेश जारी किया गया, तो इसकी मुखालफत करते हैं, ये इनके लीडर हैं, इनके लीडर हैं।

इन शब्दों के साथ दोस्तों, मैं अपना कथन समाप्त करता हूं और मैं यह चाहता हूं कि हमारी पार्टी को ज्यादा से ज्यादा वोंट दें और साथ तीन नारे लगा दें–

भारत माता की जय, भारत माता की जय।

महात्मा गांधी की जय, महात्मा गांधी की जय।।

लोकदल–कांग्रेस की जय, लोकदल कांग्रेस की जय।। ––––––